

इन सब गुणोंके होते हुये इस ग्रन्थमें हंसराजार्थबोधिनी टीका भाषामें ऐसी हुई है कि मानों अमृतकुंड जो अति कठिन स्थल है उसके लानेके लिये रेलगाडी बन गई ॥

प्रथम तो यह ग्रन्थ केवल संस्कृत जाननेवालोंहीके लिये फलदायक था अब भाषा जाननेवाले वैद्यलोगभी उसी प्रकार अपना अर्थ प्राप्त करसक्तेहैं ॥

प्रथम इस अपूर्व अत्युत्तम ग्रन्थको हमने छपायाथा पश्चात् हमारी इच्छानुसार लखनऊमें मुंशीनिवलकिशोरजीने छापा था अब इस ग्रंथ (हंसराजनिदान) के सर्व प्रकारके छापनेका हक व रजिस्ट्रीका हक खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेङ्कटेश्वर छापाखाना बम्बई को दे दिया है इसलिये सूचित करताहूं कि अबसे कोई महाशय व उक्त महाशय इस ग्रंथके छापनेकी आशा न करें लाभकी कांक्षामें व्यर्थ व्यय न कर बैठें ॥

पण्डित दत्तरामं चौवे

मथुरा

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना—बम्बई.

हंसराजनिदानकी अनुक्रमणिका



विषय.

पृष्ठ.

विषय.

मंगलाचरण	१	पित्तकफज्वरके लक्षण	११
पूर्वाचार्योंको प्रणाम ...	२	अन्य ग्रन्थान्तरसे तेरह सन्नि-	
अनेक आचार्योंके वाक्यसे ग्रन्थका कथन	११	पातोंके नाम ...	११
त्रिविधिरोगपरीक्षा...	११	तेरह सन्निपातोंकी मर्यादा	११
देश बल कालआदिकी परीक्षानन्तर औषध	११	तेरहसन्निपातोंमें साध्यासाध्यल०	१८
नाडीपरीक्षा ...	३	सन्धिकसन्निपात ...	११
वातनाडीलक्षण	११	अन्तक सन्निपात ...	११
पित्तनाडीलक्षण	११	चित्तविभ्रम	११
कफनाडीलक्षण ...	११	रुदाह ...	९
द्विदोषकोप नाडीके लक्षण ...	११	शीतांग	११
सन्निपातकी नाडीके लक्षण	११	तन्त्रिक	११
तत्काल मृत्युवालेकी नाडीकाज्ञान	४	कठकुण्डज	११
ज्वरवान् पुरुषकी नाडीका लक्षण	११	कर्णक ...	१०
रक्ताधिक्य नाडीकाज्ञान ...	११	भुङ्गनेत्र	११
क्षुधित सुखितवृत्तकीनाडीकाल०	११	रक्तश्रीवी	११
काम क्रोध लोभ मोह भय चिन्ता श्रम		प्रलापक	११
मन्दाग्निमें नाडीके लक्षण ...	११	जिह्वक	११
वातकोपकारक वस्तु	११	आभिन्यास	११
पित्तकोपकारक वस्तु	११	त्रिदोष ज्वरकी साधारण मर्यादा	१२
कफकोपकारक वस्तु ...	९	हारिद्रक सन्निपातके लक्षण	११
ज्वरकी उत्पत्ति ...	११	अजीर्णज्वर लक्षण....	११
ज्वरकी संप्राप्ति	११	आमज्वरलक्षण	१२
ज्वरके पूर्वरूप	११	रक्तज्वरलक्षण	११
वातज्वरके लक्षण	११	दृष्टिज्वर लक्षण	११
पित्तज्वरके लक्षण...	६	भूतज्वर लक्षण	११
कफज्वरके लक्षण....	११	मलज्वर लक्षण	११
वातपित्तज्वरके लक्षण	६	खेदज्वर लक्षण	१३
वातकफज्वरके लक्षण ...	७	शापज्वर लक्षण	११

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
औषधजनितज्वर लक्षण	शुक्रगतज्वरके लक्षण	११
भयज्वर लक्षण	धातुपाकीज्वरके लक्षण	११
क्रोधज्वरलक्षण	तथाच	२०
शस्त्रघातज्वरके लक्षण	१४ ज्वरके दशोपद्रव	११
अभिचारज्वरके लक्षण	११ अन्तर्वेगवहिर्येगके लक्षण	११
कामज्वर लक्षण	११ असाध्य लक्षण	२१
स्त्रीसंगज्वरके लक्षण	११ ज्वरमुक्तके लक्षण	२२
क्षीणधातुजनित तथा मन्दाग्निज्वर लक्षण	११ ज्वरका तरुणता कथन	२३
सन्ततज्वरके लक्षण	१९ ज्वरकावीभन्स स्वरूप	२४
विषमज्वरके लक्षण	११ त्रिशिराज्वरका लक्षण	११
महेन्द्रज्वरके लक्षण	११ कापिलज्वरका लक्षण	११
वेलज्वरके लक्षण	११ भस्मविक्षेपकका लक्षण	२९
एकान्तरज्वरके लक्षण	१६ त्रिपादज्वरका लक्षण	११
व्याहिकज्वरके लक्षण	११ महोदरज्वरका लक्षण	११
चतुर्थिकपाक्षिक मासिक वार्षिक ज्वरके लक्षण	११ पिंगाक्षज्वरका लक्षण	११
देवकोपजनितज्वरके लक्षण	११ ज्वलद्विग्रहज्वरका लक्षण	११
एकांगज्वरके लक्षण	११ इति ज्वररोगनिदानम्	२६
गन्ध तथा स्पर्शज्वरके लक्षण		
अंतकज्वरके लक्षण	अतीसारः	
शोकज्वरके लक्षण	१७ वातातीसारके लक्षण	११
रसगतज्वरके लक्षण	१७ पिच्छातीसारके लक्षण	११
त्वग्गतवातज्वरके लक्षण	१७ कफातीसारके लक्षण	२७
त्वग्गतपित्तज्वरके लक्षण	१७ सन्निपातके अतीसारके ल.	११
त्वग्गतकान्तज्वरके लक्षण	१८ रक्तातीसारके लक्षण	११
रक्तगतज्वरके लक्षण	१८ आमतीसारके लक्षण	११
मांसगतज्वरके लक्षण	१८ अतीसारके असाध्य लक्षण	२८
मेदगतज्वरके लक्षण	१८ अतीसार रोगकी उत्पत्ति	११
अस्थिगतज्वरके लक्षण	१८ अतीसामे पथ्य	११
मज्जागतज्वरके लक्षण	१९ वातसंग्रहणी निदान	२९
		१९ पित्तसंग्रहणी लक्षण	११

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
कफसंप्रहणीके लक्षण	”	”
त्रिदोषसंप्रहणीके लक्षण	”	”
सन्निपातकी संप्रहणीके लक्षण	३०	”	”
संप्रहणी रोगकी संप्राप्ति	”	”
ग्रेहणीरोगमें पथ्य....	”	”
अर्शनिदान		पाण्डुरोग	
बवासीरके लक्षण	”	”
वातकी बवासीरके लक्षण	”	”
पित्तकी बवासीरके लक्षण	३१	”	”
कफकी बवासीरके लक्षण	३२	”	”
सन्निपातकी बवासीरके लक्षण	”	”
वातकी बवासीरमें पथ्य	”	”
पित्तकी बवासीरमें पथ्य	”	”
कफकी बवासीरमें पथ्य	३३	”	”
भगन्दर		रक्तपित्त	
भगन्दर रोगके लक्षण	”	”
वातके भगन्दरके लक्षण	”	”
पित्तजनित भगन्दरके लक्षण	”	”
सन्निपातजनित भगन्दरके लक्षण ...	३४	”	”
अजीर्णरोगकी उत्पत्ति	”	”
सम विषम तीक्ष्ण मन्दाग्निका	”	”
वर्णन	”	”
वाताजीर्णके लक्षण	३५	”	”
पित्ताजीर्णके लक्षण	”	”
कफाजीर्णके लक्षण	”	”
अटस विलंबिकाके लक्षण....	३६	”	”
विशूचिकाके लक्षण	”	”
कृमिरोग		राजयक्ष्मा	
कृमिरोग निदान	३७	”	”
कृमिरोगकी उत्पत्ति	”	”
कृमिरोगमें पथ्य	”	”
पाण्डुरोग उत्पत्ति	३८	”
वातके पीडियाके लक्षण	”	”
पित्तके पीडियाके लक्षण	”	”
कफके पीडियाके लक्षण	३९	”	”
सन्निपातके पाण्डुरोगके लक्षण	”	”
पाण्डुरोगके असाध्य लक्षण	”	”
पाण्डुरोगमें पथ्य	४०	”
हर्लीमककामला कुंभकामला पानकी रोग	”	”
लक्षण	”	”
कामलाके लक्षण	”	”
कुंभकामलाके लक्षण	”	”
हर्लीमक रोगके लक्षण	”	”
पानकी रोगके लक्षण	”	”
रक्तपित्त रोगकी उत्पत्ति	४१	”
रक्तपित्तके लक्षण	”	”
वातपित्त कफके रक्तपित्तके	”	”
लक्षण	४२	”
साध्यासाध्य विचार	”	”
रक्तपित्तमें पथ्य	”	”
क्षयरोगकी उत्पत्ति	४३	”
क्षयरोगनिदान	४३	”
वातकी क्षयके लक्षण	४४	”
पित्तकी क्षयके लक्षण	”	”
कफकी क्षयके लक्षण	”	”
असाध्य क्षयके लक्षण	४५	”
कासररोग		कासररोग	
खांसी रोगकी उत्पत्ति	”	”
खांसीके लक्षण	”	”

विषय.

पृष्ठ.

विषय.

पृष्ठ.

वातकी खांसीके लक्षण	११
पित्तकी खांसीके लक्षण	४६
कफकी खांसीके लक्षण	११
त्रिदोषकी खांसीके लक्षण	११
असाध्य खांसीके लक्षण	११

हिक्का

हिचकी रोगकी उत्पत्ति	४७
बालककी हिचकीके गुण	११
तरुण पुरुषकी हिचकीके लक्षण	११
वृद्धपुरुषकी हिचकीके लक्षण	११
पांचहिचकीकेनाम और लक्षण	११

श्वास

श्वासरोगके लक्षण	४८
त्रिविधश्वासके लक्षण	११
स्वाभाविक श्वासके लक्षण	४९
अतिश्वासके लक्षण	११
महाश्वासके लक्षण	११

स्वरभेद

स्वरभेदकी उत्पत्ति	६०
वातके स्वरभेदके लक्षण	११
पित्तके स्वरभेदके लक्षण	११
कफके स्वरभेदके लक्षण	११
असाध्य स्वरभेदके लक्षण	६१

अरुचि

अरुचि रोगकी उत्पत्ति	११
वातकी अरुचिके लक्षण	११
पित्तकी अरुचिके लक्षण	११
कफकी अरुचिके लक्षण	११
वातकी अरुचिमें पथ्य	६२
पित्तकी अरुचिमें पथ्य	११
कफकी अरुचिमें पथ्य	११

छर्दि

छर्दिरोगकी संख्या और उत्पत्ति	६३
वातकी छर्दिके लक्षण	११
पित्तकी छर्दिके लक्षण	११
कफकी छर्दिके लक्षण	११
सन्निपातकी छर्दिके लक्षण	११
छर्दि रोगके उपद्रव	११
छर्दि रोगमें साध्य असाध्य लक्षण	११

तृष्णा

तृष्णा रोगकी संख्या और उत्पत्ति	६६
वातकी तृष्णाके लक्षण	११
पित्तकी तृष्णाके लक्षण	११
कफकी तृष्णाके लक्षण	६६
त्रिदोषजनित तृष्णाके लक्षण	११
तृषारोगमें साध्य असाध्य विचार	११
तृषारोगमें पथ्य	११

मूर्च्छा

मूर्च्छारोगकी उत्पत्ति	६७
मूर्च्छारोगकी संख्या और लक्षण	११
वातकी मूर्च्छाके लक्षण	११
पित्तकी मूर्च्छाके लक्षण	६८
कफकी मूर्च्छाके लक्षण	११
सन्निपातकी मूर्च्छाके लक्षण	११
रुधिरकी मूर्च्छाके लक्षण	११
मद्यकी मूर्च्छाके लक्षण	११
धिपकी मूर्च्छाके लक्षण	११
शूलरोगके लक्षण	६९

दाह

दाह रोगके लक्षण	११
धातुक्षीण दाहके लक्षण	११

विषय.

पृष्ठ.

विषय.

पृष्ठ.

मदात्यय

मदात्यय रोगके लक्षण	६०
अयुक्ति मद्यपानके दूपग	११
युक्तिसे मद्यपानके गुण	११
प्रथम मद्यपानके गुण	६१
द्वितीय मद्यपानके अवगुण....	११
तृतीय मद्यपानके अवगुण	११
चतुर्थ मद्यपानके अवगुण	११
पित्त मदात्ययके लक्षण	६२
कफ मदात्ययके लक्षण	११
वातमदात्ययके लक्षण	११
त्रिदोष मदात्ययके लक्षण	११
मद्यपानोत्थ अजीर्णके लक्षण	६३
मद्यपानोत्थ भ्रमके लक्षण	११

उन्माद

उन्माद रोगके लक्षण	११
उन्माद रोगका हेतु	११
वात उन्मादके लक्षण	६४
पित्तउन्मादके लक्षण	११
कफ उन्मादके लक्षण	६४
सन्निपातउन्मादके लक्षण	११
औरभी कारणउन्मादके लक्षण	६५
भूतोन्मादकेलक्षण	११
दैन्यसे पैदा उन्मादकेलक्षण	११
गन्धर्व उन्माहो उसके लक्षण	११
यक्षप्रस्तके लक्षण	६६
महासर्पप्रस्तके लक्षण	११
पित्रीश्वरप्रस्तनरके लक्षण	११
राक्षसप्रस्तनरके लक्षण	६७
प्रेतप्रस्तके लक्षण	११
देव आदिकोके प्रवेशका लक्षण	११

अपस्मार

वातकी मृगीरोगके लक्षण	६८
पित्तकी मृगीरोगके लक्षण	११
कफकी मृगीके लक्षण	११
सन्निपातकी मृगीके लक्षण	६९
वातव्याधि	
वातव्याधि रोगके लक्षण	११
संघ्नीग वातके लक्षण	७०
त्वचामें प्राप्त वातके लक्षण	११
रुधिरमें प्राप्त वातके लक्षण....	७१
मांस मेदागत वातके लक्षण	११
मज्जास्थिगत वातके लक्षण....	११
शुक्रगत वातके लक्षण	११
नाडीगतवातके लक्षण	११
कोष्ठगत वातके लक्षण	७२
सर्व्यागगत वातके लक्षण	११
सन्धिमें स्थित वातके लक्षण	११
पाँच वातके जुदे २ लक्षण	७२
पित्तान्वित प्राणवातके लक्षण	११
कफान्वित प्राणवातके लक्षण	७३
कफ पित्तयुक्त उदान वातके ल०	११
पित्तकफयुक्त समान वातके ल०	११
पित्तयुक्त अपान वातके लक्षण	११
कफयुक्त अपान वातके लक्षण	११
पित्त कफयुक्तव्यान वातके लक्षण	११
उर्ध्वगत वातके लक्षण	७४
अधोगत वातके लक्षण	११
पित्तयुक्तवातके लक्षण	११
कफयुक्त वातके लक्षण	११
कफपित्तयुक्त वातके लक्षण	७५
अधोभागमें प्राप्त वातके लक्षण	११

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
वातरक्त		जंभाई रोकनेके उपद्रव	११
वातरक्तकी उत्पत्ति	११	आंसू रोकनेके उपद्रव	११
वातरक्तके लक्षण	७६	छीक रोकनेके उपद्रव	११
पित्तान्वित वातरक्तके लक्षण	११	डकार रोकनेके उपद्रव	८४
कफयुक्त वातरक्तके लक्षण	११	रद रोकनेके उपद्रव श्लो० ११	११
वातरक्तके उपद्रव	११	मूख मारनेके उपद्रव	११
उरुस्तम्भ		प्यासरोकनेके उपद्रव	११
उरुस्तम्भ रोगकी संप्राप्ति	७७	श्वास रोकनेके उपद्रव	११
उरुस्तम्भके लक्षण	११	निद्रा रोकनेके उपद्रव	११
आमवात रोगकी उत्पत्ति	७८	उदावर्त रोग होनेके कारण	८९
आमवात रोगके लक्षण	११	वातके उदावर्तके लक्षण श्लो० १७	११
वातजन्य आमरोगके लक्षण	११	गुल्मरोग	
पित्तसे कुपित आमवातके लक्षण	११	गुल्म रोगकी संख्या	११
कफसे कुपित आमवातके लक्षण	७९	गुल्मरोगका स्वरूप	८९
साध्यासाध्यकष्टसाध्य आमवातल०	११	वात गुल्मके लक्षण	११
त्रिदोषज आमवातके लक्षण	११	पित्तगुल्मके लक्षण....	८६
परिणामशूल		कफ गुल्मके लक्षण	११
शूलरोगकी उत्पत्ति	७९	रक्तगुल्मके लक्षण....	११
बाद्रीके शूलका लक्षण	८०	असाध्य गुल्मके लक्षण	८७
पित्तके शूलका लक्षण	११	सन्निपातज गुल्मके लक्षण....	११
कफके शूलका लक्षण	८१	साध्ययाप्य असाध्यके लक्षण	११
वातकफ शूलके लक्षण श्लो० १०	११	गुल्मरोगके दश उपद्रव	११
वातपित्तजनित शूलके लक्षण श्लोक ११	११	हृद्रोग	
शूलकी उत्पत्ति	११	हृद्रोग निदान	११
असाध्य शूलके लक्षण	८२	बाद्रीके हृद्रोगके लक्षण	८८
शूलके दश उपद्रव	११	पित्तके हृद्रोगके लक्षण	११
आनाह उदावर्त		कफके हृद्रोगके लक्षण	११
आनाह रोगकी उत्पत्ति	११	सन्निपातके हृद्रोगके लक्षण	११
अधेवातरोकनेसे उदावर्तके लक्षण	८३	कृमिरोगके हृद्रोगके लक्षण	११
विश्रांश रोकनेके उपद्रव	११	हृदय रोगके उपद्रव	११
मूत्र रोकनेके उपद्रव	११		

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
मूत्रकृच्छ्र		कफ वातके विस्फोटकके लक्षण	९८
मूत्रकृच्छ्रकी उत्पत्ति	८९	कफ पित्तके विस्फोटकके लक्षण	११
वातके मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	११	सन्निपातकी पीडिकाके लक्षण	११
पित्तके मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	९०	त्वचागत पीडिकाके लक्षण	११
कफके मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	११	रक्तमें गत पीडिकाके लक्षण	११
मूत्रकृच्छ्रमें साध्यासाध्यपरिज्ञान	११	मांसमें प्राप्त पीडिकाके लक्षण	११
मूत्राघातकी उत्पत्ति	११	मेदामें प्राप्त पीडिकाके लक्षण	११
वातके मूत्राघातके लक्षण	९१	मज्जामें प्राप्त पीडिकाके लक्षण	११
पित्तके मूत्राघातके लक्षण	११	हाडमें प्राप्त पीडिकाके लक्षण	९९
कफके मूत्राघातके लक्षण	११	शुक्रमें प्राप्त पीडिकाके लक्षण	११
अउमरी		असाध्य शीतलाके लक्षण	११
पथरी रोगकी उत्पत्ति ..	९२	पिटिका	
वातकी पथरीके लक्षण .	११	पिटिकाके दशभेद	१००
पित्तकी पथरीके लक्षण ...	९२	प्रमेहसे उत्पन्न पिटिकाके लक्षण	११
कफकी पथरीके लक्षण ...	९३	वर्णसे पिटिकाके लक्षण	११
वीर्यरोधकी पथरीके लक्षण	११	सराविकाके लक्षण	११
प्रमेह		कच्छपिका जाळनी सर्पपिकापुत्रि-	
प्रमेहरोगकी उत्पत्ति	९४	णिके लक्षण	१०१
वातके प्रमेहका लक्षण	११	विद्रधिका विदारिका विततांजली	
पित्तके प्रमेहका लक्षण	११	के लक्षण	११
कफके प्रमेहका लक्षण ...	११	पिटिका विनाशार्थ पूजा ...	११
प्रमेहरहितके लक्षण ...	९५	मेदवृद्धि	
साध्यासाध्यकष्टसाध्य प्रमेहके ल.	११	मेदरोगकी उत्पत्ति	१०२
पीडिका		मेदरोग लक्षण ...	११
पीडिका रोगकी उत्पत्ति ...	११	गण्डमाला	
पीडिका रोगके लक्षण ...	११	वातकी गण्डमालाके लक्षण	११
पीडिका रोगका पूर्वरूप	९६	पित्तकी गण्डमालाके लक्षण	१०३
वातकी पीडिकाके लक्षण	११	कफकी गण्डमालाके लक्षण	११
पित्तकी पीडिकाके लक्षण	११	क्षीपद	
कफकी पीडिकाके लक्षण ...	११	क्षीपदके लक्षण ...	११
वातपित्तकी पीडिकाके लक्षण ...	९७	वातके क्षीपदका लक्षण	११

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
कण्ठरोगके लक्षण	...	नासारोग	
नासुराकके लक्षण	...	पीनसरोगके लक्षण	१३९
गलरोग		क्षवधुरोगके लक्षण	१४
गलरोगका निदान	१२९	पूतिनश्यके लक्षण	१४
वातरोगिणिके लक्षण	१२	नासापाकके लक्षण	१४
पित्तरोगिणिके लक्षण	१२	पूयरक्तके लक्षण	१४
कफरोगिणिके लक्षण	१२	प्रदीप्तरोगके लक्षण	१४
रुधिरकी रोहिणिके लक्षण	१२	प्रतीनाहके लक्षण	१३६
कंठशाब्दकरोगके लक्षण	१३०	नासाशोषके लक्षण	१३
अधिजिह्वाका लक्षण	१३	पक्षपीनसके लक्षण	१३
बलासाक्षरोगके लक्षण	१३	पीनसरोगकी उत्पत्ति	१३
नासाशतशोकके लक्षण	१३	वातके पीनसरोगके लक्षण	१३
गलायुरोगके लक्षण	१३	पित्तके पीनसके लक्षण	१३७
बन्धविद्रुधिके लक्षण	१३१	कफके पीनसके लक्षण	१३
गलघोरोगके लक्षण	१३	रुधिरके पीनसके लक्षण	१३
वातपित्तकफकी मुखपिडिकाके ल०	१३	सन्निपातके पीनसके लक्षण	१३
कर्णरोग		नेत्ररोग	
कर्णरोगनिदान	१३२	नेत्ररोगोत्पत्ति	१३
कर्णनादके लक्षण	१३	वातके नेत्ररोगके लक्षण	१३८
वधिरके लक्षण	१३	पित्तके नेत्ररोगके लक्षण	१३
शब्ददृष्टिके लक्षण	१३	कफके नेत्ररोगके लक्षण	१३
श्रावगदरोगके लक्षण	१३	नेत्रमन्थके लक्षण	१३
कर्णगन्धके लक्षण	१३	वातभ्रमण रोगके लक्षण	१३९
प्रतीनाहके लक्षण	१३३	कफसे नेत्रपाकके लक्षण	१३
कृमिकर्णके लक्षण	१३	नेत्रपाकके लक्षण	१३
कर्णपाकके लक्षण	१३	मोतियाविन्दके लक्षण	१३
पित्तकर्णपाकके लक्षण	१३	असाध्यमोतियाविन्दके लक्षण	१४०
कफकर्णपाकके लक्षण	१३४	नेत्रके प्रथमपटलके रोग	१४
वातके भ्रूतिकर्णरोगके लक्षण	१४	नेत्रके द्वितीयपटलके रोग	१४
पित्तके भ्रूतिकर्णरोगके लक्षण	१४	नेत्रके तृतीयपटलके रोग	१४
कफके भ्रूतिकर्णरोगके लक्षण	१४	नेत्रके चतुर्थपटलके रोग	१४१

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
वातके नेत्ररोगके लक्षण	१४१	कफकी योनिके लक्षण	१४७
पित्तके नेत्ररोगके लक्षण	"	वातसेपित्तसेकफसे जिसका, पुण्य नष्ट हुआ हो	
कफके नेत्ररोगके लक्षण	"	उसके लक्षण ...	"
ऊर्ध्वअधोगतदृष्टिरोगके लक्षण	"	विप्टताके लक्षण	"
धूम्रदर्शी अर्थात् रतौंधीके लक्षण	"	भूतिगन्धके लक्षण ...	"
गंभीररोगके लक्षण ...	"	वंध्यायोनिके लक्षण ...	१४८
पूयलाह्यरोगके लक्षण ...	१४२	खंडितायोनिके लक्षण	"
उपनाहके लक्षण ...	"	प्रसूति	
पारिवाहररोगके लक्षण ...	"	प्रसूतिरोगकी उत्पत्ति	"
ब्राह्मणरोगके लक्षण ...	"	स्नाय और पातकालक्षण	"
वातपित्तकफकी पिडिकाके लक्षण ...	"	प्रसूतिरोगके लक्षण ...	१४९
मस्तक		प्रसूतिरोगके उपद्रव ...	"
मस्तकरोगकी उत्पत्ति ...	१४३	वालरोग	
वातपित्तकफके मस्तकरोग	"	वातदुग्धके गुण ...	"
रुधिरके मस्तकरोग	"	पित्तदूषित दुग्धके लक्षण	"
सन्निपातके मस्तकरोग	"	कफदूषितदुग्धके लक्षण	१५०
कृमिके मस्तकरोगके लक्षण ...	१४४	दोपराहित दुग्धकी परीक्षा...	"
आधाशीशीके लक्षण ...	"	दोपहानदुग्धके गुण	"
स्त्रीरोग		वालकी अन्तर्गतपीडा जाननेका	
प्रदररोगकी उत्पत्ति	"	उपाय	"
वातपित्तके प्रदरके लक्षण ...	१४५	कुक्कुनपारिगर्भिकके लक्षण ...	"
कफसे प्रदरके लक्षण ...	"	तालुकठकतालुपाकके लक्षण	१५१
सन्निपातके प्रदरके लक्षण	"	सामान्यग्रहयुक्तके लक्षण ...	"
योनिकन्दकी उत्पत्ति ...	"	स्कन्दग्रहशकुनाग्रिहग्रस्तके लक्षण ...	"
पित्तके योनिकन्दके लक्षण ...	"	रेवताग्रहग्रस्तके लक्षण ...	"
कफके योनिकन्दके लक्षण	१४६	भूतनाग्रह ग्रस्तके लक्षण ...	"
सन्निपातकेयोनिकन्दके लक्षण	"	मडिताग्रहनेगमेयग्रहग्रस्तके लक्षण ...	१५२
पंडाल्य और सूचीमुखयोनिके लक्षण ...	"	विषरोग	
वातकी योनिके लक्षण ...	१४७	स्थावर जंगमविष ...	"
पित्तकी योनिके लक्षण ...	"	स्थावर विषके लक्षण ...	"
		जंगमविषके लक्षण ...	"
		विषदेनेवालेकी परीक्षा ...	१५३

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
मूत्रपत्रफलविपके लक्षण	१९३	मक्खी और नवके विपके लक्षण	१९६
शूद्र गोद लचाके विपके लक्षण	१९३	सर्पादिक काटेका असाध्य लक्षण	१९७
दृग्धधातुके विपके लक्षण	१९४	दूषाविपके लक्षण	१९७
सर्पकाटेके लक्षण	१९४	मूत्रपरीक्षा	
देशविशेषकाल और नक्षत्र विशेषमें सर्प- काटे उसके लक्षण	१९४	साध्यासाध्यमनुष्यकी मूत्रपरीक्षा	१९७
मूषकके विपके लक्षण	१९४	वातपित्तकफसे मूत्रलक्षण	१९८
कोटआदि विपके लक्षण	१९५	त्रिदोष और त्रिदोषके मूत्रकी परीक्षा	१९८
कालेर्वाहूके विपके लक्षण	१९५	नपुंसकभेद और लक्षण	१९९
बर्हीसर्पकाटेके लक्षण	१९५	आसेक्य नपुंसकके लक्षण	१९९
मैडक मडली जोफ छिपकली शतपर्दीके विपके लक्षण	१९५	सौगन्धिक नपुंसकके लक्षण	१९९
मन्धरके विपके लक्षण	१९६	दुर्भिकापंढके लक्षण	१९९
लताविपके लक्षण	१९६	ईर्ष्यक पंढके लक्षण	१९९
		महापंढके लक्षण	१९९
		नारीपंढके लक्षण	१९९

इति हंसराजस्य विषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥



श्रीगणेशाय नमः ।

हंसराजनिदानम् ।

भाषाटीकासहितम् ।



हंसराजकवि हंसराज ग्रन्थके कर्ता ग्रन्थके आदिमं शिष्टाचार परिपालनके निमित्त और ग्रन्थकी निर्विघ्नसमाप्तिके निमित्त मले प्रकार उचित अपने इष्टदेव श्रीवालाजीको ध्यानपूर्वक सग्वरा छंद करके मंगलाचरण करतेहैं ॥ ध्यायेदिति ।

ध्यायेद्वालाम्प्रभाते विकसितवदनाम्फुल्लराजीवनेत्रां मुक्तावै-
दूर्यगर्भैरुचिरकनकजैर्भूपणैर्भूपितांगीम् ॥ विद्युत्कोटिच्छटाभां
परिमलबहुलां दिव्यसिंहासनस्थां गीर्द्वी तस्य दासी भवति सुर-
वनं नन्दनं केलिगेहम् ॥१॥ धत्ते ते चरणांबुजं स्वहृदये मातर्नरो
योऽनिशं तस्याऽऽस्ये परिनर्त्तते प्रतिदिनं वाग्गद्यपद्यात्मिका ॥
लक्ष्मीस्तस्य गृहे स्थिता करतले मुक्तिः स्थिताः सिद्धयो द्वारे
तस्य विभूषिताश्च निधयस्तिष्ठन्ति नित्यं मुदा ॥ २ ॥

अर्थ—प्रातःसमय श्रीवालाका ध्यान करना. कैसा है बाला कि प्रफुल्लित मुख, फूटे कमलके समान नेत्रवाली, मांती और वैदूर्यमणि करके जटित मुन्दर सुवर्णके भूषणों करके भूषित देह, जिसकी कोटि विजलीके समान प्रकाशवाली अतिशय सुगन्धयुक्त देह श्रेष्ठसिंहासनपर स्थित, ऐसी बालाका जो मनुष्य इस प्रकार ध्यान करता है उसकी सरस्वती दासी होती है. और देवताका नन्दनवन क्रीडाका स्थान होता है ॥ १ ॥ हे माता जो मनुष्यतेरे चरणकमलोका अपने हृदयमें निरन्तर ध्यान करता है तिसके मुखमें गद्यपद्य रचनारूपी सरस्वती निम्न नाचती है । घरमें लक्ष्मी स्थिर है मोक्ष उसके हाथमें है, अष्टसिद्धि उसके द्वारपर खड़ी रहे और नवनिधि नित्य ध्यानपूर्वक स्थित रहती है । इस श्लोकका छन्द शार्दूलविक्रीडित है ॥ २ ॥

जगन्मातर्नमस्तेऽस्तु वरदे मंगले शिवे ॥ ग्रन्थकर्तुं प्रवृत्तस्य साहा-
य्यं कुरु मेऽनिशम् ॥ ३ ॥ अहमपि जगद्वे दृश्यतां दिव्यदृष्ट्या
न भवति तव हानिः कापि दृष्टेः कदाचित् ॥ स्वजनहितपरायाः

शंकरस्य प्रियाया अमृतरसहृदिन्याऽहं सनाथो भवामि ॥ १ ॥

भिषक्चक्रचित्तोत्सवं जाड्यनाशं करिष्याम्यहं वालवोधाय शा-
स्त्रम् ॥ नमस्कृत्य धन्वंतरि वैद्यराजं जगद्रोगविध्वंसनं स्वेन नाम्ना ५

अर्थ—हे जगन्नाथः ! हे वरद ! हे मंगले ! हे शिवे ! तुम्हारे अर्थ नमस्कार हे ग्रन्थकरनेको प्रवृत्त मेरी निलत्तर सहाय करो ॥ १ ॥ हे जगदभ्ये ! मुझे दिव्य दृष्टिसे देख, तेरी दृष्टिकी कर्मा कहीं हानि नहीं हो। घैसां तुमहो कि अपने भक्तजनके हितमें तपस् और श्रांशंकरकी प्यारी पत्नी हो। अमृतरसकी सरोवरी में तुम्हारी दृष्टिसे सनाथ होऊंगा इस श्लोकका मालिनी नाम छन्दहे ॥ ४ ॥ मैं वैद्यके राजा धन्वन्तरिको नमस्कार कर वालकके बोधके अर्थ जगत्के रोगोंका नाशक वैद्य समुदायके चित्तको उत्सव कारक मूर्खतानाशक ऐसा अपने नाम करके अर्थात् हंमराज नाम करके ग्रन्थको करताहूँ। इस श्लोकके छन्दकानाम भुजंगप्रयात है ॥ ५ ॥

ब्रह्मेशो गरुडध्वजो भृगुसुतो भारद्वाजो गौतमो हारीतश्चरको-

त्रिकः सुरगुरुधन्वतरिमाधवः ॥ नासत्यो नकुलः पराशरमुनिर्दामोदरो वाग्भटो येऽन्ये वैद्यविशारदा मुनिवरास्तेभ्यो परेभ्यो न-

मः ॥६॥ आत्रेयधन्वंतरिसुश्रुतानां नासत्यहारीतकमाधवानाम् ॥

सुपेण्डामोदरवाग्भटानां दक्षस्वयंभूश्चरकादिकानाम् ॥ ७ ॥

एषां समालोक्य मतं मुहुर्मुहुर्ग्रथो मनोज्ञः क्रियते मयाऽधुना ॥

पद्यैरदोषै रचितोऽल्पमेधसां ज्ञानाय नूनं भिषजात्ममानिनाम् ॥८॥

अर्थ—ब्रह्मा, शिव, विष्णु, शुक, भरद्वाज, गौतम, हारीत, चरक, अत्रि, बृहस्पति, धन्वतरि, माधव, अश्विनीकुमार, नकुल, पराशरमुनि, दामोदर, वाग्भट और जे वैद्योंमें चतुर मुनियोंमें श्रेष्ठ उन सत्रनके अर्थ नमस्कार है ॥ ६ ॥ आत्रेय, धन्वंतरि, सुश्रुत, अश्विनीकुमार, हारीत, माधव, सुपेण, दामोदर, वाग्भट, सनत्कुमार और चरकादिक ॥ ७ ॥ इनके मत बारबार देखकर वैद्य ऐसे अपने आपके माने अल्पबुद्धि बोरनेको निश्चयज्ञानके अर्थ दोषकारके रहित जे पद तीन करके गचित मन्को प्रसन्न करनेवाला अर्थ मैं ग्रंथरचताहूँ ॥ ८ ॥

दर्शनस्पर्शनप्रश्नै रोगिणो रोगनिश्चयम् ॥ आदौ ज्ञात्वा ततः

कुर्याच्चिकित्सां भिषजांवरः ॥ ९ ॥ देशं बलं वयः कालं गुर्विणी-

गदमौषधम् ॥ बृद्धवैद्यमतं ज्ञात्वा चिकित्सामारभेत्ततः ॥ १० ॥

अर्थ—देखना स्पर्शकरना पूछना इन तीन प्रकारसे पहिले रोगीके रोगका निश्चय करके वैद्योंमें श्रेष्ठ फिर रोगीको चिकित्सा करे ॥ ९ ॥ देश बल अवस्था काल गर्भिणीका रोग औषध और बृद्धवैद्यके मतको जानके फिर चिकित्सा करे ॥ १० ॥

अथनाडीलक्षणानि ।

करांगुष्ठमूलोद्भवा प्राणभूता नृणां रोगिणां साक्षिणी सौख्यभा-
जाम्॥जलौकोरगाणा गतिं नाडिका या विधत्ते निरुक्ता च वाता-
त्मिकासा ॥११॥ विधत्ते गतिं काकमंडूकयोर्या मुनीन्द्रेनिरुक्ता च
पित्तात्मिकासा ॥ शिरा हंसपारावतानां गतिं या दधाति स्थिरा
श्लेष्मकोपान्वितासा ॥ १२ ॥ नाडी चंचलतां कचिच्छथिलतां
शैत्यं कचिच्चोष्णतां धत्ते मंदगतिं द्विदोषकुपिता स्थानच्युतिं
क्षीणताम्॥वक्राकारगतिं कचिद्वितनुते प्राप्नोति कंपं कचिद्वैकल्यं
विदधाति याति कुपिता मासान्तरे सानिशम् ॥ १३ ॥

अर्थ—प्रथम नाडी परीक्षा लिये है, हाथके अँगुठोंके निकट रोगी मनुष्यके सुखदुःखकी साक्षी
देनेवाली नाडी यदि जौक वा सर्प कीनी चाल चले तो वातकी नाडी कहिये ॥ ११ ॥ और जो
नाडी काकमंडूककीसी चाल चले तो मुनियोंके पित्तकी नाडी कहिये, और जो हंस कबूतर कीसी
चाल चले तो कर्मकोपकी नाडी कहिये ॥ १२ ॥ द्विदोष कोपकी नाडी चञ्चल कभी शिथिल
कभी शीतल कभी गरम और मंद विकलताको प्राप्त हुई गमन करेहै और स्थानको छोटेदेय और
बहुत धीरे चले, कभी ठेकी चले, कभी कभी काँपे, विकलताको प्राप्त हुई ऐसी नाडी कए मही-
नेके भीतर रोगीको मार डाले ॥ १३ ॥

त्रिदोषान्विता नाडिका चंचलाष्णस्फुरद्वित्रिरूपा त्वरायुग्विभि-
न्ना ॥ गतिं तैत्तरीयां विधत्तेतिकंपं क्षणं क्षीणतां याति मूर्च्छां
कचित्सा ॥ १४ ॥ शिरा यस्य वातादिता पित्तदग्धा कफेनातिको-
पेन नाडी कृता सा॥ गदी सोल्पकालेन मृत्योर्विदीर्णं मुखे यास्य-
ते दंतदंष्ट्राभिकीर्णं ॥ १५ ॥

अर्थ—संनिपातकी नाडी चञ्चल और गरम और दो तीन प्रकारकी चाल चले, वह नाडी जल्दी
आयुकी काटनेवाली जाननी, और तीतरकीसी चाल चले और बहुत काँपे तथा मंदचले और कभी
चलनेसे रुके जाय वह भी अनाथ ॥ १४ ॥ जिस रोगीकी नाडी वातकरके दूषित, पित्त करके दग्ध,
और कफके कोपकरके गंदित हो वह रोगी थोड़े कालमें मीतके खुलेहुये दंतदांढा करके युक्त मुख-
में जायगा अर्थात् मरेगा ॥ १५ ॥

शिरा यस्य सूक्ष्माऽतिशीतान्विता वा स रोगी न जीवेत्प्रयत्ने-
कदाचित्॥चलद्वित्रिरूपा त्रिदोषान्विता वा स रोगी यमस्यालये
शीघ्रगता ॥ १६ ॥ नाडी शीघ्रगतिं धत्ते ज्वरकोपेन सोष्णताम् ॥
रक्ताधिक्येन सा कोष्णा गुर्वी वेगवती भवेत् ॥ १७ ॥ सुखिनो
मनुजस्य शिरापरितः स्थिरतां समुपैति दधाति बलम्॥क्षुधितस्य
भवेच्चपला सततं तृपितस्य शिरा व्रजति स्थिरताम् ॥ १८ ॥

अर्थ—जिस रोगीकी नाडी अतिमंद चले, और शीत करके युक्त हो वह रोगी अनेक यत्नोंके करनेसेभी नहीं जीवे, और जिस रोगीकी नाडी त्रिदोषयुक्त दो तीन प्रकारकी चले, वह रोगी जल्दी यमराजके घर पहुँचेगा ॥ १६ ॥ ज्वरके कोपसे नाडी गरम और जल्दी चलतीहै, और अधिक विगटनेकी नाडी गरम और भारी तथा जल्दी चलतीहै ॥ १७ ॥ सुखी मनुष्यकी नाडी बलयुक्त और स्थिर चलती है, और क्षुधित मनुष्यकी नाडी चपल और भोजन करेकी नाडी स्थिर चलतीहै इस श्लोकके छन्दका नाम तोटकहतेहै ॥ १८ ॥

मोहेन कामेन भयेन चिंतया क्रोधेन लोभेन बहुश्रमेण वा ॥
मंदाग्निद्वेगतरेण पीडया स्यान्नाडिका मन्दतरा नृणांभृशम् १९

इति हंसराजकृते हंसराजनिदाने नाडीलक्षणवर्णनम्

अर्थ—मोहसे कामसे भयसे चिन्तासे क्रोधसे बहुत परिश्रमसे मदाग्निसे उद्वेगसे पीडासे मनुष्यकी नाडी निरंतर मंद चलती है ॥ १९ ॥ इति श्रानाथुदत्तयभपाठकनिर्मितहंसराजार्थबोधिन्यां भाषाटीकायां नाडीलक्षण समाप्तम् ॥

दोषैर्विनानरोगाः स्युर्नदोषा हेतुभिर्विना ॥ हेतवः कर्मसम्भूता-
स्तान्हेतून्कथयाम्यहम् ॥१॥ (अथवातकोपकारकवस्तु) प्राणा-
पानगतेर्विघातकरणैः क्षुन्मूत्रतृदूरोधनेर्व्याधिमव्रतशोकशीतस-
लिलस्नानैः स्त्रियाः सेवनैः॥ रुक्षाम्लामिषमिष्टमिष्टकटुकैरत्यंबुपा-
नाशनैर्वर्षाशीतशरत्सुचैत्रसमयेवातस्यकोपोभवेत् २ (अथपित्तको-
पकारकवस्तु) तीक्ष्णोष्णाम्लविदाहिशाककटुकैः क्षारान्नपित्ताश-
नैर्व्याधामाध्वपरिश्रमेर्दिनपतेरात्तापसंसेवनैः ॥ क्रोधोष्णोत्सवनैः
कपायमदिरापानैर्निशाजागैर्वर्षाग्रीष्मशरत्सुमव्यदिवसे पित्तस्य
कोपोभवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ-विना दोपोंके रोग नहीं होते और विना हेतुओंके दोष नहीं होते और हेतु कर्मसे पैदा होते हैं सो उन्हीं हेतुओंको मैं कहता हूँ ॥ १ ॥ प्राण और अपान पवनकी गति विगड़नेसे भ्रूंस प्यास मूत्र इनके रोकनेसे दृष्ट कसरतके करनेसे व्रतके करने शीतसे शीतल जलके नहानेसे बहुत स्त्रीके संगसे रूखा खट्टा मीठा पिसा कड़ुआ ऐसे पदार्थके भोजनसे बहुत जल और भोजनके करनेसे वर्षा ऋतु शरदऋतु शीतकाल और चैत्रके महीनेमें वात कुपित होता है ॥ २ ॥ तीक्ष्णामिस्त्र आदि गरम खट्टा टाहका करनेवाल पदार्थ शाक कड़ुआ खार मिला अन्न और पित्तकारक ऐसे भोजनके करनेसे दृष्टकसरतके करनेसे रास्ताके चटनेसे पारश्रमके करनेसे धाममें रहनेसे क्रोधसे गरमीसे ग्वरने कूदनेसे कसेली वस्तु मयंकपीनेसे गध्रिमे जागनेसे वर्षाऋतु शरदऋतु मध्याह्नमें पित्तकाप करता है ॥ ३ ॥

कफकोपकारकवस्तु ॥

क्षारक्षीरविकारशोकमधुरैः पानाशनातिक्रमेर्मूलस्निग्धगरिष्ठकं-
दपिशितैःशीताम्लमापाशनैः ॥ नासानेत्रमुखेपुष्पमरजसोपात्तैर्म-
हाद्योपणैः श्लेष्माकोपनरंद्धातिशिशिरे हेमन्तकेमाधवे ॥ ४ ॥

अर्थ-खार दूधकापदार्थ शाक मिष्ठ मूत्र प्यानके समयको उलटवन करनेसे कंद चिकना गरिष्ठ मूल पदार्थ पिसा अन्न शीतल गन्दा उर्द इनके खानेसे नाक नेत्र मुख इनमें धुंयेके और रजके मीरनेसे पुकारनेसे शिशिरऋतुमें हेमन्तऋतुमें वैशाखमें कफ कोप करता है ॥ ४ ॥

ज्वराणांघोररूपाणां यान्तिचिह्नानितान्यहम् ॥ वक्ष्येज्ञानेननेने-
वरोगः संज्ञायते बुधैः ॥ ५ ॥ (तस्य प्रागुत्पत्तिमाह) दक्षापमानसंकु-
च्छरुद्रनिश्वाससम्भवः ॥ ज्वरोऽष्टधापृथग्द्वंद्वसंघातागन्तुजः स्मृतः
॥ १ ॥ (ज्वरस्य संग्राप्तिमाह) मिथ्याहारविहारस्य दोषाद्यामाश-
याश्रयाः ॥ बहिर्निरस्यकोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्यूरसानुगाः ॥ २ ॥ (ज्वरके
पूर्वरूपको कहैहैं) तापः शरीरे गुरुताऽलसत्वं सर्वांगपीडा विरस-
त्वमास्ये ॥ शीतःश्रमो वीर्यबलस्य हानिः ज्वराग्रचिह्नानि वदन्ति
संतः ॥ ६ ॥ (वातज्वरकेलक्षण) जृम्भोद्गारतृपाः कपायवृद्धनं नि-
द्राविनाशोऽरुचिः श्वासोरुक्षवपुर्भ्रमोविकलताशोपो मुखेऽक्षि-
स्त्रवः ॥ हिक्काध्मानविवर्णतांगचलनं रोमोद्गमौगव्यथा दृष्ट्यासौत्र-
विगुंजनं भवति तद्वातज्वरे लक्षणम् ॥ ७ ॥

अर्थ-घोररूपज्वरके चिह्न मैं कहताहूँ जिनचिन्ह अर्थात् लक्षणों करके पंडितोंकरके रोग सबजा ने जायँ ॥ ५ ॥ दक्षके करेहुये तिरस्कारसे क्रोधित शिवकी श्वासे उत्पन्न हुआ ज्वर आठ प्रकारका १ वातसे, २ पित्तसे, ३ कफसे, ४ वात पित्तसे, ५ वातकफसे, ६ पित्त कफसे, ७ वातपित्तकफसे, ८ आगंतुजसे ॥१॥ मनुष्योंके मिथ्या आहार और मिथ्या विहारसे आमाशयमें रहते जो वात पित्त कफ सो आमाशयको बिगाड़ करके फिर रसको बिगाड़ै और कोंटकी अग्निकी गर्माको बाहर निकाल देहको तता करदेवे उसीको ज्वर कहते हैं ॥२॥ इतिमाधवकारः ॥ शरीरमें तप, तथा शरीरका भारोपना, आलस्य और सब शरीरमें हड़कल, मुखमें स्वाद न रहे, शीतका लगना, अनायास श्रमनाल्लभ हो, वीर्य बलका नाश होना, ये चिन्ह ज्वरके पूर्व होते हैं ॥ ६ ॥ जैभाई, डकार, तथा प्यासका लगना, मुखका कड़ुआहोना, नादिका न आना अरुचि श्वास, शरीरका गूखापन, भ्रम तथा शरीरमें बेकली, मुख सूखे, आंखसे आसूका पडना, हिचकी आना, पेट फूटना शरीरका औरही वर्ण हो जाना, अंगका फडकना, रोमांचका होना, शरीरमें ग्यथा सूजी उलटीका आना, आंतोंका बोलना, ये लक्षण वातज्वरमें होतेहैं ॥ ७ ॥

(पित्तज्वरकेलक्षण) हृत्कंटोष्ठकरांग्रिदाहमरतिं स्फोटं तृपा सं-
 भ्रममूष्माणं श्वसनं मुखे कटुकतां मूर्च्छामतीसारकम् ॥ हृत्कंपं
 नयनेरुणे विकलतां शीते रुचिं शोषणं स्वेदं देहगतः करोति कुपित्तः
 पित्तज्वरोन्तर्व्यथाम् ॥८॥ (श्लेष्मज्वरलक्षणं) स्तैमित्यं वमनं जडत्व-
 मलसं निष्ठीवनं गौरवं माधुर्यं वदने तनौ मलिनतां स्वेदं च रोमो-
 द्रमम् ॥ कंठे घुरघुरतां च पीतनयनं निद्रां त्वचि स्निग्धतां कासं शीर्षं
 रुजं करोति विकलं श्लेष्मज्वरोद्भव्यथाम् ॥९॥ (वातपित्तज्वरः) भ्रमो
 रोमहर्षोरुचिः श्वासकासौ तृपांगेषुदाहः शिरोर्तिर्वामित्वम् ॥ विनि-
 द्रांगपीडातिशोपोल्पमूर्च्छा ज्वरे वातपित्तोद्भवे चिहमेतत् ॥१०॥

अर्थ-हृदय कंठ ओंठ हाथ पांव इनमें दाह होना, इच्छाका नाश, हड कलका होना, प्यास, भ्रम, गर्मा, श्वास, कड़ुआ मुख, मूर्च्छा, दस्त, हृदयमें कंप, नेत्र लाल, देहमें बेकली शीतलताका प्यारालगना, मुखसूखे खेदका होना, अन्तःकर्णमें दुःख, ये लक्षण कुपित्तपित्तज्वर देहमें करताहै ॥ ८ ॥ शरीर गोंटकपटसे पोंछे सरिखा माड़महो उलटीका होना, शरीरका जकड़जाना, आलस्य काफका धुकना, देहका भारी होना, मुत्र मीठा हो, देह भेड़ा, पसीनका आना, रोआं खडा होना कंठमें घरघर शब्द होना कुल पालाई लिये नेत्रहो निद्राका आना, त्वचा, चिकनाई लिये होय, रांसी, शिरमें दर्द, ये लक्षण कफज्वरके है ॥ ९ ॥ भ्रम रोमका खटाहोना, अरुचि, श्वास

खांसी, प्यास, देहमें दाह, शिरमें दर्द यमन, निद्राका न आना, देहमें पांडा, अत्यंत मुखका सूखना, मूर्च्छाका आना, ये वात पित्तज्वरके लक्षणहैं ॥ १० ॥

(वातकफज्वर) स्तौमिलंगुरुतारुचिर्विकलता तंद्रा पिपासालसं
कासोङ्गस्फुटतां वमिः श्वसनता शोथोमुखे लितता ॥ स्वेदःपर्वभि-
दारतिश्च जडता रोमोद्गमः शीतता वातश्लेष्मसमुद्भवस्य कथितं
चिह्नं ज्वरस्यर्पिभिः ॥ ११ ॥

अर्थ—शरीर गांठे कपड़ेसे पोछे समान मादूम पडे तथा शरीरका भारीपन अगुचि, बेकली, तंद्रा, प्यास, आलकस, खांसी, अंगोंका फडकना, श्वास, सूजन, कफसे ल्हिसांमुख, पर्साना, गांठोंमें दर्द, चैन पडे जडपना, रोमांच शीत लगना, पुराने ऋषियोंने वात कफ, ज्वरके लक्षण कहे हैं ॥ ११ ॥

(पित्तकफज्वर) तिक्तास्यौ रुचिता कफस्य वदने लेपो मुहुः
शीतता तंद्रासंधिषु वेदना च हृदये दाहः पिपासा भ्रमः ॥ कास
श्वासतरस्तनौ मलिनता स्वेदो वमिर्मोहता चिह्नं पित्तकफज्वरे
मुनिवरैः संकीर्तितंपूर्वजैः ॥ १२ ॥ (तेरहसन्निपातोंकेनाम)संधिकश्चां-
तकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः ॥ शीताङ्गस्तंद्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जश्च
कर्णकः ॥ विख्यातो भुग्नेत्रश्च रक्तष्ठीवी प्रलापकः ॥ जिह्वकश्चेत्य-
भिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदश ॥ इतिसंघहीतपाठः ॥ तेषां मर्यादा ।
संधिके वासराः सप्त चांतके दशवासराः ॥ रुग्दाहे विंशतिज्ञेया वह्व्य-
ष्टौ चित्तविभ्रमे ॥ पक्षमेकं तु शीताङ्गस्तंद्रिके पंचविंशतिः । विज्ञे-
यावासराश्चैव कंठकुब्जे त्रयोदश । कर्णके च त्रयो मासा भुग्नेत्रे
दिनाष्टकम् । रक्तष्ठीवी दशाहानि चतुर्दशप्रलापके ॥ जिह्वके पो-
डशाहानि कलाभिन्याससंज्ञके । परमायुरिदं प्रोक्तं म्रियते
तत्क्षणादपि ॥

अर्थ—कडुआ मुख, अरुचि, मुख कफसे ल्हिसा रहना, वार-बार जाडा गरमीका लगना, तंद्रा, संधिमें पांडा, हृदयमें दाह, प्यास, भ्रम, खांसी, श्वासका जोर, देहमें मलिनता, स्वेद, यमन, मोह, ये लक्षण पाहिले मुनीश्वरोंने पित्त कफ ज्वरके कहेहैं ॥ १२ ॥ १ संधिक, २ अंतक, ३ रुग्दाह,

४ चित्तविभ्रम, ५ शीतांग, ६ तन्द्रिक, ७ कंठकुब्ज, ८ कर्णक, ९ भुग्ननेत्र, १० रक्तश्रीवी
 ११ प्रलापक, १२ जिह्वक, १३ अभिन्यास, ये तेरहसन्निपातहैं तेरहोंसन्निपातोंको अथवि—संधिककी
 ७ दिनकी, अन्तककी, १० दिन, रुदाहकी २० दिन, चित्त विभ्रमकी २४ दिन, शीतांगकी
 १५ दिन, तंद्रिककी २५ दिन, कंठकुब्जकी १३ दिन, कर्णककी ९० दिन, भुग्ननेत्रकी ८ दिन,
 रक्तश्रीवीकी १० दिन, प्रलापककी १४ दिन, जिह्वककी १६ दिन, अभिन्यासकी १६ दिन कहे
 हैं यह सन्निपातोंको परमावधि कही है परन्तु तत्काल भी रोगी मरजाता है ये श्लोक संगृहीत हैं ॥

(तेरहसन्निपातमें साध्यासाध्यविचार) संधिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्ण-
 कः कंठकुब्जकः । जिह्वकाश्चित्तविभ्रंशः पदसाध्याः सप्तमारकाः ॥
 (संगृहीतपाठः)

अर्थ—संधिक, तंद्रिक, कर्णक, कंठकुब्ज, जिह्वक, चित्तविभ्रंश ये ६ नाभ्य हैं शकी सात
 असाध्य हैं ॥

संधिकसन्निपातकेलक्षण ।

त्रिदोषोत्थिते संधिके सन्निपाते भवेत्संधिपीडाऽस्यशोपोथशूलम् ॥
 भ्रमोवीर्यनिद्राविनाशोतितंद्रा पिपासोष्ठपाको रुचिर्दाहकालौ ॥१३॥

अंतकसन्निपातकेलक्षण ।

करोत्यंगभंगं भ्रमं वेपथुं यः शिरः कंपनं कंडुरं रोदनं च ॥
 प्रलापं सतापं च हिक्कामसाध्यं बुध त्वं विजानीहि तं चांतकाख्यम् १४

चित्तविभ्रमसन्निपातकेलक्षण ।

योमोहाद्बुदति कचिद्विकलतां प्राप्नोति शोकं कचित् फूत्कारं कुरुते
 दधातिमदतां गीतं कचिद्वायते ॥ संतापं सहते मुदं वितनुते वाचं
 भ्रमाद्भापते तंचित्तभ्रमसन्निपातमनिशं जानीहि दुस्साधनम् ॥१५॥

अर्थ—तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुआ जो संधिक सन्निपात तिसके ये लक्षण हैं सन्धीनमें दर्द, मुखकासू-
 रना, शूल, भ्रमवीर्य और निद्राका नाश, तंद्रा, प्यास, आंठोंका पकना, असुचि, दाह और ग्वांसी
 ॥ १३ ॥ अंगोंका टूटना, भ्रम, कम्प और शिरका हिलना ग्वाज तथा रोना, बाहिपातयकना,
 संताप, हिचकीका आना जिसमें ये लक्षण हों उसको हे धैर्य ! तू असाध्य अंतक सन्निपात जान
 ॥ १४ ॥ जो मोहसे रोवे, कभी विकलताको प्राप्त हो कभी शोचकरे कभी फूत्कार करे, कभी
 मस्तपनेको प्राप्त हो, गीतगावे, कभी संताप हो, कभी प्रसन्न होवे, कभी भ्रमसे बकने लगे, ये
 लक्षण जिसमेंहो उमे नहीं उपाय जिसका ऐसा चित्तभ्रम सन्निपात जानो ॥ १५ ॥

रुग्दाहसन्निपातकेलक्षणम् ।

यः शूलं वितनोति दारुणभयं हस्तांग्रिशैत्यं तथा जिह्वां कंठ-
कितां भ्रमं विकलतां मोहं च कंठव्यथाम् ॥ श्वासं कासतरं नि-
रंतरत्तृपां हृत्कंठयोः शोषणं संतापं श्रमरोदनं प्रलपनं जानीहि
रुग्दाहकम् ॥ १६ ॥

शीतांगसन्निपातकेलक्षणम् ।

शीतत्वं विदधाति योखिलतनौ रोमोद्गमं वेपथुं श्वासं कास-
तमं कचिच्छिथिलता मूर्च्छामतीसारकम् ॥ चेष्टां क्षीणतरां क्लमं
बमथुतां हिक्कां शिरश्चालनं तं शीतांगमवेहि वैद्य हरिजं मृत्योः
सखायं ध्रुवम् ॥ १७ ॥

तंद्रिकसन्निपातकेलक्षणम् ।

कंठे कंडुत्तृपाऽरुचिक्लमथुताः पीडा हि कर्णद्वयोर्जिह्वाद्याम-
तराच कंठक्युता तंद्रातिरासो रतिः ॥ संतापः कफवेदनावहुतराश्वा-
सोधिकः कासता मृत्युः स्यात्खलु तंद्रिको निगदितश्चिह्नैरमीभिः परैः १८

अर्थ—पेटमें शूल हाथ पैर ठंठे जांभमें कांठे भ्रम बेकरीं बेहोसां कंठमें पीडा, श्वास, खांसी, प्यास बहुत लगे, हृदय कठका सूखना संताप, भ्रम, रुदन करना, प्रत्यप, ये लक्षण रुग्दाह सन्निपातके जानना ॥ १६ ॥ जिसमें ये लक्षण मिलते हो उसको वैष्णवज्वर मीतका मित्र शीतांग सन्निपात जानना चाहिये जो सब देहको शीतल करदे रोमखटे होजाय कंम, श्वास, खांसी अंधेरा मुस्ती कर्मी मूर्च्छा और दस्तकाहोना जिसकी चेष्टा मंद पडिजाय विना श्रमकरे श्रमहो, रक्षिचकी, शिरका कांपना ॥ १७ ॥ कंठमें खुजलीचले, प्यास, अरुचि, ग्यादि, टोनों कानोंमें पीडा काली और कांठेयुक्त जीभ तंद्रा अतिसार अरति संताप कफसे पीडा, बहुत श्वासचट्टे, और खांसी इन लक्षणोंसे रोगीका मारनेवाला तंद्रिक सन्निपात जानना ॥ १८ ॥

कंठकुब्जसन्निपातकेलक्षणम् ।

कंठग्रहं यः कुरुते हनुग्रहं मूर्च्छाप्रलापं ज्वरकंपवेदनाः ॥ मोहं
च दाहं हृदये शिरोरुजं तं कंठकुब्जं प्रवदंति साधवः ॥ १९ ॥

कर्णाकसन्निपातकलक्षण ।

ग्रंथिः कर्णांतदेशे भवति बहुतरां कंठदेशेतिपीडा ग्लानिः श्वासः
प्रसेको वचनशायिलताश्लेष्मणारुद्धकंठः ॥ मूर्च्छाकंपः प्रलापो
त्रपुपिकृशतमा वेदनोष्मा च कासः ॥ स्वंस्वं रूपं च रोगावि-
दधति सततं कर्णके सन्निपाते ॥ २० ॥

अर्थ—जो कंठमें पीडा करे, ठोड़ी जकड़ जावे, मूर्च्छा तथा बकनां, ज्वर कंप, देहमें पीडा
बेहोसी, हृदयमें दाह, शिरमें दर्द, ये लक्षण कंठकुब्ज सन्निपातके महात्मा कहते हैं ॥ १९ ॥ कर्ण-
क सन्निपातके ये लक्षण हैं कानके पास गांठ बहुतसी होय कंठमें दर्द ग्लानि श्वास थारका गिरना,
मंद २ बोलना, कफसे कठका रुकना मूर्च्छा, कंप और बकना शरीर कृश तथा पीडा और गरमी
और खांसी तथा अनेक रोग प्रगट हों ॥ २० ॥ इति कर्णक सन्निपातके लक्षण समाप्त हुये ॥

भुग्ननेत्रसन्निपातकलक्षण ।

स्मृतिभ्रंशनं भुग्नदृक्सन्निपातःकरोत्यंगपीडांभ्रमंभुग्नेत्रम् ॥ ज्वरं
वेपनं शून्यतां त्र्वासकासौ प्रलापं प्रसेकं पिपासामसाध्यः ॥ २१ ॥

रक्तष्टीवीसन्निपातकलक्षण ।

छदिरक्तष्टीविनं कृष्णाजिह्वां कांसंश्वासं मंडलं दाहमुग्रम् ॥ संज्ञा-
नाशं तापमाध्मानतृष्णां रक्तष्टीवी प्राणनाशं च कुर्यात् ॥ २२ ॥

प्रलापीसन्निपातकलक्षण ।

प्रलापीरवेः पुत्रगेहं प्रयाति ज्वरस्तापपीडांगकंप्रयासाः ॥ तृपा-
शोकसंज्ञाविनाशप्रवादाः शिरःकंपमोहांगदाहो विनिद्रा ॥ २३ ॥

अर्थ—बेहोसी हो अंगोमें दर्द और का आना नेत्रोंका घुरा होना ज्वर तथा कौपना देहमें शून्यता
श्वास खांसी बकना थारका बहना प्यास ये लक्षण असाध्य भुग्नेत्र सन्निपातके हैं ॥ २१ ॥
रुबिरकी लडकी करना जीभ काळी हो खांसी श्वास चकत्ता पडजावे घोर दाह हो संज्ञा जाती-
रहे ताप ज्वर तथा पेटका कृटना तृष्णा प्यास ये लक्षण हो तो प्राणका नाश कर्त्ता रक्तष्टीवी सन्नि-
पात जानना ॥ २२ ॥ प्रलापी सन्निपातवाला रोगी यमलोकको जाता है और उसके ये लक्षण
होते हैं ज्वर ताप पीडा कौपना बिना कारण भ्रमहो प्यास शोक संज्ञा नाश बकना शिरका
दिलाना बेहोसी अंगोमें दाह नींदका न आना ॥ २३ ॥

जिह्वकसन्निपातकेलक्षण ।

जिह्वा कंटकवेष्टितां शिथिलतां श्वासाधिकं मूकतां रात्रौ जाग-
रणं तृषां वधिरतां वीर्यक्षयं क्षीणताम् ॥ हृत्पाश्वोर्दरनासिकाध-
रगले शोथं विसंज्ञं ज्वरं काये यः कुरुते रुजं बहुतरां जानीहि तं
जिह्वकम् ॥ २४ ॥

अभिन्याससन्निपातकेलक्षण ।

अभिन्यासको यस्य देहे स्थितः स्याद्भवेत्तस्य मृत्युर्विनिद्रातितृ-
ष्णा ॥ ज्वरः पादद्राहोङ्गकंपोतिजाड्यं भ्रमः श्वासता कासता
क्षीणचेष्टा ॥ २५ ॥ ❀

अजीर्णज्वरलक्षण ।

अजीर्णज्वरो लक्षणैरष्टभिर्वा भिषक्सत्तमेर्ज्ञायतेसप्तभिर्वा ॥ अती-
सारउद्गारऊष्मातिनिद्रा शिरोर्तिः प्रलापोहि जृम्भोदरे रुक् ॥ २६ ॥

अथ—जाम काटन करके युक्त, तथा शिथिल, श्वासका ज्यादा चलना, गृगपाना, रातमें जागना प्यास तथा बहरापना वीर्यका नाश होना दुर्बलता हृदय पसवाटे पेट नाक ओठ गला इनमें सूजन हो बहोसी, ज्वर, ये लक्षण जिसकी देहमें हो उसको जिह्वकसन्निपात जानो ॥ २४ ॥ जिसकी देहमें अभिन्यास सन्निपात हो उसके ये लक्षण हैं नींद आवै नहीं, अति प्यास हो, ज्वर, पैरोंमें दाह, अंगोक्ता कांपना, बहोसी, भौर, श्वास, ग्वांसी, चेष्टामंद, ये लक्षणवालेकी मौत होय ॥ २५ ॥ इति त्रयोदश सन्निपाताः ॥ * अजीर्णज्वर आठलक्षणोंसे अथवा सात लक्षणोंसे जाने सां ये हे अतीसार १, डकार २, गरमी ३, अतिनिद्रा ४, शिरमें दर्द ५, खांटा बोलनाई जैमाई ७, पेटका दूबना ८ ॥ २६ ॥

* सद्यस्त्रिपंचसप्ताहान् दशाहान् द्वादशादपि ॥ एतद्विंशतिभिः शुद्धः सन्निपाती मुञ्जीवति ॥ १ ॥ (त्रिदोषज्वर स्यमर्ष्यादा) सप्तमोद्दिशुगाय ॥ वप्रवम्येकादशी तथा ॥ एषा त्रिदोषमर्ष्यादा मोक्षाय च वधाय च ॥ २ ॥ पित्तकफा-
निलवृद्धया दशादिवसद्वादशाहसप्ताहान् ॥ हन्ति विमुञ्चति पुरुषं त्रिदोषजो धातुमलयाकात् ॥ ३ ॥ इति ।

* (प्रसंगात् हारिद्रकसन्निपातस्य लक्षणं ग्रन्थान्तरात्) हारिद्रदेहनखनेप्रकरांप्रितोषे निद्रावनादिकपनै-
रुपलक्षितोयः ॥ हारिद्रकसन्निपातः किल सन्निपातःसाध्यो न चैवभिषजा ज्वरकाररूपः ॥ ४ ॥

आमज्वरलक्षण ।

हल्लासलालाश्रुतिवांत्यरोचकैः क्षुन्नाशनिद्रावहुमूत्रतालसैः ॥
वत्काल्पवैरस्यवलक्षुतक्षयैरामज्वरो वैद्यवरेर्विलक्ष्यते ॥ २७ ॥

रक्तज्वरकेलक्षण ।

प्रलापोद्गदाहो मुखद्रक्तपातस्तृपास्फोटना मोहतांगप्रपीडा ॥
भ्रमोरक्तनेत्रेऽथ निद्रा विमूर्च्छा भवन्तीह रक्तज्वरे लक्षणानि ॥ २८ ॥

दृष्टिज्वरलक्षण ।

मुहुर्मुहुर्जृम्भणमंगदाहं विस्फोटनं संधिषु शूलमुग्रम् ॥
स्तब्धेक्षिणी छद्दिमनाहतां यो दृष्टिज्वरः संकुरुतेविघर्षम् ॥ २९ ॥

अर्थ—खाली ओंको आंघे, टार बहे, रहहो, अरुचि, भूत न लगे, नींद, मूत्रका जादा उतरना, आलस, मुञ्ज बरसहो, वरु और भूखका घटना, तथा क्षई हो इन लक्षणोंमें वैद्योनें चतुर सो आमज्वर जाने ॥ २७ ॥ वकना और अंगोंमें दाह, मुखसे रुधिरका गिरना, प्यान, हटकट, वेहोती, अंगोंमें पीडा, भौर, टाल नेत्र, नींदका आना, मूर्च्छा ये रक्तज्वरके लक्षण हैं ॥ २८ ॥ चारंगार जंभाईका आना, शरीरमें दाह, शरीरका टूटना, सन्धि २ में दर्द, भयानकनेत्र हो वमन, अनाह, शरीरका वर्ण और तरहका हो जाय, ये दृष्टिज्वरके लक्षण हैं ॥ २९ ॥

भूतज्वरकेलक्षण ।

भूतप्रेतापिशाचदैत्यदानुजेर्जातो ज्वरो राक्षसेर्यस्तापंद्वादिवेपथुंवि-
तनुते मूर्च्छा प्रलापं मदम् ॥ जृम्भामंगविमर्दनं विकलतां हास्यं
क्वचिद्रौदनं गीतं रक्तविलोचनं मनुज तं जानीहि भूतज्वरम् ॥ ३० ॥

अर्थ—भूत, प्रेत, पिशाच, दैत्य, दानव, राक्षस इनसे जो ज्वर हो उनके ये लक्षणहै शरीरस्ता, हृदयमें कंप, मूर्च्छा, व्यर्थवकना, मस्तहोना, जंभाईका आना, शरीरका तोटना, वेकली हसना, कर्मारोना, कर्मागीतगाना, टाल २ नेत्र ये लक्षण भूतज्वरके हैं ॥ ३० ॥

मलज्वरलक्षण ।

प्रलापोंगतापो भ्रमो हृदिदाहस्तृपोद्गारनिष्ठीवनं घूर्णदृष्टिः ॥
सकृन्मेहनं कंठजिह्वोष्ठशोपः शिरोगौरवं विज्वरे लक्षणानि ॥ ३१ ॥

खेदज्वरलक्षण ।

विष्टंभनं स्फोटनमंगदेशेश्वासः पिपासालसताप्रसेकः ॥ स्वेदोऽ
तिनिद्रामदवीर्यनाशो भवन्तिखेदज्वरलक्षणानि ॥ ३२ ॥

शापज्वरकलक्षण ।

इयावास्यतोद्भगवमीपिपासा विनष्टचेष्टाभ्रमतापमूर्च्छाः ॥ दुर्गधि-
तांगे हृदिवेपथुत्वं भवन्ति शापज्वरलक्षणानि ॥ ३३ ॥

अर्थ—खांटा बोलना, शरीरतन्ता, हृदयमें दाह, प्यासउगं, डकार आवे, वार २ थूके, ठेढा देखे थोडा थोडा दस्त उतरे, कंठ जीम ओठ इनका सूखना, शिरभारी ये मलज्वरके लक्षणहै ॥ ३१ ॥
पेटका झूलना, शरीरमें हटकल, श्वास, प्यास, आलस, लारका गिरना, पसीना, अतिनिद्रा, मस्त पना, वीर्यकानाश, ये खेद ज्वरके लक्षणहै ॥ ३२ ॥ मुंह, काला, उद्वेग, रद, प्यास, शरीरकाचे-
ष्टका नाशहोजाना, भौर, शरीर तन्ता. मूर्च्छा, देहमें वासका आना, हृदयका कापना, ये सब शाप-
ज्वरके लक्षणहै ॥ ३३ ॥

औषधजनितज्वरकं लक्षण ।

भवेदौषधीगंधजे चिह्नमेतज्ज्वरे चित्तविभ्रंशता रक्तनेत्रे ॥ शिरो
रुग्मिमूर्च्छतागात्रशोषः पिपासाह्रमत्वं च निद्राविनाशः ॥ ३४ ॥

भयज्वरकालक्षण ।

भयात्कस्यचिदुद्भवेद्वोरूपे ज्वरे चिह्नमेतद्भवेदंगकंपः ॥ मुखे
शुष्कताभ्यन्तरेत्यंतपीडा प्रलापोथचित्तभ्रमः शोकमूर्च्छा ॥ ३५ ॥

अर्थ—दिक्ते औषधके सूघनेसे जां ज्वर पैदा होताहै उसके ये लक्षण होने हैं चित्तका डामाडो-
लहोना, लाल २ नेत्र, मथवाय उलटीका होना, मूर्च्छा, शरीरका सूखना, प्यास, भ्रान्ति, नींदका
न आना, ये लक्षण औषधजनित ज्वरके हैं ॥ ३४ ॥ जिस किसीको भयसे ज्वर पैदा हुआ हो
उसके ये लक्षणहैं अंगोंका कापना, मुखका सूखना, शरीरमें बहुत पीडा, व्यर्थ बचना, चित्त, चला
यमान, शोक, और मूर्च्छा ॥ ३५ ॥

कांपज्वरकेलक्षण ।

भवन्तीहकोपज्वरे लक्षणानि स्फुरद्गात्रभंगं चलद्रक्तनेत्रम् ॥ प्रला
पोथ हंछासकंपातिमूर्च्छा विवर्णः प्रसेको मुखस्तालुशोषः ॥ ३६ ॥

शस्त्रघातज्वरलक्षण ।

शस्त्रास्त्रदंडाश्मकशादिघाततो जाते ज्वरे घोरतरे हि लक्षणम् ॥
तापःपिपासाकफकंठरुद्धताशोथःप्रलापोऽरुचिरार्तिता भवेत् ३७ ॥

अभिचारज्वरकेलक्षण ।

ज्वरेऽभिचारसंज्ञके भवन्ति लक्षणानिपट् ॥ प्रलापशूलमोहता-
स्तृपागकंपतारुचिः ॥ ३८ ॥

अर्थ—ये कोपज्वरके लक्षण हैं अंगोंका फडकना, शरीरका दृटना, चयापमान लाल र
नेत्र, बाहिघात बकना, खाली रक्का आना, कांपना, दुःखकाहोना, मूर्च्छा, शरीरका वर्ण
औरही तरहका होजाना, टारका टपकना; मुख और तालुका शोष ॥ ३६ ॥ शस्त्र कहिये
तन्त्रार और छुरी आदि, और अस्त्र कहिये ब्रह्मास्त्रादि, दंड कहिये लकड़ी आदि, अस्त्र
कहिये पथर, कशादि कहिये कोरडा आदि, इनके लगने से जो ज्वर पैदाहो उतके ये लक्षण
हैं ज्वरहो, प्यासहो, कफसे कंठकारकना, सूजन, बडबडाना, अरुचि दुःख ये लक्षण ह ॥ ३७ ॥
अभिचारसे तथा मंत्रको उलटा जपनेसे जो ज्वरहो तथा किसीने जादू कियाहो इस ज्वरमें मुख्य
६ लक्षण होतहैं, बडबडाना, पेटमें गूद, बेहोरी, प्यास, कांपना, शरीरका अरुचि ये ॥ ३८ ॥

कामज्वरकेलक्षण ।

रोमोद्गमः सांहंसहर्षजृम्भा भीतिर्विपादो मदशोकरोपाः ॥ ए-
तानि चिह्नानि भवन्ति यस्य कामज्वरं तं कथयन्ति वैद्याः ॥ ३९ ॥

अथस्त्रीप्रसंगाज्जनित० ।

स्त्रियोत्यंतसंगाद्भवेच्चिह्नमेतज्ज्वरोग्लानिनिष्ठीवनं श्वासकासम् ॥
भवेद्वेपथुर्गात्रदेशेम्बुपूरस्तृपानिर्वलत्वं च पीडा च शोथः ॥ ४० ॥

अर्थ—रोमांच, साहस, जैभाई, डरकाटगना, दुःखकाहोना, मोहहो, और शोक, क्रोध, ये लक्षण
जिसमें हों उसको वैद्य काम ज्वर कहते ह ॥ ३९ ॥ जो मनुष्य बहुत स्त्रांसे मैथुन करे उससे पैदा
ज्वरके ये लक्षणहैं शरका होना, ग्लानि, बेरबरेमें थूकना, श्वास, खांसी, कंफ, शरीरमें, पसीनाआना,
प्यास, नानाकती, पीडा मूजन, ये ॥ ४० ॥

क्षीणघातुमंद्राग्निज्वरलक्षण० ।

धातोः क्षीणतयाथवाग्निशमनाज्जातो ज्वरश्चितया शैथिल्यं कुरुते
रुचिं वितनुते धत्ते तनो पांडुताम् ॥ सर्वांगं तुदते ददाति कृशता
हर्ष परं नाशते वीर्यत्वं जयते रुतं न सहते श्वासं भ्रमं विभ्रतेऽश

संततज्वरकेलक्षण ।

वसति रुधिरधातौ यो ज्वरो द्वादशाहं क्वचिदपि च दशाहं सं-
ततं संततोयम् ॥ प्रभवति खलुनाम्ना श्वासकासं विधत्ते ज्वरयति
नरदेहं यांति नाशं स पश्चात् ॥ ४२ ॥

विषमज्वरकेलक्षण ।

निरंतरं तिष्ठति सर्वदेहे सूक्ष्मो ज्वरो यो विदधातिशैत्यम् ॥
अत्युष्णतां यातिकदाचिदेवतंकष्टसाध्यं विषमं वदन्ति ॥ ४३ ॥

अर्थ-धातुके क्षीण होनेसे तथा मंदाग्निके होनेमें तथा चिन्तासे जो ज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण हैं,
शिथिलता, अरुचि, शरीरपीलाहो, सर्वांगमें पीडाहो, तथा शरीरका कृश होना हर्षजातारहै, वीर्य-
कानाश, श्वास भौरकाहोना ॥ ४१ ॥ जो ज्वर रुधिर धातुमें पहुँचजाय वह ज्वर १२ तथा १०
दिन बराबर बनारहे उसको संततज्वर कहते हैं उसमें श्वास, खांसी, तथा सत्र देहका जरना बाद
थोडेदिन यह ज्वर मारडालेहै ॥ ४२ ॥ जो ज्वरमंद होके सत्र देहमें बराबर रहे और कभी शीत-
ज्वर कभी जादा शरीर गरमहो जाय उसको कष्टसाध्य विषमज्वर कहें हैं ॥ ४३ ॥

महेंद्रज्वरकेलक्षण ।

अहोरात्रयोर्वाद्विकाले त्रिकाले चतुष्कालके वा प्रवृत्तिं निवृत्तिम् ॥
करोति ज्वरो यः स्वतंत्रोतिरौद्रो महेंद्रो हि नाम्ना निरुक्तो मुनीन्द्रैः ॥
वेलाज्वरकेलक्षण ।

अहोरात्रयोरेकदेशे ज्वरो यः समागत्य देहे स्वरूपं विधाय ॥
नरं पीडयेन्नित्यशो निर्दयं तं विजानीहि वेलाज्वरं वैद्यराज ॥ ४५ ॥

अर्थ-जो दिनरातमें दो दफे वा तीन वा चारदफे आवे और उतर जावे उस स्वतंत्र घोर ज्वर का
महेंद्रनाम मुनियोंने कहाहै ॥ ४४ ॥ जो ज्वर दिन रातमें एकदफे एकअंगमें आवेके फेर सत्र शरीरमें
फेडकर शरीरका नित्य बहुतदुःखदे उसको वैद्य वेलाज्वर जानें ॥ ४५ ॥

एकांतरज्वरकेलक्षण ।

दिनेकांतरे यो विधायोग्ररूपं नराणां शरीरे प्रपीडेन्नित्यम् ॥
दिनेकं विमुच्याथ धातूञ्च शेते तमेकांतरं त्वं विजानीहि
वैद्य ॥ ४६ ॥

एकान्तरज्वरलक्षण ।

एकांतरो ज्वरो घोरो द्विविधः परिकीर्तितः ॥ शीतेनैकः समा-
याति तापे नायाति यो परः ॥ ४७ ॥

त्र्याहिकज्वरकेलक्षण ।

दिनद्वयं तु विश्राम्य मेदोमज्जास्थिधातुषु ॥ यः कुप्यति तृतीयेऽहि
त्र्याहिकं तं विदुर्वुधाः ॥ ४८ ॥

अर्थ—उसको हे वैद्य तू एकान्तरज्वर जान जो एकदिनमें घोररूप होके मनुष्योंके शरीरको दुःखदे और एक दिन छोड़कर आवे और धातुनको सुखांयडाले ॥ ४६ ॥ इकतरा घोरज्वर दो प्रकारकाहै एक शीत लगकर आवे और एक गरमीसे आवे ॥ ४७ ॥ जो ज्वर मेदा मज्जा हड्डांमें पहुँच जाताहै और दोदिन बीचमें देकर तीसरे दिन आवे उसको त्र्याहिक अर्थात् तिजारी पण्डितलोग कहते हैं ॥ ४८ ॥

चातुर्थिकादिज्वरकेलक्षण ।

एवं चातुर्थिको ज्ञेयः पाक्षिको मासिकस्तथा ॥ वार्षिको मनिभिः
प्रोक्तो वर्षमायाति नाऽन्यथा ॥ ४९ ॥

देवकोपजनितज्वरलक्षण ।

वापीकूपतडांगगोपुरमठप्राकारवेदिप्रपादेवांगोपवनानिदेवसदनं
छिन्दन्ति ये मंडपम् ॥ साधुव्राह्मणयोगिनां पितृगवां पीडां प्रकु-
र्वन्ति ये तेषा देववरप्रकोपजनितो घोरज्वरो जायते ॥ ५० ॥

एकांगज्वरलक्षण ।

प्राणिनामेकमंगं यो ज्वरो रुजयति ध्रुवम् ॥ तस्यांगस्य च यन्ना-
म तन्नाम्ना ज्वर उच्यते ॥ ५१ ॥

अर्थ—ऐसे ही चातुर्थिकज्वर जाने तथा पाक्षिक अर्थात् जो पंद्रहवें दिन आवे, तथा मासिक जो महानामें आवे, तथा वार्षिक जो वर्षदिनमें आवे, बीच नहीं आवे ये मुनिने कहेहै ॥ ४९ ॥ जो मनुष्य बावड़ी, कुआ, तालाव, गोपुर, मठी, प्राकार, यज्ञकीवेदी, प्याऊ, देवप्रतिमा; बाग, मंदिर मंडप, इनको नोडडाले तथा साधु, ब्राह्मण, योगी, माता, पिता, गंड, इनको दुःखदेतेहैं तिनको ईश्वरके कोपसे घोर ज्वर पैदा होताहै ॥ ५० ॥ मनुष्योंके कोईसे एकअंगमें ज्वरचढ़े और उस अंगका जो नामहो वह, ज्वर उसी नामकरके कहाजाता है ॥ ५१ ॥

ज्वरस्तु यस्य संस्पर्शाद्गंधाद्वा दर्शनादपि ॥ ज्वरो भवति तन्नाम्ना
इति रोगविदो विदुः ॥ ५२ ॥

अंतकज्वरलक्षण ।

श्वासोमीं वहते गलं कफचयैः संरुध्यते यो मुखात्फेनं संवमते
शिरां विधमते कासं विधत्ते रतिम् ॥ आध्मानं कुरुते च मोहमरुचिं
हिकामतीसारकं तं विद्याज्वरमंतकं प्रियसखं मृत्योरसाध्यं-
भृशम् ॥ ५३ ॥

शोकज्वरकेलक्षण ।

अर्थाऽपत्यकलत्रभ्रातृसुहृदां शोकोद्भवो यो ज्वरः शैथिल्यं कु-
रुते नरं विमनसं श्वासं सुहुर्वेदनाम् ॥ स्तैमित्यं विकलं भ्रमं वधिः
रतामूर्च्छां बलौजःक्षयं प्रस्वेदं बहुमोहतामरुचिता निद्रां तनौ
पांडुताम् ॥ ५४ ॥

त्वचामेमासद्गुणवतज्वरलक्षण ।

कुर्यात्त्वचिस्थः पवनज्वरोनिशं रोमोद्भवं रौक्ष्यत्वगाक्षिमीलनम् ॥
जृम्भांगमर्दश्रवणाक्षिवेदनां विण्मूत्रबंधं सुखमिष्टतारती ॥ ५५ ॥

अर्थ—और जो ज्वर किसीवस्तुके छूनेसे अथवा सूंघनेसे वा देखनेसे होय वह उसी नामसे
विलपात होताहै ऐसे रोगके जाननेवाले कहते हैं ॥ ५२ ॥ श्वासका ज्यादा चलना, गला कफके
समूहसे रुकाहो, और जो मुखसे झाग गेरे, नाडीका जोरसे चलना, खांसी, इच्छाका नाश, पेटका
फूलना, बेहोसी, और अरुचि, हिचकी, दस्तका होना ये लक्षण, मृत्युका प्यारा (मित्र) कालज्वरका
जानना ये असाध्यहै ॥ ५३ ॥ द्रव्य पुत्रादिः स्त्री भैया सुहृद इनके नष्टहोनेके शोकसे जो ज्वर होताहै
उसके ये लक्षण है शरीरमें शिथिलता, मनका बिगडजाना, श्वास, वेर २ मे दुःखका होना, शरीर
गालेकपडेसे पोंछासाहो, बेकली, बहिरापना, मूर्च्छा, तथा बल तेज इनका नाश होना, पर्सीना
बहुतहो, बेहोसी, अरुचि, नीद, शरीरपीला ॥ ५४ ॥ घातज्वर त्वचामें होतोये लक्षण हों, रोमाच
तथा त्वचाका रूखापन, आंखोंका मीचन, जंभाई अंगोंका टूटना, कान आंखमें दर्द दस्त पेसाबका
चंदहोना, मुख, मीठा, तथा अरति ॥ ५५ ॥

चर्मगतपित्तज्वरलक्षण ।

रक्तत्वचंदाहमतीवतृष्णामास्येकदुत्वं परिदेहशोपम् ॥ ऊष्माणमा
तिवहुशीतलेच्छां पित्तज्वरश्चर्मगतः करोति ॥ ५६ ॥

चर्मगतकफज्वरलक्षण ।

लालामुखे गौरवमालसत्वं निष्ठीवनं शीतवपुः शिरोर्तिम् ॥ निद्रा
च मूत्राधिकतां प्रलापं श्लेष्मज्वरश्चर्मगतः करोति ॥ ५७ ॥

रसगतज्वरलक्षण ।

पिपासाशिरोर्तिर्वमिः शूलमुग्रं प्रलापोंगकंपो रुचिर्वमनस्यम् ॥
वपुः स्वेदरोमांचितं कंठदाहो रसस्थो ज्वरो लक्षणैर्जायतेज्ञैः ॥ ५८ ॥

रुधिरगतज्वरलक्षण ।

ज्वरःशोणितस्थो भ्रमं देहदाहं सरक्तं च निष्ठीवनं ताम्रनेत्रम् ॥
शिरःपीडनं शोपमूष्माणमार्तिं पिपासामरो चं करोतीति मूर्च्छाम् ५९

अर्थ—लालत्वचा, दाह, अत्यन्त प्यास, मुखकडुवा, शरीरका सूखना, गरमी मालूम हो घबराह
ट, शीतलवस्तुकाइच्छा ये लक्षण पित्तज्वर त्वचामें होय तो होते हैं ॥ ५६ ॥ मुखसे लारका बहना
शरीर भारी; आलस, कफका थूकना, देह शीतल, नथवाय, निद्रा, पेशाबका ज्यादा गिरना, बड
बडाना, ये लक्षण कफज्वर चर्ममें पहुंचता है तब होते हैं ॥ ५७ ॥ प्यास, नथवाय, वमन, दर्द,
बडबडाना, अंगोंमें कंपकंपी, अरुचि, मनका बिगडना, शरीरमें रोमांच, तथा पसीना, कंठमें दाह,
ये लक्षणोंसे जानो कि इसके रसमें ज्वर पहुंच गया है ॥ ५८ ॥ जो ज्वर रुधिरमें पहुंच जाय उसके
ये लक्षण हैं भौर, देहमें दाह, रुधिरमिलाथूकना, तबिसरीखेनेज्वरलक्ष, शिरमें दर्द, शोप, गरमी
घबराहट, प्यास, अरुचि, और मूर्च्छा ॥ ५९ ॥

मांसगतज्वरलक्षण ।

भवंति ज्वरे मांसगे लक्षणानि तमोष्मांगमद्वां भ्रमो मूत्रकृच्छ्रः ॥
वपुः स्वेदमभ्यंतरे तीव्रदाहस्तृपावेदना छर्दिरार्तिः प्रलापः ॥ ६० ॥

मेदगतज्वरलक्षण ।

भवंति ज्वरे मेदगे लक्षणानि शरीरतिदुर्गंधिता दंतपीडा ॥ सुहृर्म-
त्रता वह्निनाशः कृशत्वं विपादोल्पसारो रुचिः श्वासकासौ ॥ ६१ ॥

अस्थिगतज्वरलक्षण ।

ज्वरेऽस्थिप्रदेशे गते लक्षणानि भवंत्यस्थिविस्फोटनं पर्वभेदः ॥
शरीरस्य विक्षेपणं देहदाहस्तुपोष्माविलापोभ्रमः स्वेदतापौ ॥६२॥

अर्थ—मांसमें जब ज्वरपहुंच जाता है उसके ये लक्षण होते हैं अंधेरा आना, गरमीका लगना, शरीरका टुटना, भौर, पेशाबका रक २ के गिरना शरीरमें पसीना, हृदयमें ज्यादादाह, प्यास, बेकली, रूढ़, दुःख, बटबडाना ॥ ६० ॥ मेदामें ज्वर पहुंच जाता है उसके ये लक्षण हैं शरीरमें चासबाना, दांतोंमें दर्द, बेर २ मूतना, जठराग्निनाश, देहदहारा, दुःख, बलका घटना, अराचि, श्वास, और खांसी ॥ ६१ ॥ जिसका ज्वर हड्डीमें पहुंच जाता है उसके ये लक्षण हैं हड्डीटनहो, संधि २ में पीडा, देहको इधर उधर पटकना, तथा देहमें दाह, प्यास, गरमी, विलाप, भ्रम, पसीना, तथा ज्वर ॥ ६२ ॥

मज्जागतज्वरलक्षण ।

वहिः शीतताभ्यंतरेऽत्यंतदाहः तमः कंपनं मर्मभेदः प्रलापः ॥ तृषा
श्वासहिकार्त्तयो मूत्ररोधो भवन्ति ज्वरे मज्जागे लक्षणानि ॥६३॥

शुक्रगतज्वरलक्षण ।

ज्वरः शुक्रदेशे स्थितो मृत्युदूतस्तदाज्ञायते सप्तचिह्नैर्भिपग्भिः ॥
भ्रमो वीर्यनाशस्त्वचाहीनशोफो बलोजः क्षयः श्वासकासो क्ल-
मत्वम् ॥ ६४ ॥

धातुपाकीज्वरलक्षण ।

निद्राबलोजोरुचिर्वीर्यनाशो हृद्वेदनागौरवताल्पचेष्टा ॥ विष्टंभ-
ता यस्य किलारतिः स्यात्सधातुपाकी मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ६५ ॥

अर्थ—बाहरसे जाडा लगे, भीतर अत्यंत दाहहो, अंधेरा आना, कंपना, मर्म स्थानोंमें दर्द, बटबडाना, प्यास, श्वास, हिचकी, बेकली, मूतका रुकना, ये लक्षण मेदामें ज्वर पहुंच जाता है तब होते हैं ॥ ६३ ॥ जब मीतकादुत ज्वर शुक्रयाने वीर्यमें पहुंचजाय उसको वैद्य सात लक्षणोंसे जाने भौर, वीर्यका नाश, त्वचाका हीनहोना, बल, तेज, इनका नाश, श्वास, खांसी, ग्लानि ॥ ६४ ॥ नींद बल, तेज, इच्छा, वीर्य, इनका नाश, हृदयमें दुःख, शरीरका भारीपना

अल्पचेष्टा, दस्तकारकना, मनका न लगना ये लक्षण जिसमें हों उसको धातुपाक मुनियोंने कहा है ॥ ६५ ॥

तथा च ।

काये धातुविपाकिनां परकरस्पर्शोऽपि वज्रायते रात्रिः कल्पश-
तायतेल्पतरभो दीपोऽपि दावायते ॥ शब्दो वाणसमायते मृदुग-
तिवात्तस्त्रिशूलायते यूकासूचिकुलायते तनुतमं वासोऽपि भा-
रायते ॥ ६६ ॥

ज्वरस्यदशोपद्रवाः ।

ज्वरस्य प्रसिद्धादशोपद्रवाः स्युस्तृपा विद्ग्रहश्छर्द्यतीसारहि-
क्काः ॥ शरीरस्य भेदोऽरुचिः श्वासकासौ समूर्च्छा हि भागद्वयं ते
प्रदद्युः ॥ ६७ ॥

अर्थ—धातुपाकी मनुष्यके देहमें अन्य मनुष्यके हाथका स्पर्श वज्रके समान नाद्धमपडे, अल्परोश-
नीवालाभी जो दीपक सोंभी ज्वालाके समान नाद्धमहो, बोलना वाणके समानलगे, मन्दगति चलने-
वाला पवन विशूलके समान लगे, जुआं खटमल आदिका काटना सूईके समान लगे, छोटार्मा-
वस्त्र शरीरपर भारी लगे ॥ ६६ ॥ ज्वरके उपद्रव दश प्रसिद्धहैं प्यास, दस्तका बंद होना, रद,
अर्तासार, दिक्की, शरीरका टूटना, अरुचि, श्वास, खाँसी और मूर्छा ॥ ६७ ॥

शरीरस्य बाह्ये यदा श्लेष्मवातौ भवेतां तदा शीतलं बाह्यदेशम् ॥
यदाभ्यन्तरेऽभ्यन्तरे शीतलत्वं भवेद्यत्र पित्तं विदाहोऽपि तत्र ॥६८॥
यस्मिन्नंगे वायुर्याति तस्मिन्नंगे पीडां कुर्यात् ॥ पित्तं दाहं श्लेष्मा-
शीतं सर्वान् दोषान् सर्वे कुर्युः ॥ ६९ ॥ अंतर्दाहः प्रलापः श्वस-
नमातितृपानिग्रहो दोषवर्द्धः स्वेदः संध्यस्थिशूलं भ्रमविकलतनुः
संधिदेशेषु पीडाम् ॥ अंतर्वेगस्य चिह्नं निगदितमपरैर्वेद्य-
राजैर्ज्वरस्य दाहादीनां लघुत्वं यदि भवति वहिर्वेगरोगस्य
चिह्नम् ॥ ७० ॥

अर्थ—यदि वात कफ शरीरके बाहर होवे तो बाहरका सब भाग साँतरहे, और जो वातकफ शरीरके भीतरहो तो भीतरही शांतलता रहे, और पित्त जिम जगह होय तो दाहभी उसी जगह जाने ॥ ६८ ॥ जिस अंगमें वायु याने वादी हो उसी अंगमें दर्दहो और जिसे अंगमें पित्त होय उसी अंगमें दाह होय और जिस अंगमें कफ होय उसी अंगमें शांतलता होय और जिस जगहपर जितने दोषहो उतनेही रागोंको पैदा कर है दो होय तो दो, और तीन होय तो तीन, और एक होयतो एक ॥ ६९ ॥ शरीरके भीतर दाह हो, बाहियात बकना, श्वास, अत्यन्तप्यासका रुकना, दोषोंका बढाना, पसीना, संधियोंमें तथा हड्डियोंमें झूटका चलना, और ॥ ७० ॥

असाध्यलक्षण ।

भवेद्यस्य दुर्गंधताश्वासवाहे तथांगप्रदेशेतिकंपोविवर्णः ॥ वहिः
शीतताभ्यन्तरेत्यंतदाहः सरोगी रवेः पुत्रगेहं प्रयाति ॥ ७१ ॥
कृशः पिच्छलांगो महाश्वासवाहो भ्रमो हृष्टरोमारुणाक्षोंगकंपः ॥
तमो रात्रिदाहो दिवाशीततातिः स रोगी न जीवेत्कदाचित्सुधा-
भिः ॥ ७२ ॥ जिह्वा श्यामतराथ कंटकयुता रात्रौ दिने जागरं
श्वासो निर्गतलोचने शिथिलता नासामुखे शुष्कता ॥ यस्यांगे
परिमंडलानि बहुशो मूर्च्छा प्रलापस्तमः कासो रुद्धगलो गदी स
गदितोऽसाध्यो भिषग्भिः परैः ॥ ७३ ॥

अर्थ—ऐसा रोगी रथिका पुत्र जो यमराज ताके घर जाताहै कैसा कि, जिसके श्वास निकसनेमें वास आवे, तथा शरीरमें अत्यन्त कँपकँपी, शरीरका विवर्ण, बाहरसे शांतलता, और भीतर अत्यन्त दाह ॥ ७१ ॥ कृश, पिच्छलेदेह, बडी २ श्वासकाचलना, भ्रम, हृष्टरोम, लालनेत्र, अंगसे कँप, अँधेरेका आना, रातमें दाह होना, दिनमें जाडा लगना, तथा दुःख, ऐसा रोगी अमृत करके भी नहीं जीवे ॥ ७२ ॥ जीभ जिसकी काली और काँटेसे व्याप्त, दिनरात जागना, श्वासका चलना, नेत्रोंमें सुप्ती, नाक मुख सूखना, जाके देहमें रुधिरके चकता पडगये होयँ, मूर्च्छा, बडबडाना, अँधेरा आना, त्वाँसीसे गलेका रुकना, ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै ॥ ७३ ॥

भवेद्यस्य नेत्राश्रुपातोङ्गहीनो मुखान्नासिकायाः पतेद्रक्तधारां ॥ मु-
खं कुंकुमाभं गले कर्णमूलं सरोगी न जीवेत्कदाचित्प्रयत्नैः ॥ ७४ ॥

कृशस्थूलता स्थूलतायाः कृशत्वं स्फुटन्नेत्रगोलं स्वभावोऽन्यथा
 स्यात् ॥ शरीरार्द्धशूलं त्वचाहीनशोफो गमिष्यन्सरोगी यमस्यां
 लयं वै ॥ ७५ ॥ गद्दी जिह्वया यो रसं वेति नैव श्रुत्तिभ्यां न शब्दं न
 नेत्रेण रूपम् ॥ त्वचास्पर्शमुग्रं नसा नैव गंधं स रोगी न जीवेत्स
 हस्तै र्पायैः ॥ ७६ ॥

अर्थ—नेत्रोंसे आंशू गिरे, शून्य देह, मुख नाकसे लोहूका गिरना, मुंह जिसका डाल, गलेमें कर्ण-
 मूल रोग हो, वह रोगी कदाचित् यतनोंसे न जीवे ॥ ७४ ॥ कृश तो मोटा और मोटा कृश और नेत्रोंके
 गोल फटेसे माद्धम हो स्वभाव पलट जावे, आधे शरीरमें शूल चले, त्वचाहीन लिङ्गेन्द्री हो, वह
 रोगी यमराजके घर जायगा ॥ ७५ ॥ जिस रोगीको जीभसे स्वाद न माद्धम हो, और कानोंसे शब्द
 न सुने, और नेत्रोंसे जिसे देखे नहीं, त्वचामें स्पर्श न माद्धम हो, नाकसे गंध न माद्धम हो, ऐसा
 रोगी हजार उपाय करने परभी नहीं बचैगा ॥ ७६ ॥

भवेद्यस्य बाह्यांतरे शीतगात्रं न जीवेद्गद्दी चंडरश्मेः सुताभ्याम् ॥
 प्रलापं शिरश्चालनं यः करोति सुपेणादिवैद्यैरसाध्यो निरुक्तः ॥ ७७ ॥
 गतायुर्मनुष्यो न पश्येत्स्वजिह्वां ध्रुवं नासिकाग्रं वशिष्ठस्य भा-
 र्याम् ॥ स्वकीयां च छायां विशीर्षां सरंध्रां भृशं याति नाशं नरो-
 योनुपश्येत् ॥ ७८ ॥ स्वरो यस्य हीनो गुदा यस्य भृष्टा शरीरं
 कृशत्वं बलौजोविहीनः ॥ निमग्नोक्षिणी संभ्रमः श्वासकासौ स
 रोगीयमस्यालये याति शीघ्रम् ॥ ७९ ॥

अर्थ—जिसका बाहर भीतर शीतल शरीर हो, वह रोगी चंडरश्मिजो सूर्य तिसके पुत्र जे
 अश्विनी कुमार तिन करके न जीवे तथा बडबडाना शिरका इधर उधर पटकना, जो रोगी करे वह
 सुपेणजादि वैद्यों करके असाध्य कहा है ॥ ७७ ॥ मरनेवाला मनुष्य अपनी जीभ ध्रुवका तारा
 नासिकाका अग्रभाग अर्द्धता इनको नहीं देखे, तथा अपनी छायाके मस्तक नहीं देखे, तथा
 अपनी छायामें छेद देखे, वह रोगी निधन मरे ॥ ७८ ॥ स्वर जिस रोगीका मंदहो गुदा जिसकी
 भ्रष्ट, शरीर कृश, तथा निर्बल और तेजरहित नेत्र, जिसके भीतर घुसजाय, संभ्रम, श्वास, खाँसी
 ऐसा रोगी यमपुरको जल्दी जाये ॥ ७९ ॥

रुदतिहसतिगीतगीयतेकापिकालेश्चसितिमुदतिचित्तेभापतेदुर्व-
चांसि ॥ प्रलपतिपारिदेवंवादते नृत्यतेयोवहतिबहुलतापंयास्यतेमृ-
त्युवक्त्रे ॥ ८० ॥

अथ रोगमुक्तस्यलक्षणम् ।

विमुक्तरोगस्य नरस्य लक्षणं विड्वंधमोक्षौ मनसि प्रसन्नता ॥ देहे
लघुत्वं रसनातिकोमला स्वल्पा तृपेच्छा रसभोजने भवेत् ॥ ८१ ॥
उरसि शिरसि कंडू रात्रिनिद्रांत्रगुंजा भवति विशदचेतः स्वल्पतृ-
ष्णांगरौक्ष्यम् ॥ मुखकरणविपाकः स्वेदयुक्तं शरीरं कृमिमलपरि-
पूर्णं रोगमुक्तस्य चिह्नम् ॥ ८२ ॥

अर्थ—रोधै, हँसे, कभी गीतगावे, स्वास ले, कभी चित्तमें प्रसन्न हो, कभी खोटा बोट, बड-
बडावे, कभी वेदनाहो कभी ताळी बजावे, कभी उठकर नाचने लगे, और ज्वर बडे जोरसे हो वह
रोगी निश्चय मौतका प्रास होवे ॥ ८० ॥ नारोगी रोगहीन मनुष्यके ये लक्षण हैं दस्त खुलकर हो
मन प्रसन्न, हलका शरीर, जीभकोमल, प्यास कम, रसभोजनमें, इच्छाहो ॥ ८१ ॥ हृदयमें और
माथेमें खुजालचलै, रातमें अच्छी तरह नींद आवे, आंतोका बोलना चित्त प्रसन्न अल्पप्यास शरी-
रस्वहा, मुख और कानका पकना, पसिनिका आना, मलकांडोंसे परिपूर्ण, ये रोग दूर हुयेके
लक्षण हैं ॥ ८२ ॥

शीतंगुदंयस्यशुभाचट्टिष्टैतन्यकायःकफहीनकंठम् ॥ स्वल्पांग-
तापो रसनातिशुद्धा शीर्षे लघुत्वं स रुजा विमुक्तः ॥ ८३ ॥ तारुण्यं
विदधातिपट्सु दिवसेष्वाद्येषु घोरज्वरस्तस्मिन्नौपधमुत्कटं गदह-
रोदद्यान्नकाले क्वचित् ॥ दोषोपद्रवसंयुतेतितरुणे देयं झटित्यो-
पधं वार्धक्यं दिनपंचकेषु पुरुतो जीर्णज्वरोऽतः परम् ॥ ८४ ॥

ज्वराणांस्वरूपाणि ।

वीभत्सस्त्रिशिराज्वरोथ कपिलो भस्मग्रहारस्त्रिपात् पिंगाक्षोथ
महोदरोऽथ परतो रौद्रो ज्वलद्विग्रहः ॥ शंभोःश्वाससमद्भवाभयक-

रा दक्षक्रतोर्ध्वंसकाः घोराघर्घरनादिनो मुनिवरेः प्रोक्ता ज्वरा-
स्तेऽष्टधा ॥ ८५ ॥

अर्थ—शांतल तो गुदाहो, शुभजिसकीटाटे, शरीरमें श्वेतन्यता, कफरहितकंठ, देहमें मद्गर्मा, जीम
शुद्ध, शिरहृत्काय ये लक्षण गतरोगके हैं ॥ ८३ ॥ आदिके छः दिनमें तो घोर ज्वर तरण होता है, तिसमें
फरडी रोगहर्त्ता, दवाई कभी न दे, और कदाचित् तरण ज्वरमें दौपोंका उपद्रवहो तो जल्दी
दवाई देवे तो छः दिनसे परे पांचदिनतक ज्वरको बूढा कहते हैं इस उपरांत अर्थात् ग्यारहदिन उप-
रांत जर्णज्वर कहाता है ॥ ८४ ॥ रुद्रके श्वाससे पैदा हुये भयके देनेहारे दक्षप्रजापतिके यज्ञके विगाडने-
वाले घोर घर् घर् नादके कर्त्ता उर मुनीश्वरोंने आठतरहके फहे हैं सो लिखते हैं १ वीभत्स, २ त्रि-
शिरा, ३ कपिल, ४ भस्मप्रहारी, ५ त्रिपात, ६ पिंगाक्ष, ७ महोदर, ८ ज्वलविग्रह ये ॥ ८५ ॥

वीभत्सज्वरस्वरूपमाह ।

वीभत्सोरुधिरारुणांवरवृतो मुण्डास्थिमालाधरो रक्ताक्षः कृ-
मिसंकुलखिनयनो दुर्गधिपूर्णोनिशम् ॥ नम्रो रुद्रसमुद्भवोतिबल-
वान्कोपो जगद्घातकः कृष्णांगो मलिनो मदान्धदमनः पूष्णो-
द्विजध्वंसकः ॥ ८६ ॥

अथत्रिशिराज्वरस्यलक्षणम् ।

अभूद्दक्षविध्वंसरुद्रप्रकोपात् त्रिशीर्षखिपात्रंदनेत्रोतिकायः ॥ च-
लजिह्वया सूक्लिणीलेलिहानो बृहत्तालुजंघोरुणाक्षोतिक्रोधी ॥ ८७ ॥
अभूद्दुद्रकोपाज्ज्वरः कापिलाख्यो मुखांगारपुंजोद्भिरन्दीर्घकायः ॥
मदाधूर्णिताक्षः स्फुरत्ताम्रकेशो महामेघगर्जो मनोहर्षहर्त्ता ॥ ८८ ॥

अर्थ—रुद्रसे रंगे हुये बच्चोंको पहिरै, मुण्ड और हड्डियोंकी मालाका धारणकरने वाला, लाल र
नेत्र, क्रमसे जिसकी देह व्याप्त, तीन नेत्र बासाजिसकी देहमें सदाआती है, नंगा, रुद्रसे पैदा हुआ
अतिबली कोपवान् जगत्का घातक, कोलेरंगका, मलिन, मस्तोंको सीधा करनेवाला, पूषादेवताके
दांतोंका तोडनेवाले ऐसा वीभत्स ज्वर है ॥ ८६ ॥ श्रीमहादेवके कोपसे तानमाथेका त्रिशिरा नाम ज्वर
दक्षका मारनेवाला, हुआ, तीन जिसके पांव, नवनेत्र, अत्यन्तलंबी : चलायमान छुरासी जीमसे
ओठोंको चाटता, बड़े ताल वृक्षके समान जंघा, लाललालनेत्र, अत्यन्तक्रोधी ॥ ८७ ॥ रुद्रभग-

वान्के कोपमें एक कपिलनामक विख्यात ज्वर पैदा हुआ, मुखमेंसे अंगारोंकी उलटी करता, अतिलंबा, मदमें चलायमान नेत्रहैं जिसके, प्रकाशमानताविके समान बाल हैं, जिसके, घोर मेघकी-सीगर्जना करनेवाला मनके हर्षका दूर करने हारा ॥ ८८ ॥

भस्मविक्षेपकज्वरलक्षणम् ।

अभूद्भस्मविक्षेपको रुद्रकोपात् महाद्वाद्दहासो मुहूर्जृम्भमाणः ॥
चलत्सताजिह्वःकरालोद्गदंष्ट्रःस्फुरत्तताघ्नारुणः श्मश्रुकेशः ॥८९॥
त्रिपाद्द्रुद्रकोपाद्भूवारुणाक्षो भृगोः श्मश्रुविध्वंसकः स्तब्धकर्णः॥
ज्वरो दीर्घकायो मुहुः श्वासकर्त्ता रणे नृत्यमानो गदाही
तृपार्त्तः ॥ ९० ॥

त्रिपादज्वरस्यस्वरूपम् ।

अभूद्दीरभद्रे श्वरादुत्कटास्यो ज्वरः पिङ्गनेत्रोलपजंघोशिवर्णः॥ तृपा-
तोद्विजिह्वो नृसिंहोद्वितीयश्चलत्तीव्रकेशः कृशः शुष्कमांसः ॥ ९१ ॥

अर्थ—श्रीरुद्रके कोपसे एक भस्मविक्षेपक ज्वर पैदा हुआ महान् अद्दहासका करने वाला, नेत्रमें जंभा ईं लेंता, चलायमान, सातलुहरो सी जांभहै, भयानक कालासी टाढ, प्रकाशमान तपाये तांविके समा नहै डाढी और बाल जिसके ॥ ८९ ॥ श्रीरुद्रके कोपसे एक त्रिपादनामक ज्वर पैदा हुआ तीनपैर लालनेत्रवाला, और भृगुकी डाढीका उखाडनेवाला, खडे कान जिसके बडी देह जिसकी बारबार बासका कर्त्ता, संग्राममें नाचनेवाला, शरीरमें दाहका तथा प्यासका कर्त्ता ॥९०॥ वीरभद्र गणसे एक पिङ्गाक्षनामक ज्वर पैदाभया बडेमुख, छोटो जांघ, अग्निसरखी वर्ण, प्याससे दुःखी, दोजोभक्ता मानो दूसरा नृसिंहहीहै चलायमान तांखेवाल कृश सुखाहुआ शरीरका मांस जिसका ॥ ९१ ॥

महोदरज्वरस्यस्वरूपम् ।

वभूवातिदीर्घोदरोलंबकर्णो ज्वलदग्निरूपश्चलद्रक्तनेत्रः ॥ तृपा-
श्वसजृम्भान्वितांगप्रमदो भटेशो ज्वरोरक्तवर्णः प्रमत्तः ॥ ९२ ॥

पिङ्गाक्षकास्वरूपम् ।

ज्वलद्विग्रहोमुक्तकेशश्चलद्भ्रूत्रिशूलासिहस्तोभुजंगेशपाशः॥ ज्व-
रेशोतिवीर्योहरइवासजातः कृशः शुष्कमांसोवलीभैरवेशः ॥ ९३ ॥

कफातिसारकेलक्षण ।

सकष्टंगुदातःपुरीषप्रवाहश्चलत्फेनिलोमेदुरोदुष्टगंधिः ॥ हरि-
च्छैतकृष्णाकृतिःकष्टसाध्योभवेच्चिहमेतत्कफस्यातिसारे ॥ ३ ॥

अर्थ—तृपा, ग्लानि, अत्यन्त हृदयमें, पेटमें, गुदामें, घोरदर्द, तथा दाह; थोडा २ मलनिकसे-
सय न निकसे, भीतरदाहहो, श्वास, अरुचि, देहमें बेकली, मुख, नाक इनका अत्यन्त सूखना, ये
लक्षण वातातिसारके पहले ऋषि तथा वैशोने कहेहैं ॥ १ ॥ दस्तजिस रोगीका चित्र विचित्ररंगका-
निकसे तथा सहतके रंगका वा बसाके रंगका निकसे और दुर्गन्धयुक्तहो बारबारमें तत्ता जावे कंप तथा
संतापके साथ और शूल दाह ये गुदाके द्वार पर हों तथा हृदय नाक मुख इनमें शोषहो प्यास और
अनायासप्रवाहो ये लक्षण ऋषिनेमं श्रेष्ठ अत्रि और भरद्वाजादिकोने पित्तातिसारके कहेहैं ॥२॥ जिसके
दस्तकाप्रवाह गुदासे बडेदुःखसे जावे जिसमे ज्ञागहो चिकनाहो दुष्टगंधहो हरा श्वेत काळा वर्णहो यह
कष्ट साध्य कफातिसारके लक्षणहैं ॥ ३ ॥

सन्निपातातिसारलक्षण ।

अतीसारेसारे कफपवनपित्तप्रजनिते गुदे पाश्च कुक्षौ जठरहृदये
शूलमरुचिः ॥ मुखे कंठे शोषो भवति सततं छर्दिररतिस्तृपा-
कासः श्वासो वपुषि परिशोफोद्गदहनम् ॥ ४ ॥

रक्तातिसारकेलक्षण ।

वारंवारं पुरीषं भवति सरुधिरं कंठताल्वोष्ठशोषो वस्तौ पादे
प्रपीडा हृदि जठरगुदे पार्श्वदेशेषुशूलम् ॥ ग्लानिः काये कृशत्वं
परिगलिततंनुनिर्वलत्वं शरीरे रक्तातीसारचिह्नं प्रवरमुनिजनैः
श्रोक्तमेतन्नितांतम् ॥ ५ ॥

आमातिसारकेलक्षण ।

आमं स्वल्पं पुरीषं सितरुधिरनिभं पीतवर्णं सकष्टं वारंवार
प्रतप्तं प्रचलति गुदातः पूयदुर्गन्धियुक्तम् ॥ स्निग्धं शूलं गुदाये
प्रभवति परितः फेनिलं पिच्छिलं वा आमातीसारचिह्नं
मुनिवरवचनात्कीर्तितं हंसराजैः ॥ ६ ॥

अर्थ—बात पित्त कफसे पैदा हुआ घोर अतिसार उसमें ये लक्षण होते हैं—कि गुदा, पीठ, कूख, पेट, हृदय इनमें शूलका चलना, अरुचि मुख कंठका सूखना, रद, तथा मनका न लगना, प्यास खांसी, स्वास, शरीरमें सूजन, शरीरका दहन ॥ ४ ॥ बारंबार दस्त रुधिर मिलाहुआहो कंठ ताश् ओट इनका सूखना मूत्रस्थान तथा पैरोंमें पीडा हृदयमें पेटमें गुदामें पीठमें शूल तथा ग्लानि शरीरका श्रुदा तथा गलना तथा निर्वलहोना ये लक्षण रक्तातिसारके मुनीश्वरोंने निश्चय करके कहे हैं ॥ ५ ॥ आममिला थोडा २ दस्तहो श्वेत तथा रुधिरके समान तथा पीला वर्ण साथ कष्टके दस्तहो बारंबार तत्ता गुदासे रांघ दुर्गंध युक्त चिकना, गुदाप्रमें पीडा, तथा ज्ञाग युक्त और गाढ, ये लक्षण आमातिसारके मुनीश्वरोंके वचनसे हंसराजने कहे हैं ॥ ६ ॥

अतिसारकाअसाध्यलक्षण ।

अतीसारिणं तं त्यजेच्छीतगात्रं तृपाशोथशूलान्वितं श्वासयुक्तम् ॥
ज्वराध्मानहिकान्वितं दाहमूर्च्छागुदापृष्ठशोषार्तिकासादिजुष्टम् ७ ॥

अतिसारकीउत्पत्ति ।

विरुद्धाशनैः स्निग्धदुग्धान्नदोषैर्द्रवस्नेहदुष्टांभ्युमद्यादिपानैः ॥
गरिष्ठाम्लपिष्टैः कृमीणां विकारैरतीसाररोगो भवेन्मानवानाम् ॥८॥

अतिसारेपथ्यम् ।

अतीसारे त्यजेत्त्वानं संतापं वह्निसूर्ययोः ॥ तैलाभ्यंगं च व्यायामं
गुरुस्निग्धादिभोजनम् ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते
वैद्यशास्त्रेअतीसारलक्षणं द्वितीयम् ॥

अर्थ—ऐसे अतिसारि मनुष्यको वैद्य इलाज न करे कैसेको कि जिसका शीतल शरीरहो प्यास शूल युक्तहो श्वास ज्वर आफरा हिचकी सूजन इन करके युक्तहो दाह मूर्च्छा तथा कांचका निक-
लपडना शोक दुःख खांसी युक्तको ॥ ७ ॥ विरुद्ध भोजन करनेसे चिकनी तथा दूध तथा अन्न इनके दोपसे पतली तथा तेलकी तथा दुष्टजलके पीनेसे मदिरादिके पीनेसे भारी खट्टा तथा पीसा अन्नके खानेसे और कृमीनके विकारसे मनुष्यको अतिसार रोग पैदा होय है ॥ ८ ॥ अतिसारवा-
लामनुष्य ये काम न करे नहाना अग्नि और सूर्य इनके तेजका सहना तेलका लगाना तथा कसरत कुस्ताका करना भारी चिकना आदि भोजनका करना ॥ ९ ॥ इतिहंसराजांर्धवोधिनीभापाटीकामें अतिसारनिदानपूर्णहुआ ॥

अथसंग्रहणीनिदानम् ॥

वातसंग्रहणीलक्षणम् ।

वातोत्थोग्रहणीगदःप्रकुरुते विद्वंधनं मूर्च्छनं कासं श्वासतरं
मुखं च विरसं कंपं शरीरे भृशम् ॥ कुक्षौ तालुनि मस्तके हृदि
गले शोथो गुदे वेदना कष्टं प्रच्यवते पुरीपमशकृत्सामंसशब्दं
घनम् ॥ १ ॥

पित्तसंग्रहणीकेलक्षण ।

चिह्नं पित्तग्रहण्यां भवति हृदये कंठदेशेतिदाहः शूलं मेढ्रे गुदाग्रे
रुधिररतिरतः शुष्कफेनं पुरीपम् ॥ तुच्छं तुच्छं सकष्टं क्वचिदपि-
बहुशो दुष्टगंधिप्रयुक्तं पीतं वा कृष्णरूपं वससदृशनिभं रोमहर्षो-
तितृष्णा ॥ २ ॥

कफसंग्रहणीकेलक्षण ।

कफसंग्रहणीकुरुते हृदये जडतामुदरे गुरुतामरुचिम् ॥ मनसि
भ्रमतांगरुजं शिथिलं सितफेनयुतं च पुरीपमरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—वादीसे प्रगट संग्रहणी दस्तको बंद करे हे मूर्च्छा, खांसी, श्वास, मुखेरस, शरीरमें कंप,
कोल तालुभा माथा छाती गळा इनका सूखना, कष्टसे थोडा २ विष्टाका त्यागहोना आम मिळा
दुःख, शब्दके साद और गाल ॥ १ ॥ पित्तकी संग्रहणीके, ये लक्षण हे हृदयमें और कष्टमें, दाह,
लिंगमें मूत्र, गुदाके अप्रभांगसे रुधिरका गिरना, सूखा तथा ज्ञागमिष्टा तथा कष्टसे थोडा २ कर्मी
ज्यादा वासको लिये पीला वा काला वा बसाके समान दस्त हो, रोमांच तथा प्यास हो ॥ २ ॥
कफकी संग्रहणीमें हृदयका जकटना, पेटका भारीहोना, मनमें अशुचि, भौर, देहमें दुःख तथा
शिथिलता, सपेदझामोंका मिळा दस्त, ये लक्षण कफसंग्रहणीके होते हैं ॥ ३ ॥

त्रिदोपसंग्रहणीकेलक्षण ।

ग्रहण्यां त्रिदोपोद्भवायां संकष्टं पुरीपद्रवं शब्दयुक्तं वसाभम् ॥
भवेदल्पमल्पं क्वचिद्रक्तवर्णं गरिष्ठोदरं दुष्टदुर्गंधिमिश्रम् ॥ ४ ॥

सन्निपातकीसंग्रहणी ।

विष्टं ग्रहणीगदः प्रकुरते दोषैस्त्रिभिः संभवो वैरस्यं शिरसि
व्यथां गुरुतमां शूलं गुदापीडनम् ॥ आलस्यं हृदये गुरुत्वमरुचि
कासं तृपासंभ्रमं श्वासाध्मानविवर्णतोदरकृमीन् दाहं करांध्यो-
र्वमिम् ॥ ५ ॥ अतीसारे गते मंदं वहीच्छाद्यातिभोजनैः ॥ वर्तते
यो भवेत्तस्य ग्रहणी दारुणाभृशम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सन्निपातसे पैदाहुई जो संग्रहणी उसमें ये लक्षण होते हैं साथ कटके और शब्दके दस्त-
का होना, तथा बसाके समान और थोडा २ कर्मां लालरंगका, पेटभारी रहे, और वासामिळा दस्त
हो ॥५॥ पेटमें आफरा करता है तथा मुखमें विस्मता, शिरमें दर्द, और शूल तथा गुदा पीडा,
आलस्य, हृदयका, भारीहोना अरुचि, खांसी, प्यास, भौर श्वास, पेटका फूलना, शरीर बुरेरंगका
होजाय पेटमें कृमी, हाथ पावोंमें दाह, और यमन ॥६॥ जब अतिसार चलाजाय और जठराग्निकी
इच्छा अति भोजनसे बंदकरदे उसके घोरसंग्रहणी होता है ॥ ६ ॥

संग्रहण्यांपध्यम् ।

व्यायामं मेथुनं रूक्षं भोजनं वह्नितापनम् ॥ तैलाभ्यंगं दिवा-
स्वापं ग्रहणीरोगवांस्त्यजेत् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशा-
स्त्रे ग्रहणीलक्षणं तृतीयम् ॥

अर्थ—छांसंग, रूखाभोजन, आंचसेतापना, तेल लगाना, दिनमें सोना, ये संग्रहणी रोगवाला
त्यागदे ॥ ७ ॥ इति माधुर दत्तसामकृत हंसराजार्थबोधिनी टीकामें संग्रहणीरोगलक्षण समाप्त हुआ ॥

अथ अज्ञानिदानम् ।

गुदाग्रेषु जातानि मासांकुराणि चतुस्त्रीणि संख्यानि संगानि
यानि ॥ भवन्तीति दुर्नामसंज्ञानि नूनं मरुच्छेषमपित्तोद्भ-
वानीहतानि ॥ १ ॥

वातकीववासीरकेलक्षणम् ।

शुष्कावातसमुद्भवाश्चिमिचिमास्तब्धागुदस्याकुरा न्लानाः
श्यामतराः खराश्च विकटा नीलाः सिताभाः क्वचित् ॥ खर्जू-

राकृतयोर्ग्रिहस्तसहिताः शीर्षाननाःसंयुता भिन्ना विस्फुटितानना ज्वरकराः पांयूत्थिता दुःखदाः ॥ २ ॥ वाताशांसि कृशत्वमेव बहुलं कुर्वन्ति विड्वंधनं क्षुन्नाशं बलवीर्यकांतिहरणं शूलगुदापीडनम् ॥ शोषं कंदुरुजं विकारमधिकं शब्दं गुदातोनिशमाध्मानं जठरव्यथां गुरुतमांशीहं तनौ पांडुताम् ॥ ३ ॥

अर्थ—गुदाके अप्रभागमें हुये तीन वा चार मांसके अंकुर अंग करके सहित छोटा नाम(संत्रां) जिनका ऐसे यातपित्त कफसे पैदा होते हैं ॥ १ ॥ बादीसे पैदा हुए ये जो गुदाके मस्से उखड़ेहों सुग्वेहों चिमचिमालिये हों टेढ़ेहों कुक्षिलये हुयेहो कालेहों खरदरे बाँके लंछे सुपेदहों खजूर फलके सदृशहों हाथ पैर शिर मुँहके चिह्न संयुक्तहों अलग २ फटे मुखके ज्वर करनेवाले गुदामें प्रकट दुःखके देनेवाले हैं ॥ २ ॥ बादीकी बधासीर मनुष्यको कृश करे है, तथा दस्तको बंदकरे, भ्रूजको बंदकरे, बलवीर्य तेजको दूरकरे, शूल,पेटमें गुदामें दर्द, शरीरको सुगवावे, खुजली चले, दुःखकरे, अधिक विकार तथा गुदासे शब्दके साथ अधोवायु चले, आफरा, पेटमें भारी, व्यथा, प्रीह, शरीरपीलाकरे है ॥ ३ ॥

पित्तकीबधासीरकालक्षण ।

गुदांकुरास्तु पित्तजा भवन्ति पक्वविंभवाः स्ववंति रक्तमुल्वणं च मासिमासि मेदुराः ॥ अजाविशूकरीशुनीगवांस्तनोपमा हि ते खरा जलौकिकामना महत्सुदोषसंभवाः ॥ ४ ॥ स्वल्पात्स्वल्पतरं पुरीषमरतिं विड्वंधनं कूजनं कष्टं वातसमान्वितं सरुधिरं शूलं गुदागर्जनम् ॥ शीहं वीर्यबलक्षयं शिथिलतां गुल्मांत्रवृद्धिं भ्रमं पित्ताशांस्यरुचिं तृषा बहुतरां कुर्वत्यनाहं श्रमम् ॥ ५ ॥

कफबधासीरकेलक्षण ।

कंडूढवागुदसंभवाःखरतरामांसांकुराःपिच्छिलाः स्तब्धाः श्वेतनिभा मृगस्तनसमाःस्निग्धाश्च स्पर्शप्रियाः ॥ स्थूला मूलदृढा भवन्ति मिलिताः कार्पासवीजोपमा वंध्यावृद्धमुत्रा व्यथादिजनकाः पापोद्भवा दारुणाः ॥ ६ ॥

अर्थ—पित्त बधासीरके मस्से पके कंदूरी फलके समान हों, चिह्नके मूलदृढके, मर्दाना महत्सुदोषदिपाहृषा, बकरा, शूफरा, कुतिया, गी, इनके धनोके मृग हों, मृगदंशों, जोंदके इ

आकारहों ये बहुत दोपसे होते हैं ॥ ४ ॥ पित्तकी बवासीर दस्तको बहुत कम निकारै, मन कहीं न लगे, दस्तका बंद होना, गूजना, कष्ट पूर्वक अघोवायु रुधिरके साथ निकसना, शूलके साथ गुदाका गर्जना, ग्रीह वीर्य बलका नाश, शिथिलता, गोल, अंत्रवृद्धि, भ्रम, अरुचि, प्यास ज्यादा, अनाह, भ्रम, ये लक्षण पित्तकी बवासीरके हैं ॥ ५ ॥ गुदाके मसोंमें खुजली चलै खरदरहों और गाढे टेढेहों, सपेदहों, मृगाके स्तनोंके समानहों, चिकनें और सिराना प्रियलगे, स्थूल, दृढ जडवाले, कपास बीजके समानहों, रुधिर न निकले, बद्धमुखवाले, दुःखके देनेवाले, पापसे उठे दारुण ॥ ६ ॥

कफकीबवासीरकेलक्षण ।

संकोचं गुदबंधनं च जठरे कुर्वत्यनाहं दृढं तुच्छं कष्टतरं पुरीष-
मसकृन्निद्रां तनौ पांडुताम् ॥ आध्मानं गुरुतां भृशं शिथिलतां हर्षक्ष-
यं क्षीणतां श्लेष्माशांसि शिरोरुजं बहुतरं जाड्यम्वलौजः क्षयम् ॥

सन्निपातबवासीरकालक्षण ।

अशांस्यसाध्यानि गुदोद्भवानि त्रिदोषजातानि समस्तरोगान् ॥
तन्वंति कार्श्यं रुधिरं स्रवंति दहन्ति वीर्यं ददतीह दुःखम् ॥ ८ ॥

वातकीबवासीरकापथ्य ।

त्यजेदर्शसा संयुतो वातजेन नरः सर्वदा मैथुनं रूक्षभोज्यम् ॥
कपायं श्रमं मद्यपानं विदाहि जलस्यावगाहं वहिः स्वापमेतत् ॥ ९ ॥

अर्थ—गुदाका बंधन, तथा संकोच, उदरमें अनाह, थोडा कष्टके साथ मलका त्याग, नौद-
तथा पीलिया, आपरा, भारीपना, शिथिलता, हर्षक्षय, क्षीणपना, मद्यवाय, बलतेजका क्षय, ये
कफकी बवासीरके लक्षणहैं ॥ ७ ॥ त्रिदोषसे पैदा हुई बवासीर सब असाध्यहै, और सबरोगोंको
पैदा करेहै, कृशताको पैदाकरे. रुधिरको व्याधा निकारै, वीर्यको दहन करे, दुःखको देय ॥ ८ ॥
वातकी बवासीरवाला मैथुन, रूखा भोजन. कसैली वस्तु, भ्रम, मद्यपान, दाहकर्तावस्तु, जलमें
घुसिके न्दान, बाहरका सोना ये त्यागदेवे ॥ ९ ॥

पित्तकीबवासीरकापथ्य ।

पित्तजेनार्शसा युक्तस्त्यजेत्क्षारोष्णभोजनम् ॥ व्यायामं सूर्यसंतापं
कट्वम्ललवणानि च ॥ १० ॥

कफकीववासीरकापथ्य ।

कफार्शसायुक्तनरः प्रवातं जलावगाहं मधुराम्लशीतम् ॥ त्यजेद-
तिस्त्रिग्वरिष्ठभोज्यं स्वापं दिने जागरणं रजन्याम् ॥ ११ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रे अर्शसालक्षणं चतुर्थम् ॥

अर्थ—पित्तकी बवासीरवाला मनुष्य इतनी वस्तु त्यागदेव, क्षार मिला अन्न तथा गरमभोजन
दंडकसरत, सूर्यके धाममें डोलना, कड़वी खट्टी चरपरी नोनकीवस्तु ॥ १० ॥ कफकी बवासीरवा-
ला नर, हवा, जलमे चुसकर नहाना, मीठीवस्तु, शोषी, तथा खट्टी, चति चिकनी, भारीवस्तुका
भोजन, दिनमें सोना, रातमें जागना, त्यागदे ॥ ११ ॥

इतिहंसराजार्थबोधिनी टीकामें बवासीर रोग उंक्षणं समाप्त हुआ ॥

भगंदरलक्षणम् ।

गुदतः परितो द्वितयंगुलके पिडिकार्तिकरो रतिकृज्ज्वरदः ॥ भग-
दारणको रुधरेण युतो मुनिभिर्गदितस्तु भगंदररुक् ॥ १ ॥

वातकेभगंदरकालक्षण ।

भगंदरो मरुद्भवो रुजां करोति दारुणो ह्यपानवातसंभवो गुदंप्रपी-
डयेन्निशम् ॥ करोति पेडिकाशतं विपाकदाहसंयुतं व्रणैश्च रोधि-
री नदी पुरीषमूत्रबंधनम् ॥ २ ॥

पित्तजनितभगंदरकेलक्षण ।

भगंदरोत्तिदारुणः करोति पित्तजोऽहितं गुदे च पेडिकारुणा विपा-
कदुःखभूमिका ॥ अनेकधामुखाखरास्तुपूयशोणितावहाः कटौ
व्यथामनेकधामपानकोपतो भवाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—गुदाके चारो तरफ दूसरे अंगुलमें मरोरी दुःखकी देनेवाली आर्तिका करनेवाली धरकी
करनेवाली भग और गुदाके बीचमें भगकीसी तरह भगदारणक रुधिर युक्त होताहै इसीसे
मुनियोंने इतका नाम भगंदर कहा है ॥ १ ॥ बादाते और अपान वायुसे उत्पन्न जो बोर
भगंदर वो दारुण पीडा करे है, और गुदामें अत्यन्त दुःखहो, और सैकड़ों मरोरी गुदाके

ऊपर फरें, और ये पकजावे तथा दाहहो और घावहोजाय, रुधिर चहै, दस्तपेशाबका बन्द होना, ये लक्षण होते हैं ॥ २ ॥ पित्तसे पैदा जो अतिद्रावण भगंदर उसके ये लक्षणहैं दुःखहो, गुदाके ऊपर छाल २ मरोरीहों, और ये पकजावे, खेदको पैदाकरै अनेकमुग्धहों, फरडी हो, राधरुधिर जिनसे सवे कमरमें दर्द हो, यह भी अपान वायुके कोपसे पैदाहोताहै ॥ ३ ॥

गुदाते पिडिकां कुर्याद्भगंदरगदोनिशम् ॥ कंडूशोषं व्यथां पाके रक्तपूयहवाः कृमीन् ॥ ४ ॥

सन्निपातजनितभगंदरलक्षणम् ।

आहुस्तं च भगंदरं कफमरुत्पित्तोद्भवं पण्डिता विस्फोटैर्दहते गु-
दं कृमिकुलैरत्यामिपं योनिशम् ॥ पकैश्छिद्रसमन्वितैः सरुधिरं पूयं
स्त्रवत्यामिपं शोथं कंडुरुजादिकं वितनुतेऽपानेन त्रिड्वंधनम् ॥ ५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रे भगंदरलक्षणम् ॥

अर्थ—भगदरका रोग—गुदामें मरोड़ी पैदाकरै, और उनमें खुजलीचलै, तथा शोषहो, पकनेमें दर्दहो, रुधिर तथा राधबहै, और कृमि पडजाय ॥ ४ ॥ जिसभगंदरमें ये लक्षणहों उसको पंडित सन्निपातका कहतेहैं जिसमें बड़े २ फोंडे करके गुदामें दुःखहो और कृमानके समूहसे निर-
तर व्याकुलहो, और पकजाय तथा गुदाके बारबार छेद होजाय उनछेदोंमें राधरुधिर मल मांस नि-
कसे मूजत खुजलीहो अपान पवनसे गुदाद्वारा मलका नहीं उतरना ॥ ५ ॥ इति श्रीहंसराजार्थ
बोधिनों टीकामें भगंदररोग लक्षण समाप्तहूआ ॥

अजीर्णरोगकेलक्षण ।

भुक्तान्नपाचितं नैव वह्निनोदरजेन तत् ॥ तस्योपरि पुनर्भु-
क्तमजीर्णं तद्विदुर्बुधाः ॥ १ ॥ भुक्तान्नं न विपाकमेति जठरे
विष्मूत्रयोस्तंभनाद्रात्रौ जागरणाद् दिवातिशयनादत्यंबुपानान्त्
णाम् ॥ दुर्भक्ष्याद्विषमाशनादतिभयात्कोधाद्विरुद्धाशनात् मंदाग्नौ
बहुभोजनाद्गुरुतरात्प्रद्वेषतश्चित्तया ॥ २ ॥ वाताधिके विषमतां
समुपैति वह्निः पित्ताधिके भवति वह्निरतीवतीक्ष्णम् ॥ श्लेष्माधिके
जठरजो हुतभुक् समंदो वाताधिकेषु समकेषु समोन्निरंत्ये ॥ ३ ॥

अर्थ—खाया हुआ तां अन्न जठरमि करके पचा नहीं और तिसके ऊपर फिर, खावे उसके
पंडित अजीर्ण कहते हैं ॥ १ ॥ मूत्रके रोकनेसे, रातमें जागना दिनमें सोना बहुत पाना पीना.

गारष्ट भोजन परना, विषम भोजनसे, अतिभयसे, श्रोत्रके करनेसे, विकृद् भोजनसे, मंदशक्तिसे
ज्यादा भोजनसे, द्वेषसे चिन्ताके करनेसे, खायाहुआ अन्न पेटमें पचता नहीं है ॥ २ ॥ वाताधिक्यसे
विषमाम्नि पित्ताधिक्यसे ताक्ष्णाम्नि कफाधिक्यसे मन्दाग्नि और वात पित्तकफके समान होनेसे समाग्नि
होती है ये चार प्रकारकी अग्नि मनुष्योंके होती है ॥ ३ ॥

विष्टब्धं विषमोऽनलः प्रकुरुते रोगांश्च वातोद्भवांस्तीक्ष्णान्नि-
विदधाति पित्तजनितान् रोगान् विदग्धाशनम् ॥ आमश्लेष्मस-
मुद्भवान् वित्तनुते रोगांश्च मन्दानलो नैरोग्यं हुतभुक् समोहि
सततं धत्ते रुचिं मानसीम् ॥ ४ ॥

वाताजीर्णकेलक्षण ।

वाताजीर्णे विह्वमेतत्प्रसिद्धं जृम्भाशूलं क्षुत्पिपासांगमर्दः ॥ सा-
म्लोद्धारो धूमयुक्तोतिकष्टः श्वासः शोषो मूत्रघातोथ हिक्का ॥ ५ ॥

पित्ताजीर्णकेलक्षण ।

मृच्छादाहः संश्रमः शूलमुग्रं तृष्णोद्धारो धूमयुक्तोतिसाम्लः ॥

मोहः स्वेदश्छर्दनं गन्धिसांद्रं पित्ताजीर्णे लक्षणं सन्निरुक्तम् ॥ ६ ॥

अर्थ—विषमाम्नि आफरा और वातके रोगोंको पैदाकरेहै तीक्ष्णाम्नि पित्तके रोगोंको और
अन्नको दग्ध करदे मन्दाग्नि कफके रोगोंको और आमका पैदा करेहै, समाग्नि नैरोग्य और रुचिकी
पैदा करेहै इसीसे यह समाग्नि अग्नि श्रेष्ठ है ॥ ४ ॥ वातके अजीर्णमें ये लक्षण होते हैं, जमाई,
शूल, प्यास, धूमयुक्तखड़ीउत्कार, भूख अगोंका टूटना, अतिकष्ट, श्वास, शोष, मूत्रघात, हिकका
॥ ५ ॥ एवं मृच्छा, दाह, रुम घोर शूल, प्यास, धूमयुक्त, खड़ी उत्कार, बेहोसी, पसानी, वासके
साथ और गाढ़भेद ये पित्ताजीर्णके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

कफाजीर्णकेलक्षण ।

कफस्याजीर्णेऽङ्गे भवति गुरुता छर्दिरधिका अतीसारः शोथो रुचि-
रपि तृपाक्षुब्धिकलता ॥ वमिलालावक्रादरतिरुदरे भारमधिकं
शिरः कंठे नाभौ गुदपवनसंचारमधिकम् ॥ ७ ॥

इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवै हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रे अजीर्णनिदानं समाप्तम् ॥

अर्थ—अपचित्रता, घनन, नृनघात, कण, कंट, मुख, आंठ इनका मूखना, वेहोती, मनका टामा-
टोप, शरीरमें दाह, मन्द र बालना, त्वचाका मुकडना, भूखका नाश, चेष्टा रहित येमी विषूचि-
काके लक्षण होते हैं ॥ १ ॥ इति श्रीहनुमानार्थवोधिनी टीकामे विषूचिका रोग तथा विलंबिकारोग
लक्षण समान दृशा ॥

अथ क्रिमिनिदानम् ।

जायन्तेक्रिमयोत्तरस्यजठरे बाह्ये च चूकादयो बाह्याभ्यन्तरभेद-
तो बहुविधाः सूक्ष्मातिसूक्ष्मास्तथा ॥ दीर्घादीर्घतरा भवन्ति
मिलिताभिन्नाःपराजन्तवो नानावर्णसमान्विता बहुपदःपादैर्विही-
नाः पराः ॥ १ ॥ मूर्च्छात्तिकंडुंपिटिकाश्च कोटरान् कुर्वन्त्यतीसार-
मनाहसंभ्रमम् ॥ दाहं विवर्णं वमथुं विगन्धितां कार्श्यं शरीरे कृम-
यो मुहुर्मुहुः ॥ २ ॥ उदरगतकृमीणां चिह्नमेतन्नराणां भवति हृद-
यदाहः संभ्रमोऽङ्गे विकारः ॥ अतिरुधिरकासं छर्द्यतीसारशूलं
सकलविकलकायः धीवनं निर्वलत्वम् ॥ ३ ॥

अर्थ—कृमिरोग दो तरहकाहै एक बाहरी, दूसरा भीतरी, पेटमें, गिडोह आदि हो सो भीतरी
और बाहर ज्ये लोम्ब आदि होतहैं ऐसे बाहर और भीतरके भेदमें तथा छोटेसे छोटे और बड़ेसे बड़ेके
भेद करके बहुतभेदहैं नाना वर्णके बहुत पाद तथा पादरहित होते हैं ॥ १ ॥ मूर्च्छा, अर्ति, मुजली,
पिटिका इनका गुजाना अतीसार, अनाह, भौर, दाह, शरीरका वर्ण औरही तरहका, वमन, दुर्गंध,
शरीर कृश, कृमि ये लक्षण कृमिरोगमें होते हैं ॥ २ ॥ उदरमें कृमि पडगये हों उसके ये चिह्नहैं
हृदयमें दाह, भौर, शरीरमें विकार, मन न लगे, दस्तमें रुधिरका गिरना, खांसी, वमन, दम्त, शूल
सब शरीरमें बकरी, शरदार धूकना, निर्वलता ॥ ३ ॥

कृमिरोगकीउत्पत्ति ।

भुक्तस्योपरिभोजनेन सधुराम्लाभ्यां मृदाभक्षणाद्घ्ना सापपयो-
भिरामिपयुतेः श्लेष्मोद्भवाजन्तवः ॥ सन्तापक्षतशोफशाकमधु-
भिर्मद्येन रक्तोद्भवा अन्येर्वा कृमयो भवन्ति जठरे नृणां सदा
दुःखदाः ॥ ४ ॥

कृमिरोगपथ्यम् ।

कृमिवान् संत्यजेन्मिष्टं पिष्टं शाकं पयो गुडम् ॥अव्यायामं मृदु-
आम्लं माषं मांसद्रवं दधि ॥ ५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यकशास्त्रेकृमिलक्षणं संपूर्णम् ।

अर्थ-भोजनके ऊपर भोजन करनेसे, मीठा खड़ा मद्य, दही, दूध, उर्द, मांस इनसे कफकी कृमि पैदा होतीहै सन्ताप, घाव, सूजन, शाकके खानेसे, महत, मद्य इनसे रुधिरकी कृमि पैदा होतीहै और भी प्रकारसे कृमी मनुष्यके पेटमें दुःखकी देनेवाली होतीहै ॥ ४ ॥ कृमि रोगवाला मीठा, पीसाभज, शाक, दही, दूध, गुड, दंडकसरतका न करना, माटीखाना, खड़ीवस्तु, उर्द, मांस, पतलीवस्तु, इनको त्यागदे ॥ ५ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिनी टीकामें कृमिरोगलक्षणसमाप्तहुआ।

पाण्डुरोगनिदानम् ।

दोषाः संकुपितास्त्रयोपि दधते पाण्डुं शरीरेरुजं नृणांतीक्ष्णतमं
द्रवञ्च लवणं रूक्षामिषं सेविनम् ॥मृत्पूगीफलभोजिनां हि सततं
रात्रौ दिवाशायिनां स्त्रीष्वत्यंतविलासिनां प्रतिदिनं शाकान्लसं-
भक्षिणाम् ॥ १ ॥

वातकेपीलियाकंलक्षण ।

पाण्डुर्वातसमुद्भवो नयनयो रूक्षं त्वचः स्फोटनं तोदानां-
हकृमीन् करोति कृशतां गुह्यस्थले शोफताम् ॥ हृत्कंपं श्वसनं
तनो मलिनतां पीतद्युतिं क्षीणतां मन्दाग्निं बलवीर्यकान्तिहरणं
छादिं तृषा दारुणाम् ॥ २ ॥

पित्तकेपीलियाकंलक्षण ।

अक्ष्णोर्मूत्रपुरीषयोस्त्वाचि नखेष्वन्तेषु पीतप्रभां श्वासं कासस-
मन्वितं कृशतनुं मूर्छामतीसारकम् ॥ हृल्लासं हृदि संभ्रमं विक-
लतां दाहं तृपासंयुतं पाण्डुः पित्तसमुद्भवः प्रकुरुते शोषं मुखे
शोफताम् ॥ ३ ॥

अर्थ--जोननुष्य तीखी पतली ज्यादा नोन रूखामांस मट्टी सुपारी इनको खावे तथारातदिन सोवे बहुत मैथुनके करनेसे नित्य शाग और खट्टाखानेसे तानों दोष कुपितहो पाँलियाके रोगको पैदा करते हैं ॥ १ ॥ बातसे पैदाहुये पाँलियाके ये लक्षणहैं नेत्रोंमें रूखापन, त्वचाका फटना, सुईकी-तरहचुभनेका दर्द, आनाह, तथा शरीर कृश भ्रम, गुब्ब इन्द्रोपर सूजन, हृदयमें कंप, श्वास, शरीरमलिन, तथा शरीर पीला, मन्दाग्नि, बलवीर्य कांतिकानाश, वमन, प्यास, मुखका सूखना ॥ २ ॥ नेत्र, पेसाव, दस्त, शरीरकी त्वचा, नख, इनका पीला होना श्वास, खांसी, शरीर कृश, मूर्च्छा, दस्तोंका होना, सूखी उलटी, हृदयमें भ्रम, बेकली, दाह, प्यास, मुक्कका सूखना तथा सूजन ये पित्तसे पैदाहुये पांडुरोगके लक्षणहैं ॥ ३ ॥

कफकेपीलिचाकालक्षण ।

शुक्लाननं शुक्लपुरीषमूत्रं तंद्रालसं स्त्रीष्वरुचिं कृशत्वम् ॥ लाला-
वमित्वं श्वयथुं गुरुत्वं पांड्वामयश्श्लेष्मभवः करोति ॥ ४ ॥

सन्निपातकेपाण्डुरोगलक्षण ।

त्रिदोषोद्भवे पाण्डुरोगे कृशत्वं भवेच्छ्वासकासं तृषा वेप-
थुत्वम् ॥ शिरोर्तिः प्रसेको रुचिः संभ्रमत्वं बलौजो विनाशः
क्लमो छर्दिशूलम् ॥ ५ ॥ त्रिदोषान्वितः पाण्डुरोगी भिषग्भिरसा-
ध्यो निरुक्तो हृताक्षो विचेष्टः ॥ ज्वरः श्वासहृल्लासकासातिसार-
स्तृपासंभ्रसंगेषु कंपः प्रलापी ॥ ६ ॥

अर्थ--सपेदमुख, सपेद पेसाव, और मल, तन्द्रा, आलस, खांसगकीइच्छाका नाश, कृशता
लारका पडना, वमन, शरीरका भारीहोना, ये लक्षण कफसे पैदा हुआ पांडुरोग करता है ॥ ४ ॥
सन्निपातसे उत्पन्न हुआ पांडुरोग उसमें ये लक्षण होते हैं शरीर कृश, श्वास, खांसी, प्यास,
कंप, मथवाय, पसीनेका आना, अरुचि, भ्रम, बल, कांतिका नाश, म्लानि, वमन, शूल ॥ ५ ॥ त्रिदोष,
युक्त पांडुरोगी ऐसा वेद्योने असाध्य कहा है नेत्रसे रहित, चेष्टाकरके हीन, ज्वर, श्वास, सूखी उलटी
खांसी, अतीसार, प्यास, भौर, अंगोंमें कंप, बाहिवात बकना ॥ ६ ॥

यः स्रोतांसि रुणद्धि सो मुनिवरैस्त्याज्यो भृशं दूरतस्तेजो-
वीर्यवलौजसां प्रतिदिनं हानिं करोति ध्रुवम् ॥ पाण्डुत्वं त्वच्चि
नेत्रयोः कररुहे ह्यंत्रेषु विण्मूत्रयोर्धत्ते बह्विविनाशकोऽतिबलवान्
पाण्डुर्मनुष्यादनः ॥ ७ ॥

पाण्डुरोगेपथ्यम् ।

पाण्डुरोगीत्यज्येदम्लं दिवास्वापञ्च मेथुनम् ॥ शाकं मासाशनं
रुक्षं मृद्भक्षमतितीक्ष्णकम् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे पाण्डुरोगलक्षणम् ॥

अर्थ—ऐसा पाण्डुरोगी वैद्यों फरके त्याग्य है जो फानोंसे बहरा करदे, तेज वीर्यबल कांति इन-
की प्रतिदिन हानिकरं, लघ्ना नेत्र नख आंत मूत्रमूत्र ये पालेंहो, जठराग्निसे रहित ऐसा पाण्डुरोग
बली मनुष्यका मारनेवाला जानना ॥ ७ ॥ पाण्डिया रोगवाला मनुष्य ग्वाड़िका खाना, दिनमें
सोना, तथा स्त्रीसंग करना शाक, मांस, रुखी वस्तु, मद्य खाना, अतितीक्ष्णी मिरच आदि वस्तु
का खाना त्यागकरे ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थत्रोधिनी टीकामे पाण्डुरोगका निदान समाप्त हुआ ॥

हलीमक कामला कुम्भकामला पानकीरोग निदान ।

हृत्पद्मेमलमूत्रयोर्नयनयोर्धत्तेतिपीतद्युतिं दौर्बल्यं चलवीर्ययो-
रनुदिनं नाशं भ्रमं कामलाम् ॥ अस्थिस्फोटवती करोति विकलं
मांसाशानाद्रक्तपा संतापं करयोर्मुखे वृषणयोः शोफं च पादद्वयोः १

हलीमकरोगनिदानम् ।

करोति कुम्भकामलानखेषु नेत्रयोर्मुखे पुरीपमूत्रयोर्भृशं सकृष्ण-
तां तृपार्त्तिकृत् ॥ वलाग्निवीर्यतेजसां विनाशिनी प्रकंपिनी ज्वरांग-
दाहवर्द्धिनी विमोहशूलदायिनी ॥ २ ॥ पदचक्रेषु नखेषु मूत्रयुगुले
विण्मूत्रयोर्नीलितां संधत्ते च हलीमकं कृशतनुः स्त्रीषु प्रहर्षक्षयम् ॥
संतापं कुरुते रुजं वितनुते पित्तानिलोत्थं गदं तन्द्रा अंगविमर्दनं
शिथिलतां श्वासं भ्रमं वेपथुम् ॥ ३ ॥ नखेष्वंगदेशेषु मूत्रे पुरीपे द्वयो-
र्नेत्रयोः पाण्डुता तृट्प्रसेकः ॥ वहिः शीतताभ्यन्तरेत्यंतदाहो वदे-
त्पानकीं लक्षणैर्लक्षणज्ञः ॥ ४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यकशास्त्रे
कामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीलक्षणम् ।

अर्थ—जो मनुष्य मांस खावे तथा रुधिर पीयाकरै उसके कामलारोग प्रगट होय और ये लक्षणको करै है, छाती मल मूत्र नेत्र ये पीलेहों, दुर्बलता, बलवैर्यिका नाश, भ्रम, हृत्कूटन, बेकली, संताप, हाथ मुख अंडकोश इनमें सूजन, तथा पैरोंमें सूजनहो ॥ १ ॥ कुम्भकान्द्रा देहमें ये लक्षण करै है; नख, नेत्र, मुख पीला तथा दस्त पेशाब्र काला, प्यास, पीडा और बल अग्नि वीर्य तेजनाशक, कम्प, अवर, देहमें दाह, मोह, शूल करै है ॥ २ ॥ छःचक्रोंमें नखोंमें नेत्रोंमें मलमूत्रमें जो नालापनां करदे और शरीर पतला स्त्रीसंगकी इच्छाको दूर करदे, बेकली, तंद्रा, अंगोंका टूटना, शिथिलता, स्वास, भ्रम, पीडा, इन लक्षणोंको वातापित्तसे पैदा हुआ हृद्योगको गेगो करता है ॥ ३ ॥ नखोंमें शरीरमें मल मूत्रमें नेत्रोंमें पीलाई हो प्यास, पसीना, बाहरीजाडा, भीतरी दाह, इन लक्षणोंसे लक्षणका जाननेवाला पानकी रोगजाने ॥ ४ ॥ इति हस्तराजार्थवैद्यकां कामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकारोगनिदानम् ॥

अथ रक्तपित्तनिदानम् ।

रक्तपित्तकीउत्पत्तिलक्षणं ।

व्यायामैरविवह्नितापसहनैस्तीक्ष्णोष्णकट्वासिपैरत्यन्तं सुरतेर्द्विवा
तिशयनैः स्निग्धान्नसंभोजनैः ॥ एतैः संकुपितं तु पित्तमधिकं निर्गत्य-
वाह्यांतराच्छर्दि लोहितिमां च नेत्रयुगुले रक्ते तनौ मण्डलम् ॥
॥ १ ॥ निःश्वासे लोहगंधिः प्रभवति शिरसो रक्तधारा च कोष्णा
सन्तापः कोष्ठपीडा नयनविकलताऽरोचकः ष्ठीवनत्वम् ॥ तृष्णा
मूर्च्छाप्रसेको मनसि शिथिलता संभ्रमो देहदाहः कासः श्वासो-
त्पचेष्टा कृशतरहुतभुक् रक्तपित्तस्य कोपात् ॥ २ ॥ अधोर्ध्वः भवे-
द्रक्तपित्तप्रवृत्तिः श्रुतिघ्राणवत्क्लाक्षिभिश्चोर्ध्वदेशे ॥ गुदायोनिमेद्वे
रधोयाति रक्तं समस्तैश्च रोमैः शरीरस्थ बाह्ये ॥ ३ ॥

अर्थ—दड कसरतकेकरनेसे, घाममें डोलनेसे, अग्निके तापनेसे, तीव्र गग्नी कटुई मांस इनके खानेसे, अति स्त्रीसगासे, दिनमें सोनेसे, स्निग्ध अन्नके भोजनसे, कुपित हुआ जो पित्त सो रुधिरको बिगाडकर रुधिरकी उलटी करतावे तथा नेत्रोंसे रुधिर गिरे और शरीरमें सूजन बिगडनेसे चकत्ता होजाय ॥ १ ॥ रक्त पित्तके कोपसे ये लक्षण हो स्वास लेनेमें लोटकासी गंधिरो, शिमेसे रुधिरकी गरमधारा पड़े, प्यास व्याकुलताहो उदरमें पीडा नेत्रोंमें बेकली, अग्नि, रुधिरका धूकना, मूर्च्छा, तथा पसीनेका आना, मनमें शिथिलता, भ्रम, देहमें दाह, खांसी, श्वान, धनूचेष्टा, अग्निमंद ॥ २ ॥

रक्त पित्तकां प्रवृत्ति ऊपर तथा नाँचेके रस्तासे निकसे सो लिखते है, जो कानोंसे नाकसे मुखसे नेत्रसे रुधिर गिरे उसे ऊर्ध्वप्रवृत्ति जाने और गुदाके द्वारा तथा योनिद्वारा लिंगसे रुधिर गिरे उसे अधोप्रवृत्ति जाने और सत्र रोनोंसे शरीरके बाहर निकसता है ॥ ३ ॥

वात पित्त कफ और सन्निपातजन्यरक्तपित्तके लक्षण ।

रूक्षारुणं श्यामतरं च रक्तं वातात्मकं तं प्रवदन्ति वैद्याः॥ पित्तो-
त्थितं रक्ततमं कषायं स्निग्धञ्च सांद्रङ्कफजं सफेनम् ॥४॥ ऊर्ध्वगं
कफजं रक्तमधोगंमारुतोद्भवम्॥रोमकूपैर्वहिर्यातं तं विद्यात् पित्त-
संभवम् ॥ ५ ॥ अधोर्ध्वगंवातकफप्रकोपात् द्विदोषजं तं जपदान-
साध्यम् ॥ अधोर्ध्वरोमैर्जनितं त्रिदोषकोपादसाध्यं मुनिभिः
प्रदिष्टम् ॥ ६ ॥

अर्थ—रूखा डाल काळा जो रुधिर निकले उसे वातका रक्तपित्त वैद्य कहते हैं और डाल कसेला पित्तका तथा चिकना, गाढा, शागयुक्त, कफका कहते है ॥ ४ ॥ जो ऊपर मार्गसे रुधिर गिरे उसे कफका जानो, और नाँचे मार्गसे गिरे उसे वातका जानो और जो रोमोंसे गिरे उरो पित्तका जानो ॥ ५ ॥ वातकफके कोपसे ऊपर तथा नाँचे मार्गोंसे रुधिर गिरता है, उसे द्विदोषका जानो, वह जप दानके करनेसे अच्छा हो और नाँचे तथा उपरका तथा रोमनागोंसे जे रुधिर गिरे उसे सन्निपातका जानो वह मुनियोंने असाध्य कहाहै ॥ ६ ॥

साध्यरक्तपित्त ।

रक्तपित्तं सुखं साध्यं निरुपद्रवमेव तत् ॥ सोपद्रवं तु दुःसाध्यं
जपहोमौषधादिभिः ॥ ७ ॥ उद्वारे लोहितं यस्य क्षुते निष्ठीवने
तथा ॥ भवेन्मूत्रे पुरीषे वा रक्तपित्ती म्रियेन्नरः ॥ ८ ॥

रक्तपित्तरोगे पथ्यम् ।

व्यायामं घर्मसंतापं तीक्ष्णोष्णकटुकानि च ॥ दिवास्वापमत्ति
स्निग्धं रक्तपित्ती नरस्त्यजेत् ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्कचिकित्सात्सवे हंसराज-
कृते वैद्यशास्त्रे रक्तपित्तलक्षणम् ॥

अर्थ—जो उपद्रव रहित रक्तपित्तहो वह सुखसाध्य है और जो उपद्रवकों साथ हो वह असाध्यहै सो जपके करानेसे होम और औषधि करनेसे भी नहीं अच्छाहो ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यके डकार लेनेमें लोहेको बास मारे तथा छीकनेमें थूकनेमें मूत्रमें मलमें रुधिर गिरे, वो रक्तपित्ता मनुष्य मरे। ८ ॥ दंड कसरत करना, धूपमें डोलना, खेद, तीखी गरम कटु वस्तुका भोजन, दिनमें सोना, अत्यंत चिकनी वस्तु रक्तपित्तवाला त्याग करदेवे ॥ ९ ॥ इति हंसराजार्थवेधिनो टीकामें रक्तपित्तोगनिदान समाप्त हुआ ॥

यक्ष्मण उत्पत्तिः ।

यो भारं वहते नरो गुरुतरं संपीड्यते यक्ष्मणा शस्त्रास्त्रैः परिघा-
तितो दृढधनुःप्राकर्षतः पीडितः ॥ उच्चैर्वापतितो महाश्मतरुभिः
संदीपितो मर्दितो दंडैर्मुष्टिकसदिभिः परिहतः संधर्षितः शापितः ॥ १ ॥

अथ निदानम् ।

देहस्थो राजयक्ष्मा हृदि कफनिचयं वर्द्धते शोपतंगं नाडीमार्गं
रुणद्धि ज्वरयति मनुजं क्षीयते धातुसंधान् ॥ वीर्योजःकांतितेजोऽन-
लवलपिशितं हंति पांडुं विधत्ते ऊर्ध्वं श्वासं तनोति प्रसरति
हृदये क्षीणशब्दं करोति ॥ २ ॥ यक्ष्मारूक् कुरुतेरुचिं कृशतनुं
सूक्ष्मं ज्वरं गौरवं देहं जर्जरितं क्षतं च गलके कासाधिकं शोप-
णम् ॥ संतापं हृदि वेपथुं सरुधिरं निष्ठीवनं पूयभं मोहं छर्धरति-
श्रमं शिथिलतां शूलं क्वचिदारुणम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य भारी व्यासको उठावे, तथा शस्त्र अस्त्रसे घायलहो, दृढधनुषके पीचनेसे, कोई कारण कर पीडित होनेसे, उच्चपर्वत वा वृक्षके गिरनेसे, जलनेसे, और मोडनेसे तथा दंड कोरटा वृत्ते आदिके पिटनेसे डरपनेसे महात्माओंके शापसे क्षयरोग पैदा होताहै ॥ १ ॥ देहमें क्षयरोग स्थित ये लक्षणोंको करे है हृदयमें कफको बढ़ावे, शरीरको मुखादेवे, नाडीके मार्गोंको रोकदे उबरावन् करदे, धातुके समूहको सुखापदे, वीर्य बल तेज ताकत कांति जठराग्निके बलकां तथा मांसको क्षीणकरदे, पीलियाको करे, ऊर्ध्व श्वासको करे, तथा क्षीण शब्दको करे है ॥ २ ॥ अरुचि तथा कृशदेह, मंदज्वर, शरीरभारी, जर्जर शरीर गलेमें घाव, खांसी, शोष, खेद, हृदयमें कंफ, रुधिर राधमिलाप थूकना, बेहोशी, रक्तकरना, मनका टामाडोल होना, अन, शिथिलता, कर्मा महाशूल होजाय अथवा शूल जोरसे चलना ये लक्षण क्षयरोग करे है ॥ ३ ॥

विवर्णं शरीरं शकृद्भक्तमूत्रं करोत्यंगपीडां महाराजयक्ष्मा ॥ तनो
गून्यतां बुद्धिनाशं प्रलापं गले घर्घरत्वं युवत्या प्रहृषम् ॥ ४ ॥

वातकीर्क्षकालक्षणम् ।

मन्दाग्निर्वलवीर्ययोरनुदिनं हानिः कृशत्वं वपुः कासः शुष्कतरो
रुतं कृशतरं श्वासो रुचिः शोपता ॥ रूक्षो मंदतमो ज्वरः क्लम
क्षुता निष्ठीवनं पूयनं छर्दिर्वा यदि वेपथुर्भवति तत् वातक्षये
लक्षणम् ॥ ५ ॥

पित्तकीक्षयीकेलक्षणम् ।

पीडाकुक्षिशिरोगलेषु हृद्दये रक्तं च निष्ठीवनं शीतम्लेऽधिकता
रुचिर्ज्वलनता कंठे विगन्धिमुखे ॥ कासश्वाससमन्विताः कृशतनु-
र्भिन्नस्वरोल्पज्वरस्तत्पित्तक्षयलक्षणंनिगदितं वैद्यैःसुपेणादिभिः ६

अर्थ-शरीरका वर्ण भीरही प्रकारका होजाय, बारबार छाल पेशाब उत्तरे, शरीरमें
पीडाहो, मुत्र शरीर पडजाय, तथा बुद्धिका नाश, बराना गलेमें. घर्घर शब्दहो खीके
साथ रमणकी इच्छाहो, ये लक्षण महाराजयक्ष्मा करता है ॥ ४ ॥ वातकी क्षयके ये लक्षण हैं,
मंदाग्नि, वृत् वीर्यकी हानि, शरीर कृश, श्वास, मंदशब्द और खांती, अरुचि, शोप, शरीर रूखा
मदज्वर, म्लानि, राधका थूकना तथा उलटी करना, हृदयमें कंप ॥ ५ ॥ कास मस्तक गला
हृदय इनमें दर्दहो, गंधिर मिला थूकना, शीतकी तथा खटाईकी इच्छाहो अरुचि तथा कंठमें जलन
मुखमें वास आवे, खांसी श्वासहो, कृशदेहहो, दुरी आवाज हो मंदज्वर, ये लक्षण सुपेणादि वैद्योंने
पित्तकी क्षयके कहे है ॥ ६ ॥

कफकीक्षयीकेलक्षणम् ।

शोफःकासरुजाग्निमंदजडता श्वासो रुचिर्वेपथुः शैथिल्यं स्वर-
भंगतांगकृशता वत्कंविगन्धान्वितम् ॥ तंद्रा कुक्षिरुजः कफं बहु-
तरं निष्ठीवनं पूयनं स्यात् श्लेष्मक्षयलक्षणं च हृद्दये कंठं दृढं
श्लेष्मणः ॥ ७ ॥

असाध्यक्षयिके लक्षणं ।

सहस्रदिनपर्यन्तं न जीवेदिति मानवः ॥ ग्रहेण यक्ष्मणाग्रस्तोऽ
साध्येनातिबलीयसा ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे वैद्यशास्त्रे हंसरा-
जकृते यक्ष्मणोलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—सूजन, खासी, अग्निमंद, जडता, श्वास, अरुचि, कप, शिथिलता, गलेकां बैठ जाना, शरीर पतला, मुखमें वासका आना, तद्रा, कांखमें दर्द, कफका तथा पीवका, थूकना, कंठका कफसे रुकना, ये कफकी क्षयिके लक्षण हैं ॥ ७ ॥ जिस मनुष्यको क्षयरूप बलवान असाध्यग्रहने प्रसलिया हो वह मनुष्य हजार दिनतक बडी कठिनतासे जीसके ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थत्रैविन्याः राजयक्ष्मरोगनिदानम् समाप्तम् ॥

अथकासरोगलक्षणम् ।

वक्राक्षिनासासुरजाभिपाताद्भूमोपरुद्धात् गुरुभारवाहात् ॥ रू-
क्षादनाइंडकशादिघातात् कासोतिघोपादुपजायते वै ॥ ९ ॥

खांसीके लक्षण ।

प्राणः कंठगतोत्युदानपवनो हृत्स्थोतिपीडाकरः शब्दः कांस्यवि-
भिन्नघोपसदृशो निष्ठीवनं पूयभम् ॥ कंठे घुरघुरशब्दता कृशतनु
स्त्वकूपीतवर्णारुचिर्विद्वद्भिः परिकीर्तितं हि सकलं कासस्य चिह्नं
महत् ॥ २ ॥

वातकीखांसीके लक्षण ।

उरसि शिरसि कुक्षौ वेदना कंठदेशे भवति बलविनाशः धीवनं
तुच्छतुच्छम् ॥ गलमुखपरिशोषः शुष्ककासोऽंगमर्दः क्षवथुररतिरु-
था वातकासस्य चिह्नम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मुखमें नेत्रमें नाकमें घृत्तिके पडनेसे, तथा धुआंके जानेसे, भारी बोझके उग्रनेसे, गरजा खानेसे, दंडकीरडा आदिके पिटनेसे, अत्यन्त पुकारनेसे, खांसी पैदा होती है ॥ १ ॥ हृदयकी रहनेवाली जो प्राणवायु सो कंठमें प्राप्तहो और कण्ठकी रहनेवाली जो उदानवायु सो हृदयमें

आती है तब इस रोगीको बहुत दुःख देती है और इस मनुष्यका शब्द जैसा कासीका फूटा अरतन बोलता है इस तरहकी आवाज हो, और कफमित्रा थूके, कंठमें घरघर शब्दहो, शरीर उटजाये त्वचा पीली होजाय, अरुचि, ये लक्षण पंडितोंने खांसीके कहे हैं ॥ २ ॥ हृदयमें मस्तकमें कंठमें कंठमें दर्द, हो बलका नाश, थोड़ा थोड़ा थूकना, गलेका तथा मुखका सूखना, सूर्याखांसीका उटना शरीरका टूटना, छींकका आना, मनका न लगना, ये वादीकी खांसीके लक्षण हैं ॥ ३ ॥

पित्तकीखांसीकेलक्षण ।

भवेद्दीर्यहानिर्ज्वरो वक्त्रशोषः सरक्तं च निष्ठीवनं शूलमुग्रम् ॥ तृ-
पासंभ्रमस्तिक्तमास्यं विदाहो निरुक्तं परैः पित्तकासस्य चिह्नम् ॥४॥

कफकीखांसीके लक्षण ।

निष्ठीवनं सांद्रकफेन युक्तं कासेन छर्दिर्वलवीर्यनाशः ॥ शीर्षं
प्रपीडा जडतांगगौरवं श्रोतं भिषग्भिः कफकासचिह्नम् ॥ ५ ॥

त्रिदोषकीखांसीकेलक्षण ।

भवेद्यस्य निष्ठीवनं पूयवर्णं मुखान्नासिकाया विगंधिर्विवर्णम् ॥
महाश्वासवाहोंगतेजोल्पवीर्यः स कासी न जीवेत्कदाचित्सुधाभिः ६

अर्थ-वीर्यका नाश, ज्वर, मुखका सूखना, रुधिरमिला थूकना, उग्रशूल, प्यास, भौर, कड़ुवा मुख, दाह, ये लक्षण पित्तकी खांसीके पूर्वाचार्योंने कहे हैं ॥ ४ ॥ गाढा कफका थूकना, रहो चन्द्र वीर्यका नाश, शिरमें दर्द, जडता, देहका भारी होना, ये लक्षण वैद्योंने कफकी खांसीके कहे हैं ॥ ५ ॥ राधके वर्णके समान थूकना, मुख नाकमें वासआये, तथा विवर्ण, महाश्वासका चटना, देह, तेज-वीर्य-इनका घटना, ऐसा खांसीवाला अमृतसेभी नहीं जीवे ॥ ६ ॥

असाध्यखांसीके लक्षण ।

मुखे यस्य शोथो रुचिवेपथुत्वं सरक्तं च निष्ठीवनं फेनिलं वा ॥
तृपा शूलमुग्रं भवेद्दुष्टगंधिः स कासी न जीवेत्सहस्रैर्भिषग्भिः
वृद्धक्षीणतमः कासी साध्यो दानजपादिभिः ॥ तरुणो बलवा-
न्साध्यः पथ्यैरौषधिभिर्वुधैः ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसरा-

जघृतेवैद्यशास्त्रेकासलक्षणम् ॥

अर्थ—मुखपर जिसके सूजनहो, अरुचि, कंन, खिर मिथ तथा शाग मिथ थूकना, प्यास, शूल दुर्गंधिका मुखमें आना, ऐसे लक्षणवाला रोगी हजार वैद्योसेभी नहीं जीवै ॥७॥ बूढा तथा जो क्षीण पडगयाहो, वह रोगी दान जगदिकोसे साथदे और जो रोगी तरुणहो तथा बलवानहो वो पथ्य और औषधियोसे पंडितोंमें खासीवाला साव्य कहाहै ॥ ८ ॥ इतिहंराजार्थवोविन्यांकासरोगालक्षणःसमाप्तम् शुभम् ॥

अथ हिक्कालक्षणम् ।

• हिक्कारोगकी उत्पत्ति ।

रजोभ्रूषपापात् मुखे नासिकायां गरिष्ठान्नपानाज्जलस्यावगाहात् ॥ श्रमादध्ववेगान्तृपातैररुच्या भवेयुर्नृणां पंचधा रौद्रहिक्काः ॥ १ ॥ प्राणोदानसमानकोपजनिता हिक्कात्रवृद्धिप्रदा कष्टं हंति करोति जन्मसमयेवालस्य वृद्धिसुखम् ॥ तेजोजोवलीर्यवृद्धिमधिकां हर्षं रुचिं वर्द्धयेद्रक्तास्यं तनुकंपनं नयनयोर्विस्फारमार्द्रगलम् ॥ २ ॥ तारुण्ये वयसि स्थिते कफमरुज्जाता न हिक्का हिता वैरस्यं वदने गले सरसतां कुक्षौ श्पीडारुजम् ॥ आटोपं हृदये रुणाद्धि पवने मर्माणि संतोदते छर्दिं सा कुरुते रतिं वितनुते हृष्ट्यासमुष्ट्यासते ॥ ३ ॥

अर्थ—भूलि धुआ इनका मुख और नाकमें जानेसे, गरिष्ठ अन्नके भोजनसे, जलमें बहुत देरके रहनेसे, श्रमसे, रस्तेके चटनेसे, चौदह वेगोंके रोकनेसे, प्याससे, अरुचिसे, मनुष्योंके पांच प्रकार का घोर हिचकीका रोग पैदा होताहै ॥ १ ॥ प्राण उदान समान पवनोके कोप करनेसे हिचकी आंतोंको बढ़ावे, कष्ट करे, तथा रोगीको मारती है और वायुके जन्मसमय वायुको बढ़ावे तथा मुखदे, और तेज बलवीर्यको बढवारको करे तथा हर्ष रुचिको बढ़ावे मुखको त्याग करे शरीरको कँपावे नेत्रोंको फटसे करे कंठको गाल्यकरे ॥ २ ॥ तरुण अवस्थामें जो वातकफसे पैदा हुई हिचकी में अहितहै मुखको विरस करे, गलेमें सरसता करे, कांठमें पीडाकरे, छातीको घेरले खासको रोकरे मर्ममर्ममें पीडाकरे वमन तथा मनका न लगना, खासी, मूलीरद, ये लक्षण करी ॥३॥

वार्द्धक्ये वयसि स्थिते सति महाहिक्का यदा जायते पित्तश्लेष्म मरुद्भवा प्रकुरुते पीडां गले मस्तके ॥ शूलाध्मान्तृपातरुचिं वितनुते हृष्ट्यासहृत्पीडनं पंचत्वं वितनोति रोगमखिलं प्राणां-

त्रिहन्ति द्रुतम् ॥ ४ ॥ उदानवायुकोपेन पंचहिका भवन्तिताः ॥
 कुर्वन्ति विविधान् रोगान् तासां नामानिसंश्रुवे ॥ ५ ॥ गम्भीरां
 महती तथा च यमला क्षुद्रान्नजा पंचधा गम्भीरोदरगर्जनी ज्वर-
 करी मर्माणि संतोदते ॥ सर्वोपद्रवकारिणी बलहरी नाभेः प्रवृत्ता
 हि सा अन्याया महती करोति च तनौ कंपं शिरःपीडनम् ॥ ६ ॥

अर्थ—वृद्ध अवस्थामें जो हिचकी हो वो वात पित्त कफ तीनों दोषोंसे पैदा होताहै वो घोर
 हिचकी कंठमें तथा शिरसे दर्दको करै है, शूल, अपरा, व्यासं, अरुचि, खाद्य रद, हृदयमें दर्द,
 और सबरोग पे लक्षण हो तो मनुष्य जल्दी मरजावे ॥ ४ ॥ उदान पवनके कोपसे पांच तरहकी
 हिचकी पैदा होताहै और अनेक तरहके रोगोंको पैदा करताहै उन पांचोंके नाम कहते
 है ॥ ५ ॥ १ गंभीरा, २ महती, ३ यमला, ४ क्षुद्रा, ५ अन्नजा; प्रथम गंभीराके लक्षण
 कहते है गंभीरा पेटमें गुडगुडाहट करै, ज्वरको करै, मर्ममर्ममें पीडाकरै और सब उपद्रवोंको
 करै, बलका नाशकरै, यह हिचकी नाभिसे उठती है. अब दूसरी महतीका लक्षण कहतेहै
 शरीर कांपै, शिरसे दर्दहो ॥ ६ ॥

वातश्लेष्मभवाकरोति यमला हिकांत्रपीडारुजौ श्रीवातालुविभे-
 दिनी बलहरी श्रीवाशिरःकंपनम् ॥ क्षुद्रानाभितलोद्भवारसचयं
 चोर्ध्वनयेत्कष्टदा वरस्यं वदनेन्नजा वितनुते गात्रे शुरुत्वं तथा ॥ ७ ॥

इति भिपक्चक्राचिचोत्सेवे हंसराजकृते
 वैद्यशास्त्रे हिकालक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—तासरी वात कफसे पैदाहुई जो यमला नाम हिचकी सो आंतोंको पीडा दे, कंठतालुमें
 दर्दकरै, बलका नाशकरै, नाडीशिर इनको कांपावे, चौथी जो क्षुद्रानामकर प्रसिद्ध हिचकी है सो
 नाभिके नचि उठती है, वो रसको ऊपर लेजाताहै अर्थात् उल्टी करावे और कष्टको पैदाकरै,
 मुखको बिरस कराती है, पांचवी जो अन्नसे पैदाहुई हिचकी सो शरीरको भारी कराती है ॥ ७ ॥
 इति हंसराजत्रयोविनीमें हिकालक्षणसमाप्तहआ ॥

श्वासरोगनिदानम् ।

प्राणोदानसमानकोपजनितः श्वासो रूपावर्द्धते कुद्धोर्ध्वं व्रजते
 सुहृसुहुरथो दोधूयमानं नरम् ॥ निद्रां हन्ति महातृषां वितनुते शीत-

ज्वरं कंपनं प्रस्वेदं कुरुते तनौ विकलता दाहं भ्रमं विभ्रते ॥१॥
 शुष्कास्यं कुरुते रुणद्धि परतः स्रोतांसि रक्ताननं हृत्कंठोष्ठमुखेषु
 शोषमरतिं श्वासो रुचिं नाशते ॥ आध्मानं तनुते शिरां विधमते
 नृणां तनुं कंपते शूलं वेदनया युतं विकलतां शब्दं परं रुधते ॥२॥
 श्वासः स्वाभाविको मंदो ह्यतिश्वासोरुजाकरः ॥ मृतिप्रदो महाश्वा-
 सस्त्रिविधं श्वासलक्षणम् ॥ ३ ॥

अर्थ—प्राण, उदान, समान इन तीनों पवनोंके कोप करनेसे क्रोधकर बढती और ऊपरनीचे
 विचरती है कभी ऊपर चढ़े कभी नीचे उतरे नादकानाश, तथा घोर प्यासको पैदाकरे, शीतज्वर,
 कंप, पसीना, इनको पैदाकर शरीरमें बेकली, दाह, भौर, ये लक्षण श्वासरोग करताहै ॥ १ ॥
 श्वास मुखको सुखावे, नाडियोंके मार्गको रोकदे, चेहरेको लाल करताहै, हृदय, कंठ, ओठ, मुख
 इनमें शोषहो, मनका न लगना, अरुचि, अफर, नाडीनको धमावे, शरीर कंपावे, वेदनायुक्त
 शूल, तथा बेकली और आवाजको निहायत कम करती है ॥ २ ॥ श्वास जो है सो स्वभावसेहो
 मंदहोताहै परंतु अतिश्वास रोग करता है और महाश्वास मौतका देनेवाला है ये तानप्रकारके
 लक्षणहो ॥ ३ ॥

स्वाभाविकश्वासकेलक्षण ।

श्वासः संकुरुते बलं मृदुतनुं स्वाभाविकः सौख्यदो धैर्यं शौर्य-
 मदोत्सवं सुभगतां शक्तिं पवित्रं नरम् ॥ ऊर्ध्वाधोगतिरुत्तमा पवनयो-
 दुर्गन्धिनिर्णाशकः सौगन्धिं सुकुमारतां वितनुते हर्षं परं वर्द्धते ॥४॥

अतिश्वासकेलक्षण ।

अतिश्वासः कासं वितरति भृशं शूलमरतिं बलं वीर्यं तेजो हरति
 कुरुते छर्दिमरुचिम् ॥ मुखं घ्राणं कण्ठं तुदति बहते श्लेष्ममधिकं
 तृषाध्मानं हिक्कां तनुषु गुरुतां स्वेदमधिकम् ॥ ५ ॥

महाश्वासकेलक्षण ।

संज्ञां नाशयते रुणद्धि सततं स्रोतांसि विष्टम्भनं वाग्वंधं कुरुते
 गलेकफचयं मर्माणि संतोदते ॥ औद्धत्यं नयनं तृषां च हृदये दाहं
 मुखे शोषणं नाडीस्रोतयते भ्रमं वितनुते श्वासो महान् प्राणहादः ॥

इति श्रीभिषकचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यकशास्त्रे श्वासलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—स्वामात्रिक श्वास बलको करै तथा देहको कोमल रक्त्वे, सुखको दे, धैर्य तथा पराक्रम, मद, मंगल, सुंदरता, शक्ति पवित्रताको दे और पवनका ऊपर नाँचेका आना जाना श्रेष्ठै और दुर्गन्धको नाश करती है, और सुगन्धको दे, तथा सुकुमारपना और हर्ष इनको बँढावै ॥ ४ ॥ अतिश्वाससे खाँसी, शूल, मनका, न लगना हो, बलवीर्य तेजको घटावै, चमन, अरुचिं मुख नाक कंठमें पीडाहो, कफ अधिक गिरे, प्यास अफरा, हिचकी, शरीरभारी, पसीना इनको अधिक करै ॥ ५ ॥ प्राणोंको नाशक, महाश्वास ये लक्षण करती है संज्ञाका नाश, और नसोंके मार्गको रोकदे मलका न उतरना, जवानका बन्दहोना, कंठमें कफका जोर, मर्ममर्ममें पीडा, फटे फटेसे नेत्र, प्यास, हृदयमें दाह हो, मुखका सूखना, नसोंका टूटना, भौरका आना ॥६॥ इति हंसराजबोधिन्यां श्वास लक्षणं समाप्तम् ॥

स्वरभेदलक्षणम् ।

अत्युच्चभाषाध्ययनाभिघातैस्तेलादिभक्षैरतिदुष्टपानैः ॥ संको-
पितः पित्तकफानिलास्ते कुर्वन्ति भिन्नस्वरमेवनृणाम् ॥ १ ॥
संभिन्नकांस्यस्वरतुल्यशब्दाः केचित्तथा गर्दभतुल्यघोषाः ॥ अजा-
विच्छुच्छंदारिकाकशब्दं मुखे नेत्रयोः श्यामता मूत्रवर्चाः ॥ २ ॥ क-
चिद्दीर्घशब्दं खरोप्राश्चतुल्यं वचः प्रस्थलं वातलं कंठपीडाम् ॥३॥

अर्थ—उच्चस्वरके पढनेसे, चोटके लगनेसे, तेल खटाई आदिके खानेसे, दुष्ट जलके पीनेसे, कौपको प्राप्तभये जो वात पित्त कफ से मनुष्योंके स्वरभंग रोग पैदा करतेहैं ॥ १ ॥ जैसे फूटे हुये काँसेकीसी आवाजहो, तथा गधेकीसी आवाजहो, अथवा बकरीके शब्दकीसी आवाजहो, छच्छंदरकीसी आवाजहो, तथा कौवेकीसी आवाजहो, मुख नेत्र फालेहो, पेशाब ज्यादाउतरे ॥ २ ॥ कमी बड़ा शब्द करे, गधेकी ऊटकी, घोडेकी, आवाजके समान कंठमें दर्द ये वातके स्वरभंगरोगके लक्षण हैं ॥ ३ ॥

पित्तकेस्वरभंगलक्षण ।

स्वरः पित्तभिद्भिन्नकांस्यप्रघोषः करोत्यंगदाहं मुखेत्यंतशोषम् ॥
तनौनेत्रयोः पीततां मूत्रकृच्छ्रन्तृपां कंठपीडां रुजं क्षीणगात्रम् ॥४॥

कफकेस्वरभंगकालक्षण ।

प्रभिन्नः स्वरः श्लेष्मणा क्षीणघोषो गलं श्लेष्मरुद्धं गुरुत्वं श-
रीरे ॥ गलेघर्घरत्वं रुतं शुभ्रनेत्रं मुहुः धीवनं कासमुग्रं करोति ॥५॥

असाध्यस्वरभंगकालक्षण ।

अंतर्गतः स्वरो यस्य वहिर्नायाति कर्हिचित् ॥ वातपित्तकफै-
र्भिन्नः स रोगी नैव जीवति ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैक्यशास्त्रे
स्वरभेदलक्षणम् ।

अर्थ—पित्तका स्वरभंग फूटे कांसेकीसी आवाज करे, देहमें दाह, मुखका सूखना शरीर तथा
नेत्रपांले, मूत्रकृच्छ्र, प्यास, कंठमें दर्द, शरीरका लटना, ये लक्षण करताहै ॥ ४ ॥ कफका स्वरभंग
आवाजको मंद करे, कंठको कफसे रोकदे, शरीर भारी, गलेमें घरघर शब्दहो, पींडाहो, सफेद
नेत्र हों, बार बार थूकना, घोरखांसीको करे ॥५॥ जिस स्वरभंगवाले, रोगीका स्वर भीतरही रहे
और बाहर न निकले और त्रिदोषसे हुआ हो वह रोगी नहीं जीवे ॥ ६ ॥ इति हंसराजार्यबोधिन्यां
स्वरभेदलक्षणं संपूर्णम् ॥

अरोचकरोगकीउत्पत्तिलक्षण ।

अरोचकः पित्तमरुत्कफैर्भवेद्भयेन शोकेन रुपांगपीडया ॥ रु-
जातिवीभत्सविलोकनेन वा अहृद्यदुष्टाशनपानपूर्तिभिः ॥ १ ॥

वातअरोचकरोगकालक्षण ।

अरोचके वातसमुद्भवे हिते भवंति चिह्नानि मुखे कपायता ॥
चपुस्तु रूक्षं कृशतांगगौरवं ज्वरोम्लताशूलमथांगपीडनम् ॥ २ ॥

पित्तकेअरोचककालक्षण ।

असेचकः पित्तभवः करोति दाहं प्रसेकं कटुकत्वमास्ये ॥ श-
रीरवाह्यांतरयोश्च शोथं पानेषु भक्ष्येष्वरुचिं कृशत्वम् ॥ ३ ॥

कफकेअरुचिरोगकालक्षण ।

अरोचकः श्लेष्मभवो विधत्ते गुरुत्वमंगेषु जडत्वमार्तिम् ॥ क्षार-
त्वमास्ये रुचिमोहशैत्यं गले कफं पांडुरुजं शरीरे ॥ ४ ॥

वातकीअरुचिमंपथ्य ।

अरोचकी मरुद्भवस्त्यजेत् प्रवातसेवनम् ॥ श्रमंजलावगाहनं क-
षायमम्लमामियम् ॥ ५ ॥

पित्तकीअरुचिमंपथ्य ।

पित्तात्मके त्यजेत्तीक्ष्णं विदाहि लवणाधिकम् ॥ व्यायामं वह्निसं-
तापं विरसं कटुकं रसम् ॥ ६ ॥

अर्थ—मयसे, शोकसे, क्रोधसे, शरीरकी पीडासे बुरीवस्तुके देखनेसे मनको बुराटगे ऐसे भोज-
नसे तथा दुष्टवस्तुके पीनेसे अरोचक रोग वात, पित्त, कफके कोपसे पैदा होता है ॥ १ ॥ वादासे
पैदा हुआ अरोचक रोग उसके ये लक्षण हैं, मुख कड़ुवा, शरीररूखा, तथा कृश, तथा भारी,
और ज्वर, तथा खट्टा मुख, शूल, शरीरमें पीडा ॥ २ ॥ पित्तसे पैदा हुआ अरुचि रोग उसके ये
लक्षण हैं, दाह हो, लारका बहना, कड़ुवा मुख, शरीरका बाहर भीतरसे सूजना, खानेमें तथा
पीनेमें अरुचि, शरीर कृश ॥ ३ ॥ कफसे पैदा हुये अरुचि रोगके ये लक्षण हैं, शरीर भारी, तथा
जड और दुःखहो, मुख खाराहो, तथा श्वास, अरुचि, बेहोसी, शीतका लगना, कंठमें कफ तथा
शरीरमें पीलिया ॥ ४ ॥ वादीकी अरुचिवाला हवाका खाना, श्रमका करना, जलसे खान आदि
और कसेली तथा खट्टी वस्तु और मांसका खाना त्यागदे ॥ ५ ॥ पित्तकी अरुचिवाला मनुष्य
चरपरी, दाहकरनेवाली, ज्यादा नोनका खाना, दंडकसरतका करना, अम्लिका तापना, विरस, तथा
कड़ुई वस्तुका खाना, त्यागदे ॥ ६ ॥

कफकीअरुचिमंपथ्य ।

त्यजेदरोचकीपिष्टं तैल्यं शैत्यं कफात्मकः ॥ गुरुत्वं दधि मिष्टान्नं वृन्ता-
कं लिग्धभोजनम् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक् चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
अरोचकलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

अर्थ—कफकी अरुचिवाला पिसा अन्न, तेलका पदार्थ, तथा शीतल वस्तु, कफके करनेवाली
वस्तु, भारीवस्तु, दही, मांठाअन्न, दूध, चिकनाभोजन, ये त्यागदे ॥ ७ ॥ इति हंसराजार्थबो-
न्यामरोचकतोगलक्षणं समाप्तम् ॥

छर्दिरोगलक्षणम् ।

द्वोपैर्व्यस्तैः समस्तैर्वा वातपित्तकफात्मकैः ॥ भवंति छर्दयः
पंचवीभत्सानां विलोकनात् ॥ १ ॥ स्निग्धैरहृद्यैर्लवणैरतिद्रवैर्ल-
तादिभक्ष्यैरतिभोजनै रूपा॥अत्यंबुपानैर्भयनिन्द्यदर्शनैश्छर्दिर्भवेद्-
ध्वपरिश्रमैः परैः ॥ २ ॥

वातकीछर्दिकेलक्षण ।

छर्दिर्वातभवाकरोति विविधान् रोगानलं भोजनी कृष्णाभा हरि-
तारुचिः शिथिलतां हृत्पाश्वर्षपीडां भ्रमम् ॥ उद्गारं स्वरभेदनं च
महतीं जृम्भां गले पीडनं शूलं रूक्षवपुस्तृपां च शमनं वहे-
स्तनौ शोषणम् ॥ ३ ॥

अर्थ—वात, पित्त, कफसे तथा सन्निपातसे तथा, घुरीवस्तुके देखनेसे छर्दि उलटीका रोग पांच-
प्रकारका होताहै ॥ १ ॥ चिकनी सूगली नोनकी पतली तथा लता आदिके खानेसे, बहुत भोजन-
से, क्रोधसे, बहुत जलके पीनेसे, डरके लगनेसे, सूगली वस्तुके देखनेसे, बहुत रास्ताके चलनेसे,
अपर कहिये कृमिके पडनेसे, स्त्रीके गर्भ रहनेसे, छर्दिनाम रक्कारोग पैदा होताहै ॥ २ ॥ जा
मनुष्य बहुत भोजनकरे उसके वातकी छर्दि अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करतीहै, तथा काले रंगकी
तथा हरे रंगकी हो, और शिथिलताको करे, हृदयमें पसवाडोंमें पीडाकरे, भ्रमकोकरे, उक्कारखुरीके
आना, स्वरभंग, घोर जंभाई, कंठमें पीडा, शूल, शरीरमें रूखापन, प्यासका अवरोध, शरीरमें
आगसी जले, और शोषको करे ॥ ३ ॥

पित्तकीछर्दिकेलक्षण ।

छर्दिः पित्तसमुद्भवारुणानिभा पीतप्रभा सा कश्चित् कोष्णा-
दाहयुतागपीडनपरा तृद्शूलमूर्च्छान्विता ॥ हृत्कंठोष्ठमुखेषु ता-
लुरसनाशीर्षेषु पीडाप्रदा संतापभ्रमकारिणी रुचिहरी श्लेष्मांश-
का सा भवेत् ॥ ४ ॥

कफकीछर्दिकेलक्षण ।

छर्दिः श्लेष्मसमुद्भवा शितनिभा फेनान्विता मेदुरा क्षारास्यं कु-
रुते रुचिं वितनुते तंद्रां प्रसेकं वसिम् ॥ आलस्यं जडतां वपुर्गु-

रुतरं लालां च निष्ठीवनं रोमांचं हृदि वेपथुं मुखमलं
कासं तनौ शीतताम् ॥ ५ ॥

सन्निपातकीर्छादिकेलक्षण ।

छर्दिः पित्तमरुत्कफैः प्रजनिता नानानिभाकष्टदा श्वासं कास-
युतं तनोति कृशतां दाहं तृपाकंपनम् ॥ हृल्लासं तमकं वपु-
र्विकलता मूर्च्छामतीसारकं शूलं मूत्रविरोधनं ज्वरतमं हिक्कां
विवर्णं वमिम् ॥ ६ ॥

अर्थ—पित्तकीर्छादिरोगके ये लक्षणहै, लालरंग तथा पीले रंगकी तथा गरमहो, दाहयुत, शरीरमें पीडा, प्यास, शूल, मूर्च्छा, हृदय, कंठ, ओठ, मुखताड़, जवान, शिर इनमें पीडाहो, खेद, भ्रम, रुचिको नाशकरै कफको नाशक हो ॥ ४ ॥ पित्तकीर्छादिरोगके ये लक्षण हैं, सपेदरंगहो, ज्ञागसे आच्छादितहो, चिकनी, खारामुख, अरुचि, तन्द्रा पसीनेका आना, रद, सुस्ती, जडपना, देहभारी, छारका गिरना, बारबार धूकना, रोमांच, हृदयमें कंप, मुखमलीन, खांसी, शरीरको शीतलगे ॥ ५ ॥ त्रिदोषसे पैदाहुई जो छर्दि उसका चित्रविचित्र रंगहो, कष्टको पैदाकरै, श्वास, खांसी, तथा शरीरमें कृशता, दाह, प्यास, कंप, खाली उलटी, तमक, देहमें बेकली, मूर्च्छा, अतीसार, शूल, मूत्रका रुकना, ज्वर, अंधेरेका आना, हिचकी, वर्ण औरही तरहका और वमन ये लक्षण हों ॥ ६ ॥

छर्दिरोगके उपद्रव ।

कासो हिक्कातृपाश्वासोहृद्रोगस्तमकोज्वरः ॥ मूर्च्छावैचित्त्यामि-
त्येतेज्ञेयाश्छर्देरुपद्रवाः ॥ ७ ॥

छर्दिरोगकासाध्यासाध्यलक्षण ।

छर्दिः सांपद्रवाऽसाध्या रक्तपूयवहा तथा ॥ नोपद्रवाभवेत्सा-
ध्या ज्ञात्वा भैषज्यमाचरेत् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
छर्दिलक्षणं संपूर्णम् ॥

अर्थ—खांसी, हिचकी, प्यास, श्वास, हृदयमें पीडा, तमक, ज्वर, मूर्च्छा, बेहोसी ये छदि रोगके उपद्रव हैं ॥७॥ उपद्रव सहित छदिरोग असाध्यहै और जिसमें रुधिर और रंध गिरती हो वोभी असाध्यहै, और जिसमें उपद्रव न हो वो साध्य है ऐसे साध्य असाध्य परीक्षा कर पीछे दवादे ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां छदिरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथतृष्णालक्षण ।

कफोद्भवापित्तभवा मरुद्भवा त्रिदोषजा भुक्तभवा क्षतोद्भवा ॥
भयश्रमाभ्यां जनिता क्षयोद्भवा भवन्ति तृष्णाष्टविधाश्च
दुःसहाः ॥ १ ॥

तृष्णारोगकीउत्पत्ति ।

वाताशनाध्वश्रमत्तापरकैः स्रोतस्त्वपांवाहियु शुष्कनेषु ॥ ह-
त्कंठतालुनि दहन्ति दोषास्तृपा तदा संजनिता नराणाम् ॥ २ ॥

वातकीतृष्णारोगकालक्षण ।

तृष्णा वातसमुत्थिता च कुरुते स्रोतो निरोधं श्रमं शोथं शंख
शिरोगलेषु विरसं वक्त्रं निरुत्साहसम् ॥ संकोचं परितस्तनौ प्रलपनं
चित्तश्रमं रूक्षतां शीतोदैः परिवर्द्धिता वितनुते हिकामजीर्ण
ज्वरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—तृष्णा अर्थात् प्यासका रोग आठतरहकाहै, ऐसे वीध कहते हैं १ कफसे २ पित्तसे, ३ वादासे, ४ सन्निपातसे, ५ भोजनके करनेसे, ६ वात्रसे, ७ भय और श्रमसे, ८ क्षदिरोगके होनेसे ॥ १ ॥ वातसे, भोजनके करनेसे, मार्गके चलनेसे, श्रमके करनेसे, गरमीसे रुधिरके विगडनेसे, कुपितहृए जो वात, पित्त, कफ से जलके बहनेवाली नाटीको सुखाकर हृदय, कंठ, तालूम दाहको पैदाकरे, तब मनुष्योंके तृषारोग पैदा होताहै ॥ २ ॥ वातकी तृषा ये लक्षण पैदा करती है, बहिर्से-पना पारिश्रम कनपटी, मस्तक, गला इनमें शोथ, मुखमें विरसता, तथा साहसहीन, देहमें संकोच बकना, चित्तमें भ्रम, तथा देहरूखा शीतलजलके पीनेसे जो तृषा पैदाहो वो हिचकी और अजीर्णज्वरको बढाये ॥ ३ ॥

पित्तकीतृषारांगकालक्षण ।

आधिव्याधिसमन्विता भयकरी पित्तात्मिकाशोषणी तृष्णादा-

हविवर्धिनी सुखहरी कार्यस्य विध्वंसनी ॥ उष्णत्वे विदधाति दोष-
मखिलं शीते सुखं विभ्रते रक्तास्यं कुरुते मुखे विरसतां मूर्च्छां
प्रलापं भ्रमम् ॥ ४ ॥

कफकीटृष्णाकेलक्षण ।

मूत्रावरोधं जठराग्निनाशं निद्रां विधत्ते गुरुतां शरीरे ॥ हृत्कं-
ठपीडां वितनोति कासं श्लेष्मात्मिका छर्दिकरी च तृष्णा ॥ ५ ॥

त्रिदोषजनिततृपाकेलक्षण ।

त्रिदोषजनिता तृष्णा तेजोवीर्यबलोजसाम् ॥ नाशिनी रुक्करी
घोरा मनोक्षप्राणहारिणी ॥ ६ ॥

अर्थ—आधि कहिये मानसिकरोग, व्याधि कहिये अरुदिरोग तथा भय पैदा करे, शोष, दाहको
बढावे, सुखको दूरकरे, देहको विध्वंस करे, गरमीसे सकल रोगपैदाकरे और शरदाके होनेसे सुख
मालूमहो, लाल और रसरहित मुखहो, मूर्च्छा, प्रलाप भ्रम, ये लक्षण पित्तकी तृष्णाके हैं ॥ ४ ॥
मूत्रका रुक्कना तथा मंदाग्नि, नीदका आना, शरीरभारी, हृदयमें, कंठमें पीडा, खांसी, रद, ये लक्षण
कफकी प्यास रोगकेहैं ॥ ५ ॥ सन्निपातकी तृपा तेज धीर्य बल ताकतका नाश करनेवाली है घोर
रोग पैदाकरे मन और इंद्रियोंकी हरनेवाली है ॥ ६ ॥

तृपारोगमेंसाध्यासाध्यविचार ।

अल्पदोषकरीतृष्णा श्रमघाताध्वभोजनैः ॥ जाताशीतोदपानेन
नाशमेति गरीयसी ॥ ७ ॥

अथतृष्णारोगेषथ्यम् ।

गुर्वन्नभोजनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं लवणामिषम् ॥ व्यायामं सूर्यसं-
तापं तृष्णावान् परितस्त्यजेत् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषकूचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
तृष्णालक्षणम् ॥

अर्थ—जो श्रमसे चोटसे रास्ताके चलनेसे भोजनसे तृषा अर्थात् प्यासलगी वे, साथ्यहै, और जो ठंडेपानीके पीनेसे प्यासलगे, सो प्राणकी नाश करनेवाली जाननी चाहिये ॥ ७ ॥ भारी भन्नका भोजन, चिकनी वस्तु, तीखी, गरम, नोनकी, मांस, दंड कसरतका करना, सूर्यका तेज, ये तृषारोगवाला त्यागदे ॥ ८ ॥ इति हंसराजार्थत्रोधिण्यां तृष्णारोगनिदानं सम्पूर्णम् ॥

मूर्च्छारोगकी उत्पत्ति ।

क्षीणस्य गतसत्त्वस्य विरुद्धाहारसेविनः ॥ धाविनः सक्षत-
स्यापि वीभत्सस्य विलोकिनः ॥ १ ॥ तस्य नाडीषु सर्वासु दोषाः
सर्वे प्रकोपिताः ॥ रुपा विशन्ति कुर्वन्ति मूर्च्छां वैचित्त्यका-
रिणीम् ॥ २ ॥ वातपित्तकफैर्मयैः शोणितेन विषेण च ॥ मूर्च्छा
भवति सा कुर्यान्नरं काष्ठमिवानिशम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य क्षीणहो, ताकतरहितहो, विरुद्ध आहारका खाने वालाहो, दीडने वाला हो, और जिसके शरीरमें घावहो, धिनायदी वस्तुदेखीहो ॥ १ ॥ ऐसे पुरुषके कोपको प्राप्तहुये जो तीनों दोष सो सर्व नाडियोंमें कुपितहो घसकर वेहोसी करनेवाला मूर्च्छारोग पैदा करते है ॥ २ ॥ सो मूर्च्छारोग वात, पित्त, कफ और सन्निपातसे और मद्यके पीनेसे रुधिरसे विषमक्षण करनेसे सात प्रकारका होताहै, वो मूर्च्छा मनुष्यको काष्ठकी तरह पृथ्वीपर गेर देती है ॥ ३ ॥

वातकीमूर्च्छाका लक्षण ।

दृष्ट्वाकाशं श्यामनीलावभासं पश्चादुर्व्यां वातजामेति मूर्च्छाम् ॥
यो मर्त्यस्तं पीडयन्तीति रोगा जृम्भाकंपश्चासतृष्णाप्रसेकाः ॥ ४ ॥

पित्तकीमूर्च्छाका लक्षण ।

पीतारुणं नभः पश्यन्तमः पश्यन्ततः परम् ॥ नरो यः पतते भूम्यां
तां मूर्च्छां पित्तजां वदेत् ॥ ५ ॥ जंतौ प्रबुद्धे तमासि प्रनष्टे मूर्च्छा
तु पित्तप्रभवा करोति ॥ प्रस्वेदतृष्णापरिवेषथुत्वं दाहं च तापं
मुखशोपमार्तिम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जो मनुष्य आकाशको काला नीला देखे, फिर धरतीमें गिरपडे और जिसको जँभाई, कंप, प्यास, पसीनेहों, उसको वातकी मूर्च्छा कहते हैं ॥ ४ ॥ प्रथम पीला, लाल आकाशको

देखे, फिर अंधकार माहूमहो और तिस पोछे धरतीमें गिर पडे उसको पित्तकी मूर्च्छा कहते हैं ॥ ५ ॥ और जब मनुष्यको होस होजाय आंखोंके आगेसे अंधकार हट जावे, तबपसिना आवे प्यास लगे, कंपहो, दाहहो, ज्वरहो, मुख शोपहो, पीडाहो, उस मूर्च्छाको पित्तकी कहतेहैं ॥ ६ ॥

कफकीमूर्च्छाका लक्षण ।

शुभ्रं नभो नरः पश्यन्मूर्च्छयोर्व्या पतेद्यथा ॥ निश्चेष्टो दंडवन्नूनं
तां विद्याच्च कफात्मिकाम् ॥ ७ ॥ प्रबुद्धे मनुजे कुर्यान्मूर्च्छा
निद्रां कफात्मिका ॥ शैथिल्यं गौरवं तंद्रां हृल्लासं कासतृड्-
ज्वरम् ॥ ८ ॥

सन्निपातकीमूर्च्छाके लक्षण ।

त्रिदोषजनिता मूर्च्छा सर्वरोगवहा नरम् ॥ पातयत्याशु मोहाब्धौ
विना बीभत्सदर्शनम् ॥ ९ ॥

अर्थ--जो मनुष्य आकाशको धोलादेखे फिर गिरपडे चेष्टारहित लकड़ीकीसीतरह उस मूर्च्छा-
को कफकी कहते हैं ॥ ७ ॥ जब मनुष्य सावधान होजाय तब नींद आवे, तथा शिथिलता होय,
देह भारीहो, तंद्राहो, सूखी रद आवे, खांसीहो, तथा प्यासहो, ये कफकी मूर्च्छाके लक्षणहैं ॥ ८ ॥
त्रिदोष अर्थात् सन्निपातसे पैदा हुई मूर्च्छा सर्वरोग प्रकट करे, और मनुष्यको मोहरूपी समुद्रमें
गेरदेवे, विना सूगळी वस्तुके देखे जो पैदाहो उसको सन्निपातकी मूर्च्छा कहते हैं ॥ ९ ॥

रुधिरकीमूर्च्छाका लक्षण ।

प्राणेन रक्तस्य च दर्शनेन मूर्च्छति ये स्त्रीजनभीरुवालाः ॥

बुद्धेषु चिह्नानि भवन्ति तेषां मोहोंगकंपोतिभयं जडत्वम् ॥ १० ॥

मद्यकीमूर्च्छाका लक्षण ।

मद्येन मूर्च्छा जडतां करोति नेत्रेरुणत्वं शिथिलं शरीरम् ॥ हर्षं

प्रलापं परिवुद्धिनाशं निद्रां वमित्वं भ्रमतां प्रसेकम् ॥ ११ ॥

विषकीमूर्च्छाका लक्षण ।

नासाकर्णमुखेषु शोपमाधिकं मूर्च्छा विपात्संभवा दाहं तीव्रतरं

दधाति हृदये कंठेतिपीडारतिः ॥ दृष्टिं नाशयते करोति

विकलं देहस्य विक्षेपणं तेजो वीर्यवलौजसां प्रतिपलं विध्वंसिनी

शोपणी ॥ १२ ॥

अर्थ—नाकसे रुधिरके गिरनेसे स्त्रीजन तथा डरपोक तथा बालक ये देखकर मूर्च्छाको प्राप्तहोते हैं; होस होनेपर ये लक्षण होते हैं, मोह, शरीरका कांपना, डरका, लगना, तथा जडत्व ॥ १० ॥ बहुत व दुष्टमद्यके पीनेसे जो मूर्च्छा हुई उसके ये लक्षण है जडत्व, और नेत्रलाल, शरीर शिथिल, हर्ष, बकना, बुद्धिका नाश, निद्रा, वमन, भ्रम, मुखसे लारका गिरना, ये ॥ ११ ॥ विपके खानेसे व सूंघनेसे जो मूर्च्छाहो उसके ये लक्षणहैं नाक, कान, मुख इनका सूखना, तीव्रदाह, हृदयमें, कंठमें दर्द, मनका न लगना, नेत्रोंसे कम देखना, बेकली, देहका पटकना, तेज, वीर्य, बलताकत इनका नित्यघटना और शोषहो ॥ १२ ॥

कुमकेलक्षण ।

व्यायामेन विना काये श्रमः स्याच्छ्वासवर्जितः ॥ इंद्रियाणां हि
वृत्तिघ्नः क्लमः सैवोच्यते वुधैः ॥ १३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे मूर्च्छा
लक्षणसमाप्तम् ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके दंडकसरतके विनाही श्वासरहित श्रमहो और इंद्रियोंका जो स्वभाव तिसको पलटदे उसको पंडित क्लमरोग कहते हैं ॥ १३ ॥ इति हंसराजार्थत्रोविन्यां मूर्च्छारोगनिदानं संपूर्णम् ॥

दाहरोगनिदानम् ।

देहे शोणितमुच्छ्रितं प्रकुरुते दाहं महादारुणं ह्यंगं यं ब्रजते त-
मेव दहते वाह्यो त्वचं चांतरैः ॥ मांसं शोणितनाडिकास्थिनिच-
याञ्छेष्मं वसां मज्जिकां सर्वाङ्गेषु गतं दहत्यवयवं सर्वं रुपाह-
र्निशम् ॥ १ ॥

धातुक्षीणदाहकालक्षण ।

क्षीणे धातावुत्थितो घोरदाहो मूर्च्छा कुर्यान्मर्मघातं ज्वरा-
त्तिम् ॥ तृष्णांशोपं क्षीणशब्दं कृशत्वं वैद्यैरुक्तोऽसौ नरः कष्टसाध्यः
॥ २ ॥ मर्यादादधिकं रक्तं देहसंस्थितमामयम् ॥ लोहगंधं दहत्यंगं
पित्तवातस्य भेषजम् ॥ ३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
दाहलक्षणं संपूर्णम् ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके देहमें रुधिर बढताहै, उसके महादाहका रोग पैदा करताहै, जिस अंगमें रुधिर प्राप्तहो उस अंगका दहनकरे, और भीतर दाहके होनेसे बाहरकी त्वचामें दाहहो, और मांस रुधिर नाडो हई इनके समूहको तथा कफ और घसाकोः मज्जाको दहनकरे, सर्वांगमें प्राप्तदाह सब अंगके अवयवोंको क्रोध करके निरंतर दहनकरे ॥ १ ॥ जिस मनुष्यका धातु क्षीणहो उसके घोर दाह रोग पैदाहो उसके ये लक्षणहैं, मूर्च्छाहो, मर्ममर्ममें पीडाहो, अरहां, प्यास, शोष मंदशब्दहो और कृशादेहहो, वो रोगी वैद्योंने कष्टसाध्यकहाहै ॥ २ ॥ मर्यादासे अधिक रक्त देहमें बढताहै तब दाहरोग होताहै और जब रुधिर निकले तब लोहेकीसां वासआवे, सबदेहमें दाहहो, उसमें वातपित्तकीदवाई करना चाहिये ॥ ३ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां दाहरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

मदात्ययरोगकालक्षण ।

दोषा विपस्य ये सर्वे सुधायाश्चापि ये गुणाः ॥ ते मध्ये पारितिष्ठन्ति युक्त्या युक्त्या पिवेन्नरः ॥१॥ अयुक्त्या यो पिवेन्मद्यं तस्य रोगो भवेद्भृशम् ॥ तस्माद्युक्त्या पिवेन्मद्यं सौख्यायामृतवन्मुहुः ॥२॥

अयुक्तिमद्यपानेदूषणम् ।

सूर्याग्निवत्सेन वुभुक्षितेन रोगान्वितेनापि पिपासितेन ॥ श्रमान्वितेनाध्वपरिश्रमेण वेगावरोधेन भयान्वितेन ॥३॥ क्षीणेन शोकाभिभयेन चैव कोपाभिभूतेन च निर्वलेन ॥ अत्यम्लभक्ष्येण च सेवितं बहु करोति मद्यं विविधान् विकारान् ॥ ४ ॥

अर्थ—विपके सर्व दोष और अमृतके सर्व गुण मद्यमें रहते हैं, युक्तिसे और अयुक्तिसे पीये तो गुण और अवगुण करता है ॥ १ ॥ उसीको दिखाते हैं जो मनुष्य बेतरकीबसे दारु पीता है उसके बराबर रोग पैदाहोता है इसीसे मद्यपान विधिपूर्वक करना चाहिये क्योंकि विधिपूर्वक पिया हुआ मद्य अमृतके गुणोंको करता है ॥ २ ॥ सूर्यके तेजमें घामसे, वा अग्निसे तपाहुआ भूखसे व्याकुल रोगी, प्यास, श्रमसे थका, रातके चलनेसे, चौदह बेगोंके रोकनेसे, व्याकुल भययुक्त ॥ ३ ॥ क्षीण मनुष्य, शोकयुक्त, कोपयुक्त, निर्वलता, अत्यंतखटाई खाईहो, और बहुत मद्य पियाहो, ऐसे मनुष्योंके मद्य अनेक विकार करताहै ॥ ४ ॥

लज्जावुद्धिविनाशनं विकलतां छर्दिं गुरुत्वं तनौ पांडुत्वं कृशता मुखे विरसतां निद्रां विमूर्च्छां तृषाम् ॥ हृष्टासं तमकं चर्मं शिथि-

लतां गुह्यप्रकाशं तमः कार्याकार्यविमूढतां प्रकुरुते मद्यश्च दोषा
करम् ॥ ५ ॥ मद्ये संत्यमृतोपमा गुणगणा युक्ताः प्रपीतेनिशं
क्षुद्रोधः स्मृतिपुष्टितुष्टिरुचयो नीरोगता कांतयः ॥ आनंदांकुर-
कोटयो मधुरता स्त्रीषु प्रहर्षोत्सवौ वीर्योजोबलधैर्यशौर्यमतयः
सौजन्यसौख्यादयः ॥ ६ ॥

अर्थ—लज्जा बुद्धिको दूर करताहै, बेकली, रद, देहभारी, पीडिया, शरीररुद्ध, मुखमें सवाद-
न हो निद्रा, मूर्च्छा, प्यास, सूखी उलटी, तमक, बमन, शिथिलता, छिपीवातको कहना, अंधेरा
आना कार्य अकार्यको न जानना, दोषोंकी खानि, ऐसा अयुक्तसे पियाहुआ मद्य करता है,
॥ ५ ॥ अथ मद्यपानगुणः ॥ युक्तसे मद्यपानकरना अमृतके समान गुण करताहै, क्षुधाको
बढावे, स्मृति, पुष्टता, तुष्टता, रुचि, नीरोगता, कांति, आनंदके अनेक अंतुर पैदाकरे,
मधुरता, स्त्रियोंमें रुचि, उत्सव, वीर्य, ओज, बल, धीरता, शूरता मति, सुजनता सुखादिकोंको
पैदा करताहै ॥ ६ ॥

मद्येन बुद्धिः प्रथमेन मोदः स्त्रीषु प्रहर्षो बहुभोजनेच्छा ॥ वा-
दित्रगीतेषु रुचिः सुखं च निद्रारतिः स्यान्मनसोत्सवश्च ॥ ७ ॥
मद्ये द्वितीये पुरुषः प्रमत्तः स्यान्नष्टबुद्धिर्विगतात्मचेष्टः ॥ घूर्णा-
ननो हर्षयुतोत्तिनिद्रो दुर्वाक्यशीलो बहुलीलया युक् ॥ ८ ॥ तृतीये-
मदे नष्टदृष्टिर्मनुष्यो वदेत्सर्वगुह्यानि गच्छेदगम्याम् ॥ गुरुं नैव
पश्येदभक्षेत्समंताद्विलज्जो स्वतंत्रो भवेद्भ्रमशीलः ॥ ९ ॥

अर्थ—प्रथम पियाहुआ मद्य बुद्धिको और मोदको बढावे, खांगमनमें रुचि पैदाकरे, बहुत भोजन-
की इच्छा, वाजे और गीत सुननेमें इच्छा, सुखनीद, मनका एकाग्रलगाना, मनमें उत्साह, ये गुण
करता है ॥ ७ ॥ दूसरी दफे मद्य पियाहुआ आदमीको मस्त करदेताहै बुद्धि नष्टकरदे चेशरहित
करदे तिरछी दृष्टि हर्षयुक्त, अतिनिद्रा, खोटा बोले, अनेक लडाकरे ॥ ८ ॥ तिसरीदफे पिया मद्य
मदसे नष्टदृष्टि करदे, और सब छिपीवात को करे, और मा, बहिन, बेटा, गुरुकी खांसे भी गोटा
काम करनेकी इच्छा हो, गुरुकोभी न देखे, अभक्ष्य भोजनकरे, लज्जात्यागदे अर्ना इच्छाका काम
करे, मारधाड करे ॥ ९ ॥

त्रतुर्थे मदे मृत्युतुल्यो मनुष्यो भवेद्ज्ञानहीनः स्वकार्ये वि-

कार्ये ॥ क्रियाचारशौचादिहीनो विमूढः परं स्वं न जानाति मत्तो
विलज्जः ॥ १० ॥

पित्तके मदात्ययके लक्षण ।

पार्श्वशूलशिरःकंपश्वासहिक्काप्रजागरैः ॥ मुखशोषेण पित्तस्य
तमवेहि मदात्ययम् ॥ ११ ॥

कफके मदात्ययके लक्षण ।

तंद्राहृद्दासस्तैमित्यच्छर्दरोचकगौरवैः ॥ शीतलांगस्य तं विद्या
त्कफप्रायं मदात्ययम् ॥ १२ ॥

अर्थ—चीर्थावार पियाहुआ मद्य मुरदेके समान करदे, ज्ञानरहित करदे, अपने पराये कामको न समझे, क्रिया आचार शौच इनकरके रहित करदे, मूढ करदे अपना पराया न जाने, और मस्त लज्जारहित होजावे ॥ १० ॥ पसवाडोंमें शूलहो, शिरफापे, श्वास हिचकी, जागना, मुखका ये पित्तके मदात्ययके लक्षण है ॥ ११ ॥ तंद्रा, सूखी रूद, गीलेकपडेसे पोंछासादेह, वमन, अरुचि देहमारी और शीतल अंगहो उसको कफके मदात्ययकहते हैं ॥ १२ ॥

अंगमर्दतृपाशूलरूक्षगात्रविवर्णता ॥ हिक्का भ्रमैश्च तं विद्या
द्वातप्रायं मदात्ययम् ॥ १३ ॥

त्रिदोषकेमदात्ययकालक्षण ।

सोपद्रवैः सर्वलिङ्गैस्त्रिदोषोत्थैर्मदात्ययः ॥ त्रिदोषजनितो ज्ञेयः
साध्योयं च भिषग्वरैः ॥ १४ ॥ चिह्नं च तत्परमदस्य वदन्ति
वैद्याश्छिक्कातृपागगुरुतावहुपर्वभेदः ॥ विणमूत्रशक्तिररुचिर्विरसा-
स्यता च श्लेष्मा ज्वरस्तु कृशता रुजता कपाले ॥ १५ ॥

अर्थ—अंगोंका दृटना, प्यास, शूल, रूखाशरीर, तथा विवर्णदेहका, हिचकी भ्रम, ये लक्षण चातके मदात्ययकेहैं ॥ १३ ॥ जो उपद्रवके साथ हो और तौनों दोषोंका लक्षण मिलतेहों उसको सन्निपातका मदात्यय जानना ॥ १४ ॥ औरभी सन्निपातमदात्ययके चिह्न कहते हैं जिसमें छाँक, प्यास, शरीरभारी, संभिमें पीडा, विद्या, मूत्रका निकलजाना, अरुचि, मुखसे सवाद जातारहै, कफ और ज्वर तथा मस्तकमें पीडा हो ॥ १५ ॥

मद्यपानोत्थञ्जनीकैलक्षण ।

अजीर्णं मद्यपानोत्थं कुर्यादाहमचेतसम् ॥ तृष्णाध्मानमुद्गारं
संधिभेदः शिरोरुजम् ॥ १६ ॥

मद्यपानोत्थभ्रमकेलक्षण ।

भ्रमो मद्यपानोत्थितः कंठधूमं कफं दाहमुग्रं ज्वरं श्यामजिह्वम् ॥
प्रशोषं पिपासां वमिं पार्श्वशूलं गरिष्ठोदरं नीलमोष्ठं प्रकुर्यात् १७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
मदात्ययपरमदाजीर्णविभ्रमाणां लक्षणानि ॥

अर्थ—मद्यपानेसे हुआ अजीर्ण वो ये लक्षण करताहै, होश न रहे ऐसा दाहको करे प्यास और
पेटकाफूलना, तथा डकारका आना, संधिसंधिमें पीडा, मस्तकमें दर्द ॥ १६ ॥ मद्यके पानेसे हुआ
जो भ्रम वो ये लक्षणको करे, कंठसे धुंयेंका निकलना, कफनिकलना, दाहहो, ज्वर, जीभकाली-
पड़जाय, मुखशोष, प्यास, वमन, पसवाडोंमें दर्द या शूल, उदरमें भारीपना, ओठनीले ॥ १७ ॥

इति हंसराजार्थबोधिन्यां मदात्ययरोगस्समाप्तः ॥

अथोन्मादलक्षणानि ।

विक्षिप्ततामनोवृत्तिर्दोषैर्वातादिभिर्भवेत् ॥ समस्तैर्वासमस्तैर्वासो-
न्मादः कथितो बुधैः ॥ १ ॥ वात्ताया विस्मृतिर्येन गाने गीत-
स्य विस्मृतिः ॥ शौचाशौचेन जानाति सोन्मादः कथितो बुधैः ॥ २ ॥

उन्मादरोगकेलक्षण ।

उन्मादहेतुद्विजदेवतानां संन्यासिनां साधुपतिव्रतानाम् ॥ आध-
र्षणं कुत्सितमंत्रसाधनं दुष्टाशुचीनामशनं च पानम् ॥ ३ ॥

अर्थ—उसको पण्डितोंने उन्मादरोग कहाहै, जिसमें समस्त वा न्यून वातादि दोषों करके मनकी
वृत्तिमें विक्षिप्तता अर्थात् धाचलापना पाया जाय ॥ १ ॥ वात करनेकी विस्मृति, और गानेमें गीतकी-
विस्मृति, जिस करकेहो और शौच भ्रष्टताको जो न जाने उसको पंडितोंने उन्मादरोग कहाहै
॥ २ ॥ ये उन्मादरोग होनेके कारणहैं, ब्राह्मण, देवता, संन्यासी, साधु, पतिव्रतास्त्री इनको दुःख
देनेसे और खोटे मंत्रके साधनसे, अपवित्र और दुष्ट पदार्थके भोजनसे या पानेसे ॥ ३ ॥

वातोन्मादकेलक्षण ।

वातोन्मादद्गृहीतः क्वचिदपि हसते रोदति कापि काले रूक्षांगः
शून्यचित्तः परिवदति वचो निष्ठुरं ह्यर्थहीनम् ॥ शीघ्रोत्साहं
विधत्ते स्मितचलनयनो गीतनृत्यं करोति स्वांगानां क्षेपणं वा
विकलकृशतनुः क्षीणधातुर्मनुष्यः ॥ ४ ॥

पित्तउन्मादकेलक्षण ।

पित्तोन्मादनयुक्तः सततजलरुचिर्भोजने दत्तदृष्टिः ॥ रक्ताक्ष-
स्तब्धनेत्रो भ्रमविकलतनुः शुष्ककंठौष्ठतालुः ॥ शीतेच्छामर्म
दाहः परिवदति वचो रौत्यमर्षं विधत्ते भक्ष्यांभक्ष्यं परेषां परिहरति
हठाद्वाग्निवादं करोति ॥ ५ ॥

कफउन्मादकेलक्षण ।

कफोन्मोदे चिह्नं भवति कृशता छर्चरुचयः कफोद्रेकः कंठे म-
नसि जडतांगे विकलता ॥ गतोजो मूकत्वं श्रुतिवधिरतां देह-
गुरुतावमिर्निद्रालालोरसि कृमिशतं वाक्शिथिलता ॥ ६ ॥

अर्थ—वातउन्मादयुक्त मनुष्यके ये लक्षण होते हैं, कर्मी हंसे, कर्मी रोवे, रूखा शरीरहोजाय, शून्यचित्त, दुष्टवचन बोले, व्यर्थबोले, कर्मी उत्साहयुक्त हो, कर्मी स्मितयुक्त, चंचलनेत्र, कर्मी गीत गावे कर्मी नाचनेलगे, कर्मी अंगोंको चलानेलगे, विकलहो, शरीरकृश, क्षीणधातु॥४॥जलपाने और भोजन की इच्छाहो, लाल तिरछे नेत्रहों भ्रम और देहमें, बेकलीहो, कंठ, तालु, ओठ इनका सूखना, शीतल वस्तुकी इच्छा, मर्ममर्ममें दाह, बुराबोले, रोवे, क्रोधयुक्तहो, पराया भोजन, भक्ष्य अभक्ष्यको हठसे छूटले, धादकरने लगे, ये लक्षण पित्तोन्माद युक्तके है ॥ ५ ॥ देहकृश, वमन, अरुचि, कफका बढना, कंठमें मनमें जडता, देह विकल, गति और ताकत इनका बंदहोना, गूंगा-पना, बहिरापना, देहभारी, रद्दहोना, निद्रा आवे और लारका गिरना, पेटमें कृमि पडजायँ, वाणी शिथिल, ये कफके उन्मादके लक्षण है ॥ ६ ॥

सन्निपातकेउन्मादकेलक्षण ।

उन्मादेन त्रिभिर्दोषैर्जातेन असितो नरः ॥ सोपद्रवैरसाध्योयं
कथितो भिपजांवरैः ॥ ७ ॥

औरभी कारण लिखतेंहैं ।

चौरैर्नृपेन्द्रैररिभिस्तथान्यैः संत्रासितः क्षीणधनोभिघाती ॥ शोका-
भित्तो मुनिभिः प्रशप्तः संजायते तस्य मनोविकारः ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे उन्मादलक्षणम् ॥

अर्थ—त्रिदोष उन्माद करके प्रसागया जाँ मनुष्य और उपद्रवयुक्तहो वो रोगी असाध्य है, ऐसे श्रेष्ठ वेश्योंने कहाहै ॥ ७ ॥ चोरोंने राजाने बैरियोंने और किसीने इस मनुष्यको त्रास दिखायाहो, और जिसका धन नष्टहोगयाहो, चोटलगाहो, शोकयुक्तहो, ऋषि मुनि करके शापदियागयाहो, ऐसे मनुष्यके मनोविकार अर्थात् उन्माद रोग होताहै ॥८॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यां उन्मादरोगस्तमा-
तिमगमत् ॥

अथभूतोन्मादलक्षणम् ।

ब्रह्मण्यो गुरुदेवपूजनरतो दाता च शुद्धाक्षरः संतुष्टो मित-
भुक् सुगन्धिवनिताप्रीतिर्विनिद्रोऽनिशम् ॥ तेजस्वी बलवान्
शुचिर्नयपरोभिज्ञोतिहर्षान्वितो देवोन्मादयुतो नरः स भवति
ब्रह्मात्मको ब्रह्मवित् ॥ १ ॥

दैत्यलगेदुये मनुष्यके लक्षण ।

देवब्राह्मणसाधुवैष्णवगवां स्त्रीणां च संन्यासिनां विद्वेषी भय
दोऽतिनिष्ठुरवचास्तुष्टोन्नपानादियु ॥ दुष्टात्मा परमर्मभिद्वतभयः
क्रोधी च मानी नरःस्तब्धो गर्वसमन्वितो दनुजयुक् क्रूरो साहि-
ष्णुर्वली ॥ २ ॥

गंधर्वलगाहो उसके लक्षण ।

संचारी विपिने नदीपुलिनयो रम्यस्थले पर्वते हृष्टात्मारुणकंजचा-
रुनयनो वादित्रगीतप्रियः ॥ तुष्टो नीतिपरायणोतिचतुरो वाग्मी
सुगंधान्वितो गंधर्वग्रहपीडितः सुवचनः स्वाचारभुङ्मानवः॥३॥

अर्थ—जो ब्राह्मण गुरु देव इनका पूजन कराकरे, दाताहो, शुद्धबोले, संतुष्टहो, थोडाग्यानेवाला,
सुगन्धी और स्त्रीमें प्रीतिहो, रातदिन निद्रा न आवे, तेजस्वीहो, बलवान्हो, पवित्रहै, नातिकं

जाननेवालाहो, सर्वे बातोंको जाने, हर्षयुक्तहो, ब्रह्मका जाननेवाला, ब्रह्मात्मक ऐसा मनुष्य देवताका उन्मादवाला जानना ॥ १ ॥ जो मनुष्य देव ब्राह्मण साधु वैष्णव गौ क्षत्री संन्यासी इनसे वैरकरे, इनको भयदे, तथा खोटाबोले, अन्नजलसे जो तृप्त नहो, दुष्टहो, पराये मर्मका छेदने-वालाहो, निडरहो, क्रोधोहो, मानीहो, स्तब्धहो, गर्वयुक्तहो, क्रूरहो, सहनशील, तथा बर्लाहो, ऐसे मनुष्यको दैत्यकी बाधाजाने ॥ २ ॥ जो मनुष्य वन नदी पुलिन रमणीकस्थल पर्यंत इनमें विचरनेवाला हो, प्रसन्नचित्त, लालकमलकेसे नेत्रहों, वाजा और गीत जिसको प्यारालगे, तुष्टहो, नीतिशुक्तहो, अति चतुरहो, शुभ बोलनेवालाहो, सुगंधयुक्तदेहहो, बाम्नी, अपने वित्तमाफिक भोजनकरे ऐसे मनुष्यको गंधर्वकी बाधा जाननी ॥ ३ ॥

यक्षग्रस्तके लक्षण ।

गंभीरोल्पवचोऽरुणाम्बरधरो धीरोतिशूरो महान् भो मर्त्याः प्रव-
दंतु मे झटिति किं दास्यामि कस्मै वरम् ॥ यो यक्षग्रहपीडितो
वदति ना नान्योरुणाक्षोनिशं तेजस्वी बलवान् वरो द्रुतगति-
र्वाग्मी सहिष्णुर्भृशम् ॥ ४ ॥

महासर्पजादियुक्तउन्मादके लक्षण ।

क्रोधात्मा भुजगग्रहेण परितो अस्तो हि यो मानवो रक्ताक्षो
रुधिरप्रियोतिबलवान् प्रेप्सुः पयःपायसे ॥ शौचाचारवहिर्मुखो
विलिहितोऽसृक्सृक्किणीजिह्वया शून्यागाररतः क्वचित्प्रसरतः
सर्पेव हिंसाप्रियः ॥ ५ ॥

पित्रीश्वरोंकेदीपका लक्षण ।

दध्योदने पायसशर्करासु मध्वाज्यमासेषु च रक्तवस्त्रे ॥ सुगंध-
पुष्पेष्वतिशीतलोदे पितृग्रहग्रस्तनरोभिलापी ॥ ६ ॥

अर्थ-जो मनुष्य गंभीर और अल्पवाणीका बोलनेवालाहो लालकपडे पहिने धार अतिशूरहो और जो कहे कि हे मनुष्यो! मुझसे धर मांगो, क्यादू, और लाल नेत्रहो, तेजस्वीहो, बलवान्हो, जल्दी चलनेवालाहो, श्रेष्ठ बोलनेवाला, सहनशील, ऐसा मनुष्य यक्षकी बाधायुक्त जानना ॥ ४ ॥ क्रोधीहो और रुधिरप्यारा लगे, बर्लाहो, दूध और खीरके भोजनकी इच्छाहो, शौच और आचाररहितहो, त्रिले सरीखा घर प्यारालगे, लालनेत्रहो, जीभसे ओठोंके रुधिर लगेको चाटे, शून्यघरमें रहकरे, कभी पसरजाय, सांपकीसीतरह हिंसा करना प्यारालगे, ऐसे मनुष्यको भुजंग अर्थात् महासर्पकी बाधा

समझनी चाहिये ॥ ९ ॥ दही भात खीर बुरा शहद घी मांस लाल्यन्न सुगंध पुष्प शीतलजल ये पदार्थ जिसको प्यारे हों उस मनुष्यको पित्रीश्वरोंकी बाधा जाननी ॥ ६ ॥

राक्षसलगेदुयेमनुष्यके लक्षण ।

सुरामांसरक्तेषु लिप्सुर्विलज्जो महाक्रोधयुक्तोतिगूरः सहिष्णुः ॥
बली निष्ठुरः क्रूरकर्मा विरूपो गृहीतो निशाचारिभिर्यो मनुष्यः ॥७॥

प्रेतग्रस्तके लक्षण ।

भ्रमति रुदिति नित्यं गह्वरारण्यसेवी विलपति किलमूच्छामिति
कंपं विधत्ते ॥ हसति लिखति भूमिं भक्ष्यपानैरतृप्तो वदति विकल
वाणीं प्रेतग्रस्तो मनुष्यः ॥८॥ बालभीसस्त्रिया देहे प्रविशंति सुरा-
दयः ॥ शीतादयो यथाकाये मन्यंते प्रतिविंबवत् ॥ ९ ॥

अर्थ—मद्य मांस रुधिर इनकी इच्छाहो, लज्जारहित, महाक्रोधी, शर, सहिष्णु, बली, निष्ठुर, क्रूरकर्मका करनेवाला, विरूप, ऐसा मनुष्य राक्षसग्रस्त जानना ॥ ७ ॥ डोलाकरे, नित्यरोयाकरे, पर्वत वनमें रहाकरे, थिलापकरे, कभी मूर्च्छासे गिरपड़े, काँपे, हँसे, धरतीको लिखे, भोजन और पीनेसे तृप्त न हो, विकलवाणी बोले ऐसा मनुष्य प्रेतग्रस्त जानना ॥ ८ ॥ बालक डरपोक स्त्री इनके देहमें देवता आदि प्रवेश करतेहैं जैसे शीतघाम देहमें लगे तिसीतरह प्रतिविंब उनका मादम होताहै ॥ ९ ॥

विशंति देहे मनुजस्य सर्वतो ग्रहादयः कैरपि दृश्यते न ते ॥
कुर्वति पीडां महतीं सुदुस्सहां गच्छंति शात्या बलिमंत्रकादिभिः
॥१०॥ विशंति नरदेहेषु पूर्णमास्यां सुरग्रहाः ॥ संध्योर्दानवादै-
त्या गंधर्वाश्चाष्टमीद्वयोः ॥ ११ ॥ पितरः कृष्णपक्षे च यक्षा ये प्रति
पत्तिथौ ॥ पंचम्यामुरगा रात्रौ गंधर्वाराक्षसादयः ॥ १२ ॥

इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
भूतेन्मादलक्षणंसंपूर्णम् ।

अर्थ—ग्रहादि संपूर्ण मनुष्यके देहमें प्रवेशकरते किसीको नहीं दीखते और दुस्सह तथा भारी पीडाको करते हैं वो सर्व शांति और बलिदान तथा मंत्रजापसे शांत होते हैं ॥ १० ॥ देवताग्रह मनुष्यके देहमें पूर्णमासीको प्रवेश करते हैं, और असुर दानव पूर्णमासी और अमावास्या इनकी

संधिमें प्रवेश करते हैं और गंधर्व दोनों शुक्र व कृष्ण पक्षकी अष्टमीमें प्रवेश करते हैं ॥ ११ ॥ पितरं कृष्ण पक्षमें और यक्ष पडवामें, सर्प पंचमीमें, रात्रिमें राक्षसादिक, चतुर्दशीमें पिशाच ये प्रवेश करते हैं ॥ १२ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यांभूतोन्मादलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

वातअपस्माररोगके लक्षण ।

मासे पक्षे दशाहे प्रकुपितमरुतां संभवो घोररूपो रोगोपस्मार-
संज्ञः सपदि स कुरुते पातयित्वा नरांगम् ॥ श्वासं कासं च
मूर्च्छां करचरणशिरःक्षेपणं शून्यदेहं दोषोद्रेकं विसंज्ञां कफच-
यवमने स्वेदशोपांगपीडाः ॥ १ ॥

पित्तकीमृगीरोगके लक्षण ।

पित्तापस्माररोगी पतति भुवि नभः पीतरक्तं च दृष्ट्वा फेनं पीतं
कफस्य प्रवमति मुखतः पीतनेत्रास्यकायः ॥ उत्तमाक्षो विसंज्ञः
क्षिपति करपदः कंपते सप्रसेकः संरंभश्वासमूर्च्छो भ्रमति बहु-
तरं शुष्कहृत्कंठतालुः ॥ २ ॥

कफकीमृगीरोगकेलक्षण ।

श्लेष्मापस्माररोगी वितरति बहुशो हस्तपादप्रकंपं संरंभादर्श-
यित्वा सपदि शितनभः पातयित्वा मनुष्यम् ॥ शीतांगं शुक्लनेत्रं
शितकफनिचयं वक्रदेशोद्गिरंतं रोमांचश्वसशीतं जडतरहृदयं गौ-
रवांगं स्फुरंतम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मासमें पक्षमें दशदिनमें कुपित हुआ जो वात सो अपस्मारनाम मृगीरोगको पैदाकर
ये लक्षणोंको करताहै मनुष्यको पृथ्वीपर गेरदेता है, और श्वास, खांसी, मूर्च्छा, तथा
हाथपैरोंको इधर उधर पटकना, तथा शिरको पटकना, शून्य देह, दोषोंको बढ़ावे, बेहोशों,
कफकी उलटी करे, पसीने, शोष, अङ्गोंमें पीडा ॥ १ ॥ पित्तकी मृगीनाला रोगी धरतीमें
गिरपडे और आकाशको लाल पाला देखे, और मुखसे पाले ज्ञाग कफको गेरे, पीलेनेत्र, पीलाही
देह होजाय, नेत्र तप्त हो जायें, बेहोशा हो, हाथ पैर पटके, कापे, पसीनेहो, श्वासका बढना,
मूर्च्छा, बहुत डोले, ताद कण्ठ हृदय सूखे, ये पित्तकी मृगी रोगवाला करे ॥ २ ॥ कफकी मृगी

रोगवाला मनुष्य ये लक्षणोंको करे हाथ पैरको कँपावै, जल्दीसे श्वेत आकाशको देख पृथ्वीपर गिरपड़े, देह शीतल होजावे, नेत्रसपेद, श्वेतकफको मुखसे गेरे, रोमांचहो, श्वास हो, शरदी छो, हृदय जकड जावे, शरीरभारी, तथा देह फडके ॥ ३ ॥

सन्निपातकीमृगीरोगके लक्षण ।

वातपित्तकफैर्युक्तश्चिह्नैः सर्वैः समन्वितः ॥ अपस्मारः प्रकुरुते
पंचत्वं रोगिणोनिशम् ॥ ४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
अपस्मारलक्षणम् ॥

अर्थ—वादी कफ पित्त तीनो दोषोंके चिह्नो करके युक्त जो मृगीरोगवाला सो मर जावे ॥ ४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यामपस्माररोगनिदान समाप्तम् ॥

वातव्याधिरोगलक्षण ।

व्यायामेन क्षुधातृपातिकटुकक्षाराम्लरूक्षाशनैः शोकव्याधिविक-
र्षणातिगमनैरत्यम्बुपानादिकैः॥धातोः संक्षयघातपातवनितात्यंत-
प्रसंगादिभिर्घातः संकुपितः करोति विविधान् रोगान्महादारुणा-
न् ॥ १ ॥ स्रोतांसि सर्वाणि शरीरजानि रिक्तानि धातुप्रवहाणि
तानि ॥ प्रपूरयित्वातिरुपा शरीरे मर्माणि संतोदति चंडघातः॥२॥
हृत्पाश्र्वोदरवस्तिहस्तचरणग्रीवाशिरःकूजनं नासाकर्णमुखा-
क्षिदंतरसनागुल्मांत्रसंपीडनम् ॥ कुब्जत्वं वधिरं कृशत्वमरतिं खां-
ज्यं शिरःकंपनं अर्द्धांगे जडतां करोति कुपितो वातो महा-
दारुणः ॥ ३ ॥

अर्थ—दण्ड कसरतके करनेसे, क्षुधा तृपाके रोकनेसे, अति कडुआ खारा गृह्याग्ना ऐसे पदार्थके खानेसे, शोकसे, देहमें रोगके होनेसे, बहुतचलनेसे, बहुत जल पानेसे, धातुके क्षय होनेसे घातसे, गिरपडनेसे, खीके बहुतसङ्ग करनेसे वात कुपित हो मनुष्योंको महादारुण अनेक वातके रोग पैदा करे ॥ १ ॥ जितनी शरीरमें धातुकी बहनेवाली नाडी तिनको वात शुष्क करने और

रोपको प्राप्त हुई जो वात सो सर्व नसोंमें प्रवेश कर प्रचण्ड वात मर्ममर्ममें पीडा करती है ॥ २ ॥
हृदय पसवाडा पेट बस्ती हाथ पैर नाड शिर इनका गूँजना, नाक कान मुख नेत्र दांत जीभ
टकना आंत इनमें पीडा हो, कुबडा होजाय, बहिरा तथा लटजावे, मनका न लगना, खंजापना,
शिरका हिलना, अर्द्धाङ्गवायु होजाय तथा वादीसं जकड जाय, ये लक्षण कुपितमहावात करती
है ॥ ३ ॥

सर्वाङ्गेषु गतो मरुद्भ्रुस्तरं शूलं करोति द्रुतं भेदं संधिषु कंपनं
करपदामस्थनां च संस्फोटनम् ॥ सर्वाङ्गस्फुरणं विनिद्रमनिशं शोकं
शरीरे भ्रममाध्मानं कटिपीडनं हृदिरुजं विण्मूत्रयोस्तंभनम् ॥ ४ ॥
वातः कुर्यात्कोपितो दंतबंधं जिह्वास्तंभं कर्णयोर्गुंजशब्दम् ॥ नाडी
स्तब्धं रक्तवीर्यादिशोषं अस्थिस्फोटं देहसंकोचवृद्धीः ॥ ५ ॥
जृम्भोद्गारं च हिक्कां वितरति पवनः पीतवर्णं शरीरं हल्लासं
श्वासकासं मनसि विकलतां छर्द्यतीसारगुल्मम् ॥ अंतर्दाहं विसंज्ञां
कृशतनुमरतिं कामलां पांडुरोगं उद्वेगं संधिभेदं व्यथयति सततं
सर्वकाये मनुष्यम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सर्व अङ्गोंमें प्राप्त हुई जो वात सो ये लक्षणोंको प्रगट करे प्रबल शूल, संधीनमें पीडा,
हाथ पैरोंका कांपना, हड्डी हड्डीका फूटना, सत्र शरीरका फड़कना, नींदका न आना, सूजन तथा भ्रम,
पेटका फूलना, कमरमें पीडा, हृदयमें दुःख, विष्टा मूत्रका रुक जाना ॥ ४ ॥ कुपित वात दन्तबन्ध
जीभका स्तम्भन, कानोंमें गुञ्जारशब्द, नाडियोंका स्तम्भ, रुधिर और वीर्यका सूखना हड्डी हड्डीमें
पीडा देहका घटना बढना ये सर्व लक्षण करती है ॥ ५ ॥ जम्भाई, डकार, हिचकी, पीडिया, सूखी
रद, श्वास, खँसी, मनमें बेकली, उलटी, अतीसार, गोला भीतरों दाह, बेहोशी, शरीर कृश
मनका न लगना, कामला, शरीरका रंग पीला, उद्वेग सन्धिनेमें पीडा, सत्र शरीरमें व्यथा, ये लक्षण
सर्वाङ्गकी पवन करती है ॥ ६ ॥

करोति कुपितोनिलो हलीमकं च शृङ्खसीम् ॥ विषूचिकां विलंबिकां
प्रलापसंगपीडनम् ॥ ७ ॥

त्वचामेप्राप्तवातका लक्षण ।

त्वग्गतः पवनः कुर्याद्भ्रूक्षत्वं त्वचि कृष्णताम् ॥ कार्काश्यं शून्य-
तां कार्श्यं वैवर्ण्यं स्फुटितारुजम् ॥ ८ ॥

रुधिरमेंप्राप्तवातका लक्षण ।

वातो रक्तगतः कुर्यात् काश्यं रुधिरशोषणम् ॥ तीव्रतापं व्रणं
गुल्मं खज्जूं दद्रुं विचर्चिकाम् ॥ ९ ॥

अर्थ—कुपितहुई जो वात सो मनुष्यकी देहमें हलीमक, गुध्रसी, विपूचिका, विलीचिका, प्रलाप, अंगोमें पीडा करतीहै ॥ ७ ॥ त्वचामें प्राप्त पवन शरीर रूखा तथा कालावर्णको करे, कर्कशास्रभाव तथा देहमें शून्यता और कृशपना, विवर्ण तथा देहका फटना, ये लक्षण करताहै ॥ ८ ॥ रुधिरसे प्राप्तवादी शरीर कृशकरे, रुधिरमात्रको सुखाय देय, तीव्रचरकरे, फोटा और गोलानको पैदाकरे, खुजली, दाद, खाजको करती है ॥ ९ ॥

मांसमेदोगतवायुके लक्षण ।

मांसमेदोगतो वातो गुर्वगं कुरुते श्रमम् ॥ स्तब्धांगमरुचिं ताप-
मरतिं रक्तशोषणम् ॥ १० ॥

मज्जास्थिगतवातके लक्षण ।

वातो मज्जास्थिगः कुर्याद्भेदं पर्वीस्थिसंधिषु ॥ बलमांसक्षयं
शूलं विनिद्रां वीर्यनाशनम् ॥ ११ ॥

शुक्रगतवातके लक्षण ।

शुक्रस्थः पवनः कुर्यादरुचिं त्रिषु पीडनम् ॥ वीर्यशोषं मनस्तापं
बलकांतिमुखक्षयम् ॥ १२ ॥

अर्थ—मांस मेदामें प्राप्त वात देहको भारीकरे, अनायास श्रमको करे, शरीर जकटजाय, अरुचि, ताप, मनका न लगना, रुधिरका सूखना ॥ १० ॥ मज्जा और हड्डीमें प्राप्तहुई जो वात सो गांठोंमें पीडा, हड्डी और संधिमें पीडा मांस और बलका क्षय होना, शूल और नींदनाश तथा वीर्यका नाश ये लक्षणोंको करे ॥ ११ ॥ शुक्रमें प्राप्तहुई वात सो अरुचि, मन, वाणो, देह इनमें पीडा, वीर्यका शोष, मनमें ताप, बल कान्ति मुखका नाश ये लक्षणोंको करे ॥ १२ ॥

नाडीगतवातके लक्षण ।

वातः शिरागतः कुर्यात्कुब्जं खांज्यं महारुजम् ॥ शिरासंकोचं
स्तब्धत्वं वाधिरं वमनं कृशम् ॥ १३ ॥

कोष्ठगतवातके लक्षण ।

कोष्ठस्थानगतो वातः कुरुते मूत्रबंधनम् ॥ शूलाध्मानमुदावर्त
गुल्मादांसि भगंदरम् ॥ १४ ॥

सर्वांगगतवातके लक्षण ।

सर्वांगस्थोपि कुपितः पवनो विविधा रुजः ॥ कुरुते वर्द्धते
सर्वान् बाह्याभ्यंतरपीडकान् ॥ १५ ॥

अर्थ—नाडीगत वातरोग ये लक्षणोंको करै, कुबडापना, खंजापना, नाडीनका सुकडना, तथा जडता, बहिरापना, वीनापना और कृश ॥ १३ ॥ कोष्ठमें प्राप्तभई जो वात सो मूत्रबन्धको करै, शूल और अफराको करै, उदावर्त, गोला, बवासीर, भगंदर इनको करती है ॥ १४ ॥ सर्वांगमें प्राप्तभई पवन सो तरहतरहके रोगोंको पैदा करतीहै, और सर्वांगमें कुपित वात बाहरके रोगोंको तथा भीतरके रोगोंके बडातीहै ॥ १५ ॥

सान्धनमेंस्थितवातके लक्षण ।

संधिस्थः पवनः कुर्यात् शोफं शूलं च दारुणम् ॥ संधीन्विस्फो-
टयेत्सद्यः स च कर्पति वर्द्धते ॥ १६ ॥ वायवः पंच देहस्था हेतवः
सुखदुःखयोः ॥ स्वस्थाने सुखदाः सर्वे परस्थानेषु दुःखदाः ॥ १७ ॥

पंचवातके अलगअलग लक्षण ।

प्राणो वायुर्वसति हृदयेऽपानसंज्ञो गुदांते नाभेश्चक्रे भ्रमति परि-
तो जीवभूतः समानः ॥ कण्ठस्थाने चलाति पवनो योहिरात्रा-
बुदानः सर्वांगेषु प्रसरति मरुद्व्यानसंज्ञो नितांतम् ॥ १८ ॥

अर्थ—संधियोंमें प्राप्त वात सूजन और दारुणशूल, संधिनमें पीडा और सुखावै तथा बढावै ॥ १६ ॥ पांच वात देहमें, सुखदुःखको देनेवाली रहती है । यदि वो अपने स्थानपर रहे तो सुखदायक और दूसरेके स्थानपर जानेसे दुःखदायक होती है ॥ १७ ॥ १ प्राणवात हृदयमें रहतीहै, २ अपानवायुगुदामें रहतीहै, ३ जीवभूतसमानवायु नाभिचक्रमें रहती है और ४ रात दिनकी बहनेवाली उदानवायु कंठमें रहती है और ५ सब देहमें रहनेवाली व्यानवायुहै ॥ १८ ॥

पित्तान्वितप्राणवातके लक्षण ।

प्राणः पित्तान्वितः कुर्याद्दूष्माणं चित्तविभ्रमम् ॥ तृष्णां शूलं च
हृच्छासं हिक्कां छर्दिं च दुस्सहाम् ॥ १९ ॥

कफान्वितप्राणवातके लक्षण ।

प्राणः कफावृतः कुर्यादौर्वल्यालस्यसादनम् ॥ वैरस्यमरुचिं तंद्रामु-
त्क्रेदं दोषसंचयम् ॥ २० ॥

पित्तकफयुक्तउदानवातके लक्षण ।

उदानः पित्तयुक् कुर्यान्मूर्च्छां दाहं भ्रमं क्लमम् ॥ कफान्वितोति
मंदाग्निं शीतं हर्षं च कंपनम् ॥ २१ ॥

अर्थ—पित्तसंयुक्त प्राणपत्रन देहमें गरमीको करे तथा चित्तभ्रम, प्यास, शूल, सूखीरद, हिच-
की, यमन ये लक्षणोंको करे ॥ १९ ॥ कफसंयुक्त प्राणवात ये लक्षण करतीहै दुर्बलता, आल-
स्यका स्थान, विरसता, अरुचि, तंद्रा, उकलाहट दोषके समूहको बाढतीहै ॥ २० ॥ पित्तके साथ
मिली जो उदानवायु सो ये लक्षण करे मूर्च्छा, दाह, भ्रम, म्लानि, और उदानवायु कफके साथ
मिलीहो तो मंदाग्नि, शीत, हर्ष, तथा कंपको करती है ॥ २१ ॥

पित्तकफयुक्तसमानवातके लक्षण ।

समानपित्तयुक्तृष्णां मूर्च्छामूष्माणमेव च ॥ कुर्यात्कफान्वितो
हर्षं विण्मूत्रं रोमहर्षणम् ॥ २२ ॥

पित्तयुक्तअपानवातके लक्षण ।

अपानः पित्तयुक्कुर्यात् रक्तातीसारमुल्वणम् ॥ ऊष्माणमरार्तिं
दाहमर्शांसि च भगंदरम् ॥ २३ ॥

कफयुक्तअपानवातके लक्षण ।

कफयुक्तो यदापानो गुदांते कृमिसंचयम् ॥ कुरुते गुरुता मूत्र
मालस्यं बलनाशनम् ॥ २४ ॥

अर्थ—समानवायु पित्तके साथ मिली हुई तृष्णा, मूर्च्छा, गरमीको करतीहै, इसीतरह कफयुक्त
समानवायु हर्ष, विष्टा मूत्रका रूकना, रोमांचको करतीहै ॥ २२ ॥ अपानवायु पित्तके संयुक्त
ये लक्षण करतीहै—रक्तातीसार, गरमी, मनका कहीं न लगना, दाह, बवासीर, भगंदर ॥ २३ ॥
कफयुक्त अपानवायु गुदामें कृमिरोगकरे, शरीरभारी, बहुत मूत्रका होना, आलस्य, बलकानाश
ये लक्षणोंको करे ॥ २४ ॥

पित्तकफयुक्तव्यानवातके लक्षण ।

व्यानः पित्तान्वितः कुर्यादिंगाविक्षेपणक्लमम् ॥ दंडकं स्तम्भनं

दाहं शोफं शूलं कफान्वितः ॥ २५ ॥ नाडीं यदा समभ्येत्य
कुपितः पवनो वली ॥ देहविक्षेपणं कुर्याच्छिरःकंपं करोति च
॥ २६ ॥ यदा संकुपितो वातो नानाहेतुभिर्ध्वगः ॥ तदा संकु-
रुते दोषं ह्यच्छिरःशंखपीडनम् ॥ २७ ॥

अर्थ—व्यानवायु पित्तके साथ मिलाई अंगोंको पटकती है, ग्लानिको करती है, उपताप, स्तंभ,
दाह, सूजन, शूल ये व्यानवायु कफसंयुक्त करती है ॥ २५ ॥ वली पवन कुपितनाडीनमें प्राप्तहो
शरीरका इधर उधर पटकना, करती है—और शिर कंपको करती है ॥ २६ ॥ जब वादी नाना
हेतून्से कुपित उपजती है तब हृदयमें मस्तकमें कनपटीमें पीडा करती है और अनेकदोषोंको
करती है ॥ २७ ॥

गत्वोर्ध्वं स्वगृहात्करोति पवनो देहं च कोदंडवत् कंठः कूजति
कोकिलेव सततं गात्रं मुहुःक्षेपणम् ॥ स्तब्धत्वं नयनद्वयोर्वित-
नुते शोषं मुखे वक्रिमां श्वासं काससमन्वितं च जठरे शूलं तृषां
संभ्रमम् ॥ २८ ॥

पित्तयुक्तवातके लक्षण ।

दाहं पित्तान्वितः कुर्यात्तृष्णां छर्दिं शिरोव्यथाम् ॥ हृत्लासं
हृदयग्रंथिं हिकामं कंठहनुग्रहम् ॥ २९ ॥

कफयुक्तवातके लक्षण ।

कफान्वितो वसिं कुर्यात्तंद्रां निद्रांगौरवम् ॥ जाड्यं शैत्यं
सरोमांचं क्षवं शोफं च वेपथुम् ॥ ३० ॥

अर्थ—अपने स्थानसे ऊपरको चढी हुई वात मनुष्यके देहको धनुषकी तरह बांका करदे,
और कंठ कोकिलाकी बतौर बोले, तथा शरीरको इधर उधर पटके, दोनों नेत्रोंका स्तब्धत्वहो,
मुखका सूखना, तथा मुख टेढा होजाय, श्वास, खांसीके साथ पेटमें दर्दहो, और प्यास तथा
धमहो ॥ २८ ॥ पित्तयुक्त वात दाहकरे, प्यास, और वमनको करे, शिरमें दर्द, सूखीरद,
हृदयमें गांठ, हिचकी, कंठमें हनुग्रह, इन रोगोंको करे ॥ २९ ॥ कफयुक्त वात वमन,
तन्द्रा निद्रा, देहभारी, जटता, शीत लगना, रोमांच छीक, मृजन, कंप ये रोग करती है ॥ ३० ॥

कफपित्तयुक्तवातके लक्षण ।

कफपित्तान्वितो वायुः पक्षाघातं कटिग्रहम् ॥ कुब्जं खंजं शिरः-
कंपमंगभंगं प्रपीडनम् ॥ ३१ ॥

अधोभागमेंप्राप्तवातके लक्षण ।

गत्वाऽधः कुपितः करोति मरुतोरुस्तंभनं कुंडलं शूलाध्मान
विलंबिकां गुदरवं गुल्मोपदंशं भृशम् ॥ शूकाशांसि भगंदरं
कटिरुजं विण्मूत्रयोस्तम्भनं जंघोरुगुदशिक्षयोनिवृषणानां
पीडनं दण्डकम् ॥ ३२ ॥ हेतुभिः कुपितो वातो ह्यातिकोपोन्यदो-
पयुक् ॥ महाकोपस्त्रिदोषाभ्यां स वै भवति रोगदः ॥ ३३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे वातव्याधिलक्षणम् ॥

अर्थ—कफ पित्त मिला हुई वात पक्षाघात, कमरमें दर्द, कुवडापना, खंज व शिरक
हिलना, अंगभंग और पीडा करती है ॥ ३१ ॥ नीचेके भागमें प्राप्त हुई जो पवन से
ऊरुस्तंभ, कुडलैरोग, शूल, अफरा, विलंबिका, गुदामें शब्द, पेटमें गोला, उपदंश, शूलरोग,
बवासीर, भगन्दर, कमरमें दर्द, दस्तपेशाबका रुकजाना, जंघा, ऊरु, लिंगेन्द्री, योनि, अंडकोश
इनमें दर्द, तथा दण्डक रोग इनको करती है ॥ ३२ ॥ अपने हेतूनसे कुपित वात रोग करती
है, और दोषके मिलनेसे अति कोपको प्राप्त होती है, और त्रिदोषसे महाकोपको प्राप्त होती है
तब बराबर रोग करती है ॥ ३३ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिण्यां वातव्याधिरोगनिदानं सम्पूर्णम् ॥

अथवातरक्त रोगनिदानम् ॥

तत्रादौ वातरक्त रोगोत्पत्तिः ।

रूक्षोष्णाम्लकपायतीक्ष्णकटुकस्निग्धाशनैर्भूयसः निष्पात्रांस-
कुलत्थशाकमधुरक्षारान्नपित्ताशनैः ॥ तक्राम्लासववारुणीदधि-
पयःपानैर्निशाजागरैः प्रायः कुप्यति वातरक्तमपरेर्व्यायामशो-

कादिभिः ॥१॥ विरुद्धदुष्टाशुचिपानभोजनैर्जलावगाहेर्वनितातिसं
गमेः ॥ रात्रौ दिवा जागरणैः प्रथर्षितो रक्तप्रकोपं कुरुते मरुत्तदा
॥२॥ स्रोतांसि रक्तप्रवहाणि रुद्धा करोति वातो रुधिरं च कृष्णम् ॥
रोपात्तथा शोणितमुच्छलन्ति समस्तरेगान्वितनोति नूनम् ॥ ३ ॥

अर्थ—रूखा, गरम, खडा, कसेला, तीखा, कडुआ, चिकना भोजन करनेसे, निप्याय तथा
मांस बुलथी शाकमीठा खारमिला और पित्तकी करनेवाली वस्तुके खानेसे छांछ, आम्र, आसव, मद्य,
दही दूधके पीनेसे, रातमें जागनेसे, दंड कसरतके करनेसे शोचसे, वातरक्त कोपको प्राप्त होताहै ॥
॥ १ ॥ विरुद्ध दुष्ट अपवित्र वस्तुके पीनेसे, तथा खानेसे, ज्ञानसे, बहुत खीसंगसे, रातदिनके
जागनेसे और डरनेसे वात रक्त रोग पैदा होता है ॥ २ ॥ रुधिरकी बहनेवाली नाटीनके
मार्गको रोककर वात रुधिरको कालारंगका करदेवे, फिर क्रोधको प्राप्त हुआ जो रुधिर सो
देहके बाहर तथा भीतर अनेक रोगोंको पैदा करे ॥ ३ ॥

करोत्यालसं मंडलं वातरक्तं शरीरं विवर्णं रुजं रूक्षगात्रम् ॥

भ्रमं मूत्रकृच्छ्रं क्रमं मर्मतोदं ज्वरं वेपथुत्वं शिरःपीडनं तत् ॥ ४ ॥

पित्तान्वितवारक्तकेलक्षण ।

करोत्येवपित्तान्वितं वातरक्तं मुदं दाहसम्मोहतृष्णांगशोपम् ॥

भ्रमोष्मारति इच्छिर्द्विस्वेदांगतोदं कटुत्वं मुखे शोफमूर्च्छा विनिद्रम् ५

कफयुक्तवातरक्तलक्षण ।

कफेनान्वितं वातरक्तं गुरुत्वं करोत्यालसं मंडलं रक्तपीतम् ॥

वमिं मंदचेष्टेन्द्रियोषु प्रलापं शरीरेति पामां कृशत्वं क्षवत्वम् ॥६॥

अर्थ—वातयुक्त वातरक्त आलकम्, कालेकाले देहमें चकत्ता, तथा शरीरका विवर्ण, रूखा
देहकरदे, पीडा हो, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, ग्लानि, मर्ममर्ममें पीडा, ज्वर, कंप, शिरमें पीडा ॥ ४ ॥
पित्तान्वित जो वातरक्त सो मस्तपना, दाह, मोह, प्यास, अंगशोप, भ्रम, गरमों, मनका डमा-
डोलपना, वमन, पसीनेका आना, अंगोंमें पीडा, मुख कडुआ, सूजन, मूर्च्छा, निद्राका नाश ये
लक्षणोंको करता है ॥ ५ ॥ कफयुक्त वातरक्त देहभारी करे, आलकस, देहमें लालपीले चकत्ते
करे, वमन, इंद्रियोंकी मंदचेष्टा होना, वकना, देहमें खाज, तथा देहकृश और छीकका आना ये
लक्षणोंको करे ॥ ६ ॥

पांगुल्यं च विसर्पिकारुचिमदा मूर्च्छांगुलीवक्रता हिक्वादाह-

प्रवेपिका भ्रमत्प्राश्वासकृमः स्फोटता ॥ कासो मोहशरीरशोषम-
धिकं मर्मग्रहश्चावुदः संप्रोक्तास्समुपद्रवामुनिवरैस्ते वातरक्तेऽहिताः
॥ ७ ॥ सोपद्रवं त्याज्यतमंभिपग्भिर्द्विदोषजं कष्टतरेणसाध्यम् ॥
जपेन दानेन शिवार्चनेन यत्नौपधीभिर्ननु वातरक्तम् ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे वातरक्तलक्षणम् ॥

अर्थ—पांगुरा, विसर्पारोग, अरुचि, मद, मूर्च्छा, उंगलीटेडी हो जाय, हिचकी, दाह, कंप
भ्रम, प्यास, श्वास, ग्लानि, शरीरका फटना, खांसी, मोह, देहमे शोष, मर्मस्थानोंमें पीडा,
अवुदरोग ये वातरक्त रोगके उपद्रव मुनीश्वरोंने असाध्य कहे हैं ॥ ७ ॥ वैद्यों करके उपद्रवके
साथ जो वातरक्त सो त्याज्य है, और दो दोषसे पैदा हुआ जो वातरक्त सो कष्टसाध्य है वो
जप दान शिवपूजन और इलाज औषधी करके अच्छा हो ॥ ८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां वातरक्तनिदानं सम्पूर्णम् ॥

अथउरुस्तम्भनिदानम् ।

नीत्वाधः कुपितो वातः सञ्चयं श्लेष्ममेदयोः ॥ जंघोरुसक्थिगु-
ल्फेषु पूरित्वास्तम्भयेद्गतिम् ॥ १ ॥ जंघोर्वोश्लेष्ममेदाभ्यां स-
म्पूर्णा भवतौ बलौ ॥ ऊरुस्तम्भः सविज्ञेयो भिषग्भिः प्राकृते-
र्भृशम् ॥ २ ॥

ऊरुस्तम्भलक्षण ।

ऊरुस्तम्भेति पीडा भवति चरणयो रोमहर्षो जडत्वं शीतं सर्वा-
ङ्गकम्पो वयासि शिथिलता छर्दिनिद्राकृशत्वम् ॥ कृच्छ्रान्न्यास-
म्पदानामरुचिरतिवमिर्मन्दबहिर्गुरुत्वं चिह्नान्येतानि नूनं मुनि-
गणत्रचनात्कीर्तिता हंसराजैः ॥ ३ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे ऊरुस्तम्भलक्षणम् ॥

अर्थ—कोपको प्राप्त हुई जो वात सो काफ और मेढाके समूहको नांगे छे जायकर
जांच ऊरु जानू टकना इनमें व्याप्त करके चलनेकी शक्तिको स्तम्भन करदे, उसे

ऊरुस्तम्भरोग कहते हैं ॥ १ ॥ जांघ ऊरु जब कफ और चर्बीसे परिपूर्ण हो जाय और चञ्चल जावे उसको वैद्योंने ऊरुस्तम्भ रोग कहाहै ॥ २ ॥ ऊरुस्तम्भ रोगमें ये लक्षण होते हैं दोनों पैरोंमें पीडा, रोमांच, जडत्व, शीतका लगना, सर्व देहमें कंप, अंगोंमें शिथिलता, रद्द, निद्रा, हृशता, पैरोंका काटिन्तासे उठना, अरुचि, मनका न लगना, घमन, मन्दाग्नि देहभारी, ये ऊरुस्तम्भ रोगके लक्षण मुनीश्वरोंके वचनके अनुसार हंसराज कथिने कहैहै ॥ ३ ॥

इति हंसराजार्धबोधिन्यां ऊरुस्तम्भरोगनिदान सङ्पूर्णम् ॥

अथामवातलक्षणम् ।

व्यायाममंदाग्निविरुद्धभोजनैः स्निग्धाशनेनातिविहारचेष्टया ॥
रात्रौ दिवाजागरणेन कोपितः श्लेष्मस्थले ह्यामचयं नयेन्मरुत् १ ॥
आमान्नस्य रसोपको मरुत्ताक्रियतेपुनः ॥ दूषितः कफपित्ताभ्यां
नाडीभिः पीयते निशाम् ॥ २ ॥ आमसंज्ञः स एवायं यो जीर्णजनि-
तोरसः ॥ रोगाणामाश्रयोधोरः स्रोतांसि तुदते भृशम् ॥ ३ ॥

अर्थ—तीन श्लोक कारके प्रथम आमरोगकी उत्पत्ति लिखते हैं दंड कसरतके न करनेसे, विरुद्ध भोजनसे, चिकने पदार्थ खानेसे, अत्यन्त स्त्रीआदि सेवन करनेसे रातदित जागनेसे, कोपको प्राप्त हुई जो वात सो कफके स्थानमें आमके समूहको प्राप्त करती है ॥ १ ॥ अन्नका जो रस विनापका उसको घात दूषित करे तथा पित्त कफ कर दूषित भया हो उसको नाडी पीती है ॥ २ ॥ उसी अजीर्णसे पैदा हुये रसको आमरोग घोररोगोंका आश्रय करते हैं और यह आम नाडीके मार्गोंको रोक देती हैं ॥ ३ ॥

घातजन्यआमरोगके लक्षण ।

आमो रुग्निदधाति शोफमधिकं संकोपितो वायुना जंघोरूकर-
रसन्धिपादवृषणस्कन्धास्यनेत्रेषु च ॥ मांसास्थित्रिककुञ्चनश्च हृद-
ये कम्पं ज्वरं शोषणं स्तब्धांगं वितनोति दारुणभयम्पाकं तृपां
शून्यताम् ॥ ४ ॥

पित्तसेकुपितआमलक्षण ।

आमः संकुरुते रुपांगमरुणं पित्तेन संकोपितः शीपे सन्धिषु पडिनं
कटिरुजं सर्वांगदाहं ज्वरम् ॥ मूर्च्छां संभ्रमशोषणं च हृदये शूलं
महादारुणं बन्धं सूत्रपुरीषयोर्नयनयोः पीतत्वमार्तिं तृपाम् ॥ ५ ॥

आमः श्लेष्मयुतः करोति जडतां निद्रां गुरुत्वन्तनौ ह्यालस्यं
बहुमूत्रताञ्चगलके संकूजनं शीतताम्॥दौर्बल्यं मुखपादहस्तवृष-
णे शोषङ्गते स्तम्भनं वीर्यौजोरुचितेजसां बलाधियां नाशं
प्रसेकं क्लमम् ॥ ६ ॥

अर्थ-बादीसे कुपित आमरोग जाघ ऊरू हाथ तथा देहकी संधी पैर अंडकोश कंधेनेमें
मुख तथा नेत्रोंमें सूजन करेदे, मास हड्डी त्रिक कहिये मकड इनका घटना, हृदयमें कंप,
ज्वर, शोष, देहका जकडजाना, घोरभय, तथा देहका पकना, और प्यास और देहमें शून्यता
ये लक्षण करती है ॥ ४ ॥ पित्तसे कुपित जो आमरोग सो देहको लाल करेदे, मस्तक तथा
संधीनेमें दर्द, सब देहमें दाह, तथा ज्वर, मूर्च्छा, भ्रम, शोष, हृदयमें महादारुण शूल, मूत्रवृषीपक
रकना, नेत्र पीले, प्यास और खेद, ये लक्षण करता है ॥ ५ ॥ कफयुक्त आमरोगके ये लक्षण
हैं शरीर जकडजाय, निद्रा, देहभारी, आलस, पेशाब ज्यादा उतरे, गलेका गूँजना, जाडा लगे
दुर्बलपना, मुख हाथ पैर अंडकोश इनमें सूजन, गातिका रकना, वीर्य, ताकत, रुचि, तेज, बल
बुद्धि इनका नाश; लारका गिरना, ग्लान्ती ॥ ६ ॥

आमस्त्रिदोषजोऽसाध्यः कष्टसाध्यो द्विदोषजः ॥ दोषैकसंयुतः सा-
ध्यः सुखेनैव भिषग्वरैः ॥ ७ ॥ त्रिदोषजनितैः सर्वैर्लक्षणैर्लाक्षितो
हि यः ॥ सन्निपातः स विज्ञेयो द्विदोषो हि द्विदोषजैः ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
आमवातलक्षणम् ॥

अर्थ-त्रिदोषसे पैदा हुआ आमरोग असाध्य है, और ददोषोंसे जो हुआ सो कष्टसाध्य है,
और एक दोषयुक्त साध्य है ऐसे सुपेणादि धैर्योंन कहहै ॥ ७ ॥ जिसमें त्रिदोषके सब लक्षण
मिलते हैं उसको सन्निपातका आमवातरोग कहते हैं, और जिसमें दोदोषोंके चिह्न हैं उसे
द्विदोषज कहते हैं ॥ ८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थवोधिन्यां आमवातलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

अथ परिणामनिदानम् ।

अथपरिणामशूललक्षणम् ।

विण्मूत्ररोधाद्विपमासनस्थात् शीतांबुपानात् पवनस्य रोधात् ॥

अत्युच्चभापादतिभक्ष्यपानाद्रूक्षाशनात्कुत्सितयानरूढात् ॥ १ ॥
 अपक्वपिष्टान्नविरुद्धभक्षणात्कपायतिकाशुचिदुष्टभोजनात् ॥ दिवा
 निशंजागरणाद्विलंघनात्करोति शूलं पवनो रुपान्वितः ॥ २ ॥
 नाभिमूले गुदे वस्तौ योनौ पार्श्वे त्रिकेस्थिषु ॥ शूलं वातकृतं
 ज्ञेयं भिषग्भिर्नात्र संशयः ॥ ३ ॥

अर्थ—विष्टामूत्रके रोकनेसे, खोटी स्वारीपर बैठनेसे, शीतलजल पीनेसे, पवनके वेग रोक-
 नेसे, ऊंचे बोलनेसे अत्यंत भोजन और पानसे तथा रखे पदार्थके भोजनसे, यह शूलरोग होता
 है ॥ १ ॥ बिना पका पिसाहुआ ऐसे अन्नके खानेसे, विरुद्ध भोजनसे, कसेला तीखा अपवित्र
 दुष्टभोजनसे, दिनरातके जागनेसे, लंघन करनेसे, रोपको प्राप्त हुई जो पवन सो शूलरोगको पैदा
 करती है ॥ २ ॥ नाभिमूलमें गुदामें मूत्रस्थानमें योनीमें पसवाडोंमें त्रिकस्थानमें हाडोंमें वादीका
 शूल वैद्य जाने इसमें सन्देह नहीं ॥ ३ ॥

वादीकेशूलके लक्षण ।

शूलं वातोद्भवं कुर्यात्प्रभातेगविमर्दनम् ॥ विण्मूत्रबंधनं हिकामाध्मा-
 नोद्गारस्तब्धताः ॥ ४ ॥

पित्तके शूलके लक्षण

तीक्ष्णोष्णपिण्याकविदाहिपूगैस्तैलाम्लनिष्पाकदुसूर्यतापैः ॥ व्या-
 यामसौवीरसुराविकारैः प्रबुद्धपित्तं कुरुते हि शूलम् ॥ ५ ॥ पित्तोद्भवं
 शूलमतीव रौद्रं मध्यंदिने कुप्यति चार्द्धरात्रौ ॥ करोति मूर्च्छां
 भ्रमदाहमोहतृदस्वेदमार्तिज्वरमुग्रशीतम् ॥ ६ ॥

अर्थ—प्रातःकाल शरिरका टूटना, दस्त और पेशावका बन्द होना, हिचकी, पेटका फूलना
 उकारका आना, जडता ये वातशूलके लक्षण हैं ॥ ४ ॥ तीक्ष्ण गरम पिण्याक दाहकरनेवाली घस्तु,
 सुपारी, तेल, खट्टा, निष्पाव, कटु, सूर्यकी घाममें डोलनेसे, दंड कसरतके करनेसे, कांजीके पीनेसे,
 मद्यके विकारसे, कोपको प्राप्त हुआ जो पित्त सो शूलरोगको करता है ॥ ५ ॥ पित्तसे पैदा हुआ
 घोरशूल सो मध्याह्न और अर्द्धरात्रमें कोप करता है, और मूर्च्छा, भौर, दाह, वेहोशी, प्यास,
 पसीने, खेद, घोरज्वर और शीत ये करे है ॥ ६ ॥

कुक्षौ सजठरे पार्श्वे शूलं पित्तसमुद्भवम् ॥ सोष्माणं दारुणं ज्ञेयं
वैद्यैराधुनिकैर्ध्रुवम् ॥ ७ ॥

कफके शूलका लक्षण ।

मध्वाज्यमासेर्मधुराम्लतक्रैर्वृन्ताकशीतोदकदुग्धपानैः ॥ मापे-
क्षुमजातिलतैलशीतैः श्लेष्मा प्रवृद्धः कुरुते हि शूलम् ॥ ८ ॥ वक्षःस्थल
भवं शूलं कफान्तस्य समुद्भवम् ॥ वमनेन शमं याति सन्ध्ययोर्वल-
वत्तरम् ॥ ९ ॥

अर्थ—कूख पेट पसवाडोंमें पित्तका शूल होता है, और दारुण गरमी ये लक्षण अवके वैद्योंने
कहेहै ॥ ७ ॥ सहत, घी, मांस, मीठा, खट्टा, छाँड, बैंगन, शीतलजल, दूध इनके सेवनसे, उडद, ईख,
चरबी, तिल, तेल शरदीसे कुपित हुआ जो कफ सो शूलरोग पैदा करताहै ॥ ८ ॥ कफसे
पैदा हुआ जो शूल सो वक्षस्थल तथा सन्धियोंमें बढ़ता है, यह वमनके करानेसे
आराम हो ॥ ९ ॥

शूलं कफात्म्यं कुरुते प्रसेकं तंद्रालसं गौरवतां प्रकंपम् ॥ हृल्ला-
सकासारुचिच्छर्दिदाहं कंठेऽतिपीडास्तिमितांगशीतम् ॥ १० ॥

वातकफशूलकेलक्षण ।

पार्श्वेषु वस्तौ हृदये च शूलं वदन्ति वैद्याः कफवातजातम् ॥ पित्ता-
निलाभ्यां जनितं सदाहं कुक्षिद्वदये तद्द्वदये प्रपीडयेत् ॥ ११ ॥

शूलरोगकी उत्पत्ति ।

चंडीशशस्त्रं कफपित्तसम्भवं जानीहि तं त्वं हृदयोदरस्थम् ॥ रू-
पाणि स्वं स्वं कुरुते स्वकाले दोषैः समस्तैः प्रभवं त्यजेत्तम् ॥ १२ ॥

अर्थ—कफसे पैदा हुआ जो शूल. पसीना, तंद्रा, आलस, देहभारी, कंप, सूखी, रू, खांसी, अरुचि, वमन, दाह, कंठमें पीडा, मंद जाडा लगे, ये लक्षण करै ॥ १० ॥ जिसमें ये लक्षण हों उसको वात कफका शूल वैद्य कहते हैं, पसवाडोंमें मूत्र स्थानमें हृदयमें शूल हो, वात-पित्तजनित शूल लक्षण ॥ और जिसमें दाहहो, कूखमें और हृदयमें पीडा हो उसे वात पित्तका शूल रोग जाने ॥ ११ ॥ श्रीमहादेवके शूलसे तथा कफपित्तसे पैदा हुआ शूल सो हृदयमें पेटमें अपना अनेक तरहका रूप धारण करे, और सब दोषोंसे पैदा हो ऐसा शूलवान् रोगीको वैद्य त्याग दे ॥ १२ ॥

शूलकावसाध्यलक्षण ।

वायुः संनिहितश्च पित्तकफयोः स्थानं समावर्त्तयेद्यः शूलं कुरुते
तदेवमपरं भुंक्तेऽतिशान्तिं व्रजेत् ॥ तच्छूलं परिणामजं मुनि-
वरेः प्रोक्तं च दोषान्वितं ज्ञेयं प्राक्कथितैर्नरेः कफमरुत्पित्तोद्भवैर्ल-
क्षणैः ॥ १३ ॥ सोपद्रवं त्रिदोषोत्थमसाध्यं कथितं वृधैः ॥ कष्ट-
साध्यं द्विदोषोत्थं सुखेन निरुपद्रवम् ॥ १४ ॥

शूलकेदशउपद्रवकोभेद ।

तंद्रामूर्च्छा ज्वरो दाहः श्वासः कासोऽतिवेदना ॥ हिकाङ्गौरवंछ
दिः शूलस्योपद्रवादश ॥ १५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंस्तराजकृते वैद्यशास्त्रे
परिणामशूललक्षणं सम्पूर्णम् ।

अर्थ—जिसमें ये लक्षण हों उसे परिणाम शूल जानना जो बार्दीसे युक्त और पित्त कफके स्थानमें प्राप्त होकर पीछे दर्दको करे, और दूसरा स्थानसे शान्ति हो और त्रिदोषयुक्त हो उसे असाध्य मुनीश्वरोने तथा प्राचीन वैद्योने कहाहै ॥ १३ ॥ जो उपद्रवके साथ हो और सन्निपातसे पैदा हुआ हो वो शूलरोग असाध्य है ऐसा वैद्योने कहाहै और जो दो दोषसे पैदा हुआ हो वो शूल कष्टसाध्य है और जो उपद्रव रहित हो वो सुगमसाध्य है ॥ १४ ॥ १ तंद्रा, २ मूर्च्छा, ३ ज्वर, ४ दाह, ५ श्वास, ६ खांसी, ७ अनिद्रा, ८ हिचका, ९ देहभारी, और १० घमन, ये शूलरोगके दश उपद्रवहैं ॥ १५ ॥

इति श्रीहंस्तराजार्धवैधिन्यां शूलरोगनिदानं नमस्तम् ॥

अथ अनाहउदावर्तरोगनिदानं तस्यांत्पत्तिः ।

पुरीषमूत्रानिलवेगरोधादनाहुरोगः किलमर्मभेत्ता ॥ संजायतेऽसौ
कुरुते विकारान् वातामयान् वैद्यवरा वदन्ति ॥ १ ॥ अपानवातसरो-
धादूर्ध्ववातगतिर्भवेत् ॥ अनाहोऽसौ परैः प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्ववा-
दिभिः ॥ २ ॥ हिकाश्वासवम्युद्गारक्षुत्तृष्णायावरोधनात् ॥ उदा-
वर्त्तो भवेद्रोगो वातवृद्धिप्रवर्त्तकः ॥ ३ ॥

अर्थ—दस्त, पेशाब, अधोवायु इनके रोकनेसे मर्ममर्ममें पीडाका करनेवाला अनाह रोग होताहै, और बार्दीके विकारको करताहै ऐसे वैद्य कहते हैं ॥ १ ॥ अधोवायुके रोकनेसे ऊपरलेभारी होकर वायुकी गति होती है, इसीको अनाहरोग तत्त्वबार्दी आपियोने कहा है ॥ २ ॥

हिचकी, श्वास, वमन, डकार, भूख, प्यास, इनके रोकनेसे वातको बढानेवाला उदावर्त रोग पैदा होनाहै ॥ ३ ॥

अथोवातरोकनेसेपैदाउदावर्तकेलक्षण ।

अपानवातसंरोधाद्वातविणमूत्रसंगमः॥शूलं ह्रमोरुजाध्मानः पीडा-
टोपोमरुद्धमी ॥ ४ ॥

विष्टाकेवेगरोकनेकेलक्षण ।

त्रिद्वेगे निहते पुंसो वातशूलं गुदे रुजम् ॥ जठरे वातजाग्रंथिः
पीडावस्तौ भवेद्भृशम् ॥ ५ ॥

मूत्रकरोंकनेसेहुये उदावर्तके लक्षण ।

मूत्रस्य रोधनात्पुंसो मूत्रकृच्छ्रं शिरो व्यथा ॥ वस्तिमेहनयोः
शूलमानाहोयमिति स्मृतः ॥ ६ ॥

अर्थ—अथोवायु रोकनेसे विष्टा मूत्र आपसमें मिलकर शूल, ग्यानि, स्वेद, अफरा, दुःखका आशोप, याने समूह, पवनका मंद चलना और, ये रोग होते हैं ॥ ४ ॥ विष्टाके वेग रोकनेसे पतुप्यके वार्दसे दर्दहो, गुदामें पीडाहो पेटमें वार्दसे गोला हो, और मूत्रस्थानमें पीडा हो ॥ ५ ॥ पेशाबके रोकनेसे पुरुषोंके मूत्रकृच्छ्र, शिरमें पीडा, मूत्रस्थान, डिगेन्द्रिय इन स्थानोंमें शूल हो दर्दको आनाह कहने है ॥ ६ ॥

जैभाईरोकनेसेहुयेउदावर्तकेलक्षण ।

जृम्भास्तम्भाद्गलस्तम्भो मन्यास्तम्भः शिरोव्यथा ॥ कर्णास्थि-
नेत्रनासासु रोगस्तीव्रोभवेद्भृशम् ॥ ७ ॥

आंसूकेरोकनेकेउपद्रव ।

शोक्लानंदभवास्त्रस्यप्रासोदं नैव मुंचति ॥ सरूक् शिरो गुरुत्वं
स्यान्नेत्ररोगस्तु पीनसः ॥ ८ ॥

छींकेरोकनेकेउपद्रव ।

अवधोर्धरणाच्छूलं मन्यास्तम्भः शिरोर्दरूक् ॥ इन्द्रियाणा च
शोर्वल्यं भवेत्पीडास्यचक्षुषि ॥ ९ ॥

अर्थ—जभाई रोकनेसे गला बंद जाय, गलेके पिच्छर्यो नसका जकटना, शिरमें पीडा, कान में नानक मुग इनमें पीडा हो ॥ ७ ॥ जो पुरुष आनंदमें अथवा शोकसे पैदा हुआ आंसू रोकने उमके शिरमें दर्द, तथा शिरमें भारपना, नेत्ररोग, और पीनसरोग, होय ॥ ८ ॥ छींके रोक-

नेसे शूल, गलेकी पिछली नसका जकडना, आधे शिरमें दर्द, इन्द्रियनों दुर्बलता, नेत्रोंमें और मुग्धमें पीडा होवे ॥ ९ ॥

डकारांकनेकेउपद्रव ।

उद्गारेभिहते तोदः पूर्णत्वं वक्रकंठयोः ॥ पवनस्याप्रवृत्तित्वं
कृजत्वं हृदये भवेत् ॥ १० ॥ छर्देर्निग्रहणान्द्रवन्ति विविधा रोगा म-
हादारुणाः हृत्सासारतिशोफकष्टरुचयो हिक्राविसर्पज्वराः ॥
कोष्ठाशुद्धिविवर्णदाहकृमयोवातप्रसूतारुजः कंडूमोहविजृम्भणा-
नि बहुशः पांड्वंगमर्दभ्रमाः ॥ ११ ॥

भूखरोकनेकेउपद्रव ।

क्षुधाभिघाताह्रलवीर्यहानिः स्यान्मन्ददृष्टिः कृशता शरीरे ॥

प्यासरोकनेकेउपद्रव ।

तृष्णाभिघाताहुरोगवाधाहृत्कंठशोषभ्रमदाहमूर्च्छाः ॥ १२ ॥

अर्थ—डकार आई हुईको रोकनेसे मुख और कंठमें पीडा हो, और डकारका न आना, हृदयमें गुंजान शब्द हो ॥ १० ॥ अथ धमनोपद्रव ॥ आई हुई रक्तको रोकनेसे दारुण अनेक तरहके रोग हों, सूखी उलटी हो, अरति, सूजन, कोठ, अलचि, हिचकी, विसर्पे रोग, ज्वर, कोठमें अशुद्धता, विवर्ण, दाह, कृमिरोग वातव्याधि, खुजली, वेदोशी, बहुतजंभाईका आना, पीलिया, अंगोंका टूटना, भौर, ये रोग होते हैं ॥ ११ ॥ भूख रोकनेसे बलवीर्यका नाशहो, तथा मंददृष्टि हो शरीरमें कृशताहो, प्यास रोकनेसे बहुत रोग सतावे, प्यासे कंठ सूखे, भौर, दाह, मूर्च्छा, ये रोग होते हैं ॥ १२ ॥

श्वासरोकनेकेउपद्रव ।

श्वासस्य निग्रहाह्रुल्मो हद्रोगो विरतिर्भवेत् ॥ मोहो वातकृतो
रोगे ह्याटोपो विद्रधिस्तथा ॥ १३ ॥

निद्रारोकनेकेउपद्रव ।

निद्राघातान्द्रवेजृम्भा तंद्रालस्यांगौरवम् ॥ अक्षणोः घूर्णत्वरं
क्तत्वद्रवत्वं जडतारुचिः ॥ १४ ॥ कपायाम्लद्रवै रूक्षैर्विरुद्धकटु-
भोजनेः ॥ वातः संकुपितः कुर्यादुदावर्त्तं हि लक्षणम् ॥ १५ ॥

अर्थ—श्वास रोकनेसे पेटमें गोला, हृदयकारोग, मनका न लगाना, मोह, और वातके रोग पेटमें गुटगुडाहट, निद्रारोग, ये होते हैं ॥ १३ ॥ निद्रारोकनेसे जंभाई, तन्द्रा, आलसक, देह-

कामारी होना, नेत्रटटे, तथा लाल, अश्रुपातयुक्त, जडता, और अन्वि ये रोग होते हैं ॥ १४ ॥
कसैली खट्टी, पतली, रखी, निरुद्ध, तथा कटुवस्तुके खानेसे कुपित हुई जो वात से दारुण
उदावर्त्त रोगको करीहै ॥ १५ ॥

उदावर्त्तनिदानम् ।

क्षोतांस्युदावर्त्तयतेनिलोयमपानविण्मूत्रकफादिकानाम् ॥ वहानि-
हृत्पाश्वर्गुदोदरेषु ह्याटोपशूलं कुरुते शिरोर्त्तिम् ॥ १६ ॥ उदावर्त्तवातः
करोत्यंगमर्दं मरुद्ग्रन्थिमारत्तिं पुरीषं सकष्टम् ॥ तृपोद्धारहिक्काभ्रम
श्वासकासं वमिं शून्यतां रूक्षतांगं प्रकम्पम् ॥ १७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रेऽनाहो
दावर्त्तलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

अर्थ—विष्टा, मूत्र, कफ, आदिकी बहनेवाली जो अपानवायु से नाडीनके मार्गको रोककर
हृदय पसत्राटा गुदा पेट इनका फूलना, और शूल तथा शिरसे दर्दको करीहै ॥ १६ ॥ वातक
उदावर्त्त रोग हडकल, पेटमे पवनकागांठ, तथा खेदहो, कष्टसे दस्तका होना, न्यास, डकार,
दिक्की, भ्रम, श्वास, ग्यासी, वमन, देहमे शून्यता, शरीरख्खा, तथा कप, ये लक्षण करताहै ॥ १७ ॥
इति हंसराजार्थवैधिन्यामुदावर्त्तनिदानं समाप्तम् ॥

अथ गुल्मरोगनिदानम् ।

गुल्मं वातोद्भवं पैत्यं कफजं द्वंद्वसम्भवम् ॥ संनिपातोत्थितं रौद्रं
रक्तजं कीर्तितं बुधैः ॥ १ ॥ हृन्नाभ्योरंतरे वस्तौ ग्रन्थिरूपं चला-
चलम् ॥ चतुरंगुलपर्यंतं गुल्मन्तत्परिकीर्तितम् ॥ २ ॥

वातगुल्मकेलक्षणम् ।

निवृद्धुंवरयोः फलस्य सदृशं गुल्मं मरुत्सम्भवमुद्धारं च मुहु-
र्मुहुर्वितनुतेविण्मूत्रयोर्विधनम् ॥ जृम्भाध्मानंशरीरशोपकृशताशूलं
तृपां हृद्भुजं पीडामंत्रविकूजनं रुचिहरं भुक्ते मृदुत्वं व्रजेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—वातमे, कफसे, पित्तसे, द्वंद्वज संनिपातसे तथा रुधिरसे आठ प्रकारका गोष्ठेकारोग वैधाने
कराहै ॥ १ ॥ हृदय नाभिके बीचमे मूत्रस्थानमे गांठके आकार गोलाहो एकतो चन्द्रायमान दूसरा
अंचल चारअंगुलके बीचमे उसको गुल्म अर्थात् गोष्ठेकारोग कहने है ॥ २ ॥ जो नीबू गुल्म
'पटके समानहो उमे वादीका गोत्र जाने, जिसमे डकार बरेबरमे आवे दस्त पेशाबका बन्द होना

जंभाई पेटकाकूलना, शरीरमें शोष, तथा कृशपना, और शूल, प्यास, हृदयरोग, पीडा, अंतिका बोलना, अरुचि और भोजनकरनेसे नरम होजाय ये वार्दिके गोलाके लक्षणहै ॥ ३ ॥

पित्तगुल्मकेलक्षण ।

गुल्मं कुक्षिगतं कपित्थसदृशं पीतं पुरीषं भवेदुष्माहृद्दले
रतिर्नशिमुखे शोषाः पिपासाधिका ॥ प्रस्वेदज्वरशूलदाहमधिकं
स्पर्शा सहः संभ्रमः चिह्नं पीतसमुद्भवस्य कथितं गुल्मस्य वैद्यो-
त्तमेः ॥ ४ ॥

कफगुल्मकेलक्षण ।

स्तेमित्यं कठिनोदरं शिथिलतालस्यं गुरुत्वं तनौ वाह्ये शीत-
लतांतरे ज्वलनता निद्राव्यथामस्तके ॥ स्वात्कंडूस्त्वाचि गुल्ममात्र
सदृशं कासोरुचिर्पांडुता गुल्मश्लेष्मसमुत्थितस्य भाणितं चिह्नं सु-
षेणादिभिः ॥ ५ ॥

रक्तगुल्मकेलक्षण ।

गुल्मं रक्तसमुद्भवं दृढतरं जंवीरनिम्बूसमं हृन्नाभ्यंतरभूमिकासु-
जनितं पुंसस्त्रियो योनिषु ॥ हृत्कंठास्यविशोषणं च कुरुते दाहं
महादारुणं प्रस्वेदं ज्वरशूलसुग्रमधिका तृष्णारती संकृमम् ॥६॥

अर्थ—जो कैश्चक फल समान हो, कोणमेंहो पीलादस्त उत्तरे, हृदय और गलामें गर्मी हो, मनका न लगना, नाक मुखमें शोष, प्यास, अधिक पसीना, ज्वर, शूल, दाह, अधिक स्पर्श न सहाजाय, और ये लक्षण, वैद्योंने पित्तके गोलाके कहे है ॥ ४ ॥ देह नीला, पेट कर्त, शिथिलता, आलस्य, देहभारी, बाहर शीतलता, भीतर ज्वालासी मादूमहो निद्रा, मस्तकमें पीडा, देहमें खाज, आम्रपत्रके समान गोला, खांसी, अरुचि, पीलिया ये लक्षण सुषेणादि वैद्योंने कफसे पैदा गोलाके कहे हैं ॥ ५ ॥ जो गोला, जंभीरानीम्बूके समानहो पुरुषके हृदय नाभिके बीचमें पैदा हुआ हो, स्त्रियोंकी योनिके समापहो हृदय, कण्ठ, मुखका सूखना, दारुण दाह पसीना, ज्वर, शूल, अतिप्यास, अरति, ग्लानि, ये लक्षण रक्तसे पैदा हुये गोलाके हैं ॥ ६ ॥

असाध्यगुल्मकेलक्षण ।

अतीसारहिकारतिच्छदिशूलैः पिपासाकृशत्वार्तिहृल्लासदाहैः ॥
ज्वरश्वासकासांगशोफैर्युतो यः स गुल्मी न जीवेत्सुपेणादि-
वैद्यैः ॥ ७ ॥

सन्निपातगुल्मकेलक्षण ।

त्रिदोषसंभवैः सर्वैर्लक्षणैर्लक्षितं हि यत् ॥ तद्गुल्मं सन्निपाताख्यं
द्विदोषोत्थं द्विदोषजैः ॥ ८ ॥

साध्ययाप्यअसाध्यकेलक्षण ।

एकदोषोद्भवं साध्यं द्विदोषं याप्यमुच्यते ह्यसाध्यं यत्त्रिदोषोत्थं
गुल्मं सोपद्रवं त्यजेत् ॥ ९ ॥

अर्थ—अतीसार, हिचका, अरति, रू. शूल, प्यास, कृशता, खेद, सूखी उलटी, दाह, ज्वर,
श्वास, खांसी, देहमें सृजन, ये लक्षण युक्त जो गुल्मरोगवाला वो सुपेणादिवैद्योंसे अच्छ नहीं हो
अर्थात् असाध्य है ॥ ७ ॥ जिसमें तीनों दोषोंके चिह्न मिलतेहो उसे सन्निपातका गोलाजाने, और
जिसमें दो दोषोंके चिह्न मिलतेहो वो द्विदोषज गुल्म जाने ॥ ८ ॥ जो एक दोषसे पैदा
हूआहो वो साध्य वो दोषयुक्त याप्य है, त्रिदोषोत्थ असाध्य है, और उपद्रवयुक्त गुल्मीको वैद्य
त्यागे ॥ ९ ॥

गुल्मकेदशउपद्रव ।

शोफस्तंद्रारुचिश्छदिहृल्लासः कृशतातृषा ॥ शूलं स्वेदोद्गदाहश्च
गुल्मस्योपद्रवादश ॥ १० ॥

इति हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे गुल्मलक्षणम् ।

अर्थ—१ सूजन, २ तंद्रा, ३ अरुचि. ४ यमन, ५ हृल्लास, ६ कृशता, ७ प्यास, ८ शूल, ९
पसीना, १० दाह, ये गुल्मरोगके दश उपद्रव हैं ॥ १० ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां गुल्मरोगनिदानम् ॥

अथ हृद्रोगनिदानम् ।

शस्त्राभिधातात्पवनस्य रोधनादत्युष्णतिकांम्लकपायभोजनात् ॥
अत्युच्चपाताद्भ्रमनादतिश्रमाद्धृदामयः स्याद्गुरुभारधारणात् ॥ १ ॥

वादीके हृद्रोगका लक्षण ।

हृद्राधा कुरुते मरुत्प्रकुपितः संद्रूपयित्वा रसं हृत्स्थो गुंजति
पीडयत्यनुदिनं मर्माणि संतोदते ॥ पाश्र्वास्थीनि विदारयत्यवि-
रतं शोषं मुखे हृद्गले ह्याध्मानं च मुहुर्मुहुर्वितनुते श्वासं सकासं
ज्वरम् ॥ २ ॥

पित्तके हृद्रोगका लक्षण ।

पित्तः कोपसमन्वितो हृदि गतः संशोपयित्वा रसं हृत्पीडामधि-
कां निरंतरतृपा दाहं शिरःपीडनम् ॥ उप्माणं हृदयोदरे नसि
मुखे शूलं महादारुणं मूर्च्छास्वेदविपाकमोहमरतिं जानीहि
तं हृद्रुजम् ॥ ३ ॥

अर्थ—शस्त्रके लगनेसे पवनके वेगको रोकनेसे, अतिगरम तथा कटुआ, खट्टा, कसेत्या भारी पेंट
भोजनसे, उच्चस्थानके गिरनेसे, वमनसे, अतिध्रमसे, भारीबोज उठानेसे हृदयमें रोग होताहै ॥१॥
कुपित वात हृदयमें स्थित रसको विगाडकर हृदयरोगको करे, तथा गुंजे, नित्य हृदयमें, पीडाहो,
मर्मस्थानोंमें पीडाहो पसवाटोंकी हृद्गनमें पीडा हो, मुख हृदय गलेमें शोष, अफरा बारवारमें हो
श्वास, खांसी, ज्वर, ये वात के हृदयरोगके लक्षणहैं ॥२॥ कुपित हुआ जो पित्त से हृदयमें प्राप्त हो-
कर रसको विगाड हृदयमें पीडा, प्यास, दाह, शिरमें दर्द, गरमी, हृदयमें पेटमें, नसोंमें, मुखमें,
शूलहो, मूर्च्छा, पसीना, पाक, बेहोशी, अरति, ये लक्षण पित्तके हृद्रोगके हैं ॥ ३ ॥

कफके हृद्रोगकालक्षण ।

श्लेष्मा संकुपितः करोति हृदये पीडां सकण्ठेऽरुचिं माधुर्यं वदने-
ऽनलस्य कृशतां तंद्रां गुरुत्वं तनौ ॥ संस्त्रावं कफसंचयस्य वमनं
हृल्लासशूलं ज्वरं हृद्रोगो भिपगुत्तमैर्निगदितश्चिह्नैरमीभिर्भृशम् ॥

सन्निपातके हृद्रोगकालक्षण ।

तद्द्रुगं त्रिदोषोत्थं विद्याच्चिह्नैस्त्रिदोषजैः युक्तं सोपद्रवं वैद्य
स्त्यजेन्नूनं विदूरतः ॥ ५ ॥

कृकिके हृद्रोगकालक्षण ।

शोफश्चेतासि संभ्रमो नयनयोः काण्ण्यं तप्तो गौरवं चोत्कृदो वि-
कृतिस्तृपा भवति तन्निष्ठीवनं मेहनम् ॥ हृत्सासोऽरुचिरंतरे कृश-

त्रपुः शूलं सकंडूव्यथा हृद्रोगे कृमिसंभवे निगदितं चिह्नं सुपेणा-
दिभिः ॥ ६ ॥ शोपः क्लमो भ्रमः स्वेदो हृद्भुजः स्युरुपद्रवाः ॥
चत्वारो घोररूपास्ते मुनिभिः परिकीर्तिताः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे हृद्रोगलक्षणम् ॥

अर्थ—कुपित हुआ जो कफ सो हृदयमें, कंठमें पीडाकरे, अरुचि, मुख मीठा, अग्निमंद, तंद्रा,
देहभारी, कफका गिरना, वमन, हृत्प्रास, शूल, ज्वर, इन लक्षणोंसे कफका हृद्रोग कहा है ॥ ४ ॥
त्रिदोषयुक्त चिह्नोसे सन्निपातका हृद्रोग जाने और उपद्रव युक्तहो उमे वैद्य असाध्यजानकर त्या-
गदे ॥ ५ ॥ सूजन चित्तमें भ्रम, नेत्र काले, अंधेराआवे, देहभारी, उक्तग्रहद, देहकी विकृति,
प्रास, बारबार थूकना, मेहन, हृत्प्रास, अरुचि, देह कृश, शूल, खुजरी, व्यथा, इन लक्षणोंसे
सुपेगादि वैद्योंने कृमीका हृदय रोग कहा है ॥ ६ ॥ १ शोक २ ग्लानि ३ भ्रम ४ पसीना, ये
चारहृदयके घोर उपद्रव मुनीश्वरोंने कहे हैं ॥ ७ ॥

इतिहंसराजार्थभोधिण्या हृद्रोगनिदानम् ॥

अयमृत्रकृच्छ्रलक्षणम् ।

अनूपमांसाशनमद्यसेवनैः कपायतीक्ष्णोष्णविदाहिभोजनैः ॥
व्यायामघर्माध्यशानाध्वजागरैः स्यान्मृत्रकृच्छ्रं बहुकष्टदं नृणाम्
॥ १ ॥ प्रपीडयत्यधोगत्वा मार्गं रुद्धाकफादयः ॥ मूत्रं मुहुर्मुहुः
स्वलपं सकृच्छ्रं कारयन्ति ते ॥ २ ॥

वातकेमृत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

मुहुर्मुहुः कष्टतरेण तुच्छं मूत्रं भवेत् पीतनिभं सशूलम् । भेद्रे
च वस्तौ महती प्रपीडा तन्मूत्रकृच्छ्रं पवनात् प्रसूतम् ॥ ३ ॥

अर्थ—अनूप मांसके खानेसे, मद्य पीनेसे, कसेली, तीखी, गरम, दाहकरनेवाली ऐसी वस्तुके
खानेसे, दंड कसरतके करनेसे, घाम, अभ्यसन, अर्थात् भोजनके ऊपर भोजनसे, रास्ताके चट-
नेसे, रातमें जागनेसे, मनुष्योंके बहुत कष्टका देनेवाला आठ प्रकारका मूत्र कृच्छ्र रोग, होनाहै ॥ १ ॥
कफादिकदोष नांचे जावकर मूत्रके मार्गको रोककर और पीडाकरे तब मनुष्यके कठिनेमें
बारबार, धोडाधोडा पेशाव उतरे उसे मूत्रकृच्छ्ररोग कहते हैं ॥ २ ॥ जो मनुष्य बारबारमें
धोडाधोडा मूत्र, पीडा, शूलयुक्त, अंडकोरा तथा मूत्रस्थानमें पीडाहो, उसे बातका मूत्रकृच्छ्र
कहते हैं ॥ ३ ॥

पित्तकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

मूत्रं भवेदाहयुक्तं सुहुर्महुः पीतारुणाभं रुधिरण संसृप्तम् ॥ तप्तं
सकष्टं गुदमेदूयोर्व्यथा तन्मूत्रकृच्छ्रङ्किलपित्तजं वदेत् ॥ ४ ॥

कफकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

मूत्रं सिताभं परिवुद्बुदान्वितं सपिच्छिलं मेदुरमार्तिदं गुदे ॥
लिंगे च योनौ बहुशोफगौरवं तन्मूत्रकृच्छ्रङ्कफसंभवं त्यजेत् ॥ ५ ॥

कष्टसाध्यासाध्यलक्षण ।

द्विदोषोद्भवं मूत्रकृच्छ्रं सदाहं भवेत्कष्टसाध्यं प्रयत्नोपधीभिः ॥
त्रिदोषोत्थितं दारुणं प्राणनाशं निरुक्तं मुनीन्द्रैरसाध्यं नितांतमद् ॥

अर्थ—जिम रोगीका पेशाव दाहकेनाथ उतरे, चारवार और पीलाहो लाळहो रुधिर मित्राहो, तप्त और कष्टसे उतरे, गुदा और अण्डकोशमें दर्दहो उसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ॥ ४ ॥ जिसका मूत्र सपेद और बबूले सयुक्त गाढा और चिकनाहो, गुदामें दर्दहो, लिंग और योनिमें सूजनहो, देहभारी, ये लक्षण कफके मूत्रकृच्छ्रकेहैं ॥ ५ ॥ दो दोषसे हुआ जो मूत्रकृच्छ्र दाह-युक्त सो मंत्र औषधियोंसे कष्टसाध्य कहाहै, और त्रिदोषसे हुआ सो प्राणकानाशक मुनीश्वरोंने असाध्य कहाहै ॥ ६ ॥

मूत्रकृच्छ्रम्भवेद् घातात्संरोधान्मूत्रशुक्रयोः ॥ शल्यात्पातात्क्षता
त्कष्टाद्द्विस्तमेहनशूलकृत् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषकृचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे

मूत्रकृच्छ्रलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—मूत्र और वीर्यके रोकनेसे, घात, शय्यसे, पडनेसे, घावसे, कष्टसे मूत्रस्थान लिंगमें दर्दका करनेवाला मूत्रकृच्छ्ररोग पैदा होताहै ॥ ७ ॥

इति हंसराजार्थबोधिन्यां मूत्रकृच्छ्रनिदानम् ॥

मूत्राघातकीउत्पत्ति ।

नाभेरधोधः प्रगतात्त्रिदाया भवन्ति ते कुंडलिकासमानाः ॥

स्वहेतुभिः संकुपिता भ्रमंति कुर्वन्ति पश्चाद्बहुमूत्रघातान् ॥ १ ॥

नाभेरधो यदा वायुः कुंडलाकारसंस्थितः ॥ आध्मापयन् गुदं

वस्तिमूत्राघातो भवेत्तदा ॥ २ ॥ मूत्रस्य वेगं विदधाति तीव्रम-

पानवायुः कुपितस्तु तेन ॥ नाभेरधोर्ध्वं महतीं प्रपीडां करोति

यस्तस्य नरस्य नूनम् ॥ ३ ॥

अर्थ—दोष नाभिके नीचे जाय कुंडलीके समान होकर और अपने हेतूनसे कुपितहो भ्रमज करे पश्चात् मूत्राघातरोगको प्रगट करतेहैं ॥ १ ॥ जय पवन नाभिके नीचे कुंडलाकारहो गुदा मूत्रस्थानमें भरजाये तत्र मनुष्यके मूत्राघात रोग होताहै ॥ २ ॥ जो पुरन मूत्रके वेगको रोक तत्र, उसके अपान वायु कुपितहो नाभिके ऊपर नीचे भारी पीडा करे उसे मूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ॥ ३ ॥

वातकमूत्रकृच्छ्रकालक्षण ।

वातोदःप्रगता रुणद्धि पुरुतो मूत्रं पुरीपान्वितं मेदू वस्तिगुद्द
दधाति महतीं पीडां च शोफान्विताम् ॥ आध्मानं कुरुते मुहुर्मुहुरतो
मूत्रं सकृत्कष्टदम् ॥ कृष्णाभं पवनोद्भवं निगादितं तन्मूत्रघातंपरे ॥ ४ ॥

पित्तकेमूत्राघातकेलक्षण ।

मेदुं वस्ति गुदाग्रं दहति बहुतरं मूत्रमार्गं रुणद्धि स्वल्पं स्वल्पं
सकृच्छ्रम्वहुरुधिरयुतं कारयत्येवमूत्रम् ॥ धत्तेधोगत्यकोपं वितरति
बलयाकाररूपं च पित्तं तत्पेच्यं मूत्रघातं निगादितमृषिभिर्मानसैः
सद्भिपग्भिः ॥ ५ ॥

कफकेमूत्राघातकालक्षण ।

श्लेष्माधोगत्यशोफं वितरति गुरुतां मूत्रमार्गं रुणद्धि मेदू वस्तो
गुदाग्रे प्रवहति सरुजं कारयत्येवमूत्रम् ॥ तुच्छं तुच्छं सकष्टं कचि-
दपि बहुशो मेदुरं श्वेतवर्णं सांद्रं शीतं सफेनं कथितमृषिवरे-
मूत्रघातं कफस्य ॥ ६ ॥

अर्थ—घात नीचे जायकर दस्त पेशाबको रोक अंतकोश और मूत्रस्थानमें मूजनके माधः भेरीपीडा करे, अफरा, और बारबार कपसे थोडा पेशाब फाँटनेका उतरे, उसे वातका मूत्रा-घात कहते है ॥ ४ ॥ कुपित हुआजो पित्त मो नीचे जायकर कंकणके आकारहो अंतकोश और मूत्रस्थानमें तथा गुदाग्रमें पीडाकरे, मूत्रके मार्गको रोकदे, थोडाथोडा कठिनतासे बहुत श्धिरभिन्न मूत्रे, उसे कृपि और वैशोने पित्तका मूत्राघात रोग कहाहै ॥ ५ ॥ कफ नीचे प्राप्तहो मूजनको करे देहभारी, मूत्रके मार्गको रोकदे, मेदु वस्ति, गुदा इनमें पीडा करे, थोडा थोडा कठिनतासे कभी बहुतसा निकला सफेदरंगका गाढा शीतल श्यामिका ऐसा पेशाब उतरे, उसे कफका मूत्राघातरोग कृषिभेने कहा है ॥ ६ ॥

मूत्राघातं द्विदोषोत्थं त्रिदोषोत्थं भिषग्वरेः ज्ञायते लक्षणैः सर्व-
वातपित्तकफोद्भवैः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे मूत्राघातलक्षणम् ॥

अर्थ—दो दोषोंके लक्षणोंमें द्विदोषका मूत्राघातरोग जानना त्रिदोषसे सन्निपातका मूत्राघात
चैयों करके जानना ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां मूत्राघातनिदानम् ॥

अथाश्मरीरोगनिदानम् ।

स्त्रियां योनिरंध्रे शिशुनां च मेढ्रे भवत्यश्मरी गूत्रवेगस्य रोधात् ॥
मरुच्छ्रेष्मपित्तैर्भवाशक्रजान्या महादुःखदा प्राणहन्त्री प्रसिद्धा ॥ १ ॥

वातकीअश्मरीकालक्षण ।

रूक्षावातभवाश्मरी गुरुतरा भङ्गातमजासमा शिश्रं छिद्रग-
तारुणद्धि परितो मूत्रं विगंधान्वितम् ॥ पीडां मूत्रपुरीषयोर्वितनुते
मेढ्रे गुदे वस्तिषु ह्याध्मानं कुरुते रुचिं कृशतनुं ग्लानिं ज्वरं
विभ्रते ॥ २ ॥

पित्तकीपथरीकेलक्षण ।

सूक्ष्मापित्तसमुद्भवामणिनिभा खर्जूरतुल्यारुणा तप्ता कंटकसं-
युताथ चिपिटा शिश्रेगता याश्मरी ॥ छिद्रं मूत्रपुरीषयोर्दहति
या योनौ रुजं वर्द्धते मूत्रं कृच्छ्रतमं सदाहमनिशं तृष्णाङ्करोति
द्रुतम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मूत्रके वेग रोकनेसे स्त्रियोंकी योनिमें और बालकोंके अंडकोशोंमें पथरीका रोग होताहै ।
• चादीसे २ पित्तसे, ३ कफसे, ४ शुक्रसे, चार तरहकी है महादुःखकी देनेवाली प्राणकी नाशक
प्रसिद्धा ॥ १ ॥ वातकी पथरी रूखी भारी भिलोवकी मन्जाके समानहो, इंद्रीमें प्राप्तहो इन्द्राके छिद्रको
रोकदे मूत्रमें वास आवे, पेशाब और दस्त के समय गुदा मूत्रस्थान और पोतोंमें दर्द हो, अफरा,
अरुचि, कृशदेह, ग्लानि, ज्वर ये लक्षण वातकी पथरीकेहैं ॥ २ ॥ छोटी हो, मणिके समानहो,
खर्जूरके फलके तुल्य, लालहो गरम तथा फांटे और चपटी लिगमेंहो मूत्र दस्तके छिद्रको दहन
करे, योनिमें दर्दहो, कठिनतासे दाहयुक्त पेशाब उतरे, प्यासहो, ये लक्षण पित्तकी
पथरीके हैं ॥ ३ ॥

शूलं मेदूगुदे भगे प्रलपनं काश्यं ज्वरं कंपनमूष्माणं विदधाति
वस्तिगुदयोर्मूत्रस्य धारारुणम् ॥ वैक्षीण्यं परितो रुणाद्धि सहसा
पाश्र्वोदरे पीडनं घोरा पित्तभवाश्मरी निगादिता वैद्योत्तमेः
प्राणहा ॥ ४ ॥

कफकीपथरीकालक्षण ।

स्निग्धाम्रमज्जासदृशाकफोद्भवा श्वेताश्मरीकंटकवेष्टितादृढा ॥
शीतातिमघ्ये गुदशिक्षयोर्भवासंजायते मूत्रनिरोधनाच्छिशोः ॥ ५ ॥
शैथिल्यंकुरुतेश्मरीकफभवा शिश्रान्तरे तोदनं धैर्यं नाशयतेऽरुचिं
वितनुते ह्यङ्गं मुहुः कंपते ॥ मूत्रं श्वेतनिभं रुणाद्धि गुरुतां काये
शिरःपीडनं धत्ते पांडुरुजं तनौ कृशवपुर्निद्रालसं विभ्रते ॥ ६ ॥

अर्थ—अंडकोश, गुदा, भग इनमें शूलहो, प्रलाप, कृशता, ज्वर, कम्प, गुदा और मूत्रस्थानमें
गरमी, तथा मूत्रकीधार लालहो, क्षीणता, पेशाबका रकना, पसवाडोंमें तथा पेटमें दर्द ऐसे लक्ष-
णोंसे वैद्योंने प्राणकी नाशक पित्तकी पथरी कहीहै ॥ ४ ॥ चिकनी, आमकी गुठलीके समान
हो, सपेद और कट्टेयुक्त, दृढ, शीतल, तथा गुदा और लिङ्गद्विपके मध्य हुई हो, ये बालकके
मूत्रवाधा रोकनेसे पैदा होतीहै ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ॥ ५ ॥ शिथिलता, इन्द्रियमें पीडा
धैर्यका नाश, अरुचि, अगोमे कम्प, सपेद पेशाबहो, और रक्त्तक कर उतरे, देहभारी, शिरमें दर्द,
पाण्डु, और कृशता देहमें, निद्रा, आलस्य ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ॥ ६ ॥

वीर्यरोधकीपथरीकालक्षण ।

यूनां वीर्यस्य रोधाद्भवति च महती शुक्रजाताश्मरी या शिश्रं
वस्तिं गुदां वै रुजयति वृषणं मूत्रमार्गं रुणाद्धि ॥ दौर्बल्यं कुक्षिरोगं
वितरति सहसा शुक्रनाशं करोति तुच्छं तुच्छं सकष्टं क्वचिदपि
बहुशः कारयत्येव मूत्रम् ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
व्यशास्त्रे अश्मरीलक्षणम् ।

अर्थ—जवानपुरुषोंने वीर्यके रोकनेसे जो पथरी रोगहो उसके ये लक्षण हैं, लिङ्ग, मूत्रस्थान, गुदा,
में पीडाहो, तथा अंडकोशमें दर्दहो मूत्रके मार्गका रोकदे, दुर्बलता, कूटमें दर्द, शुक्रका नाश,
कष्टसे कभी थोडा कभी बहुत पेशाबउतरे ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थवैद्यिन्यामश्मरीलक्षणम् ॥

अथप्रमेहलक्षणम् ।

दधिमधुघृतदुग्धं मद्यपानं नवान्नं फलरसमतिमिष्टं तक्रमिक्षोर्वि-
कारम् ॥ रविकृतपरितापः सुन्दरीस्त्रीकटाक्षेर्भवति विपमचेतो मेह-
हेतुर्नितांतम् ॥ १ ॥

वातकीप्रमेहकालक्षणम् ।

सूत्राग्रे वाथ पश्चात्प्रपतति सततं शुक्रमिक्षोरसामं यामे याम
द्वये वा कचिदपि समये पातमाप्नोति दोषैः ॥ निर्गंधं तक्ररूपं
लवणजलनिभं दुग्धतुल्यं सुराभं रूक्षं वातप्रमेहं प्रवदति चरकः
कृष्णवर्णं च नीलम् ॥ २ ॥ मेहो वातसमुद्भवः प्रकुरुते शूलं महा-
दारुणं हृद्रोगं पिष्टिका मुखे मधुरतां श्वासं शरीरं कृशम् ॥ अध्मानं
तनुपीडनं विकलतां शोषं च कासान्वितं ह्युन्निद्रास्वलनाश
नश्चपलतां रूक्षां त्वचं साहसम् ॥ ३ ॥

अर्थ—दही, सहत, घी, दूध, मद्यके, पीनेसे नवीनअन्न फल रस अतिमीठा छांछ ईखके विकारसे सूर्यके
पामसे सुन्दरस्त्रीके कटाक्षसे चित्तमे प्रमेहका हेतु होताहै ॥ १ ॥ पिशाच करनेके पहिले वा पीछे ईखकासारंग
ऐसाःशुक्र गिरे पहर पहरमे या दोपहरमें दोषोंके होनेसे दुर्गंधयुक्त छांछके ममान, या नॉनके पानीसरांग,
दूधके समान, मद्यके समान गन्वाहो ये लक्षण वातकी प्रमेहके चरक ऋषिने कहे है ॥ २ ॥
वातका प्रमेह दारुणशूल हृद्रोग मरोड़ी मुखमें मिठस श्वास देहकृश अफरा देहमें पीडा वेकली
शोष खांसी निद्रा यत्का नाश चपलता त्वचामें रुतास साहस ये लक्षण करताहै ॥ ३ ॥

पित्तकीप्रमेहकालक्षणम् ।

घनं पावकामं हरिद्रानिभं वारुणं रक्ततुल्यं च सिंदूरवणम् ॥ प्र-
मेहं च पित्तोद्भवं वैद्यराज विजानीहि संजिष्टकावर्णतुल्यम् ॥ ४ ॥
कपायश्च मूत्रं करोति प्रमेहो रतिं पित्ततः कष्टसाध्योऽतिकृच्छ्रम् ॥
ज्वरं वस्तिशूलं कृशांगं पिपासां क्लमं मेदूदाहं भ्रमं शोपमंगे ॥ ५ ॥

कफकेप्रमेहकालक्षणम् ।

घृतदधिवसरूपं दुष्टदुर्गंधयुक्तं घनमधुसदृशं वा पिच्छिलं मेह-
वर्णम् ॥ सितलवणनिभं वा मेदुरं तंतुमिश्रं बुधजन किलमेहं विद्धि
साध्यं कफात्म्यम् ॥ ६ ॥

अर्थ—गाढा अग्निके समान वर्ण, तथा पांशु वा लाट, कथवा जलकेसदृश, वा मंजीठके वा सिंदूरके रंगकासा पेशाव उत्तरे, उरो हे धंधराज ! पित्तका प्रमेहजानो ॥ ४ ॥ कसेले रंगका रुधिरकेरंगका ज्वरकरे मूत्रस्थानमें पांडा दृढा देह प्यास भ्रान्ति अंतकोशोमे दाह, भ्रम, शरीरमें जोष, अगति ये पित्तकी प्रमेहके लक्षणहैं, य कष्टसाध्यहैं ॥ ५ ॥ दही, घृत, चरवीके समान मूत्र, दुर्गंध युक्त गाढा सहतके समान, तथा संपद मिश्री और गोनके रंगसा और चिकना पेशाव उत्तरे सन्तु युक्तहो उसको पडित कफका प्रमेह कहते हैं ॥ ६ ॥

मेहः श्लेष्मसमुद्भवो बलहरः शुक्रस्य विध्वंसक आलस्यं कुरुते
रुचिर्घृणयोः शोथं तनौ पांडुताम् ॥ शैथिल्यं गुरुतां वमिं नयनयो-
श्शौक्ल्यं त्वचि स्फोटनं तंद्रारात्रिदिनेऽनिशं मलचयं दन्ताग्नि-
हस्तेष्वलम् ॥ ७ ॥

प्रमेहरहितकेलक्षण ।

यदा प्रमेहिणो मूत्रं कटुतिक्तमपिच्छिलम् ॥ शुद्धंरूक्षं शुभ्रधारं
तदाऽऽरोग्यं वदेद्भिषक् ॥ ८ ॥

साध्यअसाध्यकष्टसाध्यविचार ।

मेहः कफोत्थितः साध्यः साध्यः कष्टेन पित्तजः ॥ वातस्त्वृषि-
भिः पूर्वैरसाध्यः परिकीर्तितः ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे प्रमेहलक्षणम् ॥

अर्थ—कफका प्रमेह बल हरता, शुक्रका नाशकरता, आलस्य, अरुचि पानोपर सूजन, शरीर पीला, और शिथिल तथा भारी, वमन, नेत्र सपेद, त्वचाका फटना, रात, दिन तन्द्राका राना, दांत, जीभ, हाथ, पैरोंमें मैलका मग्न होना ये लक्षण करताहैं ॥ ७ ॥ जिन प्रमेहवालेका पेशाव कटुआ, तीखा, पतला, शुद्ध, रुखा, सपेद धारका उत्तरे, उसका प्रमेह दूरभना जानिये ॥ ८ ॥ कफका प्रमेह साध्यहै, पित्तका कष्टसाध्यहै, वातका प्रमेह पूर्व ऋषियोंने असाध्य कहहैं ॥ ९ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां प्रमेहनिदानम् ॥

अथपिटिकारोगनिदानम् ।

तिक्ताश्लेष्मविदाहिरूक्षकटुकक्षारातपाध्याशनेर्मद्यस्निग्धविरू-
द्धभोजनरसैर्दुष्टैर्नवान्नद्रवैः ॥ द्रोपं पित्तमरुत्कफाद्विदधते संदूप्य
रक्तामिपं त्वकसंभेद्यवहिर्गताश्च पिटिका रूपेण कुप्यान्ति ते ॥१॥

दुष्टग्रहप्रकोपेन दोषामर्मप्रभेदिनः ॥ जनयन्ति शरीरेषु पिटिका व-
हुधामताः ॥ २ ॥ ज्वरश्छर्दिर्तीसारो रक्तांगो तीव्रवेदना ॥ स्वेदे
तृषारुचिः श्वासो वैवर्ण्यं विकलोरतिः ॥ ३ ॥

अर्थ-तित्त, खट्टा, गरम, दाहकरनेवाला, कटु, खूबा, खारी भोजन घाममें डालनेसे भोजनपर
भोजन करनेसे मद्य चिकनी विरुद्ध भोजन और पानसे दुष्ट नशान और पतली वस्तुसे कुपितहृये
जो वातपित्त कफ सो रुधिर और मांसको बिगाड कर त्वचाको फाडकर पुंसोरूप पिटिका रोग कोप
करताहै ॥ १ ॥ दुष्टग्रहके कोपसे तानोदोष मर्मस्थानको भेदकर देहमें अनेक प्रकारके पिटिका
रोग पैदा करते हैं ॥ २ ॥ ज्वर, रद, अतीसार, देहलाल, तीव्रदुःख, पसीना, प्यास, अरुचि,
श्वास, विवर्ण, बेकली, अरति ॥ ३ ॥

पिटिकाका पूर्वरूप ।

अस्थिस्फोटोद्गदाहश्च शोषः कंड्वरुचिर्भ्रमः ॥ पिटिकानां पूर्वरूपं
मुनिभिः पारिकीर्तितम् ॥ ४ ॥

वातकीपिटिकाकेलक्षण ।

तृष्णा पावकसंनिभाश्च पिटिका वातोद्भवास्त्वग्गताः सूक्ष्मा मु-
द्गसमा मसूरसदृशाः सप्ताहिपाकारुजाः ॥ सूक्ष्माभाश्चिपिटाघ
नाश्च पारितः कुर्वति पीडाभयं दाहानाहतृषाक्षवार्तिवमथुश्वासा-
तितापाकराः ॥ ५ ॥

पित्तकीपिटिकाकालक्षण ।

अस्थिस्फोटः पर्वभेदोद्गदाहः श्वासः शोषो विद्ग्रहो मूत्रकृ-
च्छ्रः ॥ रौद्रास्फोटा रक्तजारक्तवर्णा वैवैरुक्तं पित्तकोपस्य चिह्नम् ॥ ६ ॥

अर्थ-हड्डन, देहमें दाह, शोष, खुजली, अरुचि, भ्रम, ये मुनीश्वरोंने पिटिका रोगका
पूर्वरूप कहाहै ॥ ४ ॥ काली, अशिके रंगकी, त्वचामें पुंसीहों छोटी और मृंगके समान तथा
मसूरके समान सात दिनमें पके कमदीखें चपटी और कठोरहों और पांडा भयको देनेवाली, दाह,
आनाह, प्यास, छीक, मथवाय, श्वास, अत्यंत तापकी करनेवाली, वातकी, पिटिका जाने ॥ ५ ॥
हड्डन, गांठोंमें दर्द, अंगोमें दाह, श्वास, शोष, दस्तका रुकना, मूत्रकृच्छ्र, रौद्र, फोटे, रक्तसे
पैदा लक्षणके हों तो वैद्य पित्तकी पिटिका जाने ॥ ६ ॥

कफकीपिटिकाकेलक्षण ।

पिटिका कफकोपभवाः कठिनाः स्फटिकद्युत्तयो बहुधा कृतयः ॥
चिरपाकरुजास्तनुशोककरा बदरीफलपकसमारुचयः ॥ ७ ॥

श्लेष्मा कोपेन कुर्यात्त्वाचि पिटकशतं बुद्बुदाकारतुल्यं शोफ
 प्रांतं कठोरं वदरफलसमं मांसत्वग्भेदजातम् ॥ निद्रां तन्द्रां
 पिपासां भ्रममरुचिवर्षिं कासमंगेषु पीडां श्वासं कंडूप्रसेकं ह्यव-
 यवशिथिलं शीर्षरोगं ज्वरार्तिम् ॥ ८ ॥ वातपित्तभवानीला मध्ये
 निम्ना ज्वरान्विताः ॥ भवंति पिटिकाः क्षुद्राः शोपदाहतृपा
 युताः ॥ ९ ॥

अर्थ—कफ कोपकी पिटिका, कठिन, स्फटिक मणिके समान, तरह तरहकी, देरमें पके, देहमें
 सूजनहो, पके वेरके समान कान्तिहो ॥ ७ ॥ कफकोपकी पिटिका त्वचामें सैकडों फुन्सीको बबूलेके
 आकार, उसके चारों ओर सूजन, तथा कठिन वेरफलके समान मांसत्वचाको फाडकर प्रगटहो,
 निद्रा, तंद्रा, प्यास, भ्रम, अरुचि, वमन, खांती, अगोंमें पीडा, श्वास, खुजली, छारका गिरना,
 शरीरके अवयव शिथिल, शिरमें दर्द, ज्वर तथा खेद ये कफकी पिटिकाके लक्षणहैं ॥ ८ ॥
 वात पित्तकी पिटिका नीले रंगकी, बीचमें वैठीसांहां, ज्वरहो और क्षुद्रा पिटिका दाह, शोप,
 प्यासयुक्त होतीहैं ॥ ९ ॥

स्थूलाः श्वेताः प्रोन्नता दुश्चिकित्स्याः पूयस्त्रावाः स्फोटकाः कष्ट-
 पाकाः ॥ स्निग्धाः कंडूशोफतंद्रापिपासाकासश्वासारोचकाताप-
 युक्ताः ॥ १० ॥ संभूताः कफवाताभ्यां विज्ञेयाः पंडितैर्न्नरैः ॥
 अतः परं तु ज्ञातव्या विस्फोटाः कफपित्तजाः ॥ ११ ॥ रोगार्त्तः
 पिटिकाघना बुधजनैर्ज्ञेयाश्च निम्नोन्नताः पित्तश्लेष्मभवाविवृत्तव-
 दनास्थूलाः शिरोतिप्रदाः ॥ वक्रेभ्यो रुधिरस्रवाश्चिमिचिमामूर्च्छा
 पिपासान्विता निद्राकंडुविवर्णताशिथिलताकंठांगपीडाकराः ॥ १२ ॥

अर्थ—मोटी, सफेद, ऊंची, जिनका कठिन उपाय, राधवहे, कष्टसे पके, चिकनी और
 खुजली, सूजन, तंद्रा, प्यास, खांती, श्वास, अरुचि, ज्वर ऐसी पिटिका वातकफकी जाननी
 ॥ १० ॥ इस श्लोकका अन्वय दूसरे अगाडीके श्लोकमें लगता है ॥ अब इसके आगे पित्तकफकी
 पिटिकाके लक्षणजानो ॥ ११ ॥ रोगीकी फुन्सी कठिन, नीची, ऊंची, मोटी, खुले मुखकी, शिरमें
 दर्दकी करनेवाली, रुधिर चुचाये, चिमचिर्मायुक्त, मूर्छा, प्यास, निद्रा, खुजली, विमर्गता, शिथि-
 लता, कंठ अङ्गोंमें पीडाहो, ये लक्षण पित्तकफकी पिटिकाके होते हैं ॥ १२ ॥

संनिपातकीपिटिकालक्षण ।

असाध्याः पिटिकान्नेया वातपित्तकफोद्भवाः ॥ उत्पद्यन्ते विली-

यंते शरीरे रोगिणां पुनः ॥ १३ ॥ पित्तश्लेष्ममरुद्भवाश्च पिटिकाः
 पूयस्रवा रक्तदा आध्मानं तनुगौरवं विकलतां कुर्वत्यसाध्यारुजाः ॥
 दाहं शोफतरं तृपां बहुमुखाः पाके च दुःखप्रदाः अस्थिस्फोट-
 महर्निशं बहुतरं श्वासं विवृत्ताननाः ॥ १४ ॥ रक्तस्त्रावं नासिका-
 कर्णनेत्रास्येभ्यो मूर्च्छां मंडलं मांसकोचम् ॥ हिक्कांकासं मूत्रकृ-
 च्छ्रागभेदं कृष्णाः स्फोटा मृत्युदा दुश्चिकित्स्याः ॥ १५ ॥

अर्थ—वात पित्त कफकी पिटिका रोगीके देहमें पैदाहों और नाशहों वो असाध्य है ॥ १३ ॥
 सन्निपातकी पिटिकामें रुधिर और राध चुचाय, अफरा, देहभारी, वेकली, दाह, सूजन, प्यास
 बहुतसे मुखहों, पकनेके समय दुःखहो, हडकल हो, श्वास, तिरछे नेत्र ये असाध्य पिटिकाके लक्ष-
 णहैं ॥ १४ ॥ नाक कान नेत्र मुख इनसे रुधिर चुचाय, मूर्च्छाहो, खूनके चकतेहों, मांसका संको-
 चहोना, हिचकी, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, अंगोंमें पीडा, कालेरंगके फोडा ये लक्षण मृत्युके करनेवाले
 चिकित्सा रहित जानने ॥ १५ ॥

त्वचामेंगतपिटिकालक्षण ।

त्वग्गताः पिटिकाज्ञेया जलबुद्बुदसन्निभाः ॥ स्वल्पदोषजलस्त्रावाः
 सुखसाध्या भिषग्वरैः ॥ १६ ॥

रक्तमंप्राप्तपिटिकालक्षण ।

रक्तस्था रक्तभाः साध्याश्शीघ्रपाकास्तनुत्वचः ॥ रक्तस्त्रवाविदी-
 र्णास्या विज्ञेया पिटिकाः परैः ॥ १७ ॥

मांसमंप्राप्तपिटिकालक्षण ।

मांसस्थाः पिटिकाः स्निग्धाः कठिनाः कठिनत्वचः ॥ चिरपाका
 ज्वरश्वासकंडूदाहतृपान्विताः ॥ १८ ॥

मेदमंप्राप्तपिटिकालक्षण ।

मेदजाः पिटिकाः स्निग्धाः स्थूलाज्वरसमन्विताः ॥ मृदवो मंड
 लाकाराः पीताभाः किंचिदुन्नताः ॥ १९ ॥

मज्जामंप्राप्तपिटिकालक्षण ।

रूक्षामुद्गसमाः क्षुद्राश्चिरपाकसमन्विताः ॥ मज्जस्थाश्चिपटा
 ज्ञेयाः सव्यथाः किंचिदुन्नताः ॥ २० ॥

अर्थ--जलके बबूलेके समानहो, थोड़े दोपयुक्त, जल चुचावे और त्वचामेंहो वो वैद्योने मुख साध्य कही है ॥ १६ ॥ जो फुन्सी लालरंगकीहो, जल्दी पके, नर्मत्वचाहो, रुधिर चुचाय, खुलेमुखकी, प्रो रक्तगत पिडिका जाननी येभी साध्यहै ॥ १७ ॥ मांसमें प्राप्त पिडिका कठिन, चिकनी, करडी त्वचावाली, देरमें पके, ज्वर, श्वास, खुजली, दाह, प्यास इनसे युक्त होती है ॥ १८ ॥ चरबीमें प्राप्तपिडिका चिकनी, मोटी, ज्वरयुक्त, गरम, गोलमेंडलके आकार, पीली, कुछ उंची होती है ॥ १९ ॥ रूखी, मूंगके समान छोटी, देरमें पकनेवाली, चपटी, दर्द युक्त, कुछउंची, मज्जागत पिडिका जाननी ॥ २० ॥

हाडमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

अस्थिस्थाः पिटिकाः कुर्युर्भ्रमं दाहं तृषां ज्वरम् ॥ छिंदन्ति मर्म
धामानि प्राणानाशु हरन्ति च ॥ २१ ॥

शुक्रमेंप्राप्तपिडिकालक्षण ।

शुक्रस्थाः पिटिकाः कुर्युः स्तैमित्यं बहुवेदनाम् ॥ प्राणनाशं
शिरःकंपं श्वासं कासं ज्वरान्वितम् ॥ २२ ॥

असाध्यशीतलालक्षण ।

मसूराभिभूतस्य कर्णाक्षिनासामुखेभ्यः स्रवेदस्यरक्तंनितांतम् ॥
विवर्णातिहिक्कातृषापीडितस्य सरोगी यमस्यालये याति नूनम् २३

अर्थ--अस्थिमें प्राप्तपिडिका ये लक्षण करतीहै भ्रम, दाह, प्यास, ज्वर, मर्ममर्ममें पीडा और जल्दी प्राणोंकानाश करे ॥ २१ ॥ शुक्रमें प्राप्त पिडिका देहगीला, बहुत दुःख, प्राणोंकानाश करे शिरमें कंप, खांसी, श्वास, ज्वर ये लक्षणकरतीहै ॥ २२ ॥ शीतलवाले रोगीके कान नाक मुख नेत्रसे रुधिरगरे विवर्ण तथा दर्द हिचकी प्यास ये लक्षण होनेसे असाध्य जानना ॥ २३ ॥

दोपैकेनोत्थिताः साध्याः कष्टसाध्याद्विदोपजाः ॥ पिटिकाः सन्नि-
पातोत्था मृत्युदाः कीर्त्तिताः परैः ॥ २४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे मसूरिकानिदानम् ॥

अर्थ--एकदोपसे उठी साध्य, द्विदोपसे उठी, कष्टसाध्य, त्रिदोपसे उठी वो पुन्नी मीनकी देने-
वाली करीहै ॥ २४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिण्यां पिटिकारोगनिदानम् ।

अथपिटिकारोगनिदानम् ।

सराविका कच्छपिकाथजालिनी मसूरिका सर्पपिका च पुत्रिणी॥
विदारिका विद्रधिका तु पिंडिका तथांजली ज्ञैः पिटिका द-
शस्मृताः ॥ १ ॥

प्रमेहसेवत्पत्रापिटिका ।

मेहोत्थाः पिटिका भवन्ति दशधा वाल्ये कचिद्यौवने कायस्यां
तरवाह्ययोः प्रजनिता नृणां स्त्रियां भूयशः ॥ ताः कुर्वन्ति महज्ज्वरं
नयनयोर्मुद्रां शिरःपीडनं हल्लासांतरगुंजनं विकलतां निद्रांग
विक्षेपणम् ॥२॥ अस्थिस्फोटनमंगदाहमरतिं श्वासं च कासं रुजं
दौर्गन्ध्यं परीतःस्त्रवं विलपनं शोषं शरीरेनिशम् ॥ मूकत्वं वधिरं कृ-
शत्वमरुचिं संधिग्रहंसंभ्रमं वैवर्ण्यं शिथिलं नरं गतवलं कुर्वन्ति वी-
र्यक्षयम् ॥ ३ ॥

अर्थ-१ सराविका, २ कच्छपिका, ३ जालिनी, ४ मसूरिका, ५ सर्पपिका, ६ पुत्रिणी, ७
विदारिका, ८ विद्रधिका, ९ पिंडिका, १० अंजली ये वैद्योने दश प्रकारकी पिटिका कही
हैं ॥ १ ॥ प्रमेहसे उठी पिटिका दशतरहकी वालक अवस्थामें कभी जवानपनेमें होतीहै, देहके
बाहर भीतर स्त्रीपुरुषोंके बहुतसी वे अर, नेत्रकामुंदजाना, शिरमें दर्द, सूखी रद, आंतोंका बोलना,
बेकली, निद्रा, अंगोंका फैकना. इन लक्षणोंको कर्तीहैं ॥ २ ॥ हडकल, अंगोंमें जलन, अरुचि
श्वास, खांसी, दुर्गंध, स्त्राव, विलाप, शोष, बहिरापना, तथा गुंगापना, कृशता, अरुचि, संधियोंमें
पोडा भ्रम,, विवर्णता, शिथिलता, बलहीन, बौर्यका क्षयपना, ये लक्षण पिटिका रोगके हैं ॥ ३ ॥

पिटिकाः कर्बुरानीलामलिनांतर्गताः शिताः ॥ मृत्युप्रदारक्तवर्णाः
पाटलाः कष्टदाः स्मृताः ॥ ४ ॥ किंचित्कष्टप्रदाः पीताः पिशंगाः
पिंगलास्तथा ॥ स्वभ्राः स्फाटिकसंकाशाः स्निग्धाः सुखकराः स्मृताः
॥ ५ ॥ मर्मस्थलेषु वांसेषु जायन्ते संधिपून्नताः ॥ पिटिकाः श्वेतरक्ता-
भा मध्यगर्ताः सराविकाः ॥ ६ ॥

अर्थ-भूसरे रंगकी, नीले रंगकी, मलिन,भीतर सेपेदहो वो मृत्युकी देनेवाली पिटिका जाननी
और लाल वा गुलाबीरंगकी कष्टदेनेवाली होतीहै ॥ ४ ॥ पीलेरंगकी हस्तालके रंगकी पिटिका कुछ
कष्टदेती है नीलुआ रंगकी, स्वच्छस्फटिक मणिके रंगकी, चिकनी, सुखकरनेवाली होतीहै ॥५॥ मर्ममें
और मांसमें तथा संधियोंमें उठीहुई सेफेदलाल रंगकी बीचमें गड्ढाहो उसको सराविका कहतेहैं ॥६॥

कूर्मरूपामहापुष्टा वर्तुलाज्वरदाहदाः ॥ जायंते पिटिकाः सर्वाः
कच्छप्यस्ताउदाहृताः ॥ ७ ॥ तीव्रदाहप्रदामांसे सक्तेदावर्द्धतेरुजम् ॥
जालवद्वेष्टयत्यंतं प्रोक्ता सा जालिनीबुधैः ॥ ८ ॥ मसूरदेहवत्सूक्ष्मा
रक्ताभा सा मसूरिका ॥ गौरसर्पपभा स्निग्धा तत्प्रमाणा च सर्पपा ॥ ९ ॥

अर्थ—कछुरकेसा स्वरूपहो, ज्यादा मोटीहो, बत्तीकी तरहहो, ज्वर और जलनको करे ये लक्षण
कच्छपिकाके हैं ॥ ७ ॥ तीव्र जलन, मांसमेंही केशयुक्त पीडाको बढ़ावे, और जाटकी तरह
चिपटे उसे पंडित जालिनी कहते हैं ॥ ८ ॥ मसूरकी दाळकी समान छोटी, और लाल हो, उसे
मसूरिका कहतेहैं और सपेद सरसोंके समानहो और चिकनी हो उसे सर्पपिका कहते हैं ॥ ९ ॥

पिटिकासु प्रजायंते पिटिका घोरदर्शनाः ॥ पुत्रिण्यस्त्वार्तिदानी-
लाः प्रोक्तावैद्यैर्विशारदैः ॥ १० ॥ अतिदीर्घासशोफाया परस्परयुता
रुणा ॥ विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ता प्रोक्ता विद्रधिका बुधैः ॥ ११ ॥ विदारि-
कंदवदीर्घा कठिना दुःखकारिणी ॥ ज्वरार्तिदा क्षुधाहारी विज्ञेया
सा विदारिका ॥ १२ ॥

अर्थ—जो पुन्सीमें दूसरी पुन्सी घोर पैदाहो और पीडायुक्त हो और नीलेरंगकी हो उसे पुत्रिणी
कहते हैं ॥ १० ॥ बहुत बड़ी सूजनयुक्त और परस्परमिली हुईहो लालरंगहो और विद्रधिके लक्षण
मिलतेहों उसे वैद्योंने विद्रधिका कहा है ॥ ११ ॥ विदारीकदके समान मोटाहो कड़ी दुःखकारक
ज्वर, खेद, भूखकानाश करनेवाली उसको विदारिका कहते हैं ॥ १२ ॥

पिंडीवर्तिपिटिका ज्ञेया देहशोफकरीसिता ॥ व्यक्तांजुल्याकृति-
ज्ञेया वैद्यैः सा विततांजुला ॥ १३ ॥ पिटिकार्तेर्विनाशाय शीतलां
पूजयेत्सुधीः ॥ पुष्पैर्धूपाक्षतैर्दीपैर्नैवेद्यैर्मंगलैस्तथा ॥ १४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रेमसूरिकापिटिकालक्षणम् ।

अर्थ—जो पिंडाके आकारहो उसे पिंडिका जाननी, जो देहमें सूजनको करताहै जो मित्यी हुई
धंजलीके आकारमेंहो उसे वैद्य विततांजुली कहते हैं ॥ १३ ॥ पिटिका और शीतला एकहीहै
इसी वास्ते पिटिकाके दुःखके नाशार्थ शीतलाका पूजन धूप दीप चाबुड पुष्प नैवेद्य और मंग-
लाचरणके साथ करे ॥ १४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थवोधिण्यां पिटिकामसूरिकारोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथमेदोरोगनिदानम् ।

मेदवृत्तिः ।

अव्यायामैर्दिवास्वप्नैर्मांसमिष्टान्नभोजनैः ॥ अतिस्निग्धाशनैर्देहे
मेदोवृद्धिः प्रजायते ॥ १ ॥ जठरे मेदसोवृद्धिःकरोति बलसंक्ष-
यम् ॥ निद्रांदौर्गन्ध्यमंगेषुअशक्तिं सर्वकर्मसु ॥ २ ॥ स्थूलोदर-
मनुत्साहं गौरवं तनुशीतलम् ॥ जठराम्नेः क्षयं जाड्यं श्वासं
कंपनसादनम् ॥ ३ ॥

अर्थ—दंड फसरतके न करनेसे सोनेसे, मांस मिष्टान्नके खानेसे, अति चिकनी वस्तुके खानेसे
देहमें मेदबढाहै ॥ १ ॥ पेटमें मेदके बढनेसे बलका नाशहोताहै, और निद्रां तथा दुर्गन्ध देहमें और
सर्वकर्ममें अश्रद्धा होतीहै ॥ २ ॥ पेटको बढावै, उत्साह रहित, तथा देह भारी तथा शीतल, जठ-
राम्निकानाश और जडता, श्वास, कप और देहका रहजाना करेहैं ॥ ३ ॥

कायं स्थूलतरं मेदः सस्वेदं स्वल्पमैथुनम् ॥ धातुक्षयं त्वचं पीतां
बहुमूत्रां शितेक्षिणीम् ॥ ४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे मेदसोवृद्धिलक्षणम् ।

अर्थ—जिसका देह मोटी मेदसे और पसीने युक्त, मैथुन थोडा कराजाय, और धातु गिराकर
पीली त्वचा होजाय, मूत्र बहुत उत्तरे, सपेद नेत्रहो, ये मेद रोगके लक्षणहैं ॥ ४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां मेदोरोगलक्षणम् ।

गंडमालरोगनिदानम् ।

विस्फोटमालागलकेशशोफमेदोद्भवा तोदयुतातिरक्ता ॥ कर्क-
धुजंभवामलकप्रमाणा तां गंडमालां प्रवदन्ति वैद्याः ॥ १ ॥

वातकीगंडमालाकेलक्षणम् ।

वातोद्भवा या गलगंडमाला कृष्णारुणाभा कुरुतेतितोदम् ॥
स्तब्धाशिरातालुगलेप्रशोषं भिन्नस्वरं रूक्षतमं शरीरम् ॥ २ ॥
चैरस्यमास्ये विदधातिकष्टं संस्त्रावयेद्रक्तनिभं च पूयम् ॥ भिन्नस्वरं
कष्टतरेण पाकं करोति वातात्मकगंडमाला ॥ ३ ॥

अर्थ—फोडे मालाकीतरह सूजनयुक्त गलेमें हो और लालहो तथा बेर जामुन आमलेके प्रमाणहो मेदसे पैदा हुआहो उसे वैद्य गंडमाला रोग कहते हैं ॥ १ ॥ वातकी गंडमालाके ये लक्षणहैं कालीहो, चालहो, अतिपीडाकरे, नाडिनको स्तंभन करदे, ताड़ गलेमें शोषहो, बुरास्त्र, शरीररूखां करे ॥ २ ॥ मुखमें स्वाद न रहै, कष्टको बढावै, तथा राधरुधिरवहै, बुरास्त्र होजाय कष्टसे पकै येभी वातकी गंडमालाके लक्षणहैं ॥ ३ ॥

पित्तकीगंडमालाकालक्षण ।

ज्वरं शोफशूलं करोत्युग्रदाहं कटुत्वं मुखे कंठताल्वोष्ठशोषम् ॥
महत्पित्तकोपोद्भवारक्तवर्णा गलेमुष्कपंच्याकृतिर्गण्डमाला ॥४॥

कफकीगंडमालाकालक्षण ।

जम्बूकर्कधुपूगीफलकलितरुभापकनारंगपिंगा काठिन्या ग्रंथि-
पंक्तिर्वितरतिपरतः कंठदेशेषु शोफम् ॥ कंडूपीडां विधत्ते प्रतिदिन-
मरुचिं गौरवाङ्गंच कासं पूयं रक्तं सगंधं स्रवति भवति सा श्ले-
ष्मजा गंडमाला ॥ ५ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्य-
शास्त्रे गंडमालालक्षणं समाप्तम् ।

अर्थ—ज्वर, शूल, दाह, मुखकडुभा, कंठ ताड़ ओठ इनका सूखना, लाल वर्ण, गलेमें अंड-
कोशकी पंक्तिके आकारहो उसे पित्तकी गंडमाला कहते हैं ॥ ४ ॥ जामुन बेर सुपारी बहेडा, पके
नारंगके समान पीलीहो, काठिन गांठकी पंक्तिभीहो, और कठमें सूजनहो खुजली पीडाको बढा
अरुचि, देहभारी, खांसी, राधरुधिर वासके साथ निकलै, उसे कफकी गंडमाला कहते हैं ॥ ५ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां गंडमालारोगनिदानम् ॥

अथश्लेष्मीपदरोगनिदानम् ।

शोफो नृणां पादगतोऽतिरौद्रो बल्मीकतुल्योऽंतरमांसवर्ती ॥ मेदा-
श्रयःकंठकेवष्टितांगो वैद्योत्तमैः श्लेष्मीहपदो निरुक्तः ॥ १ ॥

वातकीश्लेष्मीपदकालक्षण ।

निमित्तशून्यं बहुशोफपादं कृष्णं च रुक्षं स्फुटतीव्रतोदनम् ॥
वातोद्भवं श्लेष्मीहपदं ज्वरार्तिर्निरूपितं वैद्यवरैर्नितांतम् ॥ २ ॥

पित्तकीश्लीपदकालक्षण ।

शोफाधिकं रक्तज्वरार्तिदाहं संस्त्रावयुक्तं वहुरक्तवर्णम् ॥ पित्तात्म-
कं श्लीहपदं गुरुत्वं ज्ञेयं भिषग्भिः किलकष्टसाध्यम् ॥ ३ ॥

अर्थ—मनुष्योंके पैरमें सूजनहो, और क्रमसे बड़के सर्पकी गांठीके समान लम्बी पेड़ जंघा मां-
समें प्राप्तहो, और मेदके आश्रयहो कांटेयुक्त हो उसे वैद्य श्लीपदरोग कहते हैं ॥ १ ॥ विनाकारण
बहुत सूजन हो, काली रूखी फटीं तीव्र वेदनायुक्त, ज्वर, स्वेदहो, उसे वैद्य वातका श्लीपदरोग
कहते हैं ॥ २ ॥ जिसमें सूजन ज्यादा हो, लालरंगहो, ज्वर, खेद, दाह रुधिर गिरे, भारीहो वो वैद्योंने
कष्टसाध्य पित्तका श्लीपद कहा है ॥ ३ ॥

कफकेश्लीपदकालक्षण ।

स्निग्धं श्लीहपदं गुरुत्वमनिशं शोकाधिकं सज्वरं श्वेताभं बहुकं-
टकैः परिवृतं बल्मीकतुल्यं दृढम् ॥ मेदोमांसपराश्रयं चरणगं स्थूलं
च शीतान्वितं भोभोवैद्यविशारदाः कफभवं जानीहि तत्पांडुरम् ४

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे श्लीहपदलक्षणम् ॥

अर्थ—चिकेना, भारी सूजन, विशेष ज्वर, संपेदरंग, बहुत कांटेयुक्त, बामांके तुल्यहो, और
दृढहो मेदमांसके आश्रयहो, पैरोंमेंहो, मोटा और शीतल हो उसे हे वैद्य ! तू कफकी श्लीपद रोग-
जानो ॥ ४ ॥

इति श्रीहंसराजवोधिन्यां श्लीपदरोगनिदानम् ॥

अयविद्रधिरोगनिदानम् ।

त्वग्रक्तामिपमेदासि दूप्यदोषास्थिगाः पुनः ॥ नाभेरधोमहच्छोफं
ज्वरं कुर्वन्ति ते शनैः ॥ १ ॥ स विद्रधीरुक्पारितोविचार्य्य प्रीतैर्भिष-
ग्भिः किलशास्त्रपारगैः ॥ महार्त्तिकृद्वाहविवर्द्धनोऽसौ शोफान्वितो
हृज्जठरे च शूलम् ॥ २ ॥ विद्रधिः पड्विधः प्रोक्तो मुनिभिस्तच्च
दर्शाभिः ॥ दौषैर्व्यस्तैः समस्तैश्च रक्तजः सप्तमः स्मृतः ॥ ३ ॥

अर्थ—वात, कफ, पित्त ये त्वचा, रुधिर, मांस, मेदा उनको विगाडकर हड्डीमें प्राप्त हो नाभोके
नीचे भारी सूजन और ज्वरको पैदा करते हैं ॥ १ ॥ बहुत स्वेद और दाह और सूजनको
बढ़ावे, तथा हृदय और पेटमें दर्दहो उसे वैद्योंने विचारकर विद्रधि रोग कहाहै ॥ २ ॥ विद्रधि
रोग छः तरहकाहै १ वात २ पित्त ३ कफसे ४ वात पित्तसे, ५ वातकफसे ६ पित्तकफसे, और
सातवा ७ रुधिरसे ॥ ३ ॥

वातविद्रधिके लक्षण ।

रक्तश्यामोऽतिविपमो वेदना बहुभिर्युतः ॥ शीर्षपाको विचित्राभो-
वातजो विद्रधिः स्मृतः ॥ ४ ॥

पित्तकेविद्रधिकेलक्षण ।

पक्कनिंबूफलाकारोरक्ताभोज्वरदाहकृत् ॥ शीर्षपाकोमहत्यार्त्तिर्वि-
द्रधिः पित्तजो भवेत् ॥ ५ ॥

कफकेविद्रधिकेलक्षण ।

स्निग्धः शीतश्चिरोत्थोयं चिरपाकोल्पवेदनः ॥ श्लेष्मजो विद्रधिः
पांडुः शरावसदृशो भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—छाल और काली तथा विपम बहुतपीडायुक्त, जल्दीपके, और विचित्र स्वरूप हो ये वातके विद्रधिके लक्षण हैं ॥ ४ ॥ पके नींबूके समान सूजन हो, लालरंग, ज्वर दाहके कत्ने वाली, शीर्ष पाक हो, अत्यंत पीडायुक्त ये पित्तकी विद्रधिके लक्षण हैं ॥ ५ ॥ चिकनी, शीतल, बहुत दिनकी उठी और बहुत कालमें पके, मंदपीडा हो पालेरंगकी, शरावके समान हो, ये कफकी विद्रधिके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

सन्निपातकेविद्रधिकेलक्षण ।

नानावर्णो दाहशूलो ज्वरार्त्तिः कोष्ठोत्थानं कष्टपाकोऽतिरौद्रः ॥
आधिस्रावोवस्तिहृत्कुक्षिशोथो वैद्यैः प्रोक्तोविद्रधिः सन्निपातः ॥
रुधिरकेविद्रधिकेलक्षण ।

दीर्घोष्णा परिपक्वचूतसदृशो विस्फोटको मांसलः कृष्णाभो
बहुदाहकृज्वरकरस्तृष्णान्वितः क्षुद्धरः ॥ कुक्षौवस्तिगुदोदरेषु हृ-
दये पीडाकरोऽहर्निशं प्रोक्तो रक्तभवोभिपग्वरगणैः पित्तात्मको वि-
द्रधिः ॥ ८ ॥ विद्रधिं रक्तजं विद्यात्कुक्षौलग्नमचञ्चलम् ॥ मांसशो-
णितयोर्ग्रथिं वस्तिहृन्नाभिसंभवम् ॥ ९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रेविद्रधिलक्षणम् ॥

अर्थ—विचित्र रंगहो, दाह, शूल, पीडा, कोष्ठमें पैदा हुई कष्टसे पके, अति रौद्र आवि स्राव मूत्रस्थान, हृदय, कृष्ण इन अस्थानोंमें सूजन हो, इसे वैद्योंने सन्निपातका विद्रधि रोग कहा है ॥ ७ ॥

दार्ढ्यं, गरम, पक्के आमके समान फोडा हो, तथा मोटाहो, काटेरंगके समान, बहुत दाह, ज्वर भूखका नाशकरै, प्यास बढ़ावै, कृख, मूत्रस्थान, गुदा पेट, हृदय, इनमें रातदिन पीडा करै, ऐस विद्रधिको वैद्यगर्णेनि पित्तात्मक रुधिरकी कही है ॥ ८ ॥ और नाभी मूत्रस्थान हृदयमें मांसकी गां हो, उसे रुधिरकी विद्रधि कहते हैं, तथा कांखमें स्थिर जो हो ॥ ९ ॥

इति श्रीहंसराजार्थत्रयोधिन्त्यां विद्रधिरोगनिदानम् ॥

अथोपदंशलक्षणम् ।

हस्तस्य घातात्करजस्य पाताद्दंतस्य दंशात्तृणकाष्ठलज्जात् ॥ दुष्ट-
स्त्रियो योनिविकारसेवनात्पञ्चोपदंशाः प्रभवन्ति शिश्वे ॥ १ ॥

वातके उपदंशके लक्षण ।

वातोपदंशो बहुवेदनान्वितो विस्फोटसूक्ष्मैः स्फुरणैस्तु कृष्णभैः ॥
युक्तः सतौदैः किल जायते नृणां शिश्वस्य बाह्योपरितोऽन्तरे
निशम् ॥ २ ॥

पित्तके उपदंशके लक्षण ।

पित्तोपदंशं तमवेहि नूनं तीव्रार्तिदाहं पिशितावभासम् ॥ विशीर्ण-
मांसं पिटिकाभिपित्तं शिश्रान्तरे गर्तमतीवरोद्रम् ॥ ३ ॥

अर्थ—हाथके चोटसे तथा नखके लगनेसे, किसी तरहसे दांतके लगनेसे, तिनका, लकड़के लगनेसे, गरमीवाली औरतके संग करनेसे, लिंगमें पांच प्रकारका उपदंश रोग पैदा होता है ॥ १ ॥ वातका उपदंशवाला पुरुष बहुत वेदनायुक्त हो, प्रकाशमान काटेरंगकी छेटी छोट पिटिका हों, पीडायुक्त, लिंगके बाहर भीतर मनुष्योंके होती हैं ॥ २ ॥ उसे पित्तका उपदंश जाने जिसमें ये लक्षण हों, तीव्रदाह, मांसके रंग सरीखा तथा बिखरा हुआ मांस हो, पिटिका युक्त लिंगके भीतरी भारी गढाहो ॥ ३ ॥

कफके उपदंशकालक्षण ।

वैद्योपदंशं कफसंभवं हितं जानीहि कंडूपिटिकाभिराश्रितम् ॥
शोफाधिकं पादुरवर्णशीतलं स्निग्धं गरिष्ठं पिशितांकुरान्वितम् ॥ ४ ॥

सन्निपातके उपदंशकालक्षण ।

आमुष्कशोफं कृमिजं तु जग्धं विशीर्णमांसं बहुगर्तशोफम् ॥
त्रिदोषजं विद्ध्युपदंशमेतमसाध्यमार्तिज्वरशूलदाहम् ॥ ५ ॥ जात-
मात्रे महारोगे चिकित्सानैव कारयेत् ॥ वद्धमूलेन रोगेण रोगी
यातियमालयम् ॥ ६ ॥

अर्थ—हे वैद्य ? उसे तू कफका उपदंशजान जिसमें खुजली हो, पिटिका हो, अधिक सूजनहो-
पीछारंग हो, शीतल और चिकना भारी मांसकुर युक्त हो ॥ ४ ॥ लिंगसे अंडकोशों पर्यंत सूजन
हो, कृमिपडगये हों, मांस बिखर गया हो, बड़ा गड्ढा हो, सूजनहो ज्वर, शूल, दाह युक्त, ऐसे
लक्षणोंसे असाध्य त्रिदोषका उपदंश जानना ॥ ५ जो मनुष्य उपदंश रोगको पैदा होतेही इलाज
नहीं करे और रोग बहूमूल होजाय तो वह रोगी यमराजके घर जाता है ॥ ६ ॥

महाक्षतो भवेद्यस्य शिश्वे स्फोटोनिशीर्य्यते ॥ शिरःपीडा ज्वरो
देहे निर्लोमो मुखमंडले ॥ ७ ॥ गुह्यदेशे महाशोफो नेत्रयोर्वहुर-
क्तता ॥ पतेच्छिश्रः समुष्काभ्यां सरोगी नैव जीवति ॥ ८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचितोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे उपदंशलक्षणम् ।

अर्थ—जिसके लिंगमें बड़ा घाव हो, और घाव फटजावे, तथा शिरमें दर्द, और ज्वर, मुखपर
वाल न रहे ॥ ७ ॥ गुह्यइन्द्रियमें महासूजनहो, और नेत्र लालहों, और जिसका अंडकोशके साथ
लिंग गिरपडे वह रोगी नहीं जीवे ॥ ८ ॥

इति श्रीहंसराजार्यवोधिन्वामुपदंशरोगनिदानम् ॥

अयश्शूकदांपलक्षणम् ।

यो लिंगवृद्धिं मनुजोभिवांछति शूकोद्भवास्तस्य भवन्ति व्याधयः ॥
अष्टादशाख्याः कफवातपित्तजा द्वंद्वोद्भवा रक्तभवा त्रिदोषजाः १
सर्पपिकाकालक्षण

सर्पपिका सा सर्पपरूपा लिंगसमीपे दारुणशूका ॥ वातकफाभ्या
संजनिता रूक् स्यात्पिटिकेयं पुंस्त्वहरीति ॥ २ ॥

कुम्भिकाकालक्षण ।

रक्तपित्तोत्थिताकुम्भी पिटिका रक्तपूरिता ॥ शिश्वोपरिगताशू-
कदोषजा तीव्रवेदना ॥ ३ ॥

अर्थ—जो मनुष्य लिंग बटनेकी हठ्या करे, और मूढ़वैद्यके कहनेसे लेप वा पट्टी बांधे उसके
अठारह तरहका, वात, पित्त, कफ ३ दो दोषोंके ३ और त्रिदोषका १ शूकसे पैदा व्याधिहो
ती है ॥ १ ॥ सर्पपिका सरसोंके समान छोटी फुंसी लिंगपर होतीहै, और वात, कफसे पैदा तथा
पुरुषपनेको दूरकरती है ॥ २ ॥ रक्तपित्तसेपैदा कुम्भिकापुंसां रधिरसे पूरित और लिंगपर शूकदोष-
से पैदाहुई तीव्रपांडापुक्त ॥ ३ ॥

मूढपिटिकाकालक्षण ।

पाणिभ्यां मृदितं शिश्रं पीडितं वातकोपतः ॥ तस्मिन्वातसमु-
द्भूतासामूढपिटिकाभवेत् ॥ ४ ॥

दीर्घिकापिटिकाकालक्षण ।

दीर्यते मध्यतो वद्धाः पिटिकारोमहर्षदाः ॥ संधिमध्यगताःशुभ्राः
कफजा दीर्घिकाः स्मृताः ॥ ५ ॥

पुष्कारिका पिटिकाकालक्षण ।

पित्तोद्भवा पुष्करकर्णिकासमा सिंदूरवर्णा निविडाऽतिदुःखदा ॥
दाहादिपीडां महतीं करोति या सोक्ता परैः पुष्कारिका मुनीन्द्रैः६॥

अर्थ—हाथके मीडनेसे, वातके कोपसे पैदाहुई लिंगपर पुंसी उसे मूढपिटिका कहते हैं ॥४॥
रोमांचको करे, और बीचमेंसे फटजाय, और सन्धियोंके बीचमें सपेद रंगकाहो, वो कफसे पैदा
हुई दीर्घिकानाम पिटिका जाननी ॥ ५ ॥ पित्तसे पैदा कमलकी कार्णिकाके समानहो, तथा लाल
रंगहो, चिपटी, अतिदुःख देने हारी, दाह, पीडा बहुतकरे, उसे मुनीश्वरोंने, पुष्कारिका पिटिका
कही है ॥ ६ ॥

स्पर्श नोत्सहते ज्वरं वितनुते पीडां करोति द्रुतं यःशूकं पिटि-
काशतं बहुरुजं लिंगे विधत्ते चिरम्॥कृष्णारक्तनिभं विपाककठिनं
पाकार्तिकृत्सद्रवं विद्यात्पित्तमरुद्भवं तमनिशं मुद्गादलाभं
रुजम् ॥ ७ ॥

कफपित्तकेशूककेलक्षण ।

कफपित्तभवा विविधा कृतयः पिटिकावहुशोफयुताः कठिनाः ॥
ज्वरदाहाविलापरुजो दधते कृमिशोणितपूयवहा विपमाः ॥ ८ ॥

त्रिदोषजनितशूककेलक्षण ।

मांसपाकं बहुच्छिद्रं लिंगभंगं त्रिदोषजः ॥ कुर्याच्छूकोज्वरं
दाहं शोथं च पिटिकान्वितम् ॥ ९ ॥

अर्थ—स्पर्श न सहाजाय, ज्वर, पीडा, और सैकरीं पुंसी लिंगके ऊपरकाली, लाल हों, कठि-
नसे पकै, दुःखकी देनेवाली, और चुचावै, उसे वातपित्तसे पैदाहुई पीडिका मृगके पत्तेके समान
जाननी ॥ ७ ॥ कफ पित्तसे पैदाहुआ जो शूक रोग उसके अनेक तरहकी पुंसीकी आकृतिहो,
और सूजनहो, कठिनज्वर के और दाहके करनेवाली, रुदनकरे, कृमी, और रुधिर तथा राधबंदे,

और विषम हो ॥ ८ ॥ मांसका पाक तथा बहुतसे छिद्र होजायँ और लिगगिरपडे, तथा ज्वर, दाह, सूजन, और अनेक मरोडीहों, ये सन्निपातके शूकरोगके लक्षण हैं ॥ ९ ॥

मांसशोणितयोर्ग्रन्थिमर्बुदं तं विदुर्वुधाः ॥ विद्रधेर्विद्रधिं विद्याः
त्संनिपातसमुद्भवाम् ॥ १० ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रेशूकदोषलक्षणम् ।

अर्थ—मांस और रुधिरकी गांठ उसे पण्डित अर्बुद कहते हैं, 'और, विद्रधिकेआकार हो उसे संनिपातसे पैदा विद्रधि कहतेहैं ॥ १० ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां शूकरोगनिदानम् ॥

अथकुष्ठरोगलक्षण ।

अथकुष्ठरोगोत्पत्तिः ।

महापापतः कुष्ठिनो देहदाहान्तथात्यंतसंसर्गतो मांसभक्षत् ॥
भवेत्कुष्ठरोगो गुडक्षीरपानादजीर्णाशनाद्रक्तपित्तस्य कोपात् ॥१॥
विरुद्धान्नपातात् स्त्रियोत्यंतसंगाद्दिवास्वापतो रौद्रधर्मादितापात् ॥
गुरुस्निग्धरूक्षाशनान्मूत्रबंधान्द्रवेद्रौद्रकुष्ठो जलस्यावगाहात् ॥२॥
मांसचर्मविकारोत्थाः कुष्ठाष्टादशसंज्ञकाः ॥ वातपित्तकफोद्भूता
द्वंद्वोत्थाः सन्निपातजाः ॥ ३ ॥

अर्थ—ब्रह्महत्यादि महापापके करनेसे कुष्ठीको दाह देनेसे कोढीके पासरहनेसे मांसके खानेमें भारी तथा दुग्ध आदि पदार्थ के सेवन करनेसे, अजीर्णमें खानेसे, रक्तपित्तके होनेसे, कुष्ठरोग पैदा होताहै ॥ १ ॥ तथा विरुद्ध अन्न और जलके सेवन करनेसे अत्यन्त स्त्रीके संग करनेसे, दिनमें सोनेसे, घूप आदि गरमीके खानेसे, भारी चिकना रखे आदिके खानेसे, मूत्रबंध होनेसे, बहुत जलमें रहनेसे, घोर कुष्ठरोग पैदा होताहै ॥ २ ॥ मांस और चर्मके विकारसे पैदा कोढरोग अठारह प्रकारकाहै, वातसे, पित्तसे, कफसे, द्वन्द्वज और सन्निपातसे ॥ ३ ॥

उदुंबरकुष्ठकेलक्षण ।

यद्रूक्षं परुषं कपालसदृशं तोदं कपालेऽधिकं तत्कुष्ठं विषमं वदन्ति
सुधियः कृष्णारुणाभं शृशाम् ॥ यत्कुष्ठं स्फुटितमुदुम्बरसमं रुग्दाह
कंड्वृतं शुष्कं रक्तनिभं परेर्निगादितं तत्कुष्ठमौदुंबरम् ॥ ४ ॥

मूकाजिह्वनामकुष्ठकेलक्षण ।

वृषजिह्वोपमां जिह्वा रोमहर्षोन्तरव्यथा ॥ जायते येन कुष्ठेन
मूकाजिह्वन्तदुच्यते ॥ ५ ॥

मंडलकुष्ठकेलक्षण ।

श्वेतरक्तनिभं स्निग्धं स्थिरं कृच्छ्रसमुन्नतम् ॥ परस्परसमालम्बं
कुष्ठं मंडलसंज्ञकम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जो रूखा, कठोर, खोपड़ीके समान, कपाल में पीटा करे तथा काला, लाल उसे क-
पाल संज्ञक कुष्ठ कहते हैं, और जो फटगयाहो गूटरकेसमान पीटा दाह, खुजली, तथा सूखा
हुआ रुधिरके समान उसे वैद्य उदुम्बर नाम कुष्ठ कहते हैं ॥ ४ ॥ वैलकी जीभके समान जीभहो
रोमांच तथा भीतरपीडाहो, उसे मूकाजिह्व कुष्ठ कहते हैं ॥ ५ ॥ सपेद, लाल, चिकना स्थिर करडा
ऊंचा, और आपसमें मिला हुआ हो उसे मण्डल कुष्ठ कहते हैं ॥ ६ ॥

करवालकुष्ठकेलक्षण ।

वर्द्धतेऽहर्निशं स्थूलं कृष्णकंडूभिरावृतम् ॥ रूक्षं बहुतरं कुष्ठं कर
वालं तदुच्यते ॥ ७ ॥

किणिकुष्ठकेलक्षण ।

तत्कुष्ठं किणिसंज्ञं स्यात्किणं शोथ समन्वितम् ॥ श्यामवर्णं खर
स्पर्शं परुषं बहुवेदनम् ॥ ८ ॥

दादनामकोढकेलक्षण ।

कृष्णाभं मंडलाकारं कंडूभिर्वहुभिर्युतम् ॥ अतापे दुष्करं रूक्षं
तत्कुष्ठं ददुसंज्ञकम् ॥ ९ ॥

अर्थ—जो नित्य बढ़ता जावे, और मोटाहो काटा और खुजली युक्त रूखा, और बहुतहो
उसे करवाल कुष्ठ कहते हैं ॥ ७ ॥ वो फोड किणी संज्ञकहै, जिसमें घात्र सूजनके साथ हो
चालावर्ण, खरदरा, स्पर्श, कठोर, बहुत खेद युक्तहो ॥ ८ ॥ काला, गोल चकत्ते, खुजली होतीहो,
गरमीमें दुःख बहुतहो, रूखा, उसको दादनाम फोड कहते हैं ॥ ९ ॥

चर्मदलकोढकेलक्षण ।

कंडुमद्रक्तवर्णं च विस्फोटकसमन्वितम् ॥ सार्द्रस्पर्शासहं शूलं
कुष्ठं चर्मदलं भवेत् ॥ १० ॥

गजचर्मकोढकेलक्षण ।

गजचर्मसमारकारं स्थूलं बहुतरं दृढम् ॥ कंडूंमच्छयामवर्णं यत्कुष्ठं
तच्चर्मसंज्ञकम् ॥ ११ ॥

पामाकुष्ठकेलक्षण ।

स्फोटाभिर्वहुभिर्युक्ता सूक्ष्माभिः पाटलादिभिः ॥ कंडूदाहार्तिभिर्य
क्तापामा सा कीर्तिता बुधैः ॥ १२ ॥

अर्थ—जिसमें खुजलीहो, और लालवर्ण तथा फोड़ाहो गीला, स्पर्श न सहा जाय, शूलयुक्त, उसे चर्मदल नाम कुष्ठ कहते हैं ॥ १० ॥ जो हाथीके चर्मके आकार हो, और मोटाहो, तथा विशेष और दृढ हो, खुजलीयुक्त, कालारंगहो, उसे गजचर्म कुष्ठ कहते हैं ॥ ११ ॥ जिसमें फोड़ा छोटे और सपेद लाल रंगके बहुत हों, और खुजली दाह पीडा युक्तहो उसे पामा अर्थात् खाज कहते हैं ॥ १२ ॥

विचर्चिका और चित्रकुष्ठ ।

सैव नूनं बहुस्त्रावा कथिता सा विचर्चिका ॥ यत्पुष्पसदृशं वर्णं
चित्रकुष्ठं तदुच्यते ॥ १३ ॥

वातकेकुष्ठकालक्षण ।

श्यामारुणं खरस्पर्शं रूक्षं वेदनयान्वितम् ॥ विवर्णं वातजं कुष्ठं
कथितं तद्भिषगवरैः ॥ १४ ॥

पित्तकेकुष्ठकेलक्षण ।

श्यामारुणनिभं स्त्रावं कंडूरोगार्तिदाहदम् ॥ तीक्ष्णपित्तोद्भवं कुष्ठं
कीर्तितं वैद्यसत्तमैः ॥ १५ ॥

अर्थ—वही श्यामा बहुत सखे तो उसेही विचर्चिका कहते हैं, और जिसका पुष्पके वर्णके समान रंगहो उसे चित्रकुष्ठ कहते हैं ॥ १३ ॥ जिसका काला, लाल और खरदरा स्पर्श हो, रूखा तथा पीडा युक्त विवर्ण उसे वातका कुष्ठ कहते हैं ॥ १४ ॥ जिसका काला, लालरंगहो, और सखे तथा खुजली दाह पीडा हो उसे तीखा पित्तका कुष्ठ वैद्योंने कहाहै ॥ १५ ॥

कफकेकुष्ठकेलक्षण ।

कुष्ठं कफोद्भवं विद्यात्स्निग्धं कंडुयुतं घनम् ॥ गौरवं शीतलं ह्येदि

शोथस्त्रावसमन्वितम् ॥ १६ ॥ चिह्नैर्द्विदोपजैर्युक्तं द्विदोपोत्थं
विदुर्वुधाः ॥ त्रिभिर्दोषैर्विमिश्रं यत्कुष्ठं कष्टतरं भवेत् ॥ १७ ॥

त्वचामेस्थितकुष्ठकेलक्षण ।

वहूपद्रवसंयुक्तमसाध्यं तत्प्रकीर्तितम् ॥ त्वक्स्थे कुष्ठे शरीरेषु वै-
वर्ण्यं रूक्षता भवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ—जो चिकना और खुजलीयुक्त घन, भारी शीतल, झेदी, सूजनयुक्त, तथा सखे, उसे कफको कुष्ठ कहते हैं ॥ १६ ॥ जिसमें द्विदोषके लक्षण मिलते हों, उसे पण्डित द्विदोषका कुष्ठ कहते हैं, और त्रिदोषके लक्षण मिले हों, उसे कष्टतर जान वैयं त्यागदे ॥ १७ ॥ और बहुत उप-
द्रव युक्तहो, उसे वैचोने असाध्य कहाहै, त्वचामे स्थित कुष्ठ शरीरको विवर्ण करदे, और रूखा
कर देताहै ॥ १८ ॥

रक्तगतकुष्ठकेलक्षण ।

कुष्ठे रक्तगते नेत्रे क्लमो हर्षोरुचिर्भवेत् ॥ प्रस्वेदः कंठशोषश्चवि-
सर्पो रक्तमंडलम् ॥ १९ ॥

मांसगतकुष्ठकेलक्षण ।

हस्तांग्रिषु नृणां शोफं विस्फोटं तोदगौरवम् ॥ कुष्ठे मांसं गते
तस्य विरेको वमनं भवेत् ॥ २० ॥

मेदगतकुष्ठकेलक्षण ।

गात्रभ्रमोगदुर्गंधं क्षते पृथं च जंतवः ॥ गतिक्षयोऽग्निमंदत्वं कुष्ठे
मेदगते भवेत् ॥ २१ ॥

अर्थ—नेत्रोंमें क्लम, तथा, हर्षका नाश, अरुचि, पसीना, कंठका सूखना और विसर्प,
रुधिरके मण्डल ये रक्तगत कुष्ठके लक्षणहैं ॥ १९ ॥ हाथ पैरोंमें सूजन, तथा फोडा पीडा, शरीरभारी
रहे रद, दस्त ये मांसगत कुष्ठके लक्षण हैं ॥ २० ॥ शरीरका टूटना, देहमें दुर्गन्ध, भ्रम, पीव,
कमिहों, गतिका नाश, मन्दाग्नि, ये मेदगत कुष्ठके लक्षणहैं ॥ २१ ॥

अस्थिमज्जागतकुष्ठकेलक्षण ।

नासाभंगोऽक्षिणी रक्ते क्षतेपुकृमिसंभवः ॥ स्वरघातोव्रणे दाहः
कुष्ठे मज्जास्थिसंस्थिते ॥ २२ ॥ दंपत्योः कुष्ठिनोर्वीर्यशोणिताभ्यां च
संभवः ॥ यदपत्यविकाराभ्यां ज्ञेयं तदपि कुष्ठितम् ॥ २३ ॥

कुष्ठकंठाध्यलक्षणम् ।

त्वग्रक्तमासगं कुष्ठं साध्यं यंत्रौषधादिभिः ॥ मेदोजं च द्विदोषो-
त्थं दानस्नानजपादिभिः ॥ २४ ॥

अर्थ—नाकका मंग, नेत्र छाल, धावोंमें कौडापडजाय, मन्दस्वर, ग्रणोंमें दाह, ये हड्डी और मज्जागत कुष्ठके लक्षणहैं ॥ २२ ॥ माता और पिताके कोठी होनेसे उन्होंके वीर्य और रजसे पैदा जो सन्तान वो भी कोठी होता है ॥ २३ ॥ त्वचा, रुधिर, मांसमें जो स्थित कुष्ठ सो ग्रंथ मंत्र औषधियोंसे साध्यहै, और जो मेदा मज्जामें प्राप्तहो और द्विदोषसे उठाहो वो स्नान दान जपादिहो शक्तिहो ॥ २४ ॥

कुष्ठकेअसाध्यलक्षणम् ।

नरं कुष्ठिनं हन्ति कुष्ठं प्रवृद्धं त्रिदोषोद्भवं संधिमज्जास्थिसंस्थम् ॥
प्रभिन्नस्वरं श्वासवाहं सदाहं कृमीणां क्षतेऽसृक् स्रवं रक्तनेत्रम्
॥ २५ ॥ अंगानि येन शीर्यते क्षतेषु कृमिसंभवः ॥ भ्रूनासाक्षिस्वरा
भग्नाः कुष्ठं तं पारितस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे कुष्ठलक्षणम् ॥

अर्थ—संधि मज्जा अस्थिगत त्रिदोषसे पैदा हुआ जो कुष्ठ और बड़ा हुआ वो कोठी मनुष्यको मारडाले तथा भ्रष्टस्वर, श्वासवान्, दाह, ओर कृमियुक्त धाव रुधिरस्रवे, छालनेत्र ॥ २५ ॥ जिससे अंग फटजाय, और धावोंमें कृमि पटजाय, तथा भूकुटी नाक नेत्र जाते रहै, स्वर बैठजाय, उस कोठीको वैद्य त्यागदे ॥ २६ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां कुष्ठरोगनिदानम् ॥

शीतपित्तोर्दलक्षणम् ।

शीतवातस्य संस्पर्शाद्वातपित्तकफास्त्रयः ॥ त्वग्रक्तमांसंसंदूप्य
विसर्प्यंतोतरे वहिः ॥ १ ॥

उदरकंलक्षणम् ।

वरटीदष्टवच्छोथो जायते त्वचि सर्वतः ॥ दाहकंडूशिरस्तोदः
स्यादुदरस्य लक्षणम् ॥ २ ॥ मंडलानि विचित्राणि रागव्रंति बहूनि
च ॥ सकंडूनि सतोदानि स्थूलानि पारितस्त्वचि ॥ ३ ॥

अर्थ—शीतल पवनके स्पर्शसे, वात, कफ, पित्त, तीनों रुधिर, मांस, त्वचा बिगाड कर भीतर और बाहर शीत पित्तरोगको पैदाकरें है ॥ १ ॥ जैसे बरटी (मोहारकी मक्खी)के काटनेसे सूजन होतीहै इसीतरह, सब त्वचामेंहो और दाह, खुजली, शिममें ददहो, उसे शीत पित्तवायु जिसे लोकमें पित्तीका रोग कहते हैं ॥ २ ॥ और जिसमें चित्रविचित्र चकत्ते रागवान् हों, और बहुतसेहों उनमें खुजली और पीडाहो तथा मोटी त्वचाहो ॥ ३ ॥

भवन्ति सर्वतो देहे शीतवातोद्भवानि च ॥ कफात्मकानि चिह्नानि उदरस्य विदुर्वुधाः ॥४॥ पित्ताधिकंभवेत्कोष्ठमुदरं तु कफाधिकम् ॥ वाताधिकं शीतपित्तं संनिपातं त्रिदोषजम् ॥ ५ ॥

उदररोगका पूर्वरूप ।

पूर्वरूपमुदरस्य नेत्रयोरुक्तारुचिः ॥ हृल्लासतृड्ज्वरो दाहो देहसादंगगौरवम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सबदेहमें शीतल पवनसे और कफाधिक्यसे जो चकत्तेहों, उसे पंडित, उदररोग कहते हैं ॥ ४ ॥ पित्ताधिकसे कुष्ठहोताहै, कफाधिकसे उदर होता है, वाताधिकसे शीतपित्त, सन्निपातसे त्रिदोषज उक्तारोग होते हैं ॥ ५ ॥ नेत्र लालहों, अरुचि, खालीरद, प्यास, ज्वर, दाह, देहमें पीडा तथा भारीपना, ये उदरके पूर्वरूपहै ॥ ६ ॥

कोठउत्कोठकालक्षण ।

त्वक् संद्रूप्य वहिर्गतो रुग्महाकाये मरुच्छीततो देहे मंडलमंडितं वितनुते शोफं सरोगान्वितम् ॥ कंडू निस्त्वाचिसर्वतो वमितरा तोदं च विड्वन्धनं शैथिल्यं बलनाशनं प्रकुरुते रोमोद्भ्रमं गौरवम् ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे उदरकुष्ठलक्षणम्

अर्थ—शरदीसे पवन त्वचाको बिगाड शरीरके बाहर महादारुण रोगको प्रगट करे, देहमें रुधिरके चकत्ते, सूजनयुक्तहों, उनमें खुजलीचले, त्वचा न रहे, वमन और पीडा तथा दस्तका बंद होना शिथिलता बलनाश, रोमांच, और देहभारी ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्ययोधिन्यां शीतपित्तउदरकोठउत्कोठनिदानम् ॥

अम्लपित्तकी उत्पत्ति ।

स्निग्धाम्लैर्बहुभोजनैरपचितैर्वैश्वानरैर्नोदरे रात्रौ जागरणेन वा सरसुखं स्वापेन तापेन वा ॥ संक्षोभ्योपचिताम्लपित्तमुदरे हृत्कं-

ठयोर्मस्तके नाभौ वास्तिगुदांतरेषु विविधं धत्ते रुजं दारुणाम् ॥१॥
 आध्मानं कुरुतेम्लपित्तमनिशं शोषं तनौ कृष्णतामुद्गरं वित-
 नोति धूमसहितं साम्लं मुहुर्दुःखदम् ॥ हृत्पिण्डं भ्रममोहकंपमरुचिं
 दाहं च हृत्कंठयोः कंडूमंडलमंडितं सपिटिकं देहं विधत्तेऽरतिम्
 ॥ २ ॥ अम्लत्वमेति भुक्तान्नमपकं याति वह्निना ॥ शिरोर्तिशूल
 हृच्छोपमम्लपित्तस्यलक्षणम् ॥ ३ ॥

अर्थ--चिकना, खड्डा, बहुतभोजन करनेसे, मंद्राग्निसे रातमें जागनेसे दिनमें सोनेसे, गर्मीमें
 डोन्नेसे, कुपितहृत् आ अम्लपित्त पेटमें, हृदयमें, कंठ और मस्तकमें तथा नाभौ और मूत्रस्थानमें
 गुदामें नानाप्रकारका रोग पैदा करताहै ॥ १ ॥ अफरा, शोष, शरीर काला, धूमसहित खड्डा
 प्रकार बारबारमें आवे, ग्वाली रईहो, भौर, मोह, कम्प, अरुचि, हृदय, कण्ठमें दाह खुजली, देहमें
 चकत्ते, और कुंसी, तथा अरतिको करे ॥ २ ॥ खायाहुआ अन्न मंद्राग्निके कारणसे अपक हुआ
 मंशेपनेको प्राप्त होताहै, शिरमें दर्द, शूल हृदयमें शोष, ये अम्लपित्त के लक्षणहैं ॥ ३ ॥

वातकेअम्लपित्तकेलक्षण ।

वाताम्लपित्तं प्रकरोति पीडां शूलं भ्रमं हृत्कमलेऽतिशोषम् ॥
 मूर्च्छां प्रकंपं पिटिकानि देहे कृष्णानि सूक्ष्मानि च मंडलानि ॥४॥

पित्ताम्लपित्तकेलक्षण ।

पित्ताम्लं शीतजन्यं रुजयति मनुजं पित्तकोपाधिकारं रक्तांग-
 मण्डलाभं त्वचिगतमनिशं छर्दिमूर्च्छाधिपाकम् ॥ कंडूरूपं सशोफं
 पिटिकशतचितं मोहशोकादिकारिअंतर्वाह्येति दाहं हृदिजठर-
 गुदेशूलकृच्चर्महारि ॥ ५ ॥

कफाम्लपित्तकेलक्षण ।

पित्ताम्लं कफजं करोति पिटिकां देहे सशोफान्वितामालस्यं
 मलबंधनं वितनुते कंडूरुजं दारुणाम् ॥ निद्राभंगविमर्दनं च
 जडतामुद्गरमम्लान्वितं हृत्पीडामरुचिं तमः कफचयं काये
 गुरुत्वं वमिम् ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
 अम्लपित्तलक्षणम् ॥

अर्थ—वातका अम्लपित्त पीडा, शूल, भ्रम, हृदयमें शाप, मूर्च्छा, कंप, फुंसी, काले और छंटे चकत्ते करताहै ॥ ४ ॥ पित्तका अम्लपित्त शीतसे पैदाहुआ मनुष्यको रोगीकरे, देहमें लाल चकत्तेहो, रद, मूर्च्छा, अजीर्ण, खुजली, सूजन, अनेक फुंसी, मोह, शोक, भीतर बाहर दाह, हृदय, पेट, गुदा इनमें शूल, चर्मको दूरकरेहै ॥ ५ ॥ कफका अम्लपित्त फुंसी, सूजन, आलसक, मल-बंध, खुजली, जडता, दारुणपीडा, निद्राकानाश, अंगोका टूटना गिरीडकार, हृदयमें पीडा, अरुचि, अंधेरा, कफगिरे, भारीपना और रद ये लक्षण करे है ॥ ६ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यामम्लपित्तरोगनिदानम् ।

विसर्परोगलक्षणम् ।

लवणकटुरसानांसेवनाद्वर्मतापात् प्रभवति किलरोगोदोषकोपा-
द्विसर्पः ॥ वपुषि चलनशीलो दग्धविस्फोटरूपो बदरफलसमानः
श्वेतपीतारुणाभः ॥ १ ॥

वातकेविसर्परोगकालक्षण ।

संदूष्यामिपमेदचर्मरुधिरं जातो विसर्पो वहिर्वात्मा विदधाति
विद्रुमनिभान् विस्फोटकान् चञ्चलान् ॥ दीप्तांगारसमानदाह
जनकान् पीडाकरान् कंडुरान् कासाध्मानमहाज्वरश्रमतथाशीर्षा-
र्त्तिमोहाकरान् ॥ २ ॥

पित्तकंविसर्परोगकालक्षण ।

मूर्च्छा कुर्याद्विसर्पः प्रसरति बहुशः पैत्तिको घोररूपस्तसाग्न्यं
गारदाहं पिटिकचयशतं नीलपीतारुणाभम् ॥ निद्रानाशं शरीरं
ज्वरयति सततं रक्तमांसावशोषं कासं श्वासं विचेष्टां भ्रममरुचि
तृषास्फोटमंगेषु मोहम् ॥ ३ ॥

अर्थ—नोनका सड़ा आदि पदार्थ खानेसे, धूपमें रहनेसे, कुपित्तहुये जो वात, पित्त, कफ सो, निमस्तेग फैलनेवाला दग्धफोडारूप घेरके समान संपेद पीला लालरंगके पैदाकरते है ॥ १ ॥ वात-का विमर्शोग मांस मेदाको विगाडकर बाहर मंगके समान चंचल फुंसीको पैदाकरे, जैसा प्रज्वलित अंगार दाहको करनेवाले, तथा पीडा कारक खुजली, खांसी, अफरा, महाज्वर, भ्रम, प्यास शिरमें दर्द, मोहको करनेवाले, करताहै ॥ २ ॥ पित्तकाविसर्प देहमें फैल जावे, मूर्च्छा हो, अंगारके समान दाह, नांसी, पीली लालरंगकी फुंसी, निद्राकानाश, ज्वर, रुधिर मांसका शोष, खांसी, श्वास, चेष्टा हीन, भ्रम, अरुचि, प्यास अंगोका, फटना, और मोहको करेहै ॥ ३ ॥

कफकेविसर्परोगकेलक्षणम् ।

पिटिकाश्च विसर्पकृता रुचिराः स्फटिकद्युतयो बलवीर्यहराः ॥

कफजामिलिता बहुदुःखयुता ज्वरकासतृपालसशोफकराः ॥४॥

आग्नेयाख्यो विसर्पः स्याद्वातपित्तसमुद्भवः ॥ कफवातोद्भवोऽग्रन्थिः

कर्दमः कफपित्तजः ॥ ५ ॥ ससांनिपातिको ज्ञेयः सर्वलक्षणसं-

युतः ॥ विसर्पो द्वंद्वजः साध्योऽसाध्यः स्याद्यस्त्रिदोषजः ॥ ६ ॥

विसर्परोगकेऽपद्रव ।

विसर्पोपद्रवा ज्ञेया मांसशोथो ज्वरो मदः ॥ मर्मरोधस्तृपाश्वासो

हिक्रादाहो भ्रमो रुचिः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वेद्यशास्त्रे विसर्पलक्षणम् ।

अर्थ—कफका विसर्प रोग रुचिर (रूपवाली), स्फटिक मणिके समान, बल, वीर्य का नाशक, बहुत दुःखका देनेवाली, ज्वर, खांसी, प्यास, आलस, मूजनका, करे है ॥४॥ वातपित्तमे आग्नेय विसर्प रोग होताहै, कफवातसे ग्रन्थिनाम रोग होताहै, और कफ पित्तसे कर्दमनाम विसर्प रोग पैदा होताहै ॥५॥ और जिसमें सब लक्षण मिलतेहों उमे मनिपातका विसर्प रोग जानना द्विदोषसे पैदा विसर्प रोग साध्यहै, और त्रिदोषका असाध्य कहाहै ॥ ६ ॥ ये विसर्प रोगके उपद्रव जानने माम्मे मूजन, ज्वर, मस्ती, ममोंका रकना, प्यास, श्वास, हिचकी, दाह, भ्रम, अरुचि ॥ ७ ॥

इति श्रीहंसराजार्थवाग्निन्या विसर्परोगनिदानम् ॥

क्षुद्ररोगलक्षणम् ।

अजगलिकालक्षणम् ।

सुद्धासमानापिटिकासवर्णा स्निग्धामरुच्छेप्सविकारजाता ॥ देहे
शिशूनां ग्रथिता च नीरुजां तामाजगल्लीं प्रवदंति संतः ॥ १ ॥

यवप्रच्छाकालक्षणम् ।

अरुणभापिटिका बहुवेदना कफमरुज्जनिताग्रथितामिषे ॥ चक्र-
समा कठिनाभिपजांवरेर्निगदिताज्वरकृत्किल सा यवा ॥ २ ॥

गर्दभिकाकेलक्षण ।

उन्नता मंडलाकारा शोफयुक्पिटिकान्विता ॥ वातपित्तभवा
रक्ता तां विद्याद्गर्दभीं बुधः ॥ ८ ॥

पापाणगर्दभिकाकेलक्षण ।

हनुसांधिगतः शोथो मंदरुक्कफवातजः ॥ स्थिरः स्निग्धो बुधेज्ञेयः
सैव पापाणगर्दभः ॥ ९ ॥

अर्थ—सूजनहो, तथा कमलकां कार्णिकाके समान हो, दाह, पीडा, तृष्णा, अरति, मोह, युक्त फुंसीहों से वातपित्तसे पैदा इन्द्रवृद्धि नाम कहते हैं ॥ ७ ॥ जो फुंसी मंडलके आकार गोल्हो, ऊंचीहो सूजनको लिये लालहो उसे वातपित्तसे पैदा गर्दभिका कहते हैं ॥ ८ ॥ जो फुंसां टोटी की संधीमें सूजन मंदपीडाको लिये हो स्थिर चिकनीयो कफवातसे पैदा पापाणगर्दभिका कहते हैं ॥ ९ ॥

पनसिकाकेलक्षण ।

पिटिकाकफवातविकारभवा बहुवेदनकृच्छ्रवणेन्तरजा ॥ ज्वरः-
दाहतृपारतिमोहकरा पनसा मुनिभिर्गदिता किल सा ॥ १० ॥

जलगर्दभिकाकेलक्षण ।

विसर्पवत् सर्पति यो हि शोफो रुजाकरः पित्तविकारजातः ॥
ज्वरार्तिदाहारतिमोहपूयकृत्परैर्निरुक्तो जलगर्दभोदन् ॥ ११ ॥

इरिवेष्टिकाकेलक्षण ।

पिटिकां सर्वदोषोत्थां सर्वाचिह्नशिरोगताम् ॥ वर्तुलां तां विजानीहि
बुध त्वं इरिवेष्टिकाम् ॥ १२ ॥

अर्थ—जो फुंसी वात कफके विकारसे पैदाहो और पीडायुक्त कानके भीतरहो, ज्वर, दाह, प्यास, अरति, मोह, लियेहो उसे मुनीश्वर पनसिका कहते हैं ॥ १० ॥ जो सूजन पहले थोटीहो फिर विसर्प रोगकी तरह फैलजाय पीडाकारक ज्वर, दाह, अरति, मोह, राध बहै, उसे जलगर्दभिका कहते हैं, जो पित्तके विकारसे होताहै ॥ ११ ॥ जो मस्तकमें फुंसी त्रिदोषसेहो, गोल्हो और त्रिदोषके लक्षण मिश्रितहो उसे इरिवेष्टिका कहते हैं ॥ १२ ॥

कखलाईकेलक्षण ।

कृष्णास्फोटापार्श्वकक्षांसवाहो संस्था नूनं वेदनादाहयुक्ता ॥
कक्षासंज्ञापित्तकोपाभिजातांजानीहि त्वं वैद्यराजोरुजाताम् ॥ १३ ॥

। गंधमालाकलक्षण ।

कक्षाकुक्षिभवामेकां पिटिकाम्पित्तकोपजाम् ॥ त्वग्गता दाहकृत्कृ-
ष्णां गंधमालां च तां वदेत् ॥ १४ ॥

अग्निरोहिणीकलक्षण ।

कक्षाया पिटिकोद्भवा ज्वरकरादीस्ताग्निदाहप्रदा मांसं भेद्यविनि-
र्गताः कफमरुत्पित्तोच्छ्रिता दारुणाः सप्ताहे दशमे दिने च
मनुजं हंतीह नूनं हठाद् दस्त्राद्यैर्भिषजांवरैर्निगदिता ज्वालामुखी
रोहिणी ॥ १५ ॥

अर्थ--पसवाडोंमें व भुजाके एक देशमें व कंधाके एक देशमें: फाला फांडा हो, और पीडा
दाह युक्त हो, उसे हे वैद्यराज ! तू कखलाई जान ये पित्तके कोपसे होती है ॥ १५ ॥
काखमें अथवा पसवाडोंमें काले रंगका फोटाहो त्वचामेंद्रो दाहयुक्त उसे गंधमाला कहते हैं, येमी
पित्तके कोपसे होती है ॥ १४ ॥ काखमें मांसको विदीर्णकर दीप्त अग्निके समान जो फोडाहो
ज्वर, दाहका करनेवाला, उसे अधिनीकुमारको आदिले वैद्योंने ज्वालामुखी रोहिणी नाम कहाहै,
ये रोग मनुष्यको सात या दशदिनमें मारडाले ये सन्निपातसे पैदा होती है ॥ १५ ॥

विदारिकाकलक्षण ।

कक्षायां संधिदेशेषु विस्फोटो जायते नृणाम् ॥ विदारीकंदवद्वृत्तः
सर्वलक्षणलक्षितः ॥ १६ ॥ बहुशीर्षा विदीर्णास्या वातपित्तकफो-
द्भवा ॥ चिरपाकारुणाभेयं प्रोक्ता वैद्यैर्विदारिका ॥ १७ ॥

शर्करार्वुदकलक्षण ।

मेदःस्नायुशिरामांसं द्रूप्यवायुर्वहिरगतः ॥ ग्रन्थि शोष्यामिपं
कुर्यात्तं विद्याच्छर्करार्वुदम् ॥ १८ ॥

अर्थ--काखमें या संधियोंमें फोडा विदारी कंदके समान गोलहो, और सब लक्षण मिलतेहों
॥ १६ ॥ बहुतसे शिरहो और खुलेमुखकी, देरमें पकै, त्वालरंगकी इसे वैद्योंने विदारिकानाम
कहीहै, ये भी सन्निपातसे होतीहै ॥ १७ ॥ वात, मेदा, मांस, नस इनमें प्राप्तहो और इनको बिगा-
टकर बाहर प्राप्तहो फेर गांठको पैदाकरे और शोषको करे, उसे शर्करार्वुद कहते हैं ॥ १८ ॥

शर्करार्वुदरुकुर्याच्छर्करासदृशामिपम् ॥ शिरास्त्रावंचदुर्गंधं क्लिन्न
गात्रं निरामिपम् ॥ १९ ॥

कदरफुन्सीकेलक्षण ।

कंटकैः शर्करैः पादे सक्षते ग्रन्थिरुद्भवः कीलवद्बद्धते नित्यंतं
विद्यात्कदरं बुधैः ॥ २० ॥

विवाईकेलक्षण ।

अतिक्रमणशीलस्य पादयोरुक्षयोर्महत् ॥ दारी च कुरुते कोपात्तं
विद्यात्तलसंश्रितम् ॥ २१ ॥

अर्थ—शर्करावृद्ध रोग मांसको शर्कराके समान करदे और नस चुचावे तथा दुर्गंध युक्तहो
शरीरखंडित और मांस रहित करदेनाहै ॥ १९ ॥ कांटे व कंकरीके पैरमें लगनेसे जो गांठ पैदाहो
और कीलकी तरह बढे उसे, कदर नाम कहतेहैं ॥ २० ॥ जो मनुष्य बहुत टोलाकरे उसके
पैरमें गूखापनहो और पैरकी एडी फटजाय उसे तलसंश्रित अर्थात् विवाई कहते हैं ॥ २१ ॥

खारुयेकेलक्षण ।

दुष्टकर्मसंस्पर्शात्पादांगुल्यांतरे बहुः ॥ कंडूसुखासिद्धाहार्ति-
शोथयुक्तोऽलसंविदुः ॥ २२ ॥

इन्द्रलुप्तकेलक्षण ।

रोमाणां कूपमध्येषु वातपित्तौ विनिर्गतौ ॥ मूर्च्छितौ तत्र रोमाणां
तौ प्रच्यावयतेहठात् ॥ २३ ॥ श्लेष्मासृगरोमकूपांस्तु रुणद्धिप-
रितो भृशम् ॥ वन्धात्युत्पत्तिमन्येपामिन्द्रलुप्तन्तमादिशेत् ॥ २४ ॥

अर्थ—दुष्टकोच पैरकी उगलियोंमें लगनेसे सूजनहो और खुजानेस मुग्यहो दाह और पीडाहो
उसे अटसनाम अर्थात् ग्राह्य कहते हैं ॥ २२ ॥ रोमकूपसे वात पित्त निरगतकर मूर्च्छित हो,
रुणद्धे पायोंको दूरकरदेवे ॥ २३ ॥ फिर कफ और मधिर बाल जमनेके ग्यानको रोकदे बाल उगने
नहीं दे उसे इन्द्रलुप्त कहते हैं ॥ २४ ॥

इन्द्रलुप्तस्यनामानि प्रोक्तानि भिषजांवरैः॥खालित्यमपररुह्या प्रा-
हुश्चार्चन्ति चापरे ॥ २५ ॥

अहंपिकाकेलक्षण ।

अतिरूक्षतमे शीपे बहुकण्डुसमन्विते ॥ जायते दारुणोरोगः
कफमारुतरोगतः ॥ २६ ॥ अत्यंत श्रमकोपाभ्या जातं पित्तं च
मूर्च्छनि ॥ तेन पक्वाः कृताः केशाः ज्ञेयानि पलितानि च ॥ २७ ॥

अर्थ--इंद्रलुप्तके ये नाम और भी वैद्य कहते हैं, खालित्य और रुखा तथा चांदलो ये रोग खाँके नहीं होता ॥ २५ ॥ केश पैदा होनेकी भूमिमें खुजली चले, और वह जगह रुखी होजाय, उसके बात कफसे अरुंधिका दारुण रोगहो ॥ २६ ॥ अति श्रम और क्रोधसे पित्तशिरमें प्राप्तहोकर बालोंको सपेद करदेता है, उसे पलित रोग कहतेहै ॥ २७ ॥

मुखदूपिकाकेलक्षण ।

कफानिलाभ्यां सहशोणिताभ्यां यूनां शरीरे पिटिकाभिजाता ॥

दाहार्तिकृत्कण्टकतीव्रवेधी बुधैर्निरुक्ता मुखदूपिका सा ॥२८॥

तिलकंलक्षण ।

तिलप्रमाणानि च नीरुजानि स्थिराणि गात्रेषु समुद्भवानि ॥

कृष्णानि पित्तानिलकोपजानि तिलानि तानि प्रवदंति संतः॥२९॥

मस्तेकालक्षण ।

दृढोन्नतं पित्तकफानिलोत्थं मापप्रमाणं पलग्रन्थिरूपम् ॥ कृष्णं

स्थिरं नीरुजवद्विपाकं तं मापसंज्ञं कथयन्ति वैद्याः ॥ ३० ॥

अर्थ--घात, कफ और रुधिरके कोपसे जवान पुरुषोंके जो फुंसीं मुखपरहो दाह और पीडा तथा सेमलेके काँटेकेसमान उसे मुखदूपिका अर्थात् मुहांसे कहते हैं ॥ २८ ॥ तिलके समान पीडा रहित स्थिर देहमें जो कात्यादागहो उसे घातपित्तसे पैदा तिलनाम कहते है ॥२९॥ दृढ और ऊँचा तथा उडदके समान मांसकाँ गाँठ काली और पीडा तथा पाकरहितहो उसे वैद्य मस्ता कहते है ३०॥

न्यच्छकेलक्षण ।

गात्रोत्थं मंडलं कृष्णं शीतं वामहृदल्पकम् ॥ नीरुजं कफजं विद्या-

त्तरुजं न्यच्छसंज्ञकम् ॥ ३१ ॥

व्यंगअर्थात्झाँड़केलक्षण ।

कोपश्रमाभ्यां कुपितोऽनिलोनिशमाश्रित्य वक्रं वितनोति मंड-
लम् ॥ कृष्णं मुखोत्थं तनुनीरुजं भृशं व्यंगं रुजं तं प्रवदंति साधवः ३२

नीलिकाकेलक्षण ।

ऊष्मणासंहितो वायुर्वहिरागत्यकोपतः ॥ विदधाति मुखे छायां
नीलिकां तां विदुर्वुधाः ॥ ३३ ॥

अर्थ—शरीरमें काला वा सपेद मण्डल छोटा वा बड़ाहो, और पीडा रहितहो, उसे लहसन संज्ञक कहते हैं ॥ ३१ ॥ कोप और श्रमसे कुपितहृये वात पित्त मो मुखमें प्राप्तहो मंडलको करे हैं, और वो कालाहो पीडा रहित उसे महात्मा व्यंगरोग कहते है ॥ ३२ ॥ गर्मीके साथ पवन कोपहो बाहर निकल मुखपर जो छाया करदे उसे पंडित नीलिका कहते हैं ॥ ३३ ॥

कार्णिकाकेलक्षण ।

संमर्दनात्पीडनतोभिघातान्मेढ्रस्य चर्मानुगतो हि वातः ॥ मणे-
रधस्तात्प्रकरोति कोशं ग्रंथिं च विद्यात्किलकार्णिकां ताम् ॥ ३४ ॥

अवपाटिकाकेलक्षण ।

नखाभिघाताद्युवतीप्रसंगादुद्धर्तनाद्वीर्यगतेः प्ररोधात् ॥ संपी-
डनाद्यस्य च चर्मपाटयते बुधैर्निरुक्ताकिलपाटिका सा ॥ ३५ ॥

निरुद्धप्रकाशरोगलक्षण ।

स्रोतांसि मूत्रस्य रुणाद्धि वातो मणिस्थितो वीर्यगतेर्निरोधात् ॥
मूत्रं प्रवर्त्तत मणिं विदीर्य विद्यान्निरुद्धप्रकाशं हि वैद्यः ॥ ३६ ॥

अर्थ—मसलनेसे वा पीडासे अथवा चोट लगनेसे अंडकोशकी चर्ममें प्राप्तभई वात सो कुपि-
तहो सुपारीके नाचे गाठको पैदा करे, उसे कार्णिका कहते हैं ॥ ३४ ॥ नखके लगनेसे अथवा
जिस स्त्रीकी योनि छोटीहो उससे सग करनेसे उबठनेसे, वीर्यका गति रोकनेसे लिंगेन्द्रकी मोटनेसे
लिंगकी चाम उतर जाय उसे पंडित अवपाटिका कहते हैं ॥ ३५ ॥ वीर्यकी गति रोकनेमें
लिंगकी सुपारीके बीचमें स्थित जो वात सो मूत्रके मार्गको रोकदे फेर मूत्र सुपारीको खेदकला
उतरे, उसे वैद्य निरुद्ध प्रकाशरोग कहते हैं ॥ ३६ ॥

सन्निरुद्धगुदाकेलक्षण ।

अपानवातस्य गतेर्विघातात्प्रकुप्यवातो विहितो गुदस्थः ॥ रुण-
द्धिमार्गं कुरुतेऽतिसूक्ष्मं द्वारं च विद्यात्किलदुस्तरं तत् ॥ ३७ ॥

गुदभ्रंशरोगकालक्षण ।

निर्गच्छन्ति वहिर्गुदाः कृशतनोरुश्चाशिनोरोगिणोऽतीसारेण
युतस्य तं मुनिगणाः प्राहुर्गुदभ्रंशकम् ॥

शूकरदंशरोगकालक्षण ।

त्वक्पाको वहिर्निर्गतः किलगुदः कंडूधरो दाहकृद्रोगः शूकर-
दंश्रको मुनिवरैः प्रोक्तो ज्वरतिप्रदः ॥ ३८ ॥

वृषणकच्छूरोगकेलक्षणम् ।

वृषणस्थं मलं स्वेदात्कंडूस्फोटं वितन्वते ॥ संस्त्रावं कफपित्तो-
त्थं विद्याद्वृषणकच्छूरम् ॥ ३९ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
क्षुद्ररोगाणां नानाप्रकाराणां लक्षणम् ।

अर्थ—अपांन वातकी गति रोकनेसे कुपिनहुई गुदाकी पवन सो गुदाके मार्गको छेदा करदे
उसे दुस्तर रोग कहते हैं ॥ ३७ ॥ कृशदेहवाले पुरुषको तथा स्त्रिया खानेवालेकी तथा अतीसार
वाले पुरुषकी गुदा बाहर निकल आवे उसे गुदभ्रश रोग कहते हैं, जिसकी गुदा बाहर निकसिआवे
और त्वचा पकजाय उम जगह खुजली चले तथा अर. पीडा दाह हो उमे मुनीश्वरोंने शूकरदंष्ट्र
रोग कहाहै ॥ ३८ ॥ अडकोशोके नहीं धोनसे मैल जमजावे तब उस जगह पसीना आवे
और खुजली चले, और खुजानेसे फोटा होजावे, और वो म्रवे उसे, वृषणकच्छू रोग कहते हैं, ये रोग
कफ पित्तसे होनाहै ॥ ३९ ॥

इनिहंसराजार्थबोधिन्यांक्षुद्ररोगनिदानम् ॥

अथमुखरोगलक्षणम् ।

ओष्ठौ मारुतकोपतोऽतिपरुषो स्तब्धौ महावेदनौ भिद्येते दल-
संयुतो मुनिवरैः प्रोक्तो च वातात्मको ॥ रक्तौष्ठो खरदाहपाकपि-
टिकायुक्तौ च तौ पित्तलो कृष्णो पिच्छिलशोफशीतपिटिका
पीडान्वितौ श्लेष्मलौ ॥ १ ॥

सन्निपातजनितओष्ठलक्षणम् ।

नानावर्णधरावोष्ठौ नानारोगसमन्वितौ ॥ पिटिकाभिर्युतौ
स्थूलौ विज्ञेयौ सान्निपातिकौ ॥ २ ॥

दंतरागनिदानम् ।

आवृत्यदंतान्परितोऽपि रक्तं प्रवर्त्तते दन्तपलं विशीर्यते ॥ सक्ले-
ददुर्गन्धसुतं च कृष्णं शीतोदसंज्ञः कफरक्तजोयम् ॥ ३ ॥

अर्थ—प्रथम ओठके रोग कहतेहै ॥ वादीसे ओठ फटोर और टेढे तथा पीडायुक्त और
पकजावे, ऐसे मुनीश्वरोंने कहाहै, और लाल करडे दाह युक्त और पकजावे पीडिकायुक्त हों, उनको
पित्तके कोपमे जानना और फाटे तथा गाढे सूजन युक्त शीतल पिटिका युक्त तथा पीडायुक्त

ऐसे लक्षणोसे कफका ओंठमे रोग जानना ॥ १ ॥ जिनका अनेक प्रकारका वर्ण हो और अनेक रोगयुक्त हो, पीडिका और मोटेहों ऐसा, ओंठोंका रोग सन्निपातका जानना ॥ २ ॥ दांतोंमे प्रात हो और रुधिर निकाले और दांतोंमे जो मांस उसको दांतोंसे हूडाय दे तथा ह्रैद और दुर्गंध युक्त हो तथा काळा हो वो कफरुधिरसे पैदा शीतोद संज्ञक दांतरोग जानना ॥ ३ ॥

दंतपुष्पुटरोगकंलक्षण ।

मध्येषु त्रिषु दंतेषु नीरुक्शोफः प्रजायते ॥ दंतपुष्पुटको रोगो गदितो भिषजांवरैः ॥ ४ ॥

दंतवेशरोगकंलक्षण ।

रचयति बहुशोफं दंतमुत्पाटनाय पचयतिकिलमांसंदंतसंलग्नजातम् ॥ व्यथयति मुखदेशं स्त्रावयत्याशुरक्तं कफपवनविकारात्संभवो दंतवेशः ॥ ५ ॥

सौपिरनामदंतरोगलक्षण ।

लालास्त्रावीमहातापी दंतमूलेषु शोफवान् ॥ सौपिराख्यो हि विज्ञेयो रोगो रक्तसमुद्भवः ॥ ६ ॥

अर्थ--जो मध्यके तीन दांतोंमे पीडारहित सूजन हो उसे दंतपुष्पुटरोग कहते है ॥ ४ ॥ जो दांतों के उग्राडनेके लिये सूजनको प्रगट करे, और दांतके संलग्न मांसको पृथक करे, और मुखमें पीडाकरे, रुधिर स्रवे उसे वातकफसे पैदा दंतवेश नाम रोगकहते है ॥ ५ ॥ छार टपका करे, महा ताप होय, दांतोंकी जड़मे सूजन हो वो रुधिर से पैदा सौपिर नामक दंत रोगहै ॥ ६ ॥

महासौपिरदंतरोगलक्षण ।

दंतानावेष्टयस्तालुं दारयेच्च विसर्पवत् ॥ नानाव्याधिकरं विद्यात्तं महासौपिरं रुजम् ॥ ७ ॥ दंतसंलग्नमांसानि विदारयति शोणितम् ॥ निष्ठीवयति यः पित्तादसृक्पारिपरोहिसः ॥ ८ ॥

शोफकशदंतरोगलक्षण ।

दंतानापीडय यो रोगश्चालयेच्च मुहुर्मुहुः ॥ पित्तरक्तकफोद्भूतो ज्ञेयः शोफकशोबुधैः ॥ ९ ॥

अर्थ--दांतोंको ठक कर और विसर्प रोग कीसी तरह तालुंको विदीर्ण करे, और नानाप्रकारके रोग युक्त हों उसे महासौपिर दंतरोग कहते है ॥ ७ ॥ जो दांतसे लगे मांसको विदीर्ण करे, और

रुधिर मुखसे गिरे, वो पित्तसे पैदा असुकूपरिपर दंतरोग जानना ॥ ८ ॥ जो दांतोंको पीडाकरे और बारबार चलायमान करदे पित्त, कफ और रुधिरसे पैदाहो मो शोककदा रोग जानना ॥ ९ ॥

वैदर्भरोगकेलक्षण ।

वैदर्भरोगः कथितोभिघातजः सरक्तपित्तानिलकोपसंभवः ॥ संपीड्यदंतान् परिचालयत्यलं क्वचित्कचिच्छ्रावयतीव शोणितम् ॥ १० ॥

करालनामदंतरोगकेलक्षण ।

वायुर्दंतांतरे दंतान्कुरुते तीव्रवेदनाम् ॥ वर्द्धते विकटान् रूक्षान् सकरालोऽभिधीयते ॥ ११ ॥

अधिकमांशरोगकेलक्षण ।

हनुगते दशने किलपश्चिमेऽधिकतरार्तिकरेवहुशोफवान् ॥ कफकृतः पवनेन युतोनिशं मुनिवरैर्गदितोधिकमांसकः ॥ १२ ॥

अर्थ—वैदर्भ रोग चोटके लगनेसे रुधिरसे घात और पित्तके कोपसे दांतोंमें पीडाकरे और चलायमान करदे और कभी कभी रुधिर भी मुखसे गिरे ॥ १० ॥ वादी दांतोंके अन्दर दांत को पैदा करे, और उनमें दर्द हो तथा वे टेडे हों, रूखे हों, और बड़े वो कराल नाम दंतरोग कहाहै ॥ ११ ॥ ठोडीके पश्चिम देशमें दांत पैदा हो और उसमें पीडा अधिक हो और सूजनहो, वो घात कफसे पैदा मुनीश्वरोंने अधिक मांशरोग कहाहै ॥ १२ ॥

कीटदंतरोगकेलक्षण ।

दंते दंते कृष्णाच्छिद्रं करोति लालास्त्रावी चञ्चलो दुष्टगंधिः ॥ पीडा युक्तः शोफसंरभकारी प्रोक्तो वैद्यैः कीटदंतः सरोगः ॥ १३ ॥

भंजनकदंतरोगकेलक्षण ।

यो दंतभंगं कुरुते हि वक्त्रे पापात्मनां भोजनदुःखितानाम् ॥ वातेन ज्ञातः कफमिश्रितेन जानीहि तं भंजनकं हि वैद्यः ॥ १४ ॥

दंतविद्रधिरोगकेलक्षण ।

दंतसंलग्नजं मांसं वलाढयम्वहुशोफयुक् ॥ रक्तपूयाश्रयं क्लिन्नंतं विद्यादंतविद्रधिम् ॥ १५ ॥

अर्थ—दांत दांतमें काले छिद्र करदे तार टपके चंचल और दुष्ट गन्धभावे पीडा और सूजन को बढ़ावे वो वैद्यने कौट दंतरोग कहा है ॥ १३ ॥ पापामनुष्योंके मुखसे दांतोंको उखाडडाले इसीसे भोजन करनेमें दुःखित हो वो दादसे और कफसे प्रगट ऐसा मंजनक नाम दंतरोग जानना ॥ १४ ॥ दांतोंसे भिलाहुआ जो मांस उसमें मेल बहुतहो और सूजनहो, तथा रुधिरराधन्त्रवै, वो दंत विद्रधि रोग जानना ॥ १५ ॥

दंतहर्परोगकेलक्षण ।

शीतवाताम्लसंस्पर्शादंतपीडासहोगदः ॥ दंतहर्षः स विज्ञेयो
त्रातपित्तसमुद्भवः ॥ १६ ॥

दंतशर्करारोगकेलक्षण ।

मलोदंतगतः स्थूलः शर्करैव चिरस्थितः ॥ कफोद्भूतो बुधैर्ज्ञेयः
सारुजा दंतशर्करा ॥ १७ ॥

दंतश्यावरोगकेलक्षण ।

दंडादीनां विधाताद्वा कोपाच्छोणितपित्तयोः ॥ प्राप्नोति कृष्णता
दंतोदंतश्यावो रुगुच्यते ॥ १८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
ओष्ठदंतरोगलक्षणम् ॥

अर्थ—शीतल वात और खट्टी वस्तुके स्पर्शसे जो दांतोंमें पीडाहो वो त्रातपित्तसे प्रगट दंतहर्परोग जानना ॥ १६ ॥ दांतोंमें मेल बहुत शर्कराकीसी तरह रहै, वो पण्डितोंने शर्करारोग कहाहै ॥ १७ ॥ दंड आदि चोट लगनेसे और रुधिर पित्तके कोपसे जो कालेदांत पड़जायँ उसे दन्तश्यावरोगकहतेहै ॥ १८ ॥

इति माधुरदत्तरामकृतेहंसराजार्थवैद्यनिर्भाषाविवरणे ओष्ठदन्तरोगलक्षणम् ।

अयजिह्वारागनिदानम् ।

वातेन स्फुटिता कठोररसना रूक्षाप्रसुसार्तिदा पित्तेनोष्णतरार्ति
दाहसहिता दीर्घारुणेः कंटकैः ॥ संयुक्ता च कफेन सा गुरुतरा
मासोत्थितेरंकुरैः श्वेतैः शाल्मलिकंदकाकृतिधैर्युक्तातिशोफा-
न्विता ॥ १ ॥

उल्लासनामजिह्वारांगकेलक्षण ।

जिह्वातले महाशोथो गुरुग्रंथियुतो दृढः ॥ पूयशोणितयुक्पाकः
सोह्लासः कथितो वृधैः ॥ २ ॥ जिह्वाग्रमानम्य करोति शोथं ला-
लान्वितं तीव्रविपाकमुग्रम् ॥ कंडूयुतं रक्तकफाधिशूलं रुक्शोफ-
जिह्वा कथिता भिषग्भिः ॥ ३ ॥

अर्थ—बादसे जीभ कठोर और फटी तथा रूखी प्रसृत पांडायुक्त होती है, पित्तसे गरम, दाहयुक्त, बड़े और लालकांठोसे युक्त जाननी कफसे भारी सपेद, सेमरके कांटे सरीखे कांटे और मूजन युक्त होता है ॥ १ ॥ जीभके नीचे सूजन बहुत हो तथा भारी और कठिन गांठहो रुधिर और रधयुक्त हो वो पक जाय उसे उल्लासनाम जीभका रोग कहते हैं ॥ २ ॥ जीभके अग्रभागमें सूजन हो और लारगिरै बहुत पके तथा खुजलीचले और रुधिर कफसे शूल ज्यादा हो वो शोफ जिह्वानाम रोग कहा है ॥ ३ ॥

तालुमूलोत्थितः शोथः कासश्वासतृपान्वितः ॥ सव्यथः कफर-
कात्मा कंठतुण्डः सकथ्यते ॥ ४ ॥ तालुकोशगतः शोथश्चिरपा-
की ज्वरान्वितः ॥ दाहार्तिकासकृत्स्नावी तुंडकेशी स उच्यते ॥ ५ ॥

कच्छपरोगकेलक्षण ।

कूर्माकारः प्रोन्नतस्तालुदेशे शोथः सोक्तः कच्छपो वैद्यराजैः ॥
रक्ताज्जातो रक्तवर्णो ज्वराढ्यः स्तब्धः शोफः कोलमात्रः कफा-
त्मा ॥ ६ ॥

अर्थ—ओर जो तालुके मूलमें सूजन, खांसी, श्वास, युक्त तथा प्यासके संयुक्त हो, और दर्द होताहो वो कफ पित्तसे प्रगट तुंडनाम रोग कहा है ॥ ४ ॥ जो तालुके कोशमें सूजन हो और देरमें पके ज्वर युक्त और उसमें खांसी, दाह, पांडाहो, स्रवै, उसे तुंडकेशी रोग कहते है ॥ ५ ॥ तालुकेमें कच्छुके आकार ऊंची सूजनहो उसको वैद्योंने कच्छप नाम रोग कहा है, रक्तसे पैदा मय और लालवर्ण तथा ज्वरयुक्त टेढा और सूजनहो बेरके प्रमाण वो कफसे पैदा जानना ॥ ६ ॥

तालुपाकतालुशोपलक्षण ।

पित्ताज्जातं शोथमुग्रं सदाहं तृष्णायुक्तं तालुपाकं वदेद्भूः ॥
वातोद्भूतः श्वासकासार्तिशोपैर्युक्तः शोथस्तालुशोपो भवेत्सः ॥ ७ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे

जिह्वातालूनां लक्षणानि ॥

अर्थ—सूजन जार दाह तथा प्यासहो, उसे पण्डित तालुपाक रोग कहतेहैं, ये पित्तसे पैदा होताहै और जिसमें श्वास, खांसी, शोथ और सूजनहो वो वातसे पैदा तालुशोप रोगहै ॥ ७ ॥

इति माधुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थबोधिर्नाटिकायां जिह्वातालुरोगनिदानं समाप्तम् ॥

गलरोगस्यनिदानम् ।

पित्तश्लेष्मशरीरिणां गलगताः संदृष्यरक्तामिषं ते तत्रैव विमूर्च्छिताः प्रकुपिताः कुर्वन्ति नानागदान् ॥ मांसोत्थैः कठिनांकुरैश्चपारितो रुंधन्ति कंठानिलं प्राणानाशु विकर्षयन्ति मुनिभिः सारोहिणी प्रोच्यते ॥ १ ॥

वातरोहिणीकेलक्षण ।

चिह्नानिवातरोहिण्यागले मांसभवांकुराः ॥ ज्वरार्त्तिकारिणी तीव्रा शोषिणी कंठरोधिनी ॥ २ ॥

पित्तरोहिणीकेलक्षण ।

मांसांकुरागलोत्पन्ना दाहिनस्तीव्रवेदनाः ॥ सूक्ष्मत्वचस्त्वरपाकाश्चिह्नैः स्यात्पित्तरोहिणी ॥ ३ ॥

अर्थ—मनुष्योंके वात, पित्त, कफ गलेमें प्राप्तहो रुधिर और मांसको विगाड फेर आप दुष्ट हो नानाप्रकारके गलेमें रोग करते हैं, और माससे प्रगट भये जो कठिन अंकुर उनसे कठको रोक तथा श्वास को रोकदे और प्राणको निकाल दे उसे रोहिणी नाम कंठरोग कहते हैं ॥ १ ॥ वातरोंहिणीके ये लक्षणहैं, गलेमें मांसके अंकुर हों, सो ज्वर और पीडा, शोथ, तथा कंठको रोकदे ॥ २ ॥ मांसके अंकुर जो हों, उनमें दाह और तीव्र पीडा छोटे जल्दी पके ये पित्तरोहिणीके लक्षण हैं ॥ ३ ॥

कफरोहिणीकेलक्षण ।

मांसांकुरैः स्थूलतरैरपाकैः कंठांतरोत्थैः कठिनैरवेदनैः ॥ दीर्घस्थिरैः कंदुरशोथवद्भिर्ज्ञेयाभिपग्भिः कफरोहिणीसा ॥ ४ ॥

रुधिरकीरोहिणीके लक्षण ।

कंठांतरोत्थैः पिटिकैरुजान्वितैः सूक्ष्मैः सशोथैर्गलरोगकारकैः ॥ श्वासात्तिकसज्वरदाहमोहैर्ज्ञेया बुधैरक्तभवा च रोहिणी ॥ ५ ॥

कंठशालूकरोगकेलक्षण ।

कंठे जातं ग्रन्थिरूपं कफोत्थं साध्यं शास्त्रैः कोलमज्जासमानम् ॥
स्थैर्यं कण्डूशोफयुक्तंकठोरं विज्ञेयं तं कंठशालूकरोगम् ॥ ६ ॥

अर्थ—मांसके अंकुर गलेमें मोटेहों, पकेंनहीं, तथा काटिन पीडा रहित, छेवहों, स्थिरहों, खुजली, सूजन रहित, जो वैद्योंने कफरोहिणी कहा है ॥ ४ ॥ कंठमें अंकुर छोटेहों और उनमें पीडा हो और सूजन तथा गलेके रोगोंको प्रगट करनेवाले, श्वास, पीडा, खांसी, ज्वर, दाह, मोहयुक्तहों, उसे रुधिरकी रोहणी रोग कहते हैं ॥ ५ ॥ कोलकी मज्जा अर्थात् वैरकी गुठलीके समान कंठमें गांठ पैदा हो वो कफसे प्रगट साध्य है, स्थिर हो खुजली सूजन कठोर ये कंठशालूक रोगके लक्षण कहे हैं ॥ ६ ॥

अधिजिह्वारोगकेलक्षण ।

शोथोजिह्वाग्रभागस्थः पाकरक्तकफोद्भवः जिह्वाबंधो महोग्रात्ति-
रधिजिह्वो विधीयते ॥ ७ ॥

बलासाक्षरोगकेलक्षण ।

श्लेष्मानिलौ गले शोथं कुरुतः श्वाससंभवम् ॥ मर्मच्छिद्रं गुरुस्थूलं
बलासाक्षं विदुर्बुधाः ॥ ८ ॥

नासाशतघ्नीरोगकेलक्षण ।

वर्तिर्गलस्था बहुवेदनान्विता मांसांकुरस्था परिकंठरोधिनी ॥
दोषैर्युता प्राणहरी सकंटका नासाशतघ्नी परिकीर्त्तिताबुधैः ॥ ९ ॥

अर्थ—जिह्वाके अग्रभागमें सूजन हो, पके जीभ को स्तम्भन करदे, बहुत पीडा हो उसे रुधिर कफसे प्रगट अधिजिह्वारोग कहा है ॥ ७ ॥ कफ और वात गलेमें सूजन करे तथा श्वास और मर्म स्थानमें छिद्र तथा मोटा और भारी हो उसे बलासाक्ष रोग कहा है ॥ ८ ॥ उसे पंडितोंने नासा शतघ्नीरोग कहा है, जिसमें पीडायुक्त गलेमें बत्तीसीहो तथा मांसके अंकुरनसे कंठ रुकाहो दोषोंसे परिपूर्ण हो प्राणके हरनेवाली कांटे युक्त हो ॥ ९ ॥

गलायुरोगकेलक्षण ।

ग्रन्थिर्गलस्थो वदरप्रमाणो नीरूक्स्थिरोऽसाध्यतमः कफात्मा ॥
प्रोक्तोगलायुर्मुनिभिः कदाचिद्रोगं सपक्षं परितो न पश्येत् ॥ १० ॥

बलविद्रधिरोगकेलक्षण ।

शोथः सर्वं गल व्याप्य वर्द्धते बहुरोगवान् ॥ त्रिदोषोत्थो महा-
न्वैद्यैः सज्ञेयो गलविद्रधिः ॥ ११ ॥

गलौघरोगकेलक्षण ।

शोथो गलस्थो बहुरूपधारी कंठावरोधी गलदाहकारी ॥ श्लेष्मा
सृग्ुत्थो बलवीर्यहारी प्रोक्तो गलौघो मुनिभिर्विकारी ॥ १२ ॥

अर्थ—गलेमें गांठ बरेके समान हो, पीडारहित, स्थिर हो तो असाध्य कहा है ये कफसे प्रगट होताहै पक्षउपरांत नहीं रहे॥ १० ॥ जो सूजन सबगलेमें व्याप्तहो फिर बढे और बहुतसे रोगयुक्त हो उसे सन्निपातसे प्रगट गलविद्रधि रोगकहाहै ॥ ११ ॥ अनेक प्रकारकी सूजन गलेमेंहो और कंठको रोकनेवाली तथा गलेमें दाहके करनेवाली और बल वीर्यका नाशक कफरुधिरसे पैदा गलौघनाम रोग मुनीश्वरोंने कहाहै ॥ १२ ॥

अतिसूक्ष्मतरा वदनांतरगाः परितः खचिता मुखतोदकराः ॥
पवनस्य विकारभवा बहुधा परिपाकयुतासितभाज्वरदा ॥ १३ ॥
अरुणद्युतयो मुखमध्यभवास्तनुरूपधरा बलवीर्यहराः ॥ वदनाति
तृपाज्वरदाहकराः पिटिका किल पित्तभवा भणिताः ॥ १४ ॥
चिरपाकयुताविरुजाकठिनाः कफकोपविकारभवामुखजाः ॥ गुर-
त्रोऽल्पमसूरदलाकृतयः खरकंडुरदा मुखपाककराः ॥ १५ ॥

अर्थ—बहुत छोटीफुंसी मुखके भीतर पैदाहोयें, और मुखमें पीडाकरें, तथा सपेट और ज्वरेके करनेवाली और पकनेवाली ये बातके विकारसे पैदा होती हैं॥ १३ ॥ लालरगकी फुंसी मुखमेंहों छोटी तथा बलवीर्यकोनाशक मुखमें पीडाकरें, तथा प्यास, ज्वर, दाहको करें, वो पित्तके विकारसे पैदा होती हैं॥ १४ ॥ जो फुंसी देखें पके पीडाहो, या नहीं कठिन और मसूरकेदालकी समानहों तीर्णों खुजली चले और बडीहों तथा मुखके पाककरनेवाली ये कफके विकारसे होती हैं ॥ १५ ॥

पित्तशोणितकोपेन मुखपाकोभिजायते ॥ उष्मारतिव्यथादाह
ज्वरशोषतृपात्तिकृत् ॥ १६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंटराजकृते वैद्यशास्त्रे
गलमुखरोगाणां लक्षणानि ॥

अर्थ—पित्त और रुधिरके कोपसे मुखपाक होताहै, वो गरमी तथा अरति पीडा, दाह, ज्वर, शोष, प्यास, इनका करनेवाला होताहै ॥ १६० ॥

इति माथुरदत्तरामपाठकप्रणीतहंसराजार्थवेधिनटीकायां गलमुखरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथकर्णरोगनिदानं ।

वातः प्रचंडः स्वगतिं निरुध्य श्लेष्मान्वितो वक्रगतिं विधाय ॥
कर्णांतरे पीडयतीव कोपान्तत्कर्णशूलं कथितं भिपग्भिः ॥ १ ॥

कर्णनादकेलक्षण ।

कर्णःस्रोतांसि संवेष्ट्य संभ्रमन्मारुतोवली ॥ करोति विविधा-
ञ्छब्दान्कर्णनादः सकथ्यते ॥ २ ॥ स्रोतांसिकर्णयोरेव वहांति
श्लेष्ममारुतौ ॥ समनुष्योऽल्पकालेन वधिरत्वं प्रजायते ॥ ३ ॥

अर्थ—प्रचंड जो वात सो अपनी गतिको रोक और कफके संग है टेढी गतिसे चले, और कानमें पीडाकरे उसे वैद्य कर्णशूल कहते हैं ॥ १ ॥ प्रबल जो वात सो भ्रमणकर्ताहूआ कानोंके छिद्रोंको बंदकर और अनेक प्रकारके शब्द करे, उसे कर्णनाद कहते हैं ॥ २ ॥ जिसके कानमें वात और कफ प्राप्तहो वो मनुष्य थोडेही कालमें बहिराहो ॥ ३ ॥

शब्दद्वेष्टकेलक्षण ।

पित्तश्लेष्मान्वितो वायुः कर्णरन्ध्रेषु संस्थितः ॥ करोति गुंजव-
च्छब्दं स शब्दद्वेष्ट उच्यते ॥ ४ ॥

स्त्रावगदरोगकेलक्षण ।

जलस्य पाताच्छ्रुतिरन्ध्रमध्ये शस्त्रादिकैर्वा शिरसोभिघातात् ॥
वातार्दितो यः श्रवणः सरक्तं पूयं सवेत्स्त्रावगदो निरुक्तः ॥ ५ ॥

कर्णगूथरोगकेलक्षण ।

वातेरितः कफः कुर्यात्कंडूश्रवणयोर्द्वयोः ॥ श्लेष्मापित्तोष्मणा-
शुष्कः कर्णगूथः स जायते ॥ ६ ॥

अर्थ—पित्त कफयुक्त जो वात सो कानोंके छिद्रोंमें स्थित होय, तब मनुष्यके कानोंमें गुंजार शब्दहो, उसे शब्दद्वेष्टरोग कहते हैं ॥ ४ ॥ कानमें जलके पडनेसे तथा शस्त्रआदिके लगनेसे अथवा शिरमें चोटके लगनेसे वातसे पीडित कानमेंसे जो रुधिर और राध निकले उसे स्त्रावगद

रोग कहते हैं ॥ ९ ॥ वातकरके प्रेरित जो कफ सो दोनों कानोंमें खुजली पैदाकरे और पित्तकी गर्मीसे कफशुष्क होजाय तब कर्णगूथ रोग पैदाहो ॥ ६ ॥

प्रतीनाहकेलक्षण ।

सकर्णगूथो द्रवतां यदा नयेत्पुनश्च तत्रैव विलीयतेऽनिशम् ॥ मुखं च नासां सपुनः प्रपद्यते बुधैः प्रतीनाहमिहोच्यतेतत् ॥ ७ ॥

कृमिकर्णरोगकेलक्षण ।

श्लेष्मामूच्छागतः कर्णे जंतूंश्च सृजते वहून् ॥ शिरोद्धे कुरुते पीडां कृमिकर्णो बुधैः स्मृतः ॥ ८ ॥ श्रवणे श्लेष्मणा पूर्णे संप्रविश्येव मक्षिका ॥ जंतूंश्च स्रवते शीघ्रं कृमिकर्णोऽभिधीयते ॥ ९ ॥

अर्थ—बोही कर्णगूथ रोग पतलाहोकर फेर जातारहे फेर मुख और नाकमें पैदाहो, उसे पैदांने प्रतीनाह रोगकहाहै ॥ ७ ॥ कफकानमें मूर्च्छितहो बहुत कृमि पैदाकरे, और आधे मस्तकमें पीडाहो, उसे कृमिकर्ण रोग कहाहै ॥ ८ ॥ कफसे परिपूर्ण कानमें मक्खी प्रवेशकर कीड़ोंको पैदाकरे, उसको भी कृमिकर्णरोग कहतेहैं ॥ ९ ॥

पतंगो वाथवा कीटः प्रविश्य श्रवणांतरे ॥ नराणां कुरुते पीडां व्याकुलं क्षतसंचयम् ॥ १० ॥ कीटः प्रविश्य कर्णांते किल्लीस्फोटयतेऽनिशम् ॥ विद्रधिं कुरुते शीघ्रम्वधिरत्वं प्रकल्पयेत् ॥ ११ ॥

कर्णपाकरोगके लक्षण ।

कर्णस्य मध्ये पिटिकाञ्जकर्णिका काराकृतिस्तोदतृपाज्वरान्विता ॥ शोपोल्पपाकः पवनात्मकोयं प्रोक्तोभिपग्भिः किलकर्णपाकः ॥ १२ ॥

अर्थ—पतंग अथवा कीड़ा कानमें प्रवेशकर मनुष्यको पीडितकरे, तथा कानमें घाय करदे ॥ १० ॥ कीड़ा कानमें घसकर किल्लीमारै वो विद्रधि और बहिरापना करदे ॥ ११ ॥ कानमें फुंसी कम्बल कर्णिकाके आकार पैदाहो तथा पीडा, तृष, ज्वर, शोष थोडा पाकयुक्तहो, वो वातसे पैदा पैदांने कर्णपाकरोग कहाहै ॥ १२ ॥

पित्तकर्णपाककेलक्षण ।

कर्णांतरे कोशविदीर्णकारी दाहार्तिक्लेदस्य विकारधारी ॥ वैकल्यकृद्दीर्यवलोपहारी पित्तात्मकोयं किल कर्णपाकः ॥ १३ ॥

कफकर्णपाककेलक्षण ।

स्थूलत्वक्कर्णाविस्फोटकंडूशोपार्तिपाकवान् ॥ पृथस्त्रावीमहाह्लेदी
कर्णपाकः कफात्मकः ॥ १४ ॥ क्षतोत्पाटनात्कर्णपाकैवुपूर्णा-
न्नावेद्विद्रधिः कर्णविध्वंसकारी ॥ महारुक्करोतिप्रदोदीर्घशोफं मुहुः
स्त्रावदुर्गंधकृत्कट्टपाकी ॥ १५ ॥

अर्थ—जो फुंसी कानके भीतर शिल्लीको फोडकर दाह, पीडा, ह्रदयुक्त बेकली, करे, तथा बौर्य बलका नाशकरे, उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपाक कहाहै ॥ १३ ॥ स्थूलत्वचा और कानमें फूटन खुजली, शोप, पीडा, पाकयुक्तहो, राधनिकले, महाह्रदयुक्त, उसे वैद्य कफका कर्णपाक रोगकहतेहै ॥ १४ ॥ कानमें घाव होगयाहो उसपरसे खुंड उखाडनेसे तथा कर्णपाकमें पानीके पडनेसे कानमें विद्रधिरोग कानका विध्वंस करनेवाला पैदा होताहै, उसमें पीडा और सूजन तथा स्त्राव और दुर्गंध और कण्ठसेपके ये लक्षण होतेहै ॥ १५ ॥

वातपूतिकर्णरोगकेलक्षण ।

पूयं स्रवेद्यःश्रवणोत्पृतिं विस्फोटपीडां रतिगुंजघोपः ॥ शोपा-
र्बुदैर्युग्ज्वरशूलयुक्तः वातत्मकोऽयं खलु पूतिकर्णः ॥ १६ ॥

पित्तपूतिकर्णकेलक्षण ।

अत्यंतदाहो बहुतीव्रवेदना नित्यं स्रवेद्यःश्रवणोत्पृतिः ॥ पूयं च
पातं पारिपित्तजोयं प्रोक्तो भिषग्भिः किल पूतिकर्णः ॥ १७ ॥

कफपूतिकर्णकेलक्षण ।

कर्णस्त्रावं पूयमुग्रं सपृतिं शोथः स्निग्धः क्लेदवैश्रुत्यकंडूः ॥ शुक्ल-
स्थैर्यं श्लेष्मजं दीर्घपाकं विद्याद्रोगं पूतिकर्णं नितांतम् ॥ १८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे कर्णरोगलक्षणानि ।

अर्थ—जिसमेंसे राध बहे, कानमें दुर्गंध, तथा फूटन, पीडा, अरति, गुंजारहोना, शोप, अर्बुद, ज्वर, शूल, इन करके युक्तहो उस वातको कर्णपूत रोग कहाहै ॥ १६ ॥ जिसमें दाहतीव्र, दुःख नित्यहो, कानमें राधस्रवे, तथा राधपीली निकसे, उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपूति रोगकहाहै ॥ १७ ॥ कानमेंसे पांव वासकेसाथ निकले, तथा चिकनी सूजन ह्रदयुक्तहो तथा कानमें खुजली चलतीहो सपेदहो देरमें पके वो कफका कर्णपूति रोग जानना ॥ १८ ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामपाठकनिर्मितायां हंसराजार्थबोधिन्याटीकायां कर्णरोगास्तमास्ताः ॥

नासरोगलक्षणम् ।

आनह्यते येन गदेन नासिका विशुध्यते पूय्यति तुथ्यते क्वचित् ॥
न गन्ध्यते क्लिद्यति खिद्यतेऽथवा स पीनसो रुक्थितो भिषग्वरैः ॥१॥

क्षयथुरोगकेलक्षण ।

यदा घ्राणमर्मस्थले संविकारे कफेनावलिष्टो मरुन्नासिकायाः ॥
तदा याति बाह्यांतराच्छब्दयुक्तो निरुक्तो भिषग्भिर्वरिष्ठः क्षवोयमूर

पूतिनस्यरोगकेलक्षण ।

पक्वैर्दोषैर्यदावातस्ताल्वादौ मूर्च्छितो भवेत् ॥ नसो निस्त-
रते पूतिः पूतिनस्यं च तद्वदेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—जिसमें कफसे नाक बंधजावे और पीब्रह्मे, तथा क्लेशहो, और जिसमें सुगन्ध दुर्गन्धका ज्ञान नहो तथा पीडाहो उसे वैद्योंने पीनसका रोग कहाहै ॥ १ ॥ जिसकी नाकमें पवन दुष्टहोकर नाकके मर्मस्थानोंको दुःखित करे फिर वहीनाककी पवन कफसे मिलकर शब्दयुक्त भीतरसे बाहर निकसे, उसे वैद्योंने क्षयथु अर्थात् शींकका रोग कहाहै ॥ २ ॥ जिसके गला तालूके मूलकी पवन दोषोंको बिगाडकर आप गलेमें मूर्च्छित हो नाकसे दुर्गन्ध युक्त निकसे, उसे पूतिनस्य कहते हैं ॥ ३ ॥

नासापाककेलक्षण ।

नासिकायां स्थितं पित्तं परुषी कुरुतेनिशम् ॥ नासिकापाकमित्या
हुंदाहक्लेदव्यथान्वितम् ॥ ४ ॥

पूयरक्तकालक्षण ।

दोषेषु पक्वेषु ललाटमध्ये पूयं सरक्तं मुखनाशयुक्तम् ॥ दुर्गन्धियुक्तं
बहुशः स्रवेत्तत्प्रोक्तम्भिषग्भिः किलपूयरक्तम् ॥ ५ ॥

प्रदीप्तरोगकेलक्षण ।

दाहान्वितायाः परिनासिकायाः सन्निःसरेष्मधनंजयाभ्याम् ॥
सार्द्धं शतोदी पवनप्रचंडो रोगं प्रदीप्तं प्रवदन्ति वैद्याः ॥ ५ ॥

अर्थ—नाकमें पित्तदुखितहो कुंसीको पैदाकरे और वो पकजाय तथा दाह राध व्यथायुक्तहो उसे नासिकापाकरोग कहते हैं ॥ ४ ॥ ललाटमें दोषैक पकनेसे रुधिर राध और दुर्गन्ध युक्त मुख नाक बहुतज्वै, उसे पूयरक्तरोग कहते हैं ॥ ५ ॥ जिसकी नाकसे दाहयुक्त प्रचंड पवन निकले, तथा भुंआनिकले, और पीडाहो उसे प्रदीप्तरोग कहते हैं ॥ ६ ॥

प्रतीनाहरोगकेलक्षण ।

रूध्यान्मागर्गं नसो वायुः श्लेष्मणा सहितो वली ॥ प्रतीनाहं
चतंरोगं विद्यादाधुनिको भिषक् ॥ ७ ॥

नासाशोषकेलक्षण ।

घ्राणोत्थश्लेष्मसंघातः पक्वपित्तोष्मणानिशम् ॥ वातेन शोषितः
सोऽयं शोषः प्रोक्तो भिषग्वरैः ॥ ८ ॥

पक्वपीनसकेलक्षण ।

श्लेष्मातिसांद्रः परिगंधहीनः शिरोलघुत्वं स्वरवर्णशुद्धिः ॥ नासा-
वकाशं पवनप्रवृत्तिश्चिह्नानि पक्वस्य हि पीनसस्य ॥ ९ ॥

अर्थ—नाककी पवन कफसे मिलकर श्वासको रोकादे, उसे प्रतीनाहरोग अयके वेष कहते
हैं ॥ ७ ॥ नाकमें उठाजो कफका समूह वो पित्तकी गर्मीसे पक्वजाय फिर वात उसको मुग्धाय
देय, तब मनुष्य श्वास कठिनसे ले उसे नासाशोष कहते हैं ॥ ८ ॥ जब पीनस पक्वजाताहै, तब
ये लक्षण होतेहैं, गंधरहित गाढा कफ निकले, शिरहलकाहो, स्वरका वर्णशुद्धहो, नाकशुद्ध, पवन
अच्छीतरह निकले, ये पक्वपीनसके लक्षणहैं ॥ ९ ॥

सरेकमारोगकीउत्पत्ति ।

घ्राणांतरे सूक्ष्मरजोनिपातादुद्भापणान्मैथुनतोऽर्कतापात् ॥ शी-
र्षावघाताद्बहुशीतसेवनाद्घातः प्रतिश्यायगदं प्रकुर्यात् ॥ १० ॥

सरेकमारोगकापूर्वरूप ।

शिरोगुरुत्वं च प्रहृष्टरोम शरीरमाद्रं क्ष्वथुप्रवृत्तिः ॥ निद्राल-
सत्वं नयनाश्रुपातो भवेत्प्रतिश्यायपुरो हि चिह्नम् ॥ ११ ॥

वातकीपीनसकेलक्षण ।

स्वरोपघातो गलतालुजिह्वाशोपोऽथनासापिहिताकचित्स्यात् ॥
स्त्रावोतिसूक्ष्मः परिशंखपीडा मरुत्प्रतिश्यायरुजोपचिह्नम् ॥ १२ ॥

अर्थ—नाकमें घूलिके जानेसे, बहुत जोरसे बोलना, मैथुनके करनेसे, सूर्यके धाममें रहनेसे
शिरमें चोट लगनेसे बहुतशीतके सेवनकरनेसे, कुपितजो वात सो पीनस रोगको पैदाकरे ॥ १० ॥
शिर भारी, रोमांच, शरीरकाट्टटना, बारबार छँककाआना, नींद और आँकस तथा नेत्रोंसे
अश्रुपातहो ये सरेकमाके पूर्वमें होतेहैं ॥ ११ ॥ स्वर घैठजाय, गला, तालू, जिह्वा इनका सूखना,

नाकका मार्ग रूकजाय थोडापतला गरम पानी गिराकर, कनपटी दूखे ये वातके सेरेकमांके लक्षणहै ॥ १२ ॥

पित्तकीपीनसकेलक्षण ।

नासास्त्रावो महातप्तपीनसोवनिधूमवान् ॥ सदाहः पैत्तिको ज्ञेयः
श्लेष्मजः कथितो बुधैः ॥ १३ ॥

कफकीपीनसकेलक्षण ।

शुक्लामो नासिकास्त्रावः गलोष्ठतालुकंडुमान् ॥ शिरस्तोदःप्रति-
श्यायः श्लेष्मजः कथितो बुधैः ॥ १४ ॥

रुधिरकीपीनसकेलक्षण ।

रक्तस्त्रावः शिरःपीडा दाहः शंखद्वयेऽनिशम् ॥ रक्तत्वं नेत्रयोर्ज्ञेयः
प्रतिश्यायः सरक्तजः ॥ १५ ॥

अर्थ—जिसके नाकसे गरम गरम पानी गिरे, और अग्निके समान धुआं निकले, तथा दाहहो, वो पित्तकी पीनस कहीहै ॥ १३ ॥ नाकसे पानीसपेद गिरे, और गला, तालू, ओठ इनमें गुजली चले, मस्तकभारीरहे, उसे कफकी पीनस कहते हैं ॥ १४ ॥ जिसकी नाकसे रुधिर गिरे मस्तकमें और दोनों कनपटीनमें दर्द, नेत्र लाड, इन लक्षणोंसे रुधिरकी सेरेकमां अर्थात् पीनस जाननी ॥ १५ ॥

सन्निपातकीपीनसकेलक्षण ।

श्वासपूतिवहोनाहः क्लेदो जंतुषु निर्दिष्टः ॥ चिह्नैरेतैरसाध्योऽयं
प्रतिश्यायस्त्रिदोषजः ॥ १६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे नासारोगलक्षणानि ।

अर्थ—जिसकी नाकसे वासयुक्त पवन निकले, अनाहरोग हो, क्लेदयुक्त तथा कृमिपडिजायें, ऐसे लक्षणोंसे सन्निपातकी पीनस कहीहै ॥ १६ ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्धबोधिनदीकायां नासारोगलक्षणानि ॥

अथ नेत्ररोगनिदानम् ।

नेत्ररोगोत्पत्तिः ।

शीर्षोपघाताद्विपतीक्ष्णसेवनाग्नेत्रांतरेधूमरजोतिपातात् ॥ सूर्येक्षणा-
त्सूक्ष्मनिरीक्षणान्मुहुर्दोषारुजं संजनयन्ति नेत्रयोः ॥ १ ॥ शुक्राव-

रोधाद्युवातिप्रसंगाद्धातोर्विकाराज्ज्वलनस्यतापात् ॥ नाड्यादिमो-
क्षाद्बहुमैथुनाच्च नेत्रे रुजं संजनयन्ति दोषाः ॥ २ ॥

वातकेनेत्ररोगकेलक्षणम् ।

विशुष्कता स्पन्दनतातिरूक्षता प्रतोदता कर्कशताद्यशुद्धता ॥
प्रधर्पतास्तंभनताश्रुपातानृणां च नेत्रे पवनात्मको भवेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—शिरमें चोट लगनेसे विप अथवा तौखी वस्तुके सेवनसे, नेत्रोंमें धुंआ और धूलिके पडनेसे, सूर्यके सामने देखनेसे, छोटी वस्तुके देखनेसे, कुपितदृष्टे जो वात, पित्त, कफ सो नेत्र रोगको पैदा करते हैं ॥ १ ॥ धीरेके रोकनेसे बहुत खीके संगसे, धातुके विकारसे, अग्निकेतापसे, फस्तशुडानेसे, बहुत मैथुनसे नेत्रमें तीनों दोष नेत्ररोग करते हैं ॥ २ ॥ नेत्रोंका सूखना, तथा फडकना, रूखापन, पीडा, कर्कशता, अशुद्धता, घिसासाहोना, स्तंभनता, आंसुओंका गिरना, ये लक्षण वातके नेत्ररोगमें होते हैं ॥ ३ ॥

पित्तकेनेत्ररोगकेलक्षणम् ।

उष्णोष्णवाष्पोरविणातितापः शूलरतिः पादुरता शिरोऽर्त्तिः ॥
दाहोल्पपाको महती च पीडानेत्रे भवेत्पित्तमये नराणाम् ॥ ४ ॥

कफकेनेत्ररोगकेलक्षणम् ।

तंद्रातिशोफो गुरुता शिरोर्त्तिर्दाहोल्पपाको महती च पीडा ॥
ऊष्माविशेषोऽग्निसमानदाहः स्रावोरतिः शूलमतीव पीडा ॥ ५ ॥

नेत्रमंथकेलक्षणम् ।

विवर्णता शोणितमाविपाको रक्तस्रवः स्यान्नयने नराणाम् ॥ नि-
र्मथ्यनेत्रेऽधिमंथलक्षणैर्वायुस्ततो गच्छति मूर्ध्नि विक्रमम् ॥ ६ ॥

अर्थ—सूर्यके घामसे गरमीहो, तथा गरमगरमपानी निकले, शूल और अरति पीलियाहो, शिरमें दर्दहो, दाहहो, थोडापके, पीडा ज्यादाहो, ये लक्षण पित्तके नेत्ररोगके हैं ॥ ४ ॥ तंद्रा, सृजन, मस्तक भारी, दाह, थोडापके, पीडा बहुत हो, गरमीबहुतहो, अग्निकेसमान दाहहो, अधुपात हो अरति, शूल ये कफके नेत्ररोगके लक्षणहो ॥ ५ ॥ जिसके नेत्रबुरेहो, पकजायँ, रुधिर गिरे, और अधिमंथलक्षणोंसे नेत्रोंको मथनकर पवन मस्तकमें प्राप्तहो ॥ ६ ॥

निपीड्यशीर्षं पुनरावृतस्ततो जानीहि तं पंडितनेत्रमंथनम् ॥ आया-
तियाति प्रकरोति वेदनां वातः प्रचंडो नयनांतरे भ्रुवोः ॥ ७ ॥

वातभ्रमणरोगकेलक्षण ।

शीर्षास्थिशंखन्त्वथ रक्तनेत्रे जानीहि वातभ्रमणं गदं तम् ॥ अवे
दना कंडुविशुष्कतास्याल्लघुत्वमक्ष्णोश्च प्रसन्नमार्गः ॥ ८ ॥ मल-
प्रवृत्तिर्वहुधानिशान्ते विपक्वदोषं प्रवदंति संतः ॥ पक्वोदुंबर-
वास्त्रिगधो गरिष्ठःकंडुशोफवान् ॥ जलस्त्रावोऽल्पसंतोदो नेत्रपाकः
कफोद्भवः ॥ ९ ॥

अर्थ—और मस्तकमें पीडाकर फेर छोटकर नेत्रमें प्राप्तहो, ऐसेही आवि और जाय और नेत्रमें
तथा भुकुटीमें पीडाकर, उसे पंडितोंने नेत्रमंथ रोग कहाहै ॥ ७ ॥ मस्तककी हड्डीमें कनपटीमें
मांसमें पीडाहो तथानेत्र लालहो, उसे वातभ्रमणरोग कहाहै, नेत्रपाकके लक्षण पीडारहित तथा
खुजली न चटै तथा अश्रुपात रहितहो और नेत्रोंमें हल्कापानहो तथा नेत्रोंका मार्गस्क्च्छो ॥८॥
विशेष काचडका आना रात्रिके अंतमेंहो, तब जानना कि दोषपाकहुआ पके गूलरके समान तथा
चिकने और भारी तथा खुजली और सूजनयुक्त जल बहे थोड़ीपीडाहो इसको कफसे प्रगट
नेत्रपाकजानना ॥ ९ ॥

शिरपाकनेत्रकेलक्षण ।

नेत्रे समर्थे परिवीक्षितुं दिशः स्फोटो ललाटे बहुवेदनान्वितः ॥
शूलश्च दाहोऽग्निसमो भ्रमो भवेद्रोगोभिपग्भिः शिरपाकर्द्धारितः
॥ १० ॥ आच्छाद्यदृष्टिं नयने विनिर्गतं शुक्रं सिताभं परिवर्द्धते
निशम् ॥ सूच्याप्रविद्धं खलुनाशमोति नोचेद्बुधाः शुक्रव्रणं वदन्ति
॥११॥ नेत्रातरे कज्जलिमासमीपेशुक्रद्वयं सूक्ष्मतरं चिरोत्थम् ॥
मुक्तावभासं गततोदपाकं तत्कष्टसाध्यं मुनयो वदन्ति ॥ १२ ॥

अर्थ—नेत्र चारों ओर देखनेको असमर्थहों, बहुतपीडा और गूलरयुक्त ललाटमें फूटनहो,
अग्निके समान दाहहो, भ्रमहो, उसे वैद्योंने शिरपाक रोग कहाहै ॥ १० ॥ जिसके नेत्रमें शुक्रकी
बूंद आय जाये उससे कुछ न देखें, और'यो दिनदिनमें बढे उसे शुक्रव्रण कहते हैं और मुईकेसे
चम्बकाचले ॥ ११ ॥ जिसके नेत्रकी काली जगपर छोटी छोटी दोबूद मांतीके समान बहुत
कालकी प्रगटभई हो, और उनमें पीडा न होतीहो और न पके उसे मोतियाबिंदु कष्टसाध्य मुनि
कहते हैं ॥ १३ ॥

असाध्यमोतियाविंदुकेलक्षण ।

शुक्रद्वयं वा त्रितयं चतुष्टयं निर्वेदनं नेत्रगतं विपाकम् ॥ विहाय
सीचाभ्रदलावभासं स्यादप्यसाध्यं निविडं चिरोत्थम् ॥१३॥ दोष-
त्रयोत्थं नयनांतरस्थं नीलावभासं निविडं विसर्पम् ॥ स्निग्धं दृढं
दृष्टिपथावरोधं स्पंदात्मकं शुक्रमसाध्यमाहुः ॥ १४ ॥ नेत्रांतरस्थं
रुधिरावभासं मांसोत्थितं स्थूलदलं विशालम् ॥ विच्छिन्नमध्यं परि-
चंचलं च शुक्रं भिपग्भिस्तदसाध्यमुक्तम् ॥ १५ ॥

अर्थ—जिसके नेत्रमें दो वा तीन वा चार बूंद बचिहों, उनमें पीडाहो, और पकजावे, और
वो बहल वा आकाशके रंगकी बूंदहों मिलीमई तथा बहुत दिनकी ये असाध्यहै ॥ १३ ॥ जो
तीनों दोषोंसे उठी होय और नीले रंगकी मिलीहुई किञ्चित् चलायमान चिकनी और दृष्टिको
रोकदे ऐसी शुक्रकी बूंदभी असाध्यहै ॥ १४ ॥ नेत्रमें रुधिरके रंगकी शुक्रकी बूंदहो और वो मोट्टी
तथा लंबी हो, विच्छिन्न मध्यहो और चंचलहो ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै ॥ १५ ॥

एकं द्वयं वा त्रितयं चतुष्टयं संछाद्यनेत्रं परिवर्द्धते निशम् ॥ शोफो-
ष्णवाप्सो रविपाकसाधनं शुक्रं विदग्धं तदसाध्यमादिशेत् ॥१६॥

इति नेत्रशुक्रलक्षणानि ।

नेत्रकेप्रथमपटलकेलक्षण ।

आवृत्यनेत्रे पटले व्यवस्थिते व्यक्तानि रूपाणि नरः प्रपश्येत् ॥

नेत्रद्वितीयपटलकेलक्षण ।

एवं द्वितीये पटलेऽक्षिसंस्थे सूचीमुखं दृष्टिगतं न पश्यति ॥१७॥

नेत्रतृतीयपटलकेलक्षण ।

नेत्रांतरस्थे पटले तृतीये दृष्टिर्भृशं विह्वलतां समेति ॥ आभा-
समात्रं खलुपश्यतीह साध्यं शिशुत्वे खलुनान्यवस्थम् ॥१८॥

अर्थ—एक दो तीन चार बूंद नेत्रमेंहों, और नेत्रकी दृष्टिको ढकंदे, और नित्य बँडे तथा
सूजन गर्मी अश्रुपातका पडना ये शुक्रविदग्धके लक्षणहैं, येभी असाध्यहै ॥ १६ ॥ इतने रोग
नेत्रके शुक्रभागमें होते है, नेत्रके प्रथम पटलमें दोषोंके पड्चनेसे मनुष्यको यथार्थ न दीखे, ऐसेही
नेत्रके दूसरे पटलमें दोष पड्चनेसे सुईका तथा मक्खी मच्छर बालकामी समूह नहीं देखे ॥ १७ ॥
नेत्रके तीसरे पटलमें दोष पड्चनेसे दृष्टी विह्वल होजाय, कुछ कुछ झाई मालूमहो, ये बाल अवस्थामें
साध्यहै औरमें नहीं ॥ १८ ॥

नेत्रचतुर्थपटलकेलक्षण ।

यस्यावरुद्धे पटलेन नेत्रे दृष्ट्या न पश्येत्सनरोक्कविम्बम् ॥
त्रियुल्लतां चन्द्रमसं सतारं तत्काचसंज्ञं पटलं चतुथम् ॥ १९ ॥

वातकीदृष्टिरोगकेलक्षण ।

दृष्ट्या महत्या पटलेन रुद्ध्या समीरणोत्थेन विकारकारिणा ॥ रूपा-
णि सर्वाण्यरुणानिमानवाः पश्यन्ति पीतप्रभया विदग्धया ॥ २० ॥

पित्तकीदृष्टिरोगकेलक्षण ।

पटलेनावृता दृष्टिः पित्तकोपोत्थितेन सा ॥ नीलानि सर्ववर्णानि
परिपश्यति सम्भ्रमम् ॥ २१ ॥

अर्थ—नेत्रके चतुर्थ पटलमें दोष पहुंचनेसे मनुष्यको सूर्य चंद्र और विजली
और तारागण ये न देखे, वो कांचसंज्ञक और इसीको छिगनाशक और नजला तथा मौतिया
विदभी कहते है ॥ १९ ॥ जिसकी दृष्टि वादीके विकारसे आच्छादितहो, उसे लालरंग पीला
दांते ॥ २० ॥ जिसकी दृष्टि पित्तके कोपसे ढकीहो उसे भ्रमसे सब रंग नीलेदाखें ॥ २१ ॥

कफकीदृष्टिरोगकेलक्षण ।

आच्छादिताया पटलैः कफौत्थैर्दृष्टिः सिताभैरिवसूर्यमभ्रैः ॥
नेत्रांतरस्थैः परितो विपश्येत् सर्वाणि रूपाणि सितप्रभानि ॥ २२ ॥
दृष्टेरूर्ध्वस्थिते दोषे न पश्येदुंसंस्थितान् ॥ दृष्टेरधः स्थिते दोषे
नरोधस्थान्न पश्यति ॥ २३ ॥ दृष्टेः पार्श्वे स्थिते दोषे पार्श्वस्थान्नैव
पश्यति ॥ दृष्टेर्मध्यगते दोषे यदेकं मन्यते द्विधा ॥ २४ ॥

अर्थ—कफके विकारसे पटल जिसकी दृष्टिरोगके उक्तको सूर्य और आकाश तथा सब रंग
संपेदोखे ॥ २२ ॥ दृष्टीके ऊर्ध्वभागमें दोष स्थित होय तो ऊपरकी वस्तु न देखे, और नीचेके भागमें
दोषहो तो नीचेकी कोई वस्तु न देखे ॥ २३ ॥ और दृष्टीके पृष्ठभागमें दोष हो तो पृष्ठस्थितको
नहीं देखे, तथा दृष्टीके मध्यमें दोष होयतो एक वस्तुको दो देखे ॥ २४ ॥

रक्तविन्दुर्भवेन्नेत्रे चंचलः परुषो निलात् ॥ पित्तात्पीतं तथा नीलं
स्त्रिग्धः पांडुः सितः कफात् ॥ २५ ॥ यः सर्वधूम्राणि नरो
विपश्येत्सधूम्रदर्शी मुनिभिः प्रदिष्टः ॥ यश्चित्ररूपाणि दिवा प्रव-

श्येत् स वै मनुष्यो नकुलांधसंज्ञः ॥ २६ ॥ संकुच्याभ्यन्तरे याति
दृष्टिमाहुः कपर्दिकाम् ॥ ब्राह्ममायातिसंवृत्यगम्भीरंतं विदुर्वुधा २७ ॥

अर्थ—बादरसे मनुष्यके नेत्र चञ्चल और लालविन्दु युक्तहों, और पित्तसे पांटे तथा नांटे, और कफसे चिकने और संपद तथा पांडुरंगके होतहैं ॥ २६ ॥ जिस मनुष्यको सव यन्तु धुपके रंगकी द्रांयं, उसे धूम्रदर्शी मुनियोने कहाहै, और रातमें जिसको चित्रविचित्र रंगका द्रांयं उसे नकुलांध अर्थात् रतौंधका रोग कहाहै ॥ २६ ॥ जिस मनुष्यकी दृष्टी दर्पणकी संकोचको प्राप्तहो जत्र दर्पण दृष्ट जावे तत्र यथार्थ होजावे उसे गंभीररोग वैद्य कहते हैं ॥ २७ ॥

नेत्रसंधौ स्थितः शोफः पक्वं पूयं सवेत्तु यः ॥ पूतिसांद्रं सरक्तं
वा पूयलाख्यं विदुर्वुधाः ॥ २८ ॥ संधौ बृहद्गन्धिमहारपाकी
नीरुजो दृढः ॥ उपनाहः सविज्ञेयो गदज्ञैः कंदुरोगदः ॥ २९ ॥
नेत्रसंधौ समुत्पन्ना पिडिका शोणितोद्भवा ॥ रक्तमुष्णं स्ववेन्नित्य-
मसाध्या रुक् प्रकीर्तिता ॥ ३० ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके नेत्रकी संधीमें सूजनहो और वो पक्कावे तथा स्वै और वास युक्त तथा रुधिर स्वै उसे पूयलाख्य रोग वैद्य कहते हैं ॥ २८ ॥ जिस मनुष्यके संधीमें बड़ी गांठहो और वह पके नहीं न पीडा करे दृढहो खुजली चले उसे वैद्योंने उपनाह रोग कहाहै ॥ २९ ॥ नेत्रकी संधीमें रुधिरसे फुंसी पैदा हो उनसे रुधिरस्वै वो असाध्य कहिये ॥ ३० ॥

उद्धृत्य वर्त्म रोगाणि जायन्तेऽभ्यन्तरे मुहुः ॥ रुन्धति गोलके नेत्रे
परिवाराणि तानि वै ॥ ३१ ॥ संधौपक्ष्माणि मांसाभाकंडूशोफ
समन्विता ॥ चिमुचिमांबुयुता वैद्यैर्ब्राह्मणी सानिगद्यते ॥ ३२ ॥
अक्ष्णोर्वर्त्मनि सम्भवाश्च पिडिकाः सूक्ष्माघनाः संवृताः पीताभा
बहुवेदना खरतरा ज्ञेयाश्च वातोद्भवाः ॥ पित्तोत्थाः पिटिकाः खरा
नयनयोरभ्यन्तरे संस्थितादुःस्पर्शाबहुदाहशूलसहिताः स्वावान्वि-
ताः कण्डूराः ॥ ३३ ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके कोपके बाल उखडकर भीतर चलेजायें और नेत्रके गोलको रोक्के उसे परवाल कहते हैं ॥ ३१ ॥ संधीके पखवारोंमें मांसके आकार फुंसीहो उसमें खुजली और सूजन तथा चिमचिमां युक्तहो जल स्वै उसे ब्राह्मणी रोग कहते हैं ॥ ३२ ॥ नेत्रके मार्गमें जो फुंसीहो वह छोटोकरडी गोल पौली पीडायुक्त खरदरीहो सो वातकी जाननी और खरदरी तथा नेत्रके भीतरहो रशी सहाजाय दाहशूल और स्वै तथा खुजली चले वो पित्तकी फुंसी जाननी ॥ ३३ ॥

अक्षणोर्वर्त्मनि जायन्ते पिटिकाः कफसम्भवाः ॥ स्थूलामांसांकुरा
क्लिन्नाः कंदूशोफार्तिपाकिनः ॥ ३४ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे
नेत्ररोगलक्षणानि

अर्थ—तथा मोटी मांसके अंकुरयुक्त, गाली खुजलीयुत सूजन पीडा और पकजावै, वो कफकी
मरोडी जाननी ॥ ३४ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिण्यां नेत्ररोगलक्षणं समाप्तम् ॥

अथमस्तकरोगलक्षणम् ।

अत्यम्लसेवाच्छिरसोभिघाताद्भूमौशयानाज्जलमध्यपातात् ॥ रात्रौ
दिवाजागरणाच्च शीताद्वातादिदोषाः प्रभवन्ति शीर्षे ॥ ३५ ॥

वातपित्तकेमस्तकरोगकानिदान

शीतेन शीर्षे निशि वातपीडा कचिद्विवापि प्रभवेत्सशूला ॥
तापेन पित्तप्रभावातितीव्रा ज्वालान्विता शूलवती सशोषा ॥ ३६ ॥

कफकेमस्तकरोगकेलक्षणम् ।

शीर्षे गुरुत्वञ्च कफेन पीडा स्यादालसत्वं मुहुरश्रुपातः ॥ निद्राव-
मित्वं मुखनासिकाभ्यां स्रावो विपाकः शशिरोभिघातः ॥ ३७ ॥

अर्थ—अत्यन्त खटाई खानेसे, शिरमें चोट लगनेसे, पृथ्वीपर सोनेसे, जलमें गिरनेसे, रातदिन
जागनेसे, शरदीसे, कुपित हुये जो वात, पित्त, कफ सो मस्तकरोग पैदा करतेहै ॥ ३५ ॥ वादीसे
मस्तकमें रातको दर्दहो, कभी दिनमेंभी शूल चले, पित्तसे पित्तजनितही अत्यन्त तीव्र ज्वाला
और शोषयुक्त पीडाहो ॥ ३६ ॥ शिरभायी, आलस्य, अश्रुपातका पडना, निद्रा, वमन, मुखनासिका
स्राव तथा पाक और पीडा ये कफके दोषसे होताहै ॥ ३७ ॥

रुधिरंकेमस्तकरोगकेलक्षणम् ।

शीर्षेतिदाहो महती च पीडा नासामुखाभ्यां बहुरक्तपातः ॥
भवेद्भ्रमो धूमवती च नासा रक्तप्रकोपेन शिरोभिघातः ॥ ३८ ॥
दोषेषु सर्वेषु शिरोगतेषु लिंगानि सर्वाणि भवन्ति शीर्षे ॥ कासप्र-
शुत्तिश्चिरकालपाकः प्रोक्तो भिषग्भिः शिरसोभिघातः ॥ ३९ ॥

कृमिकेमस्तकरोगकेलक्षण ।

निर्भिद्यते जंतुभिरुग्रतुंडैः संतुद्यते यस्य शिरो नितान्तम् ॥ घ्रा-
णात्स्त्रवेच्छोणितमुग्रवेदना शिरोभिघातः कृमिभिर्भवेत्सः ॥४०॥

अर्थ—शिरमें दाह, घोर पीडा, नाक और मुखसे रुधिर गिरे, भ्रम तथा नाकसे घूम निकले,
ये रुधिरसे मस्तकरोग जानना ॥ ३८ ॥ सन्निपातके मस्तकरोगमें त्रिदोषके चिह्न मिलतेहैं
तथा खांसी और देरमें पके वो बैयोंने सन्निपातका कहा है ॥ ३९ ॥ जिसके शिरमें कृमि पडजावें,
उसके शिरमें घोर पीडाहो, नाकसे रुधिर पड़े, वो कृमिका मस्तकरोग कहाहै ॥ ४० ॥

आधाशीकालक्षण ।

भानूदयेऽर्द्धे शिरसि प्रपीडा संवर्द्धते चांशुमता सहैव ॥ निवर्त्तते
शीतकरोदये या सूर्यात्प्रवृत्तं तमवेहि वैद्यः ॥ ४१ ॥ कफयुक्पवनः
शीर्षे करोति विविधान् गदान् ॥ शिरोभ्रूशंखकर्णाक्षिललाटे
तीव्रवेदनाम् ॥ ४२ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे शीर्षरोगलक्षणम् ॥

अर्थ—जिसका सूर्योदयसे आधा मस्तक क्रमसे दूखने लगे, जब सूर्यास्त हो और चन्द्रमा
उदयहो तब दर्दभी बंद होजाय, उसे आधाशीका कहते हैं ॥ ४१ ॥ कफयुक्त पवन शिरमें अनेक
रोग पैदा करे, और शिर कनपटी झुकुटी, कान, नेत्र, ललाट इन्में घोर पीडा होय ॥ ४२ ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामकृतहंसराजार्थबोधिर्नाटीकायां शीर्षरोगनिदानं समाप्तिमगम् ॥

अथस्त्रीरोगलक्षणम् ।

प्रदररोगकाउत्पत्ति ।

आयासतः कुत्सितयानरोहाच्छोकाद्विरुद्धाशनतः प्रपातात् ॥

अत्यंतभारोद्धहनादजीर्णात्स्याद्गर्भपातात् प्रदरोतिमैथुनात् ॥१॥

योनिं विदीर्यसंजातं शोणितं सर्व्वदा स्त्रियाः ॥ प्रदरन्तं विजानी

हिवातपित्तकफोद्भवम् ॥ २ ॥ प्रवृत्ते प्रदरे नित्यं पाण्डुत्वं जायते

स्त्रियाः ॥ मूर्च्छा भ्रमस्तृपादाहः प्रलापः कृशता रुचिः ॥ ३ ॥

अर्थ—परिश्रमसे, खोटी सवारोमें बैठनेसे, शोकसे, खोटे भोजनसे गिरपडनेसे भारी बोझ
उठानेसे, अजीर्णसे, गर्भके पडनेसे, अतिमैथुनसे, प्रदरनाम स्त्रियोंके रोग होताहै ॥ १ ॥ योनिको

विदीर्ण कर जो रुधिर सदा पडे उसे वातका, पित्तका, कफका, प्रदर रोग जानो ॥ २ ॥ प्रदर रोग पैदा होनेसे स्त्रीका वर्ण पीला होजाय, और मुर्च्छा भ्रम, प्यास, दाह, बडबडाना, कृशता, अरुचि ये रोग होते हैं ॥ ३ ॥

वातपित्तकेप्रदररोगकेलक्षण ।

योनिः स्रवेच्छोणितमल्पमल्पं श्यावं सकष्टं पवनात्मकं तत् ॥

पित्तोत्थितं सामिपरक्तमुष्णं दाहार्त्तिशूलभ्रमकम्पकारी ॥ ४ ॥

कफकेप्रदररोगकेलक्षण ।

योनिक्षतोत्थं रुधिरञ्च फेनिलं पीतारुणं स्निग्धतरञ्च पिच्छिलम् ॥

शैथिल्यकंडूकृमिशोथशीतकृज्जानीहि तं त्वं प्रदरं कफोद्भवम् ॥ ५ ॥

सन्निपातकेप्रदरकालक्षण ।

दोषत्रयोत्थे प्रदरे युवत्याः सर्वाणि लिंगानि भवन्ति काये ॥

उद्ध्वास शूलारतिपूतियुक्ते तस्मिन्न कुर्वीत भिषक्चिकित्साम् ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे

प्रदरलक्षणम् ।

अर्थ—जिस स्त्रीकी योनिसे कालेरंगका रुधिर कष्टसे थोडाथोडा निकले, उसे वादीका जानो और मांसयुक्त, गरम, और दाहयुक्त, रुधिर निकले तथा शूल भ्रम कंपसे पित्तका जानना ॥ ४ ॥ योनिमेंसे रुधिर झाग मिला, चिकना, पीला, गाढा, लाड, निकले और खुजली, कृमी, शिथिलता, सूजन, शीतलता युक्तहो, उसे कफका प्रदर रोग जानना ॥ ५ ॥ सन्निपातके प्रदरमें त्रिदोषके चिह्न होते हैं, तथा श्वास, शूल, अरति, दुर्गंध युक्त ऐसे प्रदरकी वैद्य चिकित्सा न करे ॥ ६ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां प्रदररोगसमाप्तः ॥

अथयोनिकन्दकेलक्षण ।

उच्चैः प्रपातान्नखदन्तघातादध्वश्रमात्कुत्सितवीर्य्ययोगात् ॥

कुर्यान्नरोहादतिमैथुनाद्वा योनौ भवेत्कंदकसंज्ञकारुक् ॥ ७ ॥ योनौ

संजायते कन्दं लकुचाकृतिपूययुक् ॥ विवर्णस्फुटितं रूक्षं वातक-

न्तंविदुर्वुधाः ॥ ८ ॥

पित्तकेयोनिकन्दकेलक्षण ।

रक्ताक्तं योनिसम्भूतं चिञ्चिणीबीजसन्निभम् ॥ ज्वरदाहान्वितं पैतं

योनिकंदं तमादिशेत् ॥ ९ ॥

अर्थ—ऊंचे स्थानके गिरनेसे नखदांतके घातसे, रस्ता चढ़नेसे, खोटावीर्य्य पडनेसे, खोटी सवारीमें बैठनेसे, अति मैथुनसे, योनिमें कंदसंज्ञक रोग होताहै ॥ ७ ॥ योनिमें बडहलके समान कंदहो उसमेंसे राध निकले, और विवर्ण तथा फूटा, रूखा हो, उसे वातका योनिकंद कहते हैं ॥ ८ ॥ जिसमेंसे रुधिर निकले और वह इमलीके बाँजके समानहो तथा ज्वर, दाह, युक्तहो, उसको पित्तका योनि कंद कहते हैं ॥ ९ ॥

कफकेयोनिकन्दकेलक्षण ।

तिलपुष्पसमंस्निग्धं योनिमव्योद्भवं दृढम् ॥ कंडूशोफान्वितं क्लिन्नं
योनिकंदं कफात्मकम् ॥ १० ॥

सन्निपातकेयोनिकंदकेलक्षण ।

सन्निपातोत्थितं रौद्रं सर्व्वलिंगसमन्वितम् ॥ योनिकंदं भिषक्तस्य
चिकित्सां नैवकारयेत् ॥ ११ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते
वैद्यशास्त्रे योनिकंदलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—जो तिलके फूलके समान चिकना और दृढ कंदहो तथा खुजली और सूजन तथा गीलाहो, उसे कफका योनिकंद कहते हैं ॥ १० ॥ जिसमें सन्निपातके सब लक्षण मिलतेहों, उसे घोर सन्निपातका जानकर वैद्य इलाज न करे ॥ ११ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां योनिकंदलक्षणं समाप्तम् ॥

अथयोनिकेद्रादशरोगकेलक्षण ।

योनौ द्वादशदोषाः स्युः प्रोक्ता वैद्यैः पृथक्पृथक् ॥ केचिन्नैसर्गिकाः
केचिद्दोषजाः वीर्य्यदोषजाः ॥ १ ॥ अच्छिद्रा या भवेद्योनिः पंढार्या
साभिधीयते ॥ सूक्ष्मच्छिद्रा तु या सूचीमुखा सा कथ्यते बुधैः ॥ २ ॥
विवृत्तास्या महास्थूला महायोनिः प्रकीर्त्तिता ॥ रजो वातहतं
यस्या असौख्या सोच्यते बुधैः ॥ ३ ॥

अर्थ—योनिमें बारह दोष पृथक् पृथक् धैर्येन कहे हैं, कोई तो नैसर्गिक कोई दोषोंसे और कोई वीर्य्यके दोषसे ॥ १ ॥ जिसकी योनिमें छिद्र नहो उसे पंढार्य्ययोनि कहतेहैं, और जिसमें छोटा छिद्रहो उसे सूचीमुख योनि कहते हैं ॥ २ ॥ जो गोल मुखकी और मोटी हो उसे महायोनि कहंत हैं, और जिसका रजोदर्श वातसे चलागया हो उसे असौख्ययोनि कहते हैं ॥ ३ ॥

वातकीयोनिकेलक्षण ।

ह्रस्वातिरूक्षाकृशताल्पपुष्पाश्यामा विवर्णास्फुटिताविशुष्का ॥
वक्राल्परोमापरुपासरोगा योनिर्वुधैर्वातवती निरुक्ता ॥ ४ ॥

पित्तकीयोनिकेलक्षण ।

ऊष्मान्विता कामवती विशाला लाक्षारसाभा परिपूर्णमांसा ॥
नीरोगता गर्भवती विशुद्धा योनिर्वुधैः पित्तवती निरुक्ता ॥ ५ ॥

कफकीयोनिकेलक्षण ।

स्थूला सदाद्रा बहुकंडुरा सा कामान्विता दीर्घमुखी मनोज्ञा ॥
रोमाधिका स्निग्धतरातिशीता योनिर्निरुक्ता कफयुग्भिपग्भिः ॥ ६ ॥

अर्थ—जो योनि छोटी, और रूखी, कृश, अल्पपुष्पकी, काली, श्याम वर्णकी, फटी हुई, शुष्क, मुखपर थोड़े बालहों, कठोर, रोग युक्त, ये वातकी योनिके लक्षण हैं ॥ ४ ॥ गर्मा युक्त, कामवती, बडी, लाखके रंगकीसी पूर्णमांस युक्त, निरोग गर्भवान्, शुद्ध हो, ये पित्तकी योनिके लक्षण हैं ॥ ५ ॥ मोटी, सदागीली रहै, बहुत खुजली युक्त, कामयुक्त, दीर्घमुखकी, सुंदर, बहुत रोमयुक्त; चिकनी, शीतल ये कफकी योनिके लक्षण हैं ॥ ६ ॥

वातेन यस्या निहतं च पुष्पं तस्याः फलं नैव भवेत्कदाचित् ॥
योन्यंतरस्थेन महाबलेन हृन्नाभिकट्यांतरदुःखवेदनाम् ॥ ७ ॥
पित्तेन दग्धं कुसुमं विशुद्धं शुक्रेण मिश्रम्बहिरुद्विरेद्या ॥ नाल्यू-
प्मणाधारयितुं समर्था प्रसंसिनी योनिरुदाहता सा ॥ ८ ॥

विप्लुताकेलक्षण ।

रतिक्रीडारुचिर्यस्याः परितो या प्लुताभवेत् ॥ नित्यवेदनयायुक्ता
विप्लुता सा प्रकीर्तिता ॥ ९ ॥

अर्थ—योनिके बलवान वात पुण्यको नाश करदे तब सन्तान नहीं हो, और हृदय, नाभी, कमर इनमें पीडा हो ॥ ७ ॥ जिसका पुष्प पित्तदग्ध करदे और शुक्रयुक्त रजको बाहर निकालदे और पित्तकी गर्मीसे गर्भ न रहे, उसे प्रसंसिनी योनि कहते हैं ॥ ८ ॥ रति क्रीडाके आमंदसे जिमकी योनि आर्द्र रहै, और नित्य पीडाहो उसे विप्लुता योनि कहते हैं ॥ ९ ॥

पूतिगंधयोनिकेलक्षण ।

संनिपातान्वितायोनिर्दुर्गंधवहतेऽनिशम् ॥ शूलदाहार्त्तियुक्ता
सा पूतिगंधिर्विधीयते ॥ १० ॥

बन्ध्यायोनिकेलक्षण ।

पित्तानिलाभ्यांपरिकोपिताभ्यांसंपीडिता कृच्छ्रतरेण योनिः ॥
कृष्णं रजोमुंचति फेनिलं या बन्ध्यामुनीन्द्रैः परिकीर्त्तिता सा ॥ ११ ॥

खंडितायोनिकेलक्षण ।

योनेरभ्यंतरे बाह्ये खरस्पर्शात्तु मैथुने ॥ न गृह्णाति सदावीर्यं
खंडिनी साभिधीयते ॥ १२ ॥

अर्थ—सन्निपातसे योनिमें दुर्गंध आवे, तथा शूल दाहभीहो उसे घृतिगंध योनि कहते हैं ॥ १० ॥
जिसकी योनि वात पित्तके कोपसे पारंपीडितहो और जिसकी योनिसे काला और झाग युक्त
रुधिर निकले उसे ऋषि बन्ध्यायोनि कहते हैं ॥ ११ ॥ योनिके बाहर और भीतर मैथुनके समय
खर्दरास्पर्श मालूम पड़े और वीर्यका जो ग्रहण न करे उसे खंडिता योनि कहते हैं ॥ १२ ॥

पिडिकाचितसर्वांगी मणिनांतरबाह्ययोः ॥ सा योनिरुपदंशेनमूत्र
फेनरुजादिता ॥ १३ ॥

इति श्रीभिषक्कृचक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्य-
शास्त्रे योनिरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

अर्थ—योनिके बाहर भीतर कुंसीहों को योनि उपदंशरोगकरके व्याप्त जाननी ॥ १३ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां योनिरोगलक्षणं समाप्तम् ॥

अयप्रसूतिकारोगकालक्षण ।

उच्चैः प्रपाताद्दृढमैथुनाद्वातीक्ष्णोष्णदुष्टौपधिसेवनाद्वा ॥ दंडा-
भिघाताद्बहुवेदनाद्वागर्भच्युतिः स्याद्भ्रयतः श्रमाद्वा ॥ १४ ॥
स्त्रावोमासाच्चतुर्थात्प्राक्पातः पंचमपष्ठयोः ॥ मासयोर्भवति स्त्रीणां
प्रसूतिस्तदनंतरम् ॥ १५ ॥ प्रसूतिसमये वायुः स्त्रियाः कुक्षिगतो
यादि ॥ निरुध्य शोणितस्त्रावं करोति बहुवेदनाम् ॥ १६ ॥

अर्थ—उच्चस्थानके गिरनेसे दृढमैथुनसे तीखी गरम दुष्ट औषधके खानेसे दंड आदिकी चोट
लगनेसे बहुत पीडासे भयसे श्रमसे गर्भपात होताहै ॥ १४ ॥ चारमहीनासे पूर्व गर्भ गिरे उसे
स्त्राव कहते हैं, और पांचवें छठे महीनामें पात कहाता है, इसके अनंतर अर्थात् सातवें महीनासे
उपरान्त प्रसूति कहते हैं ॥ १५ ॥ प्रसूति समयमें पवन खीकी कूखमें प्राप्तहो रुकजावे वह रुधिरको
निकाले तथा पीडाकरे ॥ १६ ॥

चालेपृथिव्यापतितेतदानिशं संरक्षणीयामरुतः प्रसूता ॥ यस्याः
शरीरेपवनेप्रविष्टेनूनंभवेद्रोगवती सदा सा ॥ १७ ॥ हृत्कुक्षिशूलं
गुरुता शरीरे कंपः पिपासा कटिवस्तिपीडा ॥ दाहोङ्गमदौल्परुचिः
प्रलापः शोथः कृशत्वं प्रदरोत्तिसारः ॥ १८ ॥ निद्रालसत्वंवहु
पांडुताङ्गि शीतं शिरोर्त्तिभ्रमताविशुद्धिः ॥ तापोप्यनाहोबलता-
तिकासः स्यात्सूतिकायाः परिरोगचिह्नम् ॥ १९ ॥

अर्थ--जिस समय बालक पृथ्वीमें गिरै उसी समय प्रसूतास्त्रीकी पवनसे रक्षा करनी कदाचित्
पवन स्त्रीके लगजाय तो निश्चय प्रसूतिका रोग पैदाहोय ॥ १७ ॥ जिस स्त्रीके प्रसूति रोगहोँ उसके
ये रोगहोँ हृदय कूख इनमें शूलहो शरीर भारी कंप प्यास कमर और मूत्रस्थानमें पीडा दाह
अङ्गोका टूटना अल्प रुचि प्रलाप सूजन कृशता प्रदर अर्तासार ॥ १८ ॥ निद्रा आलस पीलिया शरदी
मस्तकमें दर्द भ्रम भ्रष्टता ज्वर अनाह दुर्बलता खांसी इतनेरोग प्रसूतिसे होतेहैं ॥ १९ ॥

प्रसूतिरोगकेउपद्रव

अतीसारोज्वरः शूलं बलहानिः शिरोव्यथा ॥ शोफोनाहोतिदाहो-
ष्ट्रौसूतिकायामुपद्रवाः ॥ २० ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे प्रसूतिकारोगलक्षणानि ॥

१ अर्तासार २ ज्वर, ३ शूल, ४ बलहानि, ५ मस्तकमें दर्द, ६ शोथ, ७ अनाह, ८
दाह, ये प्रसूतिके आठ उपद्रव हैं ॥ २० ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थबोधिनीटीकायां सूतिकारोगास्समाप्ताः ॥

अथबालरोगलक्षणम् ।

वातलदुग्धकेगुण ।

स्तन्यं दुग्धं वातलं तोयतुल्यं रूक्षं गौरं तुच्छसारं कयायम् ॥
वालोनित्यं तं पिवेत् स्यात्कृशाङ्गः शब्दक्षामो बद्धविष्मूत्रवातः १

पित्त युक्त दुग्धके गुण ।

सक्षारमुष्णं कटुपित्तदूषितं वालोल्पसारः कुचजं पयः पिवन् ॥
तृष्णालुरूक्षावयवः सपेत्तिकः खिन्नो भवेद्भिन्नमलः सकामलः २ ॥

कफदूषित दुग्धके गुण ।

दुग्धं श्लेष्मविदूषितं कुचभवं स्निग्धं घनं पिच्छिलं यो बालः
प्रतिवासरं परिपिवन् स्थूलोदरो जायते ॥ लालाढ्यः कफरोग-
वान् वलयुतो निद्रावृतश्छर्दिमाञ्छून्यान्तःकरणोल्पघूर्ण
नयनः कंठ्वादिरोगान्वितः ॥ ३ ॥

अर्थ-स्तनका दूध जलके समानहो रूखा तथा भारी बलरहितहो कसैला हो वो बातदूषित दुग्ध है, उसे बालक जो पीवे तो कृशांगहो मन्द शब्द तथा मल मूत्र कमउतरो ॥ १ ॥ जो खारागरम तथा कहुआ हो पित्त दूषित दुग्ध है, उसे जो बालक पीवे तो बलहीन हो तृष्णाद्ध रूखा देह पित्तप्रकृति बाला दस्त बहुतहो पीलिया युक्तहो तथा खिनहो ॥ २ ॥ जो कुचका दूधकफसे दूषितहो वो चिकना गाढा मलाईदार होताहै, जो बालक ऐसे दूधको पीवे उसका बडा पेटहोजाय उार यहै कफ रोगसे प्रसितरहै, बल युक्त नाँद बहुत आवै उलटी करै शून्य अंतःकरण कुछ टेढे नेत्र खुजली आदिरोग करके युक्त रहै ॥ ३ ॥

दोषरहितदुग्धकीपरीक्षा ।

जले स्तन्यं परिक्षितमेकीभूतं च पांडुरम् ॥ मधुरं स्वादुतदुग्धं
निर्दोषं तद्विदुर्बुधाः ॥ ४ ॥ निर्दोषजं पयः पीत्वा नीरोगो
बालको भवेत् ॥ बलवीर्यान्वितो धीरो बहु शक्तिसमन्वितः ॥ ५ ॥
शिशोरंगपीडां च तीव्रामतीव्रां बुधो रोदनाल्लक्षयेदंगदेशे ॥
तनोः स्पर्शनाच्छ्रोतसां दर्शनाद्वा विदित्वा रुजं कारयेद्वै चिकि-
त्साम् ॥ ६ ॥

अर्थ-जो दूध जलमे मिलानसे पाँला होजावे, तथा मीठा स्वादयुक्त हो, उसे निर्दोष दूध जानना ॥ ४ ॥ जो बालक दोषहीन दूध पीताहै वह बलवीर्य धीरता शक्तिमान होताहै ॥ ५ ॥ वैद्य बालकको अंग पीडा रोनेसे तथा शरीरके स्पर्शसे वा नेत्रोंके देखनेसे जानकर फिर इलाज करै ॥ ६ ॥

मातुः स्तन्यविकारेण बालानां नेत्रवर्त्मनि ॥ जायते कुक्कुणं तेन
नेत्रयोः कंडुरं भवेत् ॥ ७ ॥ कुक्कुणेनोरुजातेन सूर्याभां परिवीक्षि-
तुम् ॥ न समर्थो भवेद्बालो नेत्रोन्मीलितुमक्षमः ॥ ८ ॥

पारिगर्भिककेलक्षण ।

भवेद्बालको गुर्विणीदुग्धपानाद्भ्रमश्वासनिद्रान्वितो वह्निसादः ॥
कृशांगोतिकासोरुचिर्दतपातस्तमाहुर्बुधागर्भिकं कोष्ठबंधम् ॥ ९ ॥

अर्थ—माताके स्तनविकारसे बालकके नेत्रोंमें कुक्षुण रोग हो, उससे नेत्रोंमें खुजली चलती है ॥ ७ ॥
जब बालकके कुक्षुण रोग होजाता है वो सूर्यके देखनेको समर्थ नहीं, हो और नेत्रमिचेभी नहीं ॥ ८ ॥
गर्भिणी माताके दुग्धपानसे बालकको भ्रम, श्वास, निद्रा, अग्निमंद, कृशांग, अतिखांसी, अरुचि,
दंतपात, ये होते हैं, इसे वैद्य गर्भिककोष्ठबंध वा पारिर्गभिक कहते हैं ॥ ९ ॥

तालुकंतरोगकेशलक्षण ।

शिशोस्तात्वामिषे श्लेष्मवातयुक्तालुकंटकम् ॥ कुर्यात्तेन रुजामूर्ध्नि
भवेत्तालुनि निम्नता ॥ १० ॥ तालुपाकस्त्रिदोपोत्थः सर्वांगेषु
विसर्पति ॥ असाध्योयं बुधैरुक्तोयंत्रमंत्रैश्चसाधयेत् ॥ ११ ॥ क्षुद्र
रोगे च कथिते ह्यजगल्ल्यहिपूतने ॥ ज्वराद्या व्याधयः सर्वे महतां-
येपुरोगताः ॥ बालदेहेपि ते तद्वजानीयात्कुशलो भिषक् ॥

सामान्यग्रहयुक्तबालककेलक्षण ।

ग्रहैर्गृहीतोल्पशिशुः प्रवेपते मुहुर्मुहुस्त्रस्यति रौति जृम्भते ॥
परं नखैर्लुञ्चति खं समीक्षते कचित्कचित्कूजति हन्ति रोदिति १२

अर्थ—बालकके तालुके मांसमें वात युक्त कफ प्राप्त होकर तालुकंटक रोग पैदा करे, उससे
तालु नीचे लटक आवे ॥ १० ॥ त्रिदोषका तालुपाक सब अंगमें फैल जावे है, सो असाध्य है, वो
यंत्रमंत्र आदिसे अच्छा हो ॥ ११ ॥ जो क्षुद्ररोगोंमें अजगह्नी अहिपूतना रोग कहे हैं, वो और
ज्वरादि सर्वरोग जो बड़े मनुष्योंके होते हैं, वो सब बालकको देहमें होते हैं, ऐसे कुशल वैद्यजानै
यह माधवाचार्यका मत है, जो बालक ग्रहों करके गृहीत हो वो कभी कभी त्रासखाय रोवे जंभाईले
नखोंसे अपनी देह नीचे आकाशको देखै कभी २ गूंजै और पीडाहो तथा रोवे ॥ १२ ॥

स्कंदग्रहकेलक्षण ।

स्कंदग्रहेणैव शिशुर्गृहीतः फेनं वमेद्रोदिति साश्रुपातः ॥ भिन्न
स्वरो फिन्नमलोरुणाक्षो जागर्ति रात्रौ परितोल्पसंज्ञः ॥ १३ ॥

शकुनीग्रहकेलक्षण ।

बालोगृहीतः परितः शकुन्यास्फोटैश्चितांगो बहुभिः स्ववद्भिः ॥
दाहान्वितैः शोणितपूयगंधिभिर्भित्यार्तिभिः संचकितो भवेत्तः १४

रेवतीग्रहकेलक्षण ।

स्फोटैः स्ववद्भिर्बहुभिर्युतांगो भिन्नस्वरो हीनबलो विवर्चाः ॥ तृ-
ष्णातिसारज्वरदाहयुक्तः स्याद्रेवतीग्रस्ततनुश्च बालः ॥ १५ ॥

जो बालक स्कन्दग्रह करके प्रसा गया हो वो मुखसे झाग पटकै, रोवे, भिन्न स्वरहो, दस्तहो, आलनेत्र, रात्रिमें जागे, होश न रहै ॥ १३ ॥ जो बालक शकुनीग्रहने प्रसाहो वो जिसे राधर्दे ऐसे फोडा करके व्याप्त हो, दाहयुक्त, रुधिर निकलै, दुर्गन्धआवे, डरपै ॥ १४ ॥ जिस बालककी देह फोडोसे व्याप्तहो और वे स्वैध, भिन्नस्वरहो-बलरहित, तथा तेजरहित, तृष्णा, अतीसार, ज्वर, दाहवान हो उसे रेवतीग्रहप्रस्त जानना ॥ १५ ॥

पूतनाग्रहकेलक्षण ।

वसागंधियुक् पूतनाक्रांतदेहः सिशुर्लक्षणैर्जायते पंचपद्मभिः ॥

पिपासांगविस्फोटकंपार्त्तिदोहैर्ज्वरश्वासकासातिसारांगकंपैः ॥१६॥

मंडिताग्रहकेलक्षण ।

प्रसन्नवक्त्रो बहुभुक्शिशुः स्याद्ग्रहेण यो मंडितया गृहीतः ॥

विशुद्धगात्रो मलमूत्रगंधिवृतः शिराभिस्तुविनिर्गताभिः ॥ १७ ॥

नैगमेयग्रहकेलक्षण ।

वहेत्पूतिगंधं मुखान्नाशिकाया रदैर्मातरं संदशेत् खंविपश्येत् ॥

भवेद्यस्य कंठोष्ठवक्त्रेषु शोषो गृहीतः शिशुर्नैगमेयग्रहेण ॥ १८ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचिचोत्सवे हंसराजकृते

वैद्यशास्त्रे शिशुरोगनिदानम् ॥

अर्थ—जिसकी देहमें चर्बीकासी वास मारै, तथा प्यास और अंगोंका दूटना, पीडा, दाह, ज्वर, श्वास, खांसी, अतीसार, कंपहो इन लक्षणोंसे बालक पूतनाग्रहप्रस्त जानना ॥ १६ ॥ जिस बालकका मुख प्रसन्नहो बहुत भोजन करै, शुद्ध देहहो, मल मूत्रकी दुर्गन्ध आवै, नाडीनसे व्याप्तहो, इन लक्षणोंसे बालक मण्डिताग्रहप्रस्त जानना ॥ १७ ॥ जिसकी देहमें वासआवे, माताको दांतोंसे काटे, आकाशकी ओर देखै, कंठ ओठ मुख सूखै, उसे नैगमेय ग्रहप्रस्त जानना ॥ १८ ॥

इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यां बालरोगनिदानं समाप्तम् ॥

अथविपरोगनिदानम्

विपं स्थावरं मूलजं दुग्धजं वा भवेत्पत्रजं पुष्पजं त्वग्भवं वा ॥

फलात्संभवं वीर्यनिर्यासजं वा द्वयोर्योगजं भूमिजं कृत्रिमं वा ॥१॥

अथस्थावरविपकेअपगुण

मूर्च्छां श्वासं ज्वरं हिक्कां फेनं छर्दिगलग्रहम् ॥ दृष्टिनाशं भ्रमं मत्तं कुरुते स्थावरं विपम् ॥ २ ॥

जंगमविषकेअपगुण ।

जीवांगजं जंगममुग्रवीर्यहालाहलं दाहमतीवनिद्राम् ॥ शोथं
विसंज्ञां तमकं क्लमत्वं रोमांचितांगं कुरुतेऽतिनिद्राम् ॥ ३ ॥

अर्थ—विष दोप्रकारका है, एक स्थावर, दूसरा जंगम स्थावरविष मूल आदि और जंगम सर्पा-
दिकका विषादि उत्पन्न करे, इसीसे इसको विषकहते है, स्थावर विष, मूल,दल,फल,त्वचा, दूध,
फूल, वीर्य, गोंद, भूमिसे पैदा होरा आदि और कृत्रिम अर्थात् बनाभया ॥ १ ॥ मूर्च्छा, श्वास,
ज्वर, हिचकी, झाग, रद, गलग्रह, दृष्टिनाश भ्रम, मस्तपना इतने अपगुण स्थावर विष करता है
॥ २ ॥ प्राणीसे पैदा जो विष वो जंगम विषहै वह इतने अग्रगुण करे दाह, घोर, निद्रा, सूजन,
बेहोशी, अंधकार, ग्लानि, रोमांच, अतिनिद्रा ॥ ३ ॥

विषदेनेवालेमनुष्यकीपरीक्षा ।

पृष्ठो विषादो न ददाति चोत्तरं ग्रस्तो ग्रहेणैव मुहुर्निरीक्षते ॥
नाना विचेष्टां कुरुते विकंपते कंडूयतेङ्गं रुदते विशंकते ॥ ४ ॥

मूलजविषकेलक्षण ।

मूलजं भक्षितं कुर्याद्विषं मोहं विजृम्भणम् ॥ प्रलापं वेपनं श्वासं
मोहं दाहं विचेष्टनम् ॥ ५ ॥

पत्रविषकेलक्षण ।

पत्रोद्भवं विषं कुर्यान्मुखशोथं च शोषणम् ॥

फलकेविषकेलक्षण ।

फलोत्थं दाहमन्नाहं वैकल्यं दृष्टिनाशनम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जो फूलनेसे उत्तर न दे, मानों किसी ग्रहने प्रसलिया, चारखार देखने लगे, नाना प्रका-
रकी चेष्टाकरे, कांपे कर्मी खुजाने लगे, कर्मी रोवे, तथा शंकाकरे, उसको जानते कि किसीने विष
दियाहै ॥ ४ ॥ जो मनुष्य मूलज कहिये जड कंद आदि जैसे मिंगीमोहरा ऐसे विष खानेमें
मोह, जंभाई, प्रलाप, कंप, श्वास, मोह, दाह, चेष्टाहीन होताहै ॥ ५ ॥ मुखशोष, देहशोष ये अप-
गुण पत्रका विषमक्षण करे है, दाह, अनाह, बेकली, दृष्टिनाश, ये फल विषके अपगुण हैं ॥ ६ ॥

फूलगोंदत्वचाकेविषकेलक्षण ।

पुष्पोत्थं छर्दिराध्मानं मोहं च कुरुते विषम् ॥ त्वङ्निर्यासोद्भव
स्त्रावं पूतिकंपशिरोरुजम् ॥ ७ ॥

दुग्धविषकेलक्षण ।

विषं क्षीरसमुद्भूतमाध्मानं कंठशोषणम् ॥ विड्वंश्चमूत्रसंरोधं
दृढांगं कुरुते भ्रमम् ॥ ८ ॥

धातुहरतालआदिकेलक्षण ।

धातूत्थं यद्विषंकुयान्मूर्च्छां दाहं च तालुनि ॥ विषाणि प्राण-
घातीनि सर्वाणि कथितानि च ॥ ९ ॥

अर्थ—फूलका विष रद्द अफरा मोहको करे, तथा गोंद और त्वचाका विष साव दुर्गंध, कंप, शिरमें दर्द ॥ ७ ॥ दूधका विष अफरा, कंठ शोष, दस्त, मूत्रका रुकना, दृढांग और भ्रम करे ॥ ८ ॥ हीरा हरताल आदि धातुका विष मूर्च्छा, तालुमें दाह तथा सर्व विष प्राणके हर्ता जानने ॥ ९ ॥

सर्पकाटेकेलक्षण ।

भुजंगेन दष्टस्य नासामुखाभ्यां पतेद्रक्तधारांगदेशेषु शोफः ॥
भवेन्मंडलैर्मण्डितांगो विवर्णो विशीर्णांगमांसोश्च निःशोणितांगः
॥ १० ॥ विषादोंगकंपो भयो रोमहर्षः शरीरे गुरुत्वं भ्रमो दृष्टि-
नाशः ॥ तृषाध्मानमानीलता गात्रदेशे ह्यनाहो रतिर्जृम्भणं
मूर्च्छता स्यात् ॥ ११ ॥

देशविशेषऔरकालविशेषमेंजोसर्पकाटेउसकेलक्षण ।

अश्वत्थमूले पिचुमंदमूले चतुष्पथे देवगृहे इमशाने ॥ वाल्मीक
देशे दिनसंध्ययोर्वा सर्पेण दष्टः सुधया न जीवेत् ॥ १२ ॥

अर्थ—जिसे सर्पकाटे उसकी नाक और मुखसे रुधिरकी धार गिरे, सबदेहमें सूजन हो, देहमें रुधिरके चक्रचेहों, देहका मांस बिखर जाय, तथा देहमें रुधिर न रहे ॥ १० ॥ खेद, अंग कंप, तथा विवर्ण हो, भय, रोमांच, देहभारी, भ्रम, नेत्रोंसे न देखे, प्यास, अफरा, शरीरनीला, अनाह, अरति, मूर्च्छा, जंभाई, ये लक्षण सर्प काटेके हैं ॥ ११ ॥ पीपलके वृक्षके नांचे, तथा निम्बके वृक्षके नांचे, चौराहेमें, मन्दिरमें, इनशानमें, बाँकीके पास, संख्याके समय (भरणी, आर्द्रा, श्लेषा, मघा, मूल, कृत्तिका, इननक्षत्रोंमें) जो सर्पकाटे तो मनुष्य मरजावे ॥ १२ ॥

मृपकविषलक्षण ।

मृपकस्य विषं कुर्याच्छर्द्धिं शोफं विवर्णताम् ॥ मूर्च्छां मंदश्रुतिं
श्वासं लालास्त्रावं शिरोरुजम् ॥ १३ ॥

कीटआदिविपकेलक्षण ।

दष्टस्य कीटैर्विषदिग्धतुंडैः कृष्णाभमंगं बहुवेदनास्यात् ॥ शोफोति-
दाहः परिभिन्नवर्चा मोहप्रलापोधिकरोमहर्षः ॥ १४ ॥

कालेविच्छूकेलक्षण ।

दष्टो मनुष्योऽसितवृश्चिकेन नाना विचेष्टां कुरुते विपार्तः ॥ भीतो
विषण्णोऽग्निसमानदाहः पीडार्दितो रौति विलापमुच्चैः ॥ १५ ॥

अर्थ—विपैल मूषका विप रट, मूजन, विवर्ण, मूर्च्छा, मंद सुने, श्वास, डार टपके, शिरगेंपीडा ये लक्षण हों ॥ १३ ॥ कीट अथवा जिसे विपैल डाढवाला जानवर काटे उसके लक्षण देहकाला तथा पीडायुक्त सूजन दाह तेजरहित मोह, प्रलाप, रोमांच ये हों ॥ १४ ॥ काले विच्छू काटेके ये लक्षण हैं, नानाप्रकारकी चेष्टाकरे, डरपै, शून्यता, अग्निके समान दाह, घोर पीडा, पुकारकर रोवे ॥ १५ ॥

विषं वृश्चिकं दुःसहं प्राणहारि महामोहदं सौख्यविध्वंसकारि ॥
बलज्ञानविज्ञानतेजोपहारि व्यथाशोफवैकल्यदाहार्तिकारी ॥ १६ ॥

वर्हासर्पकाटेकेलक्षण ।

ज्वरो घोरतरं शूलं छर्दिःशोफो विसर्पति ॥ वर्णनाशोभवेत्पीडा
वर्हिदष्टस्य लक्षणम् ॥ १७ ॥ प्राणीदंशेन संदष्टो हृष्टरोमा क्षता
र्तिमान् ॥ स्तब्धलिंगो भवेच्छोफो विनिद्रश्चकितोनिशम् ॥ १८ ॥

अर्थ—विच्छूका विप नहीं सहाजाय, प्राणहर्ता, महामोह करे, सुखको दूर करे, बल, ज्ञान, तेज, इनको दूर करे व्यथा, सूजन, बेकली दाह, और पीडा करे ॥ १६ ॥ घोरज्वर, शूल, रद, सूजनता बढे, वर्णका नाश और पीडा होय, ये वर्हा नाम सर्पकाटेके लक्षणहैं ॥ १७ ॥ प्राणीके विपसे डसेहुयेके ये लक्षणहैं, रोमांच, घायसे पींडित, टेढा लिंग, सूजन, निद्राहीन और चकित ॥ १८ ॥

मंडकमच्छलीकेविपके लक्षण ।

शोफश्छर्दितृपानिद्रामंडकविपलक्षणम् ॥ मत्स्योत्थितं विषं कुर्या-
दाहं शोफं तृपां व्यथाम् ॥ १९ ॥

जोंककेविपकालक्षण ।

मूर्च्छा शोफज्वरं कंडू तृपां कुर्युर्जलौकसः ॥

छिपकलीकेविपकालक्षण ।

दाहं स्वेदं व्यथां शोथं कुर्याच्च गृहगोधिका ॥ २० ॥

शतपदी (खानखजूरा) केविपकेलक्षण ।

शतपद्याविपं कुर्यात्स्वेदं दाहं रुजं बहु ॥

मच्छरकेविपकालक्षण ।

मशकानां विपं कुर्याच्छोफाल्पं तुच्छवेदनाम् ॥२१॥

अर्थ—मैडकका विप सूजन, रद, प्यास, निद्राकरैहै, और मच्छरका विप दाह, सूजन, प्यास और, व्यथाको करै ॥ १९ ॥ विपेल जोंककाटे तो मूर्च्छा, सूजन, ज्वर, खुजली, प्यासहो, दाह, पसीना, पीडा सूजन, ये छिपकली काटेसे होतेहै ॥ २० ॥ कातरके काटनेसे पसीना, दाह, पीडाहो मच्छरका विप थोड़ी सूजन, और थोड़ीही पीडा करैहै ॥ २१ ॥

लूताविपकेलक्षण ।

लूताविपं महाघोरं पिंडिकां बहुवेदनाम् ॥ कुरुते चंचलां तीव्रां
पाकदाहज्वरान्विताम् ॥ २२ ॥

मखलीकेविपकेलक्षण ।

मक्षिकाणां विपं तुच्छं शोफतोदसमन्वितम् ॥

नखदंताविपकेलक्षण ।

नखदंतविपं रोद्रं दाहस्त्रावव्यथाकरम् ॥ २३ ॥

सर्पादिककाटेकाअसाध्यलक्षण ।

दृष्टिर्गता यस्य पतंति केशा नासामुखाभ्यां रुधिरस्य पातः ॥

वक्रं मुखं यस्य विवर्णमंगं विषाभिभूतं परिवर्जयेत्तम् ॥ २४ ॥

अर्थ—दूताविप महाघोर ये लक्षण करैहै, पींडिका चंचलतीव्रपीडा, पाक, दाह, ज्वर ॥ २२ ॥ विपैलमखली काटे उसको थोड़ी सूजन, और पीडायुक्त हो जिसके सिंह आदिका नख लगाहो नगर आदिका टाढ लगाहो उसके लक्षण दाहहो, श्वाहो, व्यथाहो ॥ २३ ॥ जिस पुरुषका दृष्टि मारजाय, और शिरके बाल गिरपडै, नाक मुखसे रुधिर गिरे, टेढामुख होजाय, तथा विवर्ण ऐसे रोगीको वैद्य त्यागदे ॥ २४ ॥

(तथा) हीनस्वरं यस्य पतंति दंष्ट्राः सर्वांगशीतं रसनातिकृष्णा ॥

वेकल्यमंगे वदनं करालं विषादितं दूरतरं त्यजेत्तम् ॥ २५ ॥

दूपीविपकेलक्षण ।

जलस्य पानाद्विपदूषितस्य दिग्देशकालांतरसंभवस्य ॥ नरस्य
देहे विपलक्षणस्य दूपीविपं चोच्छलते कृशस्य ॥ २६ ॥ दूपी-

विषं संकुरुते नरस्य हस्तांग्रिशोथं मुखकंठशोषम् ॥ सूच्छां ज्वरं
मंडलचर्चितांगं कुष्ठं रुजत्वं जठरस्य वृद्धिम् ॥ २७ ॥

अर्थ—हीनस्व होजाय, दांत डाढ़ाँ गिरपड़े, सर्वांगमें शीतलगे, कालीजीभ हो जाय, देहमें
बेकली, करालमुखहो, ऐसे विषादित मनुष्यको वैद्य त्याग करदे ॥ २५ ॥ दिशा देश कालमें प्रगट ऐसे
विषद्रूपित जल पीनेसे विषके वा विषामिले पदार्थके खानेसे कुशमनुष्यको देहमें नाना प्रकारके रोग
करे है ॥ २६ ॥ दूषी विष ये लक्षण करेहै, हाथ, पैरमें सूजन, मुख कण्ठका सूखना सूच्छा, ज्वर,
रुधिरके चकते, कोढ़, पेटका बढजाना ॥ २७ ॥

मांसक्षयं पाण्डुरचर्चितांगं निद्रां विजृम्भां बलवीर्यनाशम् ॥ छर्दि
पिपासां विकलं विवर्णं दूषीविषं संकुरुते विकारम् ॥ २८ ॥ दूषी-
विषं त्रिदोषोत्थं यन्त्रमंत्रोपधादिभिः ॥ असाध्यं मुनिभिः प्रोक्तं
तस्य जाप्यं हितं भवेत् ॥ २९ ॥

इति श्रीभिषक्क्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्य-

शास्त्रे विपलक्षणनिदानं संपूर्णम् ॥

अर्थ—पीलिया, मांसकाक्षय, निद्रा, जंभाई, बल वीर्यका नाश, रद, प्यास, बेकली, देहका
विवर्ण ये, दूषीविष विकार करे है ॥ २८ ॥ त्रिदोषसे उठा दूषीविष असाध्यहै, वो मंत्र औपधियोंसे
और जाप्यसे हित होय ॥ २९ ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामपाठककृतहंसराजार्थबोधिन्यां विपरोगनिदानम् ॥

मूत्रपरीक्षा ।

सुपात्रे समादाय मूत्रं गदीनां प्रभाते भिषक्चिंतयेत्तैलविंदुम् ॥
विनिक्षिप्य तस्मिन्विकांशं संमेति तदा साध्यमेवं वदेद्रोगिणं तम्
॥ १ ॥ यदा विंदुरूपस्थितं मूत्रमध्ये तले संश्रितं वा तदा साध्य-
मेवम् ॥ त्रिकोणस्थितं तैलविंदुर्यदिस्यात्तदा चैव दोषं वदेन्मान-
वानाम् ॥ २ ॥ क्षुरादंडकोदंडतूणीरखड्गगदाचक्रवाणासिरूपं
विधत्ते ॥ यदा तैलविंदुत्रिशूलाकृतिर्वा तदा रोगिणो यास्यते
मृत्यु वक्रे ॥ ३ ॥

अर्थ—वैद्य रोगीके मूत्रको प्रातःकाल कांसाके पात्रमें वा कांचके पात्रमें तेलकी बूंद डालकर
परीक्षा करे, यदि मूत्रमें तेलकी बूंद प्रकाशमान देखे तो रोगीको साध्य कहै ॥ १ ॥ और जो तेलकी
बूंद मूत्रमें इवजाय तो असाध्य कहै, और जो मूत्रको बूंद त्रिकोणके आकार होजाय तो त्रिदोष युक्त

मनुष्य जानें ॥ २ ॥ कदाचित् तेलकी बूंद छुराके वा दण्डके वा गदाके वा तरवारके वा चाणके वा खड्गके वा धनुषके वा फरसाके आकार होजाय, अथवा त्रिशूलके आकार होजाय, वो रोगी मौतके सुखमें जाय ॥ ३ ॥

ज्वरार्त्तस्य मूत्रे यदातैलविन्दुर्विधत्ते भुजङ्गाकृतिं मध्यरंध्रम् ॥
विरूपं कृतान्ताकृतिं वृश्चिकाभं स रोगी यमस्यालये शीघ्रगता ॥१॥
ज्वरार्त्तस्य पुंसो यदा मूत्रमध्ये समादाय तैलं तृणेन प्रभाते ॥
विनिक्षिप्य सिंहासनाभं विधत्ते तडागाकृतिं दीर्घमायुर्वदन्ति ॥ ५ ॥
भेरीदुंदुभिः शंखगोमुखतुरीतुल्यं मृदंगाकृतिं वीणातोरणहं
सकम्बुसुरभीलत्राश्वयानासमम् ॥ ढक्काकुम्भाकिरीटहारसदृशं
केयूररत्नद्युतिं सन्धत्ते तिलतैलविन्दुरनिशं मूत्रे महारोगिणः ॥६ ॥

अर्थ—ज्वरवान् पुरुषके मूत्रमें तेलकी बूंद सर्पके आकार और बीचमें छिद्रहो तो वुरी और मौतके आकारहो तथा त्रिशूलके आकारहो वो रोगी जल्दी यमराजके घरजाय ॥ ४ ॥ और जिस ज्वरवाले पुरुषके मूत्रमें तेलकी बूंद डारनेसे सिंहासनके आकार, अथवा तालावके आकार होजाय, उस रोगीको दीर्घआयु जानना ॥५॥ भेरी, दुंदुभी शंख, गोमुख, तुरही, मृदङ्ग, तमरा, तोरण, हंस, कमल, गौ, छत्र, घोडा, सवारी, ढक्का, घट, किराट, हार, केयूर, रत्न, इनकीसी आकृतिके सदृश तेलकी बूंद होय वो महारोगी जानना ॥ ६ ॥

प्रसरति यदि मूत्रे रोगिणस्तैलविन्दुर्विदिशि विदिशि समंताद्भी
रुजं तं हि विद्यात् ॥ व्रजति दिशि मघोनः पश्चिमायां दिशाया
पवनककुभि रोगी रोगमुक्तं नितान्तम् ॥ ७ ॥

वातपित्तकफकेमूत्रकीपरीक्षा

श्यामं स्निग्धं तारकाभिर्युतं तद्विद्यान्मूत्रं रोगिणो वातभूतम् ॥
पीतं रक्तं पित्तजम्बुद्दुदोक्तं श्लेष्मोद्भूतं पल्वलंवारितुल्यम् ॥८॥

द्विदोषऔरत्रिदोषमूत्रकीपरीक्षा

रोगीमूत्रं द्विदोषोत्थं सर्पपतैलसन्निभम् ॥ संनिपातोत्थितं कृष्णं
विद्याद्बुद्बुदसंयुतम् ॥ ९ ॥

अर्थ—जिस रोगीके मूत्रमें तेलकी बूंद दिशा और विदिशामें फैल जाय, उसे नैरोग्य जानना चाहिये, और तेलकी बूंद पूर्वे दिशामें वा पश्चिमदिशामें तथा वायव्य और उत्तरदिशामें फैलजाय तोमी रोगी रोगमुक्त जानना ॥ ७ ॥ वातसे मूत्र नीला, और चिकना, उत्तरताहै, पित्तसे प्याल, और पीला तथा बबूलेयुक्त उत्तरे है, कफसे गाढा, और चिकना तथा तल्लेयाके जल समान उत्तरे

॥ ८ ॥ द्विदोषवाले पुरुषका मूत्र सरसोंके तेलके समान उतरे, और सन्निपातवाले पुरुषका मूत्र काळा और बबूलेयुक्त उतरता है ॥ ९ ॥

अजीर्णसंभवं मूत्रमजामूत्रसमं भवेत् ॥ ज्वरोत्थं कुंकुमाकारं
सुखिनो जलसन्निभम् ॥ १० ॥ भिपक्चक्रचित्तोत्सवैवेद्यशास्त्रं
कृतं हंसराजेन पद्यैर्मनोज्ञैः ॥ सुहृद्यैरदोषै रुजोध्वांतनाशं हरेरं
घिसंसेवनानंदमूर्त्तैः ॥ ११ ॥

इतिश्रीभिपक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्य
शास्त्रे रोगमूत्रलक्षणानिसमाप्तानि ॥

अर्थ—अजीर्णसे मूत्र बकरोंके मूत्रके समानउतरे, ज्वरसे केसरियारंग सराखा उतरे है, सुखी पुरुषका मूत्र जलके समान उतरे ॥ १० ॥ भिपक्चक्रचित्तोत्सव वैद्यशास्त्र हंसराज कविने मनको प्रसन्नकारक पदोंसे तथा हृदयके हरणकारक दोष रहित पदोंसे रोगका हरणकरनेवाला श्रीनिकुंजविहारके चरणारविन्द सेवकने बनायाहै ॥ ११ ॥

इति श्रीमाधुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थसुबोधिनीटीकायोरोगमूत्रलक्षणानिसमाप्तानि ॥

नपुंसकलक्षणानि सुश्रुताल्लिख्यन्ते ॥

आसेक्यनपुंसककेलक्षण ।

पित्रोरत्यल्पवीर्यत्वादासेक्यः पुरुषो भवेत् ॥ सशुकं प्रास्य लभते
ध्वजोच्छ्रायमसंशयम् ॥ १ ॥

सौगंधिकनपुंसककेलक्षण ।

यः पूतियोनौ जायेत स सौगंधिकसंज्ञितः ॥ सयोनिशोफसोर्गंध-
माघ्राय लभते बलम् ॥ २ ॥

कुंभिकनपुंसककेलक्षण ।

स्वगुदेऽब्रह्मचर्याद्यः स्त्रीषु पुंवत्प्रवर्त्तते ॥ कुंभिकः स तु विज्ञेय
ईर्ष्यकं शृणु चापरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—माता पिताके अति अल्पवीर्यसे जो गर्भ रहता है, वो पुरुष आसेक्य नाम नपुंसक होता है, वो दूसरेके मैथुनके करनेसे पैदा शुक खाया जावे तब उसको धैतन्यता पैदाहो तब विषय करनेको प्रवृत्तहो इसका दूसरा नाम मुखयोनि है ॥ १ ॥ जो पुरुष दुष्टयोनिसे पैदाहुआं हो वो योनि था छिगको सूंघले तब चैतन्यता प्राप्तहो उसे सौगंधिक कहते हैं और दूसरा नाम नासा-

यानि कहतेहैं ॥ २ ॥ जो पुरुष पहले दूसरे पुरुषसे अपनी गुदामंजन करावे, तब उसको चैतन्यता प्राप्तहो, तब स्त्रीके विषे पुरुषताको प्राप्तहो, उसे कुम्भिक नपुंसक कहते हैं ॥ ३ ॥

ईर्ष्यकके लक्षणोंको सुनो ।

ईर्ष्यककेलक्षण ।

दृष्ट्वा व्यवयमन्येषां व्यवये यः प्रवर्त्तते ॥ ईर्ष्यकः सतु विज्ञेयो
दृग्योनिरयमीर्ष्यकः ॥ ४ ॥

महापंडके लक्षण ।

योभार्यायामृतौ मोहादंगनेव प्रवर्त्तते ॥ तत्र स्त्रीचेष्टिताकारो
जायते पंडसंज्ञितः ॥ ५ ॥

नारीपंडके लक्षण ।

ऋतौ पुरुषवद्रापि प्रवर्त्ततांगना यदि ॥ तत्र कन्या यदिभवेत्सा
भवेन्नरचेष्टिता ॥ ६ ॥

इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृते वैद्यशास्त्रे नपुं
सकलक्षणानि समाप्तानि ॥

अर्थ—जो पुरुष दूसरेको मैथुन करतादेख आप मैथुन करनेको प्रवृत्त हो, उसे ईर्ष्यक नपुंसक कहते हैं, दूसरा नाम दृग्योनिहे ॥ ४ ॥ जो पुरुष ऋतुके समय स्त्रीके प्रमाण प्रवृत्तहो अर्थात् विपरीत रतिकरै, उसके वीर्यसे पैदा जो बालक वो स्त्रीकीसी चेष्टावान् हो, और स्त्रीके आकार युक्तहो उसे महापण्ड कहते हैं ॥ ५ ॥ ऋतुकालके समय जो स्त्री पुरुषके प्रमाण प्रवृत्तहो अर्थात् पुरुषको नीचे मुलाय आप ऊपर चढ मैथुन करै उसमें जो कन्या पैदाहो वह पुरुषके आकारहो और पुरुषकीसी चेष्टावालाहो ॥ ६ ॥

इति श्रीमाधुरवंशोत्पन्नप्रशंसनीयगुणगणालंकृतकन्हैया
लालपाठकतनयदत्तरामप्रणीतहंसराजार्थ
सुबोधिनीटीकासमाप्तिमगात् ॥
इति हंसराजनिदानसम्पूर्णम् ॥

पुस्तक मिठनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टोम् प्रेस-बंबई.